श्रीनेमविजय महाराजविरचित

धर्मपरीक्षानो रास.

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक.

मुंबई.

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां छापी प्रसिद्ध कर्यो.

प्रथमावृत्ति.

संवत् १९६९. सने १९१३.

Printed by R. Y. Sledge, at the N. S. Press, 23, Ko'bhat Lane, Bombay, and
Published by Bhanji Maya, for Shravak Bhimsi Manek, Mandvi, Saka Lane, No. 225–231. Bombay.

श्रीजिनाय नमः

श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

अथ श्रीधर्मपरीक्षानो रास.

दुहा.

प्रथम जिनेश्वर पय नमुं, वृषभनुं लंछन जास ॥ मरुदेवी नंदन रूपन, नाभीराय कुल तास ॥ १ ॥ अढार वर्ष आरा तणां, सागर कोडा कोड ॥ गयो धर्म वाध्यो जिणे, तेह नमुं कर जोड ॥ २ ॥ आदि चारित्र आदरी, दीधो द्विधा धर्म ॥ मन वच काया वश करी, छेदी आठे कर्म ॥ ३ ॥ शिवपुरना वासी थया, अजरामर सुख ठाम ॥ चोवीशे तीर्थंकरा, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥ समरुं श्रुतदेवी सदा, आपे वचन विलास ॥ तुष्टमान थाजो तमे, सफल फले मुज आश ॥ ५ ॥ गुरु दीवो गुरु देवता, गुरु तुठे गम होय ॥ गुरु कहीए माता पिता, गुरुथी अधिक न कोय ॥ ६ ॥ भवियण भावे सांभलो, धरमाधरम विचार ॥ द्वेष बुद्धि दूरे करी, परीक्षा करजो सार ॥ ७ ॥ उत्पत्ति तेहनी

लीपके, धर्मपरीक्षा रास ॥ वातो विविध प्रकारनी, आणी हरख उल्लास ॥८॥ सांभलतां सुख उपजे, मन भावे मन मांय ॥ सो जाणे साचो धरम, बाम्यो तिमज कहाय ॥ ९ ॥

ढाल १ ली.

देशी चोपाइनी.

जंबूद्वीप जोयण एक लाख, जंबू वृक्षनी नामे साख ॥ असंख्याता सायर द्वीप कह्या, केवली आगम ते में लह्या ॥ १ ॥ जंबूद्वीप मध्य मेरु जोय, सुदर्शन नामे ते होय ॥ बीजा पर्वत कह्या अनेक, मेरु लाख जोयणनो एक ॥ २ ॥ तेथी दक्षिण दिश जणी कहुं, भरत क्षेत्र ते शास्त्रे लहुं ॥ पांचसें छवीश ने ७ कह्या, बत्रीश सहस देश निरमह्या ॥ ३ ॥ साढा पचवीश आरज देश, बीजा अनारज कहीए लेश ॥ आरज धरम मरमनो जाण, म्लेछ वर्णनो अनारज ठाण ॥ ४ ॥ पचास जोयणनो परमाण, रूपामय वैताढ्य वखाण ॥ एहवो पर्वत शाश्वतो मान, श्वेत वर्ण ऊलहलते वान ॥ ५ ॥ पचवीश जोयण भूमि मांहि, उंचो पचीश जोयण उछांहि ॥ दश जोयण डुंगरथी जोय, दक्षिण दिश जणी ते होय ॥ ६ ॥ कह्यां नगर मोटां पचास, नगर पुंज कोण गाम निवास ॥ मुख्य पचास नगरमां जेह, वैजयंतपुर कहीए तेह

॥ ७ ॥ बार जोयणनो लांबो अछे, नव जोयणनो पोहोलो पछे ॥ गढ मढ मंदिर पोल प्रकार, सोहे उंचाउंच आगार ॥ ८ ॥ वाव्य कुवा सरोवर जिहां, जिननां शिवनां मंदिर तिहां ॥ धर्म तणी पोशाली घणी, एवी नगरी विद्याधर तणी ॥ ९ ॥ वसे विप्र विद्याना धणी, वनिता रूपे रतीआमणी ॥ वणिक करे मोटा व्यापार, वस्तुना नाना अंबार ॥ १० ॥ बावन वीर तणां त्यां स्थान, वित्तधारीनां मुख पर वान ॥ नव नाग नव काग लोक, वस्त्र पट्टां पचरंगी थोक ॥ ११ ॥ विद्या शक्तिए चाले आकाश, विमान रचना जाणे आवास ॥ तीर्थयात्रा करतां दिन जाय, पुण्ये प्राणी निगमे आय ॥ १२ ॥ तिण नगरी जीतारि भूप, अद्भुत इंद्र सरिखुं रूप ॥ न्याय-मारगमां चाले राय, रामचंद्र उपम कहेवाय ॥ १३ ॥ राय तणी राणीनुं नाम, पवन-वेगाथी वाधे काम ॥ दंपति वेहुने वाध्यो नेह, हरख थाये जिम आवे मेह ॥ १४ ॥ रूपे अद्भुत दीसे नार, इंद्राणी जाणे अवतार ॥ वेने धर्म तणो छे राग, केवली भाख्यो पाले माग ॥ १५ ॥ एम भोगवतां सुख अथाग, आवी उपन्यो कर्मने भाग ॥ राणी कुखे थया नव मास, प्रसव्यो पुत्र सफल थइ आश ॥ १६ ॥ उछव महोछव कीधा घणा, साजन आव्या पोता तणा, जमाड्या भोजन पक्वान, ते साखे थाप्युं

अभिधान ॥ १७ ॥ मनोवेग नामे कुमार, देखी रंजे सहु नरनार ॥ भणी गणीने प्रौढो थयो, मात पिता मन आनंद भयो ॥ १८ ॥ शीखी विद्या नवनवी रीत, मीठुं बोले वाधे प्रीत ॥ वन उपवनना खेले ख्याल, जीव भापाना जोवे फाल ॥ १९ ॥ जडी मूलीना जाणे भेद, मंत्र जंत्रथी पूरे उमेद ॥ ढाल नेमविजये ए कही, प्रथम खंडनी पहेली सही ॥ २० ॥

दुहा.

जो वैताढ्यगिरि थकी, उत्तर श्रेणि कहाय ॥ दश जोजन दूरे कह्यां, साठ नगर समुदाय ॥ १ ॥ एक एक नगर प्रत्ये कह्यां, कोड कोड छे गाम ॥ मानव लोक वसे तिहां, विद्याधरनां ठाम ॥ २ ॥ साठ नगरमां शोभतुं, नयर विजयपुर नाम ॥ लंक समोवड जाणीए, अलखत छे अभिराम ॥ ३ ॥ प्रभास नामे भूपति, पाले राज अखंड ॥ मान्य करे मिथ्यातने, पापी मांहे प्रचंड ॥ ४ ॥ विपुला राणी तेहनी, सुख भोगवतां सार ॥ पुत्र थयो एक एहवो, पवनवेग कुमार ॥ ५ ॥ जोवन पाम्यो अनुक्रमे, मिथ्यामतनी बुद्धि ॥ माने नहीं जिनधर्मने, एहवी जेनी शुद्धि ॥ ६ ॥ विद्या तणी शकते करी, उडी जाय आकाश ॥ फिरतो हरतो आवीउं, मनोवेगनी पास ॥ ७ ॥ बे जण

वेग एकठा, बहु बंधाणो नेह ॥ नित्य आवे एकेकने, फरी फरीने गेह ॥ ८ ॥ वातो विविध प्रकारनी, करता मांहोमांह ॥ धर्म वखाणे आपणो, अन्यो अन्य उछांह ॥ ए ॥

ढाल बीजी.

रे जीवडा दीधानां फल जोय—ए देशी.

मनोवेग कहे सांभलोजी, जैनधरम जग सार ॥ केवली भाषित निरमलोजी, उतारे भव पार रे भाइ ॥ धरम समो नहीं कोय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दान शीयल तप भावनाजी, धर्मना चार प्रकार ॥ जीवदया जतने करीजी, जे पाले नरनाररे ॥ भा० ध० ॥ २ ॥ सुक्षम बादर जाणीएजी, त्रस थावर दोय जीव ॥ सन्नीउं असन्नीउंजी, संमुर्छिम गर्भज हीवरे ॥ भा० ध० ॥ ३ ॥ अनेक भेद छे धर्मनाजी, कहेतां नावे पार ॥ तब पवनवेग बोलीउंजी, हुं नवी जाणुं लगाररे ॥ भा० ध० ॥ ४ ॥ त्यांथी बे जण आवीआजी, पुष्फदंत गुरु पास ॥ अध्यारु छे आदिनोजी, छात्र भणावे तासरे ॥ भा० ध० ॥ ५ ॥ भणवा बेठा बे जणाजी, ज्योतिष वेदक सार ॥ मंत्र जंत्र जडी मूलीजी, वेद शास्त्र अपाररे ॥ भा० ध० ॥ ६ ॥ भणी गणी प्रोढा थयाजी, पाम्या परम आनंद ॥ मनोवेग श्रावक भलोजी, पवनवेग मिथ्या कंदरे ॥ भा० ध० ॥ ७ ॥ विमाने बेसी दोय

स्वामिन् तुं अवधार ॥ पवनवेग मुज मित्र छेजी, तेहनो कहो विचाररे ॥ ना० ध० ॥ १८ ॥ भव्य जीव छे तेहनोजी, किंवा अभव्य नर एह ॥ कदाग्रही माने नहींजी, जिनवर वचनज तेहरे ॥ ना० ध० ॥ १९ ॥ मुनिवर कहे तुमे सांभलोजी, मनोवेग राय सुजाण ॥ नेमविजय ढाल बीजीएजी, प्रथम खंडनी परमाणरे ॥ ना० ध० ॥२०॥

दुहा.

पवनवेग तुज मित्र जे, उत्तम जीव छे तेह ॥ भव्य जीव करी जाणजो, एमां नहीं संदेह ॥ १ ॥ ते माटे तमने कहुं, एनो एक उपाय ॥ पामलीपुर दक्षिण दिशे, तुमे जाजो तिणे ठाय ॥ २ ॥ बिहुं बंधव मली एकठा, अपूरव करीने वेश ॥ वादी लोक वसे तिहां, डुरभर दक्षिण देश ॥ ३ ॥ ब्राह्मण नाती मली तिहां, जाग जज्ञनो ठाम ॥ आडंबर अधिके करी, करे होमनां काम ॥ ४ ॥ होमे हिंसा छे घणी, छकाय विराधन थाय ॥ पंचेंद्रि जीव मोटका, होमे अग्नि मांय ॥ ५ ॥ त्यां तुमे वाद करो जइ, विप्रना उतारो नाद ॥ लाभ थशे तुमने घणो, जब सांभलशे साद ॥ ६ ॥ गुप्त राखजो जिनधरम, नाखजो मरम पुराण ॥ अगम थइ आवा जइ, केजो कथा कुपुराण ॥ ७ ॥ पवनवेग

१ अहंकार.

ड्यंग, मरुधर देश वखाणीए ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीरा वागड लाट कर्णाट, कानड मेवाड मालवो ॥ वीरा वेराट वच्छ कच्छ नाम, कजळ नेपाळ जाळवो ॥ वी० ॥ ३ ॥ वीरा कणवीर कानन देश, कावीस वीड्यंग मेवातमां ॥ वीरा गंधार वेदर्भनो ठाम, वयर कामरु जातिमां ॥ वी० ॥ ७ ॥ वीरा जोतां जोतां जग मांहे, फरतो दक्षिण दिश आवीउं ॥ वीरा पाडलीपुर नगर मांहे, दीठे दरख बहु व्यापीउं ॥ वी०॥ ८ ॥ वीरा चार जोयणने विस्तार, नयर पाडलीपुर जाणीए ॥ वीरा चार पोळ तुंग प्राकार, गढ मढ कोरणी वखाणीए ॥ वी० ॥ ९ ॥ वीरा चोराशी चोवटां वजार, हाटनी श्रेणी सोहामणी ॥ वीरा सात भूमि मोहोल आवास, गोख झरुखे चितरामणी ॥वी०॥१०॥ वीरा माणिक मोती व्यापार, रतन प्रवालानी नहीं मणा ॥ वीरा हीरा झवेर सुवर्ण, वणिज चलावे वणिक घणा ॥ वी० ॥ ११ ॥ वीरा ब्राह्मण वरण विशेष, विद्या भणावे विद्यारथी ॥ वीरा वेदीया वेद विचार, सांभळे वेठा स्वारथी ॥वी०॥ १२ ॥ वीरा यज्ञ करी मांड्या याग, मध मदिरा दूध दहीं घणां ॥ वीरा ज्वलित खारेक खांड, सरसव घृत टोपरां तणां ॥ वी० ॥ १३ ॥ वीरा जोगी तापस संन्यास, तेहना मठ रलियामणा ॥ वीरा देवल दीसे अनेक, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तणां ॥ वी० ॥ १४ ॥ वीरा हनुमंत गोरी

पाडलीपुर जोवा तणी, मुजने छांश विशेष ॥४॥ देखाशो नहीं जो तुमे, मरणो करशुं एम ॥ अमे जाशुं घर आपणे, मुख नथी जोशुं तम ॥ ५ ॥ मनोवेग बोल्यो तिहां, मित्रजी म करो रोष ॥ जाशुं आपण बे जणा, जो छे तुमने शोष ॥ ६ ॥ पाडलीपुर तुम दाखवुं, दृष्टे राखो दाम ॥ फशी न करशो शोचना, करशुं सही ए काम ॥७॥ पवनवेग ते सांजली, थयो मन्न रलियात ॥ ते जण बेसी एकठा, करवा मांडी वात ॥ ८ ॥ निज घर जइ परवारीने, पाछो जइए तांहिं ॥ शोने छे शणगारथी, अद्भुत तरु उपरांहिं ॥९॥ परछेण करीने उतीआ, आपणा निज आवास ॥ मनोवेग सटपट करी, मित्र तेडीउं तास ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

ते तरियारे भाइ ते तरिया—ए देशी.

अमा पाणीए स्नान कराणी, देवपूजा कीधी रंगेरे ॥ सुआ चंदननी अर्चा कीधी, अनोपम वस्त्र पहेर्या अंगेरे ॥ प्रीतिनी रीत जुओ तुमे भाइ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ भोजन करवा बे जण बेठा, बेठा साजन मांहेरे ॥ पीरसवा मांडी सुखडी सारी,

[illegible]

॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ प्रीं० ॥ ५ ॥ पान सोपारी लवंग एलची, मुख तंबोल दीधा वारे ॥ कपुर वास्या नीर मंगावी, शौच थया चालवा सारे ॥ प्रीं० ॥ ६ ॥ चंदन कपुर केशर घोली, अंग विलेपन कीधरे ॥ कुसुममाला पहेरी कोटे, मुहूरत वेला लीधरे ॥ प्रीं० ॥ ७ ॥ साज लेइने सामग्री कीधी, विमानमां वेसी तामरे ॥ आव्या ततक्षण पामली परिसर, दीठां मनोहर ठामरे ॥ प्रीं० ॥ ८ ॥ उतरी देवा विमान मांहेथी, पहेर्यां वस्त्र ते सारे ॥ माथे मुकुट काने कुंडल, कोटे मोतीनो हारे ॥ प्रीं० ॥ ९ ॥ बांहे बाजुबंध वेरखा बांध्या, मुद्रिका कटी कंदोरारे ॥ पाये मोजडी सोल शणगारे, वशीकरण पासे मोहोरारे ॥ प्रीं० ॥ १० ॥ एकने मस्तक खडगनो जारो, बीजाने मस्तक काठीरे ॥ हाथ कोहाडो दानरमां लेइ, बीजा हाथमां लाठीरे ॥ प्रीं०

॥ ११ ॥ रूप कयाडीनो करी आव्या, नगर प्रवेश ते कीधोरे ॥ रूप जोइने अचंबो
पाम्या, लोकने आशिष दीधोरे ॥ प्री० ॥ १२ ॥ नेरी वजाडी मोटे सादे, घंटानाद
सुणायोरे ॥ पुरव दिशे वादीनी शाखा, जोवा अनेक लोक आयोरे ॥ प्री० ॥ १३ ॥
सिंहासन बेठा बे नाइ, अचरिज सहुने आयेरे ॥ गुण गिरुआ बेहु पुरुष अनोपम,
किहांथी आव्या किहां जायेरे ॥ प्री० ॥ १४ ॥ सारा नगरमां शब्द सुणायो, नेर
घंटानो नादरे ॥ छिज सघला सांभलीने आव्या, करवा विद्यानो वादरे ॥ प्री०॥१५॥
वादी कहे अमे वाद करीशुं, ज्ञानी कहे जोशुं वेदरे ॥ एहने पूछशुं जो तुमे जाणो,
तो कहो मांहेलो नेदरे ॥ प्री० ॥ १६ ॥ जोतिषी जंपे जोष अमारो,जोइ काढो कोइ
वोपरे ॥ सघालाग ज्योतिषनुं मान छे, केतोक केशे जोपरे ॥ प्री० ॥ १७ ॥ जट कहे
अमे भारत मांहेलो, गहन अरथ पूछी लेशुंरे ॥ कवि बोले अमे छंदनी जाति, पूछीने
वेशोटो देशुंरे ॥ प्री० ॥ १८ ॥ व्यास कहे अमे पुराण वातो, जाणं केश [illegible]
कामी कहे अमे कामने जाणुं, अम [illegible]
अमे [illegible]

प्रहारे ॥ हुंहुंकार करता आव्या, अनुक्रमे सहु तेणी वारे ॥ प्री० ॥ २१ ॥ क्रोध मान माया लोभ जर्त्या, राग द्वेषनां गेहरे ॥ पहेला खंडनी ढाल चोथीमां, नेमविजय कहे एहरे ॥ प्री० ॥ २२ ॥

दूहा.

तखत उपर बेठा चढी, दीठो सहु परिवार ॥ आलोचे मनमां तिहां, ए कुण कहीए कुमार ॥ १ ॥ आभूषण अधिके करी, पहेर्या सोल शणगार ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र ए, अथवा देवकुमार ॥ २ ॥ अन्यो अन्य सांसे पड्या, भक्ति करे बहु भेव ॥ जगन्य जागना होमथी, आव्या सही ए देव ॥ ३ ॥ पुण्य आपणां पाधरां, आव्या छे परमेश ॥ तुष्टमान थाशे सही, धर्या अनोपम वेश ॥ ४ ॥ कोइ कहे ए छे सही, नारायणनुं रूप ॥ आपण सहुने तारशे, पड्या छीए भवकूप ॥ ५ ॥ कोइ कहे महादेवजी, आव्या आपणी सेव ॥ हरहर मुख जपे सहु, सहुथी अधिको देव ॥ ६ ॥ कोइ कहे ब्रह्माजी तणो, अनुपम रूप आकार ॥ ब्रह्मलोकथी आवीया, तारे सहु नरनार ॥ ७ ॥ कोइ कहे ए इंद्र छे, को कहे सूरज चंद्र ॥ को वासी पातालनो,

शेषनाग नागेंद्र ॥ ८ ॥ द्विज पडीया सांसे सहु, प्रणमे वारोवार ॥ भाव भगति करतां घणी, कलना न पडी लगार ॥ ९ ॥ विप्र एक बोल्यो तिहां, सघला दीसो मूढ ॥ प्रणति करो छो तमे घणी, गुण नवी जाणो गूढ ॥ १० ॥ विष्णु रूप जग ए नहीं, शंख चक्र नवी पास ॥ ईश्वरनुं रूप केम कहो, त्रिशुल त्रिलोचन तास ॥ ११ ॥ चार वेद ब्रह्मा मुखे, अज्ञानी तुमे लोक ॥ शुन्न शणगारो देखीया, काष्ठ उपाडे थोक ॥१२॥

ढाल पांचमी.

आ चित्रशाली आ सुख सज्यांरे, जो मन माने तो करो लज्जारे—ए देशी.

अकल सरूपी दीसे छे एहरे, करीने विचार पूछशुं तेहरे ॥ साच जूठनुं पारखुं कीजेरे, नहींतर एउने देशोटो दीजेरे ॥ १ ॥ ब्राह्मण सघला बोल्या वाणीरे, कवण नगरीथी आव्या जाणीरे ॥ कवण जातिना छो तुमे भाइरे, किण कारण आव्या रूप बनाइरे ॥ २ ॥ कवण धरम करो छो साररे, कवण शास्त्र भण्या गुण धाररे ॥ वाद करो अमशुं निरधाररे, तो अम उपजे हरख अपाररे ॥ ३ ॥ मनोवेग कहे सांभलो विप्ररे, अमे छीए कवामी क्षीप्ररे ॥ वाद कहो केम कीजे तुमशुंरे, तमे सहु आव्या मलीने अमशुंरे ॥४॥ न्याय पुराणनी नवी जाणुं वातोरे, धरमाधरमनी न बुझुं तांतोरे ॥

॥ ११ ॥ रूप कराडीनो करी आव्या, नगर प्रवेश ने कीधोरे ॥ रूप जोइने अनंगो
पाड्या, लोकने आनंद दीधोरे ॥ प्री० ॥ १२ ॥ नेरी वजाडी मोटे साद, घंटानाद
गुजाव्योरे ॥ पूरव दिशे पारीनी शाला, जोवा अनेक लोक आव्योरे ॥ प्री० ॥ १३ ॥
शिंहासन बेठा थे नाद, अपरिज सहुने आवेरे ॥ पुत्र गिरुआ वेदु पुरुष अनोपम,
किहांथी आव्या किहां जावेरे ॥ प्री० ॥ १४ ॥ सारा नगरमां शब्द सुणायो, नेर
पंडानो गावेरे ॥ द्विज सघला सांभलीने आव्या, करवा विद्यानो वादरे ॥ प्री०॥१५॥
पारी कहे अमे पाठ करीशुं, ज्ञानी कहे जोशुं वेदरे ॥ एहने पूछशुं जो तुमे जाणो,
तो कहो मांडेलो नेदरे ॥ प्री० ॥ १६ ॥ जोतिषी जंपे जोष अमारो,जोइ काढो कोइ
वोपरे ॥ सघालाग ज्योतिषनुं मान वे, केतोक कहो जोपरे ॥ प्री०॥ १७ ॥ जट्ट कहे
अमे नारत मांडेलो, गएन अरथ पूछी लेशुंरे ॥ कवि बोले अमे छंदनी जाति, पूछीने
देशोटो देशुंरे ॥ प्री० ॥ १८ ॥ व्यास कहे अमे पूराण वातो, जाणुं केम हवे जाशेरे ॥
कामी कहे अमे कामने जाणुं, अम आगल खष्ट थाशेरे ॥ प्री० ॥ १९ ॥ वेद कहे
अमे नाडीनी विधिमां, जांगशुं एहना होमरे ॥ व्याकरणी कहे वाद ते अमशुं, केम
करशो पमरो खोटरे ॥ प्री० ॥ २० ॥ पाठक पंड्या बोल्या ततखिणे, ढीक पाडुना

प्रहारे ॥ हुंहुंकार करंता आव्या, अनुक्रमे सहु तेणी वारे ॥ प्री० ॥ २१ ॥ क्रोध मान माया लोभ नरीया, राग द्वेषनां गेहरे ॥ पहेला खंडनी ढाल चोथीमां, नेमविजय कहे एहरे ॥ प्री० ॥ २२ ॥

दुहा.

तखत उपर वेग चढी, दीगो सहु परिवार ॥ आलोचे मनमां तिहां, ए कुण कहीए कुमार ॥ १ ॥ आभूषण अधिके करी, पहेर्या सोल शणगार ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र ए, अथवा देवकुमार ॥ २ ॥ अन्यो अन्य सांसे[1] पड्या, भक्ति करे बहु भेव ॥ जगन्य जागना होमथी, आव्या सही ए देव ॥ ३ ॥ पुण्य आपणां पाधरां, आव्या छे परमेश ॥ तुष्टमान थाशे सही, धर्या अनोपम वेश ॥ ४ ॥ कोइ कहे ए छे सही, नारायणनुं रूप ॥ आपण सहुने तारशे, पड्या छीए भवकूप ॥ ५ ॥ कोइ कहे महादेवजी, आव्या आपणी सेव ॥ हरहर मुख जपे सहु, सहुथी अधिको देव ॥ ६ ॥ कोइ कहे ब्रह्माजी तणो, अनुपम रूप आकार ॥ ब्रह्मलोकथी आवीया, तारे सहु नरनार ॥ ७ ॥ कोइ कहे ए इंद्र छे, को कहे सूरज चंद्र ॥ को वासी पातालनो,

१ संशयमां.

शेषनाग नागेंद्र ॥ ८ ॥ द्विज पकीया सांभले सहु, प्रणमे वारोवार ॥ नाव जगति
करतां घणी, कहना न पडी लगार ॥ ९ ॥ विप्र एक बोल्यो तिहां, सघला दीसो
मूढ ॥ प्रणति करो तो तमे घणी, गुण नवी जाणो गूढ ॥ १० ॥ विष्णु रूप जग ए
नहीं, शंख चक्र नवी पास ॥ ईश्वरनुं रूप केम कहो, त्रिशुल त्रिलोचन तास ॥ ११ ॥
चार वेद आवा मुखे, अज्ञानी तुमे लोक ॥ शुन शणगारो देखीया, काष्ठ उपाडे थोक ॥१२॥

ढाल पांचमी.

आ चित्रशाली आ सुख सज्यांरे, जो मन माने तो करो सज्जारे—ए देशी.

अकल सरूपी दीसे छे एहरे, करीने विचार पूछशुं तेहरे ॥ साच जूठनुं पारखुं
कीजेरे, नहींतर एहने देशोटो दीजेरे ॥ १ ॥ ब्राह्मण सघला बोल्या वाणीरे, कवण
नगरीथी आव्या जाणीरे ॥ कवण जातिना छो तुमे नाहरे, किण कारण आव्या रूप
पनाहरे ॥ २ ॥ कवण धरम करो छो सारे, कवण शास्त्र भण्या गुण धारे ॥ वाद
करो अमशुं निरधारे, तो अम उपजे हरख अपारे ॥ ३ ॥ मनोवेग कहे सांभलो
विप्रे, अमे छीए कथाकी हीप्रे ॥ वाद कहो केम कीजे तुमशुंरे, तमे सहु आव्या
सहीने अमशुंरे ॥४॥ न्याय पुराणनी नवी जाणुं वातोरे, धरमाधरमनी न बुझुं तांतोरे ॥

रान मांहे रोझडा जेम जीवरे, ते सरिखा अमे तुं सदेवरे ॥ ५ ॥ द्विजवर तव कोपा-
नल थाएरे, जो नवी जाणो तुमे वेहु कांएरे ॥ तो घंटानो केम कीधो नादरे, भेरी
वजाडी पाड्यो तुमे सादरे ॥ ६ ॥ गर्व घणो आणी मन मांहींरे, उंचा चढी वेठा छो
उछांहीरे ॥ अति घणो कीधो तुमे अन्यायरे, नरम थइ बोलो हवे न्यायरे ॥ ७ ॥
मनोवेग कहे अमे एमरे, नाद कीयो ते कौतुक जेमरे ॥ ते माटे तमे सहु मली
आव्यारे, तुमने अमे वे दिलमां नाव्यारे ॥ ८ ॥ जो न गमे सिंहासन पर वेठारे, तो
अमे उतरी वेसुं हेठारे ॥ रीस न करो अमने तुमे देवरे, ज्यांथी आव्या जाशुं तत-
खेवरे ॥ ९ ॥ राजी थइने विप्र कहे नाइरे, रूप देखीने कहीए चित्त लाइरे ॥ वस्त्र
आभूषणे दीसो ताजारे, मीठाबोला मोटी माजारे ॥ १० ॥ नीच काम कां करो कुमा-
ररे, खड इंधणना आणो भारे ॥ साच कहो जूठुं मत बोलरे, जेहवा रूपे छो तेहवो
तोलरे ॥ ११ ॥ नाति जातिनो कुल मत लोपोरे, साचुं कहेतां रखे तुमे कोपोरे ॥
मनोवेग कहे तुमे छो मोटारे, न्याय पुराणमां अमे तुं खोटारे ॥ १२ ॥ नीच तणां
आदर्यां अमे कामरे, केम पुराय विवादे हामरे ॥ वहु वलवंता संगाते वादरे, कीजे
तो वधे विखवादरे ॥ १३ ॥ अमे एकाकी परदेशी लोकरे, जे बोलुं ते सर्वे थाए फोकरे ॥

सगां साजन नहीं इहां कोयरे, तो अमारो साखी कोण होयरे ॥ १४ ॥ ब्राह्मण सहु बोल्या तणी वारे, तुमे वेहु नाइ देवकुमाररे ॥ साची वात कहेजो निरधाररे, कयां पुराण साखां सिरदाररे ॥ १५ ॥ न्याय नीति साची कहो वातरे, असत्य भाख्याथी होशे घातरे ॥ मनोवेग कहे सांभलो वाचरे, घात होये बोलतां साचरे ॥१६॥ सोल मूठीउं नर कह्यो एकरे, साच बोल्याथी पाम्यो छेकरे ॥ गरदन उपर सोल मूल खाधीरे,ते नर नीत रह्यो तिहां बांधीरे ॥१७॥ द्विज सघला तब कहे कर जोडरे, अमने सांभलवानो छे कोडरे ॥ सोल मूठीया नर तणी वातोरे, साच बोल्याथी केम पाम्यो घातोरे ॥१८॥ मनोवेग बोल्यो गुणवंतरे, मलवार देश देशोमां संतरे॥ मंगलपुर नामे छे गामरे,वृक्ष वाडीए करी अभिरामरे ॥१९॥ अगर तगर उंचा छे तालरे, श्रीफल फोफल फणस तमालरे ॥ गरी लवींग सहकारनां गामरे, धनवंत लोक वसे तेणे गामरे ॥२०॥ भमर नामे कुणबी छे एकरे, रूपणी नामे नार सुविवेकरे ॥ पद्मेला खंडनी पांचमी वालरे,नेमविजय कहे पद उजमालरे ॥ २१ ॥

दुहा.

मधुकर नामे पुत्र छे, क्रोधी मूरख रीसाल ॥ निज घरनुं धन खोइने, विणस्यो

रोनी माय ॥२॥ एक दिन बाप पवने माटी कीधी रीस ॥ कोप चढावी चालीयो, गया
गाम दश बीज ॥३॥ आदीर देशमा आवीया पिपल नामे गाम ॥ धान खेत्रनां आणी-
ने, [illegible] कीधा नामानाम ॥४॥ मधुकर कहे लाको नणी, (आ) धान तणा अंबार ॥
घन तणा चालो घणा मग मलना नहीं पार ॥ ५ ॥ देश तुमारामां सही, निपन्यां
[illegible] धान ॥ देश अमारा पडवा निपज पापल पान ॥ ६ ॥ मरी लवींग ने एलची,
पीपल [illegible] ॥ अनक वस्तु [illegible] पाया करी आय ॥ ६ ॥ धान मधुकरनी
सुणी अचरिज पाम्या लोक ॥ एक कहे नवी मानीए जे वाले ते फोक ॥ ७ ॥ पटेल
तलाटी एम कहे पहले कीजे कम ॥ नाकार नवी पूरीए, करशु कहेशे जेम ॥८॥ कोप
करी नाकार कहे, खोटे बोलो एह ॥ छेदा नाक पटेल के, तलाटी बोले तेह ॥९॥
हाथ पाय छेदा परा, जुनावालो लोक ॥ तेह राखवो नवि घटे, कलंक मूके फोक ॥१०॥

ढाल छठी.

राम सीताने छीज करावेरे, त्रणसें हाथ खाइ खणावेरे—ए देशी.

देवी शेठ बोल्या दयावंतरे, स्वामी एह दीसे छे संतरे ॥ चीजडां चोरने चूसट

१ हुकमां.

दीजेरे, एवडो ए काम केम कीजेरे ॥ १ ॥ आज ठीक गरवन मांहीरे, दीजे वात
कही सत तांहीरे ॥ राजा आदे वात सहु मानीरे, दीधी आज ठीक तेहने ठानीरे
॥ २ ॥ मधुकर चिंतवे मन मांहीरे, साच बोल्ये खाधो मार आंहीरे ॥ जीवतो निज
पूर जो जाउंरे, तो एहवो मार नवी खाउंरे ॥३॥ एम चिंतवी चाल्यो तेणी वाररे,
वेगे आयो देश मलवाररे ॥ लवींग एलची मरी देखीरे, लोको प्रते कहे तव चेखीरे
॥ ४ ॥ सांभलो तुमे मलवारी लोकरे, वयण माहरुं मत जाणो फोकरे ॥ एक आहीर
देश ठे एहवोरे, में जइ जोयो ते कहेवोरे ॥५॥ घउं साखी चणानी राशरे, मग मठ
चोखा जव ते खासरे ॥ एलची ने लवींग सोपारीरे, शुं करीए जुवो चित्त धारीरे
॥ ६ ॥ मलवारी लोको सुणी कोप्यारे, मधुकरनां वयण ते लोप्यांरे ॥ पूरव रीति
तेणे कीधीरे, आज मूलीनी मार ते दीधीरे ॥ ७ ॥ खोटाबोलो नर ठे एहरे, अन्यो
अन्य कहे सहु तेहरे ॥ लोक आगे कही सत्य वातरे, सोल मूलीनी खाधी घातरे
॥ ८ ॥ मलवारी लोके तेणे ठामरे, सोल मूलीउं धराव्युं नामरे ॥ मनोवेग कहे विप्र
आगेरे, साच बोल्ये वयर ते जागेरे ॥ ९ ॥ निज निज देश तणी जे वाचरे, अवर
देश न माने [illegible]
[illegible]पणा मत आगल जे वातरे, न गमे कोइक थाय उत्पातरे

॥ १० ॥ तेम तुम आगे कहीए वातरे, ते उथापो साची होय ख्यातरे ॥ एम करतां उपजे विरोधरे, अति वाधे मन मांही क्रोधरे ॥ ११ ॥ विप्र बोल्या सांभली वाणीरे, उपजे नहीं दुःखनी खाणीरे ॥ एवो अज्ञानी नथी आंहि कोइरे, कहेशे वात तुमारी जोइरे ॥ १२ ॥ मनोवेग कहे तुमे वादीरे, वाद करवाने उन्मादीरे ॥ शंका अम मन मांहे एहवीरे, मानो नहीं सही तेहवीरे ॥ १३ ॥ विप्र सांभलीने तव जंपेरे, साच कह्याथी कुण कंपेरे ॥ साच तणो जे कह्यो गूढरे, अममां नहीं कोइ मूढरे ॥ १४ ॥ मनोवेग अठो तुमे जाणरे, वात कहो साची परमाणरे ॥ कहेजो कोइ वात विचारी रे, कोइ न करे मारी तारीरे ॥ १५ ॥ मनोवेग कहे सहु साथरे,[1] तुमे सांभलो विद्याना आथरे ॥ मूढ उपर कथा कहुं जेहरे, जूठ बोल्या उपर तेहरे ॥ १६ ॥ कहेशुं कथा ते तो रुडीरे, मत जाणो तुमे कोइ कुडीरे ॥ कंठापुर एहवुं एक ठाजेरे, नगर अवरमांहीं विराजेरे ॥ १७ ॥ प्रजापाल नामे तिहां राजारे, तेहनी छे मोटी माजारे ॥ ब्राह्मण वरणना वासरे, वेद भणावे अति खासरे ॥ १८ ॥ भूतमति नामे छे एकरे, विद्यावंत विनय विवेकरे ॥ वरस पचास थयां वारुरे, निरधनमां सिरदारुरे

१ भंगार.

[illegible] ॥ ॥ इम अनुदिन ते वहुने. वाकयो बोहोलो नेह ॥ कांति कला [illegible] ॥ १० ॥

ढाल सातमी.

सीता [illegible] जाणे आवा माने [illegible] हो सीता अति सोहे—ए देशी.

एक दिन पाछ्या जण चार मथुरा नगरीथी तेणी वार हो ॥ नावे नवि सुणी ॥ नृतमति तेमवा सार विनति कर आदी ते वार हो ॥जा०॥ १ ॥ पधारो अमारे देश मरा चाकरी करशु विशेष हो ॥ जा०॥ अम्ह अजामेध थाशे.माटो जगत जाग कहे-वाशे ॥जा०॥२॥ तुम विना ते काण जाणे तेण कारण मेह्या टाण हो ॥जा०॥ तिहां आव्या लोक अनेक काण जाणे जगत विवेक हो ॥ जा० ॥ ३ ॥ नृतमतिए हो वाली. साच वेणनी दीधी ताली हो ॥ जा० ॥ नारीने तेडी एकांते. शिखामण दे नली नाते हो ॥जा०॥४॥ घर माही पोढजो राते. लंबन लागे कोइ वाते हो ॥जा०॥ ते तुमे मन करो काम. फरशो हरशो मां कोइ ठाम हो ॥ जा० ॥५॥ जोवनमां जोखम लागे. मोह बाधे मदन वहु जागे हो ॥जा०॥ अति घणुं शुं कहुं तुमने, मास चार थाशे तिहां अमने हो ॥जा० ॥ ६ ॥ देवदत्तने बोलाव्यो, घर ए तुमने भलाव्यो हो ॥

लाग्या सुख पात्र हो ॥जा०॥ वेहुनो सरखो मल्यो जोग, राति दिवस माणे भोग हो ॥जा०॥१६॥ एम करतां चारे मासे, गया वेहु जण वेसी विमासे हो ॥जा०॥ आवशे तुम जब प्यारो, तब मुजने मेलशो न्यारो हो ॥ जा०॥ १७ ॥ एकांते वेहु जण वेसी, वात करतां नारी व्हेसी हो ॥जा०॥ तुमे दिलगीर मत थाउं, मेलुं नहीं जीव जो जाउं हो ॥जा० ॥ १८ ॥ प्रपंच करुं एक एहवो, आपण भेलां रहुं तेहवो हो ॥जा०॥ तो मुजने साची जाणो, तुमे दुःख हृदए मत आणो हो ॥ जा०॥ १९ ॥ जगनदत्ता तब चाली, मध्य रात्रि काली करवाली[1] हो ॥जा०॥ पहेला खंडनी सातमी ढाल, नेमविजय कहे ततकाल हो ॥ जा० ॥ २० ॥

दुहा.

मसाणमां गइ एकली, आण्यां मडां वे रंग ॥ एक मूक्युं निज ढोलीए, अवर उंटला चंग ॥ १ ॥ धन सघलो काढी लीयो, घरे लगावी आग ॥ मध्य रात्रि दो नीकल्यां, चाल्यां उत्तर भाग ॥ २ ॥ मंदिर लाग्युं अति घणुं, मलीया लोक अपार ॥ करता हाहाकार त्यां, सर्व बल्युं तेणी वार ॥ ३ ॥ जब ठांटीने उलव्युं, बल्यां दीठां

१ तरवार.

वेदु त्रिन्न ॥ शोक करे ब्राह्मण घणा, थया खेदथी खिन्न ॥ ४ ॥ राम राम सहु उचरे, सती शिरोमणि तेह ॥ मीठांबोली गोरडी, एहवी नहीं गुणगेह ॥ ५ ॥ विष्णु विष्णु एक कहे, मोटो हुउं अखत्र ॥ गुरुभक्ति विचारथी, भस्म थयो द्विज पुत्र ॥ ६ ॥ शोक करे जन त्यां घणा, कीधां स्नान अपार ॥ ब्राह्मण सहु विचारता, नफर मेलीए सार ॥ ७ ॥ लेख लखीने ब्राह्मणे, नफर मूक्यो निरधार ॥ भूतमति आवो जलद, ढील म करो लगार ॥ ८ ॥ चली गयुं घर तम तणुं, विचारथी वनिताय ॥ अगनिमां बलीयां वेदु, थयुं अघटतुं आंय ॥९॥ उना नव रहेशो तिहां, पाणी पीवा काज ॥ दहन थयुं घर तुम तणुं, घणुं शुं लखीए राज ॥ १० ॥

ढाल आठमी.

ढोलो ठे मुख मारुरे, एहनी आंखमीए झलक्यो दारुरे, मारा धणुंरे सवाइरे ढोला—ए देशी.

मथुरां पहोंतो क्षिप्र, जिहां भूतमति ठे विप्ररे ॥ मारा परम सनेही सुणजो ॥ ए टेक ॥ करी प्रणाम पत्र दीधो, भूतमतिए हाथे लीधोरे ॥ मा० ॥ १ ॥ शोक आण्यो मन मांहीं, दुःख दोहग उपन्यो त्यांहिंरे ॥ मा० ॥ आव्यो कंठपुर शीघ्र, घर परजल्यो दीठो विघरे॥ मा० ॥ २ ॥ मूरछा आवी ततकाल, तिहां सखीयां बाल गोपालरे ॥ मा०

कीधो सचेत तेणी वार, मांड्यो करवा पोकारे ॥ मा० ॥ ३ ॥ हैयुं दहे माथुं कूटे. हाहा देव शुं चुंटेरे ॥ मा०॥ एहवी नहीं मले नारी, घरनुं सुख गयो हुं हारीरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ मस्तक मूछना केश, लोच करे छोडी वेशरे ॥ मा० ॥ आंसुनी धार विछुटी, पडी धारु जाणे लीधी लुंटीरे ॥ मा० ॥५॥ जगनदना गुण नारी, मुज मूकी गइ निरधारीरे ॥ मा०॥ तुं प्राणप्रिया गुण नारी, मुज दर्शन दे एक वारीरे ॥मा०॥६॥ तुज चंद्रवदन हरीलंक, कनक कलश कुच शंकरे ॥मा०॥ तुज विण हींसुं हुं रंक, मुज मेली गइ विण वंकरे ॥ मा० ॥ ७ ॥ अगनि देव तें शुं कीधुं, मुज रामा प्राण हरी लीधुं ॥ मा० ॥ अरे पापी तुं देव ब्रह्म, हत्या कीधी तें सेवरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ मुज हरि हर ब्रह्मा मूक्या, सघला पड्या ते जूठारे ॥ मा० ॥ करता गोत्रजनी सेव, ते नाठा गुरुकुल देवरे ॥ मा० ॥ ९ ॥ विद्यारथी तुं पवित्र, परदुःख भंजननो मित्ररे ॥ मा० ॥ हाहा द्विजवर पुत्र, किम रहेशे तुज घर सूत्ररे ॥ मा० ॥ १० ॥ ब्रह्मचारी तुं धीर, परस्त्रीना सहोदर वीररे ॥ मा० ॥ तुं सुतो उंटला तीर, तुज लाहे वह्युं शरीररे ॥ मा० ॥ ११ ॥ मरजो ए ब्राह्मण पापी, मुज तेडी गया मीसापीरे ॥ मा० ॥ यज्ञ कारण सहु व्यापी, मुज घरधरणी जम्मापीरे ॥ मा० ॥ १२ ॥ तिणे अवसर ब्राह्मण एक, आवी कहे वातो विवेकरे ॥ मा० ॥ नारी कारण

तुमे एम, दुःख भोगवो तो खोटुं जेमरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ प्राये नारी कही छे खोटी, कूड कपटनी मति छे त्रोटीरे ॥मा०॥ देखानी पात नवि खोले; सनावे जूठुं बोलेरे ॥मा०॥१४॥ चार फार अशुचिनां नाम, खोनी निरवयनी छामरे ॥ मा० ॥ शोक करो किण काम, लोक मांही जाशे तुम मामरे ॥मा०॥ १५ ॥ तुमे पंडित मोटा जानी, तण्या गण्या तो गुण ज्ञानीरे ॥ मा० ॥ धरी वैराग मन मांही, राम नाम लाजे उछांहीरे ॥ मा० ॥ १६ ॥ भूतमति सांभली कोप्यो, ब्राह्मणनो वयण ते लोप्योरे ॥ मा० ॥ तुं शुं जाणे अजाण, मुज आगे पात परमाणरे ॥ मा० ॥ १७ ॥ हरि हर ब्रह्मादिक जेह, नारीने वश पड्या तेहरे ॥ मा० ॥ अम सरिखा पातक पंड्या, शास्त्र विद्यानी वाते मंड्यारे ॥ मा० ॥ १८॥ मति तुं अमने आपे, एहवी बुद्धि अमारी उथापेरे ॥ मा० ॥ महा रांमना जा तुं छहांथी, मति देवा आव्यो छे क्यांथीरे ॥ मा० ॥ १९ ॥ ते ब्राह्मण गयो एम वारी, भूतमतिए बुद्धि विचारीरे ॥ मा०॥ पछेखे खंडे कही वाख आव,नेमविजय कहे जुउं वाव रे॥मा०॥२०॥

दुहा.

मेरु तुंग हाथे पडी, अस्थि पाड्यां मांही ॥ स्त्री विद्यारथी छे तणां, खड़ चाड्यो उछांही ॥ १ ॥ गंगाजी जात्रा तणी, मारग जातां गाम ॥ आव्यो एमां ए गयो,

सहगो विद्यारथी नाम ॥ २ ॥ नृतमति [illegible] श्रावी [illegible] पाय ॥ विद्यारथी
धुं तुम तणा तुम पंडित महाराज [illegible] माय ॥
पगे लागवा आवीउं मारा [illegible] मायप [illegible] श्रा
॥ आवीने इहा रह्या [illegible] मजन [illegible] नृतम [illegible]
पुत्र ॥ कुण तु क्याथी आवीउं [illegible] ब्रह्मचारी
अम नार ॥ देवदत्त विद्यारथी [illegible]
मांही जेह ॥ गंगाजी मात जेह [illegible] श्रा [illegible]
देवदत्त कुमार ॥ [illegible] बेठा [illegible]
जाणी आव्यो पास ॥ पगे लागान विनव [illegible] ॥ १० ॥

ढाल नवमी.

कपूर हवे अति उजला [illegible] देशी.

कामनी कहे स्वामी सुणोरे, संजाखा पुरव प्रीत ॥ वरूपण परणया मुजनेरे, राखो तेहीज रीतरे ॥ साजन साजखजा सहु कोय ॥ ए आंकणी ॥१॥ कांय जाणी कहे निहारे, तुं केहेनी कहे रांड ॥ आ गाम तणां लोक एहवारे, फोक बोले मांड मांडरे ॥सा०

॥ २ ॥ मुज रामा सती निरमलीरे, अगनिमां परजली तेह ॥ विचारथी मुज नारीनांरे, अस्थि लइ जाउं एहरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ मनोवेगे कथा कहीरे, सांभलो विप्र विचार ॥ अज्ञानी तेणे वापडेरे, वचन न मान्युं साररे ॥ सा० ॥ ४ ॥ भूतमतिए जेम कह्योरे, तेम तुमे करशो आज ॥ सत्य वचन मुज बोलतांरे, नवी मानो गुणभाजरे ॥ सा० ॥ ५ ॥ कथा सुणी द्विजवर कहेरे, सांभलो तुमे कुमार ॥ एवो नहीं अममां कोइरे, स्त्रीमोही मूढ गमाररे ॥ सा० ॥ ६ ॥ सत्य वचन तुम भाषतांरे, द्विजवर नहीं आणे खेद ॥ जेवुं होय तेहवुं कहोरे, अमे करी मानशुं वेदरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ तुमने देखी अम तणेरे, कौतिक उपजे आज ॥ राजकुमार रलियामणारे, केम कीजे नीच काजरे ॥ सा० ॥ ८ ॥ रूप सोभागे रुयडारे, हीन करम वली कांय ॥ विहु वानां घटतां नथीरे, स्वरूप कहो वली तायरे ॥ सा० ॥ ९ ॥ मनोवेग तब बोलीउरे, सांभलो भद्र विचार ॥ एकमना मन आणजोरे, उत्तर देजो साररे ॥ सा० ॥ १० ॥ राजकुमर अमे रुयडारे, नीच करुं वली काम ॥ ते वेहु वानां घटतां कहुंरे, ब्राह्मण सुणजो तामरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ पूर्वापर विचारजारे, करजो वचन विचार ॥ विष्णुवाद कहुं रुयडोरे, संक्षेपे छे ते साररे ॥ सा० ॥ १२ ॥ जमुना नदी रलीयामणीरे, तेह तणे उपकंठ ॥ गोकुल वन विस्तार

ठेरे, तिहां वसे श्रीकंठरे ॥ सा० ॥१३॥ नारायण देव तुम तणोरे, चौद भुवन विख्यात ॥ चौद भुवन मुखमां वसेरे, शत्रु तणो करे घातरे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पुरुषोत्तम पवित्र भलोरे, चौद भुवननो राय ॥ लोक सहुने उंधरेरे, वांदे तेह तणा पायरे ॥ सा० ॥ १५॥ शंख चक्र गदा धरेरे, सारंग धनुष वली सार ॥ मस्तक मुगट सोहामणोरे, कंठे एकावल हाररे ॥ सा० ॥ १६ ॥ काने कुंडल झलकतांरे, वहेरखा वांहिं अपार ॥ सोल आभूषण शोभतांरे, गुण नवि लाभे पाररे ॥ सा० ॥ १७॥ दामोदर एहवो कह्योरे, अथवा साचुं के जूठ ॥ विप्र विचारी बोलजोरे, उचरीए नहीं कुठरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ पुराण प्रसिद्ध ए जाणीएरे, महीतल मोटो देव ॥ तुम वचन मान्यां खरांरें, अमे करीए एनी सेवरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ ब्राह्मण तव सहु हरखीयारे, कर जोडी कहे सार ॥ साचां वयणां तुमे कह्योरे, खोटां नहीं लगाररे ॥ सा० ॥ २० ॥ ए वात साची अमे लहुंरे, तुमे कही ततकाल ॥ पहेले खंडे मुनि भलीरे, नेमविजय उजमालरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

दुहा.

मनोवेग तव बोलीउं, सुणो द्विजवर वाण ॥ नंद गोप गोवालीउं, नीच कुले ते जाण ॥ १ ॥ गाय भेंस तेहने घणी, ठालांनो नहीं पार ॥ ते सहु चारे कानुडो, वारु वन

मोकार ॥ कानो कर काछी धरी, गले गुंजानो हार ॥ मस्तके कुल केशु तणा, [illegible] कागल सार ॥ ३ ॥ वंशी वाये सुर कडो, मधुकर करे सुनाद ॥ नारायण गोवालीयो, गाइ करे वली साद ॥ ४ ॥ गोकुल गोखणीजुं रमे, गाढे तेहज ढोर ॥ कडो त्रिभुवन नाथ ते, नीच करम करे घोर ॥ ५ ॥ राजकुंवर रुडा अमे, नीच करम करुं जेम ॥ विश्वनाथ वली वीनवो, नीच करम कीयां तेम ॥ ६ ॥ सामान्य करम जे आचरे, ते केम कहीए देव ॥ खोटुं के साचुं कहो, विप्र विचारो हेव ॥ ७ ॥ तब ते ब्राह्मण बोलीया, सत्य वचन जे होय ॥ उत्तर दीधो जाय नहीं, वेद पुराणे सोय ॥ ८ ॥ अमे ते (कहो) किम लोपीए, तुमने करुं प्रणाम ॥ घटतां वचन वली कह्यां, गुणह तणां तुम धाम ॥ ९ ॥

ढाल दशमी.

काविखरो पाणी लागणो, काविख मत चाल्यो—ए देशी.

मनोवेग पोखे इस्युं, पुराणनी कहुं वातो ॥ हस्तीनागपुर जाणीए, पांडव पांच विख्यातो ॥ १ ॥ भीम युधिष्ठर अर्जुन, सहदेव नकुल कुमार ॥ पांच भाइ सुभट भला,

१ पणोती.

केम आवीया. सफल जमारा थाय ॥ ९ ॥ नारद बोल्या नतविणे, विरोचन सुखनी खाण ॥ तुम परणीने जाइने अमने सफल विहाण ॥ १० ॥

टाल बारमी.

फुलडी ते काजल सारे ए ना जमर नजारा मारे राज ॥ ए नो फुलडीनो रूप रंग जाजो—ए देशी.

राजाए तब आणी नार राज. कर कांकण छोड्युं तेणी वार राज ॥ तुमे सांभलजो सहु कोइ ॥ ए आंकणी ॥ नारायण हुवा तब त्यार राज. विस्मय पाम्या लोक अपार राज ॥ तु० ॥१॥ एक कहे कारण केस्युं राज. नांदी जेवडुं पेटज एस्युं राज ॥ तु० ॥ एक कहे नारायण नोहे राज, विपरीत रूप सही सोहे राज ॥ तु० ॥२॥ एक कहे गोविंदनी लीला राज, देव चरित्र जाणे नवि सीला राज ॥ तु० ॥ एक कहे केम वाध्युं पेट राज, जइ पूछीए राजाने छेव राज ॥ तु० ॥३॥ तब पूछ्या विरोचन राज राज, तुमे शुं कीधुं एह अकाज राज ॥ तु० ॥ विष्णु तणुं वधार्युं पेट राज, पापे करी जाशो तुमे हेठ राज ॥ तु० ॥४॥ राजा तब कांसो थयो त्यांहि राज, काढुं मुख खेइ गयो घर मांहीं राज ॥ तु० ॥ दुःख सोग करे अपार राज, हुं केम छुटीश एह संसार राज ॥ तु० ॥ ५ ॥ हर ब्रह्माए तेड्या

ताम राज, विष्णु देव पधारो आम राज ॥ तु० ॥ कहो कारण हुवुं छे केहवुं राज, विपरीत रूप दीसे एहवुं राज ॥ तु० ॥ ६ ॥ नारायणे कह्युं तव मांमी राज, शरीर वितक जेवुं लह्युं छांमी राज ॥ तु० ॥ खमखड ते सहु हसीया राज, सांभली वात अचंबे वसीया राज ॥ तु० ॥ ७ ॥ महादेवे हाकोव्या अति घणा राज, काला मुख हुआ तेह तणा राज ॥ तु० ॥ देव दामोदर त्रिभुवन राय राज, सहुको लागे एहने पाय राज ॥ तु० ॥ ८ ॥ प्रीछ्या वचन महेसर मली राज, पूज्या पाय नारायणना वली राज ॥ तु० ॥ क्षमा करजो स्वामी हे देव राज, अमे अपराधी हुवा ततखेव राज ॥ तु० ॥ ९ ॥ सघला मली विमासण करे राज, गर्व काढशुं हवे केणी परे राज ॥ तु० ॥ ब्रह्मा शंकर बोल्या भेद राज, जांग वाढी करी काढो छेद राज ॥ तु०॥१०॥ तेह वचन मनमां धरी राज, देव सघले हास्यज करी राज ॥ तु०॥ जोर करी काढ्युं छोकरुं राज, ते कारण बलि नामज धर्युं राज ॥ तु० ॥ ११ ॥ विष्णु सदन वैकुंठज थया राज, देव सहु निज धामज गया राज ॥तु०॥ मनोवेग कहे कह्यो संखेव राज, अवर पुराण सांभलजो हेव राज. ॥ तु० ॥ १२ ॥ बलि राजा बलवंता जाम राज, राज रिद्धि पाम्यो तेणे ठाम राज ॥ तु० ॥ अपूरव इंद्र थवा तणी राज, इछा

उपनी मनमां घणी राज ॥ तु० ॥१३॥ जगन मांड्यो हवे तेणे क्षिप्र राज, अनेक तेमा-
व्या त्यां विप्र राज ॥ तु० ॥ होम हुताशन परजले राज, पुण्यदान दे जे नर मले राज
॥ तु० ॥ १४ ॥ जाग नवाणुं थया जब पूरा राज, कंप्युं इंद्रासन थइ सनुरा राज
॥ तु० ॥ ज्ञाने करी विचार्युं जेह राज, मुज पदवी लेशे सही तेह राज ॥ तु० ॥१५॥
विष्णु मंदिर मथवा गयो राज, सांजल गोविंद वात उजयो राज ॥तु०॥ बलि राजा
जगन बहु करे राज, मुज पदवी तणो घातज हरे राज ॥ तु० ॥१६॥ कूम रचो जगनाथ
देव राज, नाश करो दैत्य तणो ततखेव राज ॥ तु० ॥ बलिने छलो करीने उपाय राज,
आश पुरो मनोरथ थाय राज ॥ तु० ॥ १७ ॥ कृपा करी बोल्या तब हरि राज, जाउं
तुमे आपणे गाम फरी राज ॥ तु० ॥ निज पदवी भोगवो जाइ राज, अमे करशुं
काम तुम साइ राज ॥ तु० ॥ १८ ॥ रच्यो दामोदरे विचार राज, काश्यप ऋषि तस
नार राज ॥ तु० ॥ आदिति नामे कही नार राज, तेहनी कूखे लीयो अवतार राज
॥तु० ॥ १९ ॥ जाणीए त्रेतायुग मांही राज, वामन रूप धरी उछांही राज ॥ तु० ॥
पहेले खंडे बारमी ढाल राज, नेमविजय कहे तेणे ताल राज ॥ तु० ॥ २० ॥

दुहा.

लीयो अवतार ए पांचमो, वसिष्ठ गुरु छे तास ॥ नित्य नमे ते गुरु तणी, राखीने विश्वास ॥ १ ॥ भृगु क्षेत्र तणी चालीयो, बांधवा बलिने उपाय ॥ जाग मंडपमां आवीयो, सो सज्जन पुंछे थाय ॥ २ ॥ हाथ पाय डुंका अठे, धोतकपांवर अंग ॥ चुयांचली वाली काछडी, मस्तक फालीउं चंग ॥ ३ ॥ ठाग लीयो कर एकवडो, दर्भ डुर्वा वली लीध॥ कंठ जनोइ निरमली, कसवटे टीपणुं कीध ॥४॥ द्वादश तिलक कर्यां भलां, चार भणे मुख वेद ॥ अचंभ्या द्विज देखीने, अपर वचन हुवा छेद ॥ ५ ॥ काठीभरे पूछ्यो वामणा, कहोजी स्वरूप तुम देव ॥ द्विज बोल्यो भाइ आवीयो, जाचवाने बलि देव॥ ६ ॥ हुं भीखारी ब्राह्मणो, अमने मेखवो भूप ॥ रखवाखे जइ विनव्युं, वामन कणुं स्वरूप ॥ ७ ॥ बलि आव्या वामन कने, वेद सुणी हरख्यो चित्त ॥ कर जोडीने बलि भणे, मागो वंछित वित्त ॥ ८ ॥ देश गाम मागो घणां, मागो मंदिर कलत्र ॥ गाय भैंस मागो इकती,गज रथ घोडा छत्र ॥ ९ ॥ मणि माणिक मोती घणां,भू कनक रूपुं फार॥ शुक भणे सांभल बलि, विप्र नहीं ए सार ॥ १०॥

धणीजी, सेवकने सुख थाय ॥ वामन रूप करी आवीयाजी, जय जय हुवा जग मांय ॥ सु० ॥९॥ तुठ्या तो आपो दामोदराजी, सेवावरती थाउं सार ॥ मुज किंकरपणुं तमे करो जी, काठी धरी रहो वार ॥सु०॥१०॥ सदा विष्णु सेवक थयाजी, काठी धरी रह्या हाथ ॥ वचन पांध्या दुःखीआ थयाजी, कष्ट पाम्या जगनाथ ॥सू० ॥ ११ ॥ दीवाखीए छाण तणोजी, वधि राणो करे लोक ॥ गोयर घरघर आपीएजी, कृष्ण तणां करी फोक ॥ सू० ॥ १२ ॥ वेद पुराणे कथा कहीजी, विप्र जाणो तुमे भेद ॥ खोटुं के साचुं होयेजी, कहो विचारी वेद ॥सू०॥ १३ ॥ विप्र वचन वखतुं कहेजी, खोटुं नहींय लगार ॥ वेद पुराणे भाखीयोजी, सत्य वचन तुम सार ॥ सू० ॥ १४ ॥ मनोवेग वली बोलीयोजी, सांभलो विप्र सुजाण ॥ लोककथा कहुं एक भलीजी, मधुरी सुललित वाण ॥ सू० ॥ ॥ १५ ॥ दक्षिण देश मांहे भलोजी, गाम ते वसे कच्छ नाम ॥ श्रीपुरजी सुविचार छे तिहांजी, नामो सुत सइ काम ॥ सू० ॥ १६ ॥ श्रीपुरजी हरिभक्त हवेजी, विष्णु देहरे नित्य जाय ॥ पंचामृत थाली करीजी, तेह विण अन्न न खाय ॥ सू० ॥ १७ ॥ श्रीपुरजी परगाम चालतांजी, नामा सुतने देइ शीख ॥ दामोदर देरे जाजे सहीजी, जेम तुज टले भवभीख ॥ सू० ॥ १८ ॥ पंचामृत भोजन देजोजी, एम कही चाल्यो

ढाल तेरमी.

वीर वखाणी राणी चेलणाजी—ए देशी.

वामन रूप धरी केशवोजी, कपट करी मागे दान ॥ ठेतरशे तुने ठल करीजी, जजमान गइ तुज सान ॥ सूरिजन सांभलजो कथाजी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दान म देजो एहनेजी, मानो अमारो तमे बोल ॥ बलि बोल्या मम बोलनोजी, शुक्र तमे नवी जाणो तोल ॥ सू० ॥ २ ॥ वासुदेव जाचक थइ आवीयाजी, धन धन मुज अवतार ॥ जे जोइए ते मागो वामणाजी, राज रिद्धि आपुं अपार ॥ सू० ॥ ३ ॥ वामन वाडव बोलीयोजी, मारे नहीं बहु काज ॥ मढली करवाने कारणेजी, त्रिण क्रम थो महाराज ॥ सू० ॥ ४ ॥ आणी उदक कोरे करवमेजी, दान दीए बलि सार ॥ जाचक मोटा श्रीकंठनेजी, हस्त मांहीं धरे जलधार ॥ सू० ॥ ५ ॥ नाखुउं शुक्रे रुंधीउंजी, डाभ घाली फोड्युं नेत्र ॥ दानव गुरु काणो हुउंजी, स्वस्ति कह्यो द्विज मित्र ॥ सू० ॥ ६ ॥ नारायण अंग वधारीयोजी, ब्रह्मलोके लाग्यो शरीर ॥ भूमि सघली भरी बेहु क्रमेजी, एक क्रम मागे ते धीर ॥सू०॥ ७ ॥ बलि राजाए पुंठ धरीजी, वचन राखवाने काज ॥ वैकुंठे पग मूक्यो श्रीजोजी, चांपवा लाग्यो बलि राय ॥ सू० ॥ ८ ॥ तुष्टमान हुवा जग-

धणीजी, सेवकने सुख थाय ॥ वामन रूप करी आवीयाजी, जय जय हुवा जग मांय ॥ सु० ॥९॥ तुष्या तो आपो दामोदराजी, सेवावरती थाउं सार ॥ मुज किंकरपणुं तमे करो जी, काठी धरी रहो वार ॥सु०॥१०॥ महा विष्णु सेवक थयाजी, काठी धरी रह्या हाथ ॥ वचन बांध्या दुःखीआ थयाजी, कष्ट पाम्या जगनाथ ॥सू० ॥ ११ ॥ दीवाखीए ठाण तणोजी, वप्रि राणो करे लोक ॥ गोयर घरघर थापीएजी, कृष्ण तणां करी फोक ॥ सू० ॥ १२ ॥ वेद पुराणे कथा कहीजी, विप्र जाणो तुमे भेद ॥ खोटुं के साचुं होयेजी, कहो विचारी वेद ॥सू०॥ १३ ॥ विप्र वचन वखतुं कहेजी, खोटुं नहींय लगार ॥ वेद पुराणे भाखीयोजी, सत्य वचन तुम सार ॥ सू० ॥ १४ ॥ मनोवेग वली बोलीयोजी, सांभलो विप्र सुजाण ॥ लोककथा कहुं एक भलीजी, मधुरी सुखखित वाण ॥ सू० ॥ ॥ १५ ॥ दक्षिण देश मांहे भलोजी, गाम ते वसे कच्छ नाम ॥ श्रीपुरजी सुचिकार छे सिद्धांजी, नामो सुत सइ काम ॥ सू० ॥ १६ ॥ श्रीपुरजी हरिभक्त हवेजी, विष्णु देहरे नित्य जाय ॥ पंचामृत थाली करीजी, तेह विण अन्न न खाय ॥ सू० ॥ १७ ॥ श्रीपुरजी परगाम चालतांजी, नामा सुतने देइ शीख ॥ दामोदर देरे जाजे सहीजी, जेम तुज टले भवभीख ॥ सू० ॥ १८ ॥ पंचामृत भोजन देजोजी, एम कही चाल्यो

गाम ॥ दूध लइने नामो गयोजी, हरिनुं उचरे नाम ॥ सु० ॥ १९ ॥ दूध लइने मुख आगलेजी, कहे पीयो नारायण देव ॥ पाषाण विंव बोले नहींजी, बालक रडे पडे खेव ॥ सू० ॥ २० ॥ तव हरिने दया उपनीजी, दूध पीधुं ततकाल ॥ पहेले खंडे ढाल तेरमीजी, नेमविजय सुविसाल ॥ सू० ॥ २१ ॥

दुहा.

सुचिकार श्रीपुरजी, तेहनो सुत ततकाल ॥ तुठ्या नारायण नामाने, भगति भलो ए वाल ॥१॥ एक वार नामो जमे, जमतां चिंते ताम ॥ आवे नारायण इण समे, भाखरी आपुं राम ॥ २ ॥ ज्ञानदृष्टे करी जोइयुं, (नामो) जोये माहरी वाट ॥ श्वान रूप धरी आवीया, दीठो भाखर थाट ॥ ३ ॥ दोय चार मुखमां ग्रही, नाठा श्वान तिणे रूप ॥ नामो पुंठे धाइउं, ग्रही लेउं हरि भूप ॥४॥ आघा जइ रूप फेरव्युं, नामो गयो निज गेह ॥ नामो घर ठांये एकलो, विष्णु आव्या स्वयं देह ॥ ५ ॥ गोविंदे घर ठांइउं, (घर) ठेंडी नामे कीध ॥ पोली लइ हरि हरखीया, पोहोता वैकुंठ सिद्ध ॥ ६ ॥ विप्र सुणो तमे बुद्धिवला, नीच करम कीया देव ॥ पुराण वचन लोक वातथी, सत्य के जूठुं हेव ॥ ७ ॥ विष्णु उदर मांही भला, चौद भुवन रहे थेट ॥ वलि राजाए

किंकरी, मोटो हुवो केम पेट ॥ ८ ॥ माह्या थइ विचारजो, गर्भ अश्व न होय ॥ पुरुष नारी केम संजवे, विप्र विचारी जोय ॥ ए ॥ चौद भुवनपति जे कह्यो, ते केम वामन वास ॥ दीन भीखारी मांगणो, बलि जाच्यो थइ दास ॥ १० ॥

ढाल चौदमी.

हमिरीया तारा ने मारा टोडीया, चरता एकण नाल–ए देशी.

लोक प्रसिद्ध वली सांभलो, दामोदर थया श्वान ॥ सनेही ॥ नामा सुझी नाखरी, लेइ नाठा भगवान ॥ सनेही ॥ सूरिजन सांभलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ घर छायो नामा तणो, पोखी आपी कान ॥ स० ॥ नीच करम नहीं ए थकी, विचार करो सावधान ॥ स० ॥ सू० ॥ २ ॥ दोय वानां नवि संजवे, भुज माता एह विध्य ॥ स० ॥ नारी बेटा घर घणां, ब्रह्मचारी काठबंध ॥ स०॥ सू० ॥ ३ ॥ परनारी चंडाउली, राधा गोवालणी जेह ॥ स०॥ जोगवी स्त्री गोवालणी, न्यायवंत किम तेह ॥स०॥सू०॥ ४ ॥ सिद्ध स्वरूपी जे हवा, ते किम धरे अवतार ॥स०॥ पहेलो अवतार मच्छ तणो, संखासूर संहार ॥ स० ॥ सू०॥ ५ ॥ बीजो अवतार कच्छनो,केटन मार्यो ताम ॥ स०॥ नव त्रीजो वाराहनो, दाणव मार्यो ठाम ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ चोथे नरसिंह

अवतर्या, हिरणकश्यपनो नाश ॥ स० ॥ पांचमे वामन रूप लीयो, बलि चांप्यो भूमि पास ॥ स० ॥ सू० ॥ ७ ॥ फरसराम छठे सुणो, सहसार्जुन फेड्यो ठाम ॥ स० ॥ सातमे राम हुवो भलो, रावण टाल्युं नाम ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥ केशव आठमे अवतर्यो, जरासिंध हण्यो कंस ॥ स० ॥ अढार क्षोणी दल रण हण्यो, क्षय कर्यो जादव वंश ॥स०॥सू०॥ ९ ॥ नवमो बोध भवांतरे, म्लेच्छ मांही कीधो व्याप ॥स०॥ दशमे कलंकी राजीउं, जननी चंडालणी द्विज बाप ॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ एकाकार करी घणुं, अचरावे अनाचार ॥स०॥ देव निरंजन जे हवा, ते केम लीये अवतार ॥स०॥सू०॥ ११ ॥ घृत जेम दूध ते नवि थाये, सिद्ध संसारी न होय ॥ स०॥ पाको धान मही नवि उगे, सिध्यो जीव तेम जोय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ पाषाण मथी सोनुं काढीयुं, ते केम पत्थर थाय ॥ स०॥ कर्म हणी जे सिद्ध हुवा, ते केम पुद्गल पाय ॥स०॥सू० ॥ १३ ॥ देव दयाल नर जे कह्या, केम करे जीव संहार ॥ स० ॥ राग द्वेष मद मच्छर नहीं, दैत्यने किम ते मार ॥स०॥सू०॥ १४ ॥ नारी विजोग पड्यो रामने, सीता सीता पोकार ॥ स० ॥ नर तरु पशुने पूछे घणुं, दरशन होशे मुज नार ॥स०॥ सू०॥ १५ ॥ सर्वज्ञ ते जाणे सहु, पूछे वीजाने केम ॥ स० ॥ चौद भूवन मुख मांहि छे, चढे केम लंका जेम

॥स०॥ सू० ॥ १६ ॥ चित्र विचारो देवनां, लक्षण कहीए संखेव ॥ स०॥ सिद्ध स्वरूपी जे होये, तेहने ए नहीं टेव ॥ स० ॥ सू० ॥ १७ ॥ दूध मांहि घृत रस रहे, चिन्हा-नल काष्ठ मांहि ॥ स० ॥ तिल मांहि तेल जिम रहे, जीव कलेवर मांहीं ॥ स० ॥ सू० ॥ १८ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तणा, जे कला पालणहार ॥ स० ॥ लख चोराशी फेरीने, नावे नर अवतार ॥ स० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ध्यान शुकल मन ध्यावतां, मुगति रमणी होये हाथ ॥ स० ॥ पहेले खंडे ढाल चोदमी, नेम कहे सांभलो साथ ॥ स० ॥ सू० ॥ २० ॥

ढुहा.

रूप रस गंध वरण नहीं, उदादिकादि नांहिं ॥ जेह निरंजन नित्य छे, ज्ञान-गम थाये त्यांहिं ॥ १ ॥ ते विष्णु सदाशिव तणी, ते किम कहीए देव ॥ अवर अज्ञानी जे नरा, तेहनी करे छे सेव ॥ २ ॥ नाम मात्र जे उपन्या, गुण अवगुण जे होय ॥ बुद्धि विना केम उपजे, सुणो वात सौ कोय ॥ ३ ॥ वलतो उत्तर केम होये, चित्र तणां गन भंग ॥ हाथ जोडी प्रणिपति करी, कहे सहु अनुषंग ॥ ४ ॥ वाद करंता हारीया, जीत्या तमे मेहु जाय ॥ कथा कहो कोइक नवी, सांभलवा होंश थाय ॥ ५ ॥ मनोवेग बोल्यो तिहां, संखेपे कहुं एक ॥ गणेश विचार विवरी करी,

ब्राह्मण सुणो विवेक ॥ ६ ॥ नीच उंच कर्मो कर्या, ब्राह्मण सुणजो मर्म ॥ धूरथी मांगीने कहुं, ए देवमां श्यो धर्म ॥ ७ ॥ गौरी नंदन गणपति, सकल देवमां सार ॥ प्रथम विनायक सहु जपे, विघन हरे नर नार ॥ ८ ॥ गजवदन गिरुउ अछे, डुंदालो वीदार ॥ मूषक वाहन शुभगति, पाय घुघरी घमकार ॥ ९ ॥ सिद्धि नामे नारी छे, लक्ष लाभ वली देय ॥ मोटा मोदक आपे सही, कुटुंब मागे सहु तेय ॥ १० ॥ महीमां मोटो देवता, सुर नर सारे सेव ॥ प्राणीनां विघन हरे, काम करे ततखेव ॥ ११ ॥ विवाह कागे पूजीए, (घर) हाट वखारे तेह ॥ गणपतिने संभारीए, अवसर आवे एह ॥ १२ ॥

ढाल पंदरमी.

मीहरीया मन लाग्यो–ए देशी.

रावण विमासे मन इस्युं, आराधन करुं देवरे ॥ साजन सांभलो ॥ विनायक आवे जो इहां, विघन भांजे सहु देवरे ॥ सा० ॥ १ ॥ प्रपंच रची साधुं एहने, पठी सुर नर साधुं जेहरे ॥ सा० ॥ किंबहुना गणेश साधीउं, बंधीखाने घाल्यो तेहरे ॥ सा० ॥ २ ॥ विघनराजे हाथ जोडीया, विनवीयो रावण रायरे ॥ सा० ॥ काज तमारां स्वामि हुं

करुं, अहनीश सेवुं पायरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ रावणे मूक्यो विनायक नणी, रासन चरावो
देवरे ॥ सा० ॥ काठी नारो खेता आवजो, दातरडुं कोहाडो देवरे ॥ सा० ॥ ४ ॥
रासन चारे रावण तणा, नीच करम करे निखरे ॥ सा० ॥ नारो छेद मस्तक प्रते,
रासन हांके एणी रीतरे ॥ सा० ॥५॥ खरु काणी नारो करे, अणउपनो छीए शिशरे
॥ सा० ॥ आणी चारे रासन नणी, करम नोगवे निशदिशरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ रासन
राख्या नवी रहे, वाडि कांपरनी करे तामरे ॥ सा० ॥ विघनराज करणी करे,
पाप तणुं फल आमरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ करम करे देव गहवां, तो अमने श्यो दोषरे ॥
सा० ॥ विचार संखेपे करी कह्यो, ब्राह्मण राखजो संतोषरे ॥ सा० ॥८॥ मनोवेग तब
बोलीयो, सांनलो वाम्य वातरे ॥ सा० ॥ खोटुं के में साचुं कह्युं, उत्तर देजो ब्रातरे॥
सा० ॥ ९ ॥ विप्र वचन वखतां नण्या, सत्य वचन तुमे नायरे ॥ सा० ॥ वेद पुराणे
एम कह्युं, ते अम केम लोपायरे ॥ सा० ॥ १० ॥ मित्र वदन अवलोकीयुं, सामुं जोयुं
तामरे ॥ सा० ॥ समस्या करीने आवीया, पूरवले वन गामरे ॥ सा० ॥११॥ पवनवेग
प्रतिबोधता, मनोवेग कहे सारे ॥ सा० ॥ पूर्वापर विरोध नहीं, जैनसूत्रे सुविचा-

रे ॥सा०॥१२॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग तुमे सारे ॥सा०॥ नारायणउत्पत्ति कहुं, जैनशासननो विचारे ॥सा०॥१३॥ सुखम सुखम पहेला जएयो, बीजो सुखमज काखरे ॥सा०॥ सुखम दुखम त्रीजो सुण्यो, दुखम सुखम सुविशाखरे॥सा०॥१४॥पांचमो दुखम दोहीलो, दुखम दुखम विकराखरे ॥सा०॥ नाम तेहवां परिणाम छे, चडतो पडतो छे काखरे ॥सा०॥ १५ ॥ सुखम दुखम अंते अवतर्या, आदिनाथ जवताररे ॥सा०॥ तेहनो पुत्र भरतेसरो, प्रथम जिन चक्री ते सारे ॥सा०॥ १६ ॥ चोथे काखे त्रेवीश हुवा, तीर्थंकर गुणधारे ॥ सा० ॥ अजितादि ए जाणजो, महावीर अंतिम सारे॥सा०॥ १७ ॥ भरतादिक ब्रह्मदत्त लगे, चक्री द्वादश जाणरे ॥ सा० ॥नव नारायण निरमला, त्रिपिष्ट आदि सुख खाणरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ हयग्रीव आदे जरासंध ये, पर्यंत नव ए होयरे ॥ सा०॥ प्रतिनारायण चक्रधरा, अढार अधोगति जोयरे॥ सा० ॥१९॥ विजय हलधर पूरे कह्यो, अंते महापद्म नामरे ॥सा०॥ नव बलभद्र बलवंत भला, ऊर्ध्वगामी अभिरामरे॥ सा० ॥ २० ॥ त्रिपष्टि पुरुष ए रुपडा, भव्य जीव भवताररे ॥ सा० ॥ पन्नरमी ढाल पहेला खंडनी, नेमविजय निरधाररे ॥ सा० ॥ २१ ॥

दुहा.

कह्या महापुराणमां, सुणजो त्यां विस्तार ॥ विचार कहुं हवे वर्णवी, निश्चय करी निरधार ॥ १ ॥ नुमानी वली स्थिति कहुं, निरंजन कहे मूढ लोक ॥ पूर्व नवे बहु परे नम्यो, निर्नामिक हुउं सोक ॥ २ ॥ दुःखे दीक्षा आचरी, राज रिद्ध देखी ताम ॥ निदान बांध्यो निर्नामिके, स्वर्ग लह्यो सुखवाम ॥ ३ ॥ तिहां थकी चवी करी, वसुदेव देवकी चंग ॥ कुखे आवी अवतर्यो, कृष्ण हुउं उत्तंग ॥ ४ ॥ त्रण खंड साध्या नला, सेवे सुर नर राय ॥ न्यायवंत दामोदरो, परनारी सहु माय ॥ ५ ॥ लाख चैंतालीश रथ नला, तेटला गजवर सार ॥ नव कोड घोडा दणदणे, नोगवे त्रिखंड मोरार ॥ ६ ॥ सोल सहस्र राणी नली, तेहशुं सुख विलास ॥ लोक लंपट लंपट सवे, परनारीशुं निवास ॥ ७ ॥ तेटला नूप सेवा करे, सुर किंकर छे सार ॥ राज रिद्ध केशव तणी, कहेतां न लहुं पार ॥ ८ ॥ आवती चोवीशीए नलो, अरिहंत होशे देव ॥ पंच कल्याणकनो धणी, सुर नर करशे सेव ॥ ९ ॥ पवनवेग तुमे सांनलो, वलि वंधन विचार ॥ जिनवाणी छे रुयडी, संखेपे कहुं सार ॥ १० ॥

ढाल सोलमी.

रंग मोहोलमां राधिका. [illegible] ॥ दरपण जेह मुख देखती,
[illegible] देशी.

मालव देश मांहिं जखी. [illegible] ॥ श्रीवत्सा राज [illegible] तिहां, श्रीमती राणी जेह ॥ १ ॥ चार म[illegible] [illegible] नमुचि मिथ्याते आगलो, जैनशुं करे [illegible] ॥ [illegible] नरपति मंत्रीने कहे [illegible] सांभल स्वामी राय ॥ श्रावकलोक [illegible] नृप हरखीयो जतिवर वांदण जाय । चार म[illegible] ॥ ५ ॥ प्रथम कथा तुमे सांभलो. [illegible] वन मांहे ॥ [illegible] मुनि छे सहाए ॥ ६ ॥ ज्ञानी गुरु ते अति भला [illegible] मुनिराय ॥ जो राजपुरुषशुं बोलशो. तो विघन होशे एणे ठाय ॥ ७ ॥ गुरु वचन मनमां धर्या. [illegible] ठाम ॥ राजा तय तिहां आवीयो, मुनि वांद्या नृप ताम ॥ ८ ॥ ते साधुने बोलावीया. उत्तर वलतो न दीध ॥ डोर अज्ञानी वापडा. मंत्रीए निंदा कीध ॥ ९ ॥ राजा [illegible]

आव्यो नगर मोझार ॥ श्रुतसागर मुनि भेटीया, विद्या तणोरे भंडार ॥ १० ॥ दुष्ट वाक्य मंत्री बोलीया, वाद कीधो तिहां सार ॥ विप्र चार हराविया, मान खंड्युं तेणी वार ॥ ११ ॥ नरपतिए निंद्रवीया, एके हराव्या आज ॥ मुरखा गर्व न आणीए, करो न एवां काज ॥ १२ ॥ ऊखवाणा पडी गया, नीचे जुवे निज पाय ॥ कृष्ण वदन तेहनां हुआं, मारवा कीधो उपाय ॥ १३ ॥ ब्राह्मण वादे हराविया, गुरु आगे कहे वात ॥ आचार्य त्यां तव बोलीया, मुनिवरनो होशे घात ॥ १४ ॥ श्रुतसागरे गुरु पूछीया, विघन किम दूरे जाय ॥ गुरुजीए तव भाखीयुं, वादस्थानके तुमे जाय ॥ १५ ॥ ध्यान धरजो रुयडो, उपसर्ग जाशे तेम ॥ सांभलीने मुनि तिहां गयो, कायोत्सर्ग रह्यो जेम ॥ १६ ॥ चार मंत्री तिहां आवीया, खड्ग काढी ते वार ॥ चारे जण एक घा करे, खीह्या जदे ते सार ॥ १७ ॥ सूर्योदये तिहां आवीया, लोक तणां वली वृंद ॥ फट फट तुंमा सहु भणे, पाप तणां एह कंद ॥ १८ ॥ राजा तव तिहां आवीयो, गाल दीए अघोर ॥ ध्यान पारी मुनि बोलीयो, उखेलो एह जोर ॥ १९ ॥ राजाए दंडी करी, खर रोहण वली कीध ॥ विगोइने काढीया, देसोटो तिहां दीध ॥ २० ॥ पहेला खंडनी सोलमी, ढाल कही सुविसाल ॥ नेमविजय कहे सांभलो, आगल वात रसाल ॥ २१ ॥

आव्यो नगर मोझार ॥ श्रुतसागर मुनि नेटीया, विद्या तणोरे भंडार ॥ १० ॥ दुष्ट वाक्य
मंत्री बोलीया, वाद कीधो तिहां सार ॥ विप्र चार हराविया, मान खंड्युं तेणी वार ॥ ११ ॥
नरपतिए निंद्रवीया, एके हराव्या आज ॥ मुरखा गर्व न आणीए, करो न एवां
काज ॥ १२ ॥ कखवाणा पडी गया, नीचे जुवे निज पाय ॥ कृष्ण वदन तेहनां हुआं,
मारवा कीधो उपाय ॥ १३ ॥ ब्राह्मण वादे हराविया, गुरु आगे कहे वात ॥ आचार्य
त्यां तब बोलीया, मुनिवरनो होशे घात ॥ १४ ॥ श्रुतसागरे गुरु पूछीया, विघन किम
टूरे जाय ॥ गुरुजीए तब भाखीयुं, वादस्थानके तुमे जाय ॥ १५ ॥ ध्यान धरजो
कयमो, उपसर्ग जाशे तेम ॥ सांभलीने मुनि तिहां गयो, कायोत्सर्ग रह्यो जेम ॥ १६ ॥
चार मंत्री तिहां आवीया, खड्ग काढी ते वार ॥ चारे जण एक घा करे, खीह्या जेहे
ते सार ॥ १७ ॥ सूर्योदये तिहां आवीया, लोक तणां पडी वृंद ॥ फट फट तुंबा सहु
भणे, पाप तणां एह कंद ॥ १८ ॥ राजा तब तिहां आवीयो, गाल दीए अघोर ॥
ध्यान धारी मुनि बोलीयो, उखेलो एह चोर ॥ १९ ॥ राजाए दंडी करी, खर रोहण
पडी कीध ॥ विगोइने काढीया, देसोटो तिहां दीध ॥ २० ॥ पहेला खंडनी सोलमी,
ढाल कही सुविसाल ॥ नेमविजय कहे सांभलो, आगल वात रसाल ॥ २१ ॥

ढ्ढा.

अपर कथा तुमे सांभलो, संखेपे कहुं सार ॥ हस्तीनागपुर रुयडो, उत्तर देश मोझार ॥ १ ॥ मेघरथ नृपति भलो, पदमावती भरतार ॥ पदम लघु विष्णु वडो, पुत्र बेहु छे उदार ॥ २ ॥ मेघरथ विष्णु मुनि हुवा, पदमरथ आपी राज ॥ चारित्र पाले रुयडो, बेहु करे आतम काज ॥ ३ ॥ गजपुरमां तव आवीया, द्विज मंत्री ते चार ॥ राजाने जइ भेटीया, दान मान दीधां सार ॥ ४ ॥ मंत्रीपद आप्यां भलां, सुख पाम्या ते चार ॥ सिंहबली शत्रु तेह तणो, देश उजाडी अपार ॥ ५ ॥ राजाने चिंता घणी, दिन दिन अंगे खीण ॥ मंत्रीए तव पूछीउं, शरीर दीसे कां हीण ॥ ६ ॥ पदमरथ राजा कहे, सुणो तमे बलि प्रधान ॥ सिंहबली वयरी अम अछे, तेणे करी नहीं सुख मान ॥ ७ ॥ आदेश लइ नृपति तणो, प्रधाने कर्यो प्रयाण ॥ सैन्य सुभट निज सज करी, बलि मंत्री बुद्धिजाण ॥ ८ ॥ सबल संग्राम तिहां जइ कीयो, शत्रु कटक हुवो भंग ॥ सिंहबलीने बांध्यो तदा, पाम्या जय जय रंग ॥ ९ ॥ वयरी बांधी आणीने, भेट रायने कीध ॥ पदमरथ आणंद हुउं, बलिने वरदान दीध ॥ १० ॥ वलतो मंत्री बोलीयो, सांभलो श्रीमहाराज ॥ मागुं त्यारे आपजो, वर आवे मुज काज ॥ ११ ॥

नरपतिए तव दा तणी, पछि दयो दरख अपार॥ सुखनर राज्य करे सदा, अवर कथा कहुं सार ॥ १२ ॥

ढाल सतरमी.

यतनीनी देशी.

हस्तीनागपुर वन मांहे, अकंपनाचार्य आव्या त्यांहे ॥ सातसें मुनिवर छे साथे, विद्या तणी बहु आथे ॥ १ ॥ बलि मंत्री तेउने देखी, वयर भावे पूरव लेखी ॥ पद्मरथ राय पासे आवी, विनति करे तिहां समजावी ॥ २ ॥ वर आपो अमने आज, दिवस सातनुं आपो राज ॥ काज सारो अमारुं प्रभुजी, तुम विना कोण बीजो विभुजी ॥ ३ ॥ राजाए तव वर आप्यो, राजभार तेहनो थाप्यो ॥ पापी कूड कपट मन मांही, परी सहीये क्रोधातुर तांही ॥ ४ ॥ वाड करी मुनिने वींट्या, साधुने घणुंए आपेट्या ॥ नरमेध जगन जाग मांड्यो, जति कारण बीजो काम ठांड्यो ॥५॥ जलचर ने थलचर जीव, नभचर ते पांखतां रिव ॥ वेद पाठक ब्राह्मण आव्या, घणुं उजमाल थइ मन भाव्या ॥ ६ ॥ जीव हणवा वामय मलीया, हवन करवा हरखमां भलीया ॥ परम अस्थि लेइ शिर नाखे, मुनि उपर सहु मली धांखे ॥ ७ ॥ एवुं

सांभली पामे सुख ॥ बलि राजा हृयडे हरखी, वामन रूप नजरे परखी ॥ १८ ॥
वामन वांद्यो पगीने पाये, विनति करे कर जोडी तांये ॥ जे जोइए ते मागो स्वामि,
मुज पासे अंतरजामी ॥ १९ ॥ वामन विप्र बोल्या ताम, मुज नहीं नृप लोभे काम ॥
त्रण क्रमनी भूमि भरी आपो, मठ बांधवा सारुं थापो ॥ २० ॥ वलतुं बलि बोले
एहवुं, विप्र कहो माग्युं केहवुं ॥ मागोने कोइ राज भंडार, घोडा हाथी रूपन अपार
॥२१॥ विप्र कहे सुणो महाराज, अवर मारे छे नहीं काज ॥ क्रम त्रण मठ करवाने,
महीमांहि भूमि भरवाने ॥२२॥ पात्र लेइ कर दीए धार, स्वस्ति दान दीधुं तेणी वार ॥ मुनि-
वरे वधार्यो अंग, अति घणो देखी थया भंग ॥२३॥ प्रथम पाय छ्यो ज्यां मेर, मानुषोत्तर
बीजो छेर ॥ पाय त्रीजानो नहीं ठाम, विष्णु कोप्यो बोले ताम ॥ २४ ॥ बलि बांधी
पूठे पाय दीधो, सुर नर मली जय जय कीधो ॥ हाथ जोडीने मुनिवरने, कहे क्षमा
करो स्वामि अमने ॥ २५ ॥ एह बंधन छोडो स्वामि, क्रोध न कीजे गुणग्रामी ॥ उप-
शममें थया साधु, बलिबंधन छोड्यो निरावाधु ॥ २६ ॥ विष्णुने सहु लाग्या पाये,
मंत्रीए धर्म आचर्यो ध्याये ॥ समकित लीधुं सहु लोके, जिनधर्म पाले जन थोके
॥ २७ ॥ श्रावकव्रत बलिए लीधां, मुनिवर वांदे सुख सीधां ॥ पद्मरथ राजाए आण्यो

, मुनि वांदीने रोजे जाय ॥२८॥ विष्णुकुमार वाठ्य कीधो, सातमें मुनि रक्षण लीधो ॥ सावगी वांधे लोक तेथी, वसेवनो दिन कह्यो एथी ॥२९॥ विष्णुकुमार गुरु कने जाइ, लीधो प्रायश्चित्त गत धाइ ॥ निरमल भाव धरीने साधे, क्रिया तप जप ज्ञान ते साधे ॥३०॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग विवेक ॥ जिनशासन महीमां खरो, के मिथ्या धर्म ठेक ॥ १ ॥ पवनवेग बोल्यो तुरत, निश्चय करी सुख ठाम ॥ सत्य वचन तुमे जे कह्यां, रही तुमारी मार्म ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुभविजय कवि शिष ॥ भावविजय भावे करी, नमुं तेहने निशदिश ॥ ३ ॥ सिद्धिविजय शिष्य तेहना, रूपविजय कविराय ॥ कृष्णविजय कर जोडीने, रंगविजय रंग लाय ॥ ४ ॥ पहेलो खंड पूरो थयो, सतरे ढाले करी सत्य ॥ नेमविजय कहे नेहथी, श्रोता सुणो एक चित्त ॥५॥

इति श्री विष्णुवाद, ब्रह्मविवाद, गणेशोत्पत्ति नीच करमाचरणे,

प्रथमोल्लास प्रथम खंड संपूर्ण

१ लाज, शोभा.

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुम नाय ॥ विप्र पुराणनी वारता, पूर्वापर चित्त लाय ॥१॥ विरोध घणां हुं दाखतुं, अघटतां असत्य तेह ॥ सांभलतां थाशो खुशी, एमां नही संदेह ॥ २ ॥ पवनवेग कहे तुमे, जोइ शास्त्र विचार ॥ शिघ्र जाइ मुज दाखवो, विनोद तणो भंडार ॥ ३ ॥

ढाल पहेली.

लाख चोराशी रथ भला ए, तेहना गूपन धोरी सुकुमाल—ए देशी.

विद्या प्रभावे वेहु जणे ए, भील तणुं रूप कीध ॥ साजन सहु सांभलो ए ॥ कृष्ण वरण वीहामणा ए, धनुषबाण कर लीध ॥ सा० ॥ १ ॥ मस्तक केश छे घाघरा ए, चोपमा नाक वली मुछ ॥ सा० ॥ रातां नेत्र गुंजा समां ए, दांत लांबा दोइ भूंछ ॥ सा० ॥२॥ कठिण हेया करकस देही ए, पुफ वेला शिर भार ॥ सा० ॥ मयूर पिंछ घरेणां धर्यां ए, लोह कंकण गुंजाहार ॥ सा० ॥ ३ ॥ विद्याबल मंजार कर्यां ए, घट मांही लेइ धर्यां

भाव, मुनि वांदीने सेजे जाय ॥२८॥ विष्णुकुमार वाठल्य कीधो, सातसें मुनि रक्षण लीधो ॥ राखडी बांधे लोक तेथी, वखेवनो दिन कह्यो एथी ॥२९॥ विष्णुकुमार गुरु कने जाइ, लीधो प्रायश्चित मत धाइ ॥ निरमल भाव धरीने साधे, क्रिया तप जप ज्ञान ते साधे ॥३०॥

ढुढा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग विवेक ॥ जिनशासन महीमां खरो, के मिथ्या धर्म ठेक ॥ १ ॥ पवनवेग बोल्यो तुरत, निश्चय करी सुख ग्राम ॥ सत्य वचन तुमे जे कह्यां, रही तुमारी मामं ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुभविजय कवि शिष ॥ भावविजय भावे करी, नमुं तेहने निशदिश ॥ ३ ॥ सिद्धिविजय शिष्य तेहना, रूपविजय कविराय ॥ कृष्णविजय कर जोडीने, रंगविजय रंग लाय ॥ ४ ॥ पहेलो खंड पूरो थयो, सतरे ढाले करी सत्य ॥ नेमविजय कहे नेहथी, श्रोता सुणो एक चित्त ॥५॥

इति श्री विष्णुवाद, ब्रह्मविवाद, गणेशोत्पत्ति नीच करमाचरणे,

प्रथमोल्लास प्रथम खंड संपूर्ण

१ खाज, शोभा.

खंड २ जो.

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुम नाथ ॥ विप्र पुराणनी वारता, पूर्वापर चित्त आप ॥१॥ विरोध पणां हुं वाचवुं, अपटतां असत्य तेह ॥ सांभलतां थाशो खुशी, एमां नथी संदेह ॥ २ ॥ पवनवेग कहे तुमे, जोइ शास्त्र विचार ॥ शिघ्र जाइ मुज वाचवो, विनोद तणो भंडार ॥ ३ ॥

ढाल पहेली.

खाय चोराशी रथ नखा ए, तेहना नूपन थोरी सुकुमाल—ए देशी.

विप्र प्रनावे बंधु जणे ए, नीज तणुं रूप कीध ॥ साजन सहु सांभलो ए ॥ कृष्ण वरण थीहामणा ए, धनुषबाण कर लीध ॥ सा० ॥ १ ॥ मस्तक केश ते वाघरा ए, चोपडा नाक पखी मुख ॥ सा० ॥ रातां नेत्र गुंजा समां ए, दांत खांवा दोन जूंठ ॥ सा० ॥२॥ कठिण हैया करकस देहीए, पुरुषेखा शिर नार ॥ सा० ॥ मयूर पिंछ परेणां धर्यां ए, लोए कंकण गुंजाहार ॥ सा० ॥ ३ ॥ विद्याबल संजार कर्यां ए, घट मांही लेइ धर्यो

तेह ॥ सा० ॥ काने बुचो काखो घणो ए, लेइ चाल्या नर वेय ॥ सा० ॥ ४ ॥ ब्रह्मशाला उत्तर दिशे ए, जील आव्या दोय ताम ॥ सा० ॥ घंटानाद भेरी तामीने ए, वेठा सिंहासन ठाम ॥ सा० ॥ ५ ॥ नाद सुणी विप्र आवीया ए, वाद करीशुं अपार ॥ सा० ॥ वचन खंडशुं तेह तणां ए, जीतीने कुटशुं ते वार ॥ सा० ॥ ६ ॥ देखीने वाम्व कोपीया ए, रेरे अधम नर तिम ॥ सा० ॥ सिंहासन चोव्या तुमे ए, भेर वजामी किम ॥ सा० ॥ ७ ॥ अघट काम कर्युं घणुं ए, आव्या कहो कोण काज ॥ सा० ॥ मनोवेग तव बोलीयो ए, सांभलो तमे द्विजराज ॥ सा० ॥ ८ ॥ मीनको वेचवा आवीया ए, पुलिंद अमारी जात ॥ सा० ॥ विप्र वचन वलतो भणे ए, जुउं जुउं मूर्खनी वात ॥ सा० ॥ ९ ॥ लंठ मोटा महा रंभना ए, घंटानाद कियो जेण ॥ सा० ॥ विप्रशुं वाद कर्या विना ए, वेठा सिंहासन तेण ॥ सा० ॥ १० ॥ मनोवेग भणे सांभलो ए, विप्र म धरशो रोष ॥ सा० ॥ भेर घंटारव अमे कर्यो ए, विनोद कारण नहीं दोष ॥ सा० ॥ ११ ॥ जो तुमने वेठा नवी गमे ए, तो उतरी वेसुं हेठ ॥ सा० ॥ क्षमा करो द्विज तुमे भला ए, हर्ष धरी चित्त ठेठ ॥ सा० ॥ १२ ॥ विप्र भणे सुण भील-

१ भील.

डा ए, मिंजारना गुण केत ॥ सा० ॥ मनोवेग कहे सांजलो ए, मुज मिंजार गुण एत ॥ सा० ॥ १३ ॥ एह शरीर गंध विस्तरे ए, बार जोयण परिमाण ॥ सा० ॥ मूषक नावे त्यां लगे ए, ए अपूरव गुण जाण ॥ सा० ॥ १४ ॥ सांजलीने विप्र हरखीया ए, मांहो-मांहे बोले ताम ॥ सा० ॥ लीजीए मीनडो रुयडो ए, तो सरे सहुनां काम ॥सा०॥१५॥ आपणे गाम उंदर घणा ए, हाण करे कणसूलें ॥ सा० ॥ वेचातो लीजे मीनडो ए, जीव कहो तुमे मूल ॥ सा० ॥ १६ ॥ एह मीनो अमे लेयशुं ए, सत्य वचन जाणो सार ॥ सा० ॥ मनोवेग कहे सांजलो ए, एहनो मूल साठ दीनार ॥ सा० ॥ १७ ॥ विप्र सहुए विचारीयुं ए, मूल थोडो मिंजार ॥ सा० ॥ एटलो जान एक दिवसे होये ए, मूषक करे घरबार ॥ सा० ॥ १८ ॥ एक कहे मूज धोतीयां ए, एक कहे नारी घाट ॥ सा० ॥ चीर साडी फाडी उंदरे ए, एक कहे खण्युं हाट ॥ सा० ॥ १९ ॥ एक कहे करड्यां कापडां ए, एक कहे खाधां धान ॥ सा० ॥ एक कहे पग दोय तणा ए, अंगुलीये वही वान ॥ सा० ॥ २० ॥ एम कही मलीया सहु ए, एकेक लीधो दाम ॥ सा० ॥ साठ सोनैया जोडीया ए, आव्या शालाए ताम ॥ सा० ॥ २१ ॥ वाभव कहे जीलडा

---

१ पाक.

सुणो ए, द्रव्य लइ आपो मीन ॥सा०॥ मनोवेग कहे परीक्षा करी ए, लेउं पछे कहेशो हीन ॥ सा० ॥ २२ ॥ एक कहे साचुं सही ए, घट मांहीथी काढ्यो तेह ॥सा०॥ द्विज सहुए मीनो नीरखीउं ए, वुचो रुधिर जयों देह ॥ सा० ॥ २३ ॥ विप्र भणे सुण जीवडा ए, मीनको वुचोसें कान ॥ सा० ॥ रुधिराखो दीसे वली ए, कहो कारण गुणवान ॥ सा० ॥ २४ ॥ पहेली ढाल बीजा खंडनी ए, रंगविजय कविराय ॥ सा० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे ए, वात सुणो चित्त लाय ॥ सा० ॥ २५ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, वनवासी अमे जीव ॥ अपूरव दीठो मीनको, लीधो जाली गुण जीव ॥१॥ पाली पोषी मोटो कर्यो, द्रव्य जोइए छे आज ॥ घटमां घाली मीनको, आव्या वेचवा काज ॥ २ ॥ भूमि घणी चाली करी, आव्या वाडव गाम ॥ दिवस गयो रजनी पइ, विश्राम रह्या एक ठाम ॥ ३ ॥ थाक्यो भूख्यो मीनडो, घट थकी काढ्यो दीन ॥ एक ठामे पडी रह्यो, निद्रा आवी खेद खीन ॥४॥ अमे सुता निद्रावशे, नीकली उंदर श्रेण॥ सुतो दीठो मीनडो, मूषक मखी करे केण ॥ ५ ॥ सबल शत्रु छे आपणो, दुःखीउं कीजे एह ॥ मोटो उंदर आवीयो, (मीनो) सुतो

बीजो तेह ॥ ६ ॥ कान दोय तेणे करमीया, बुचो थयो तिणी वार ॥ सांभली ब्राह्मण कोपीया, खोटो नीस गमार ॥ ७ ॥ चार जोजन गंधे करी, उंदर नासे दूर ॥ तेना कान केम करडीया, निद्रा तणे नरपूर ॥ ८ ॥ एहवी अचेतन जेहने, दुर्गंध दीसे क्रूर ॥ तेहने कहो किम खीजीए, आनमीये केम जूर ॥ ९ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सांभलो विप्र सुजाण ॥ एक दोष मंजारनो, अवर गुणनी खाण ॥ १० ॥ विप्र वदे ए केम घटे, आवण विणसे दूध ॥ स्नेह तूटे खोज स्वल्पथी, विचारी जुओ निज बुद्ध ॥ ११ ॥ सुगंधी वस्तुमां एक कली, खसण करे दुर्गंध ॥ गुण घणा शुं कीजीए, एक दोष दुखे पंथ ॥ १२ ॥ मनोवेग कहे द्विज सुणो, जो कीजे वादनी वात ॥ मिंजार दोष हुं परहरुं, तो द्विज करे मुज वात ॥ १३ ॥ सत्य वचन मुज जापतां, लोक न माने आज ॥ कदाग्रही राजकुमर परे, केम कीजे द्विजराज ॥ १४ ॥

ढाल बीजी.

तुमे पितांबर पहेरी आव्याजी, मुखने मरकलडे—ए देशी.

सकल पामर बोल्या वाणीजी, जाइ तुमे सांभलो ॥ पुखिंद तमे गुण खाणीजी ॥ १ ॥ कदाग्रही पुरुष ते केहवोजी ॥ जा० ॥ तेहनो गुण दतो जेहवोजी ॥ जा० ॥ वात सुणावो

ते अमनेजी ॥ जा० ॥ शावाशी दीजे तमनेजी ॥ जा० ॥ २ ॥ वचन सुणी मनोवेगजी ॥जा०॥ कहे तुमे राखजो नेगजी ॥जा०॥ कथा सुणी रखे कोपोजी ॥जा०॥ वचन माहरो रखे लोपोजी ॥ जा०॥३॥ वगलाण देश मोझारजी ॥जा०॥ नंदरवार नगर उदारजी ॥जा०॥ नरपति नामे छे राजाजी ॥जा०॥ रूपिण राणीना गुण ताजाजी ॥ जा० ॥४॥ पुत्र हुउं जनम अंधजी ॥जा०॥ सहु कहे कुमार अंधजी ॥जा०॥ जाट जीखारीने तेहजी ॥जा०॥ शृंगार दान दीए एहजी ॥ जा० ॥ ५ ॥ नित नवां दीए आभरणजी ॥ जा० ॥ मंत्री विनवे जइ राय चरणजी ॥ जा० ॥ कुमार करे धन हाणजी ॥जा०॥ जंमारीने कहे तिण गाणजी ॥ जा० ॥ ६ ॥ कुमारे माग्यां अलंकारजी ॥जा०॥ जंमारी कहे तिणी वारजी ॥ जा० ॥ आभूषण खुट्यां भंडारजी ॥ जा०॥ शुं आपुं तुमने कुमारजी ॥ जा० ॥ ७ ॥ अंध कुमरे तज्यां अन्नपानजी ॥ जा० ॥ डुमनो यइ सुतो एक थानजी ॥ नरपतिए सांभली वातजी ॥जा०॥ प्रधान तेडीने एकांतजी ॥ जा० ॥८॥ अम घर एकज पुत्रजी ॥जा०॥ तेह रुठ्यो जाखे उछूत्रजी ॥जा०॥ बुद्धिसागर मंत्री कहे तामजी ॥जा०॥ कुमर मनावुं हुं आमजी ॥ जा० ॥ ए ॥ मंत्रीए तेड्या सोनारजी ॥जा०॥ लोहना घडी आपो

१ प्रीति.

शृंगारजी ॥ जा० ॥ सोनीए घडीने आप्याजी ॥ जा० ॥ कुमरने हाथे जइ आप्याजी ॥ जा० ॥ १० ॥ भोजन कराव्युं कुमारजी ॥जा०॥ मंत्री बोले तिणी वारजी ॥ जा० ॥ कुमर सुणो तुमे वातजी ॥जा०॥ भंडारमांथी काढ्या तुम तातजी ॥ जा० ॥ ११ ॥ एह शृंगार छे पहवाजी ॥जा०॥ विघन निवारे तेहवाजी ॥ जा० ॥ आपशो मां तुमे कोइ-नेजी ॥जा०॥ अमे अपायुं तुम जोइनेजी ॥जा०॥ १२ ॥ जे कोइ कहे लोहाभरणजी ॥जा०॥ तेहने मार देजो आवे मरणजी ॥ जा० ॥ कुमरे मान्यो तेहनो बोलजी ॥जा०॥ राख्यो मंत्रीनो तब तोलजी ॥ १३ ॥ लोक भणे ए अलंकारजी ॥जा०॥ लोढानां आपे निरधारजी ॥ जा० ॥ ताम कुमर करे तब रीसजी ॥जा०॥ लकुटी मारे तस शिशजी ॥ जा० ॥ १४ ॥ दुःखीआ थया सहु लोकजी ॥ जा० ॥ कदाग्रही नाम दीयो थोकजी ॥ जा० ॥ जेहवो हुउं तेहवो बोलजी ॥जा०॥ कदाग्रहीनी परे शो तोलजी ॥ १५ ॥ मनोवेग कहे सारजी ॥ जा० ॥ सत्य वचन निरधारजी ॥ जा० ॥ विप्र न मानो तुमे बोलजी ॥जा०॥ केम रहे अमारो तोलजी ॥ जा० ॥ १६ ॥ तुम तणां वेद पुराणजी ॥जा०॥ अरथ करतां करो जो हेराणजी ॥जा०॥ ते माटे केम कहेवायजी ॥जा०॥ अम नी लाज लोपायजी ॥ जा० ॥ १७ ॥ जेणे आदर्युं काम वली जेहजी ॥जा०॥ ते जाणे

खरुं सही तेहजी ॥ जा० ॥ अतिमोही नर एक मूढजी ॥जा०॥ तेहनी कथा चित्त धरो गूढजी ॥१०॥ बीजा खंडनी ढाल कही बीजीजी ॥जा०॥ श्रोता सहु कहेजो जीजीजी ॥ जा० ॥ रंगविजय कविनो शिष्यजी ॥जा०॥ नेमविजय प्रणमे निशदिशजी ॥ १९ ॥

दुहा.

विप्र वचन तव बोलीया, सुणरे जीव सुजाण ॥ कथा कहो अतिमोही तणी, सांभलवा सावधान ॥ १ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, ब्राह्मण सुणजो सार ॥ कथा कहुं हुं रुयडी, विनोद तणो भंडार ॥ २ ॥ नमीयाम देशमां निरमली, नर्मदा नदी वहे सार ॥ दक्षिण तट तिहां गामडो, शामंत नाम अपार ॥ ३ ॥ लोक वसे तिहां रुयडा, धर्म करे अभिराम ॥ माधव मेहेतो अति भलो, अधिकारी तिण गाम ॥ ४ ॥ सुंदरी नारी तेह तणी, शीयलवंत गुणवंत ॥ ते बेहु जणथी पुत्र हुवो, सोनपाल नाम महंत ॥ ५ ॥ पुत्र प्रसुत हुवा पछी, माधव न गमे तेह ॥ सुंदरी रूप शुं कीजीए, जोवन नाठुं देह ॥ ६ ॥ शामंत गाम वसुदत्त वसे, सुरंगी नार सुचंग ॥ कुरंगी पुत्री ते तणी, रूप कला सुरंग ॥ ७ ॥ माधवे धन आपी घणुं, परणी कुरंगी नार ॥ जोवनभर रलीआमणी, तेहशुं नेह अपार ॥ ८ ॥ काम कतहल करे घणुं, इंद्री लंपट तेह ॥

कुरंगीए अति मोहीयो, भोगवे भोग तस देह ॥ ए ॥ सेजे कुरंगी कुखदणी, अपर-
शुं वांछे भोग ॥ कामे पीडी कामिनी, न मले तेने जोग ॥ १० ॥

ढाल त्रीजी.

कंत तमाकु परिहरो–ए देशी.

सुंदरीनां लक्षण नखां, शीलवंती शुभ नार ॥ मोरा लाल ॥ पर नर दीठो नवि गमे,
पाले शुद्ध आचार ॥ मो० ॥ १ ॥ सूरिजन सांभलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ सुंदरीनो
शील नथी गमे, कुरंगी करेरे कुरंग ॥ मो० ॥ कोपे चढी नित्य कलकले, आप वखाणे
अंग ॥ मो० ॥ सू० ॥ २ ॥ भरतारनो बली बल घणो, दीधे अघटतां आल ॥ मो० ॥
लापण सरीखी फुंफए, मुख मोडी बोले गाल ॥ मो० ॥ सू० ॥ ३ ॥ सुंदरी मनमां
लीला धरी, उपशमे आणे अंग ॥ मो० ॥ अशुभ कर्म कीधां में घणां, धर्म तणो कीयो
भंग ॥ मो० ॥ सू० ॥ ४ ॥ कुरंगी कंथ आगल कहे, सांभलो स्वामि एकंत ॥ मो० ॥
चमी नारी तुम न रुचमी, अवगुणनो नहीं अंत ॥ मो० ॥ सू० ॥ ५ ॥ शोकनी वात
कशी कहुं, कहेतां आवे मुज लाज ॥ मो० ॥ रूप माटे तुमे जाणशो, नहीं कहीए
ते आज ॥ मो० ॥ सू० ॥ ६ ॥ माधव कोप्यो धमहड्यो, तेहना सांभली बोल ॥ मो० ॥

वनितानो विश्वास करे, ते जाणीए निटोल ॥ मो० ॥ सू० ॥ ७ ॥ माधवे सुंदरी परहरी, अलगुं आप्युं गेह ॥ मो० ॥ पुत्र सरसी जुइ करी, वहेंची आप्युं तेह ॥ मो० ॥ सू० ॥ ८ ॥ आठ बलद आप्या जला, दश आपी वली गाय ॥ मो० ॥ जाग करी सहु वेंचीयो, लोके कीधो न्याय ॥ मो० ॥सू०॥९॥ अपर मंदिर सुंदरी रहे, नंदन सरसी तेह ॥मो०॥ सद्गुरु ते प्रतिबोधीया, जैन धरममां वेह ॥मो०॥सू० ॥१०॥ माधव कुरंगीशुं मोहीयो, बोले जीजी जाप ॥ मो० ॥ अवसानी आणा धरे, तेह तणो हुउं दास ॥ मो० ॥ सू० ॥ ११ ॥ कटकाइए चाडीयो, देश तणो महीपाल ॥ मो० ॥ माधव तणी दूत मोकल्यो, तेणी आवो ततकाल ॥ मो० ॥ सू० ॥ १२ ॥ दूते तव आवी कह्युं, माधव म लाउं वार ॥मो०॥ राजा कटके चाडीयो, बोलाव्या कुमार ॥ मो० ॥सू०॥१३॥ माधवने तव उपन्यो, कुरंगी उपर मोह ॥ मो० ॥ नारीने तेणी वीनवे, आपण होशे विछोह ॥ मो० सू० ॥ १४ ॥ कुरंगी कहे स्वामि सुणो, तुम विण घडीयन जाय ॥ मो० ॥ अन्नपान ते नवि रुचे, दिवस वरसां सो थाय ॥ मो० ॥ सू० ॥ १५ ॥ अमे तुम साथे आवशुं, नहीं तो करशुं आपघात ॥ मो० ॥ मुज उपर किरपा करी, मानो अम तणी वात ॥ मो० ॥ सू० ॥१६॥ तव माधव इम बोलीयो, सांभल शीखवंती नार ॥ मो०॥ थोडे दिवसे अमे

आवशुं, रुमी परे रहेजो घरबार ॥ मो० ॥ सू० ॥ १७ ॥ तुज सतीमां गुण छे घणा, संपट लोक इह गाम ॥ मो० ॥ जगनी सुत महाबुद्धिने, शीष वइ करजो घरकाम ॥ मो० ॥ सू० ॥ १८ ॥ एम कहीने ते चालीयो, पहोतो कटक मोझार ॥ मो० ॥ माधव मनमां चिंतवे, सदाए कुरंगी नार ॥ मो० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ढाल त्रीजी बीजा खंडनी, रंगविजय कविराय ॥ मो० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे, आगे कहुं वात बनाय ॥ मो० ॥ सू० ॥ २० ॥

दुहा.

कटके जब कंत चालीयो, तब हुवो हर्ष अपार ॥ कुरंगीने काम व्यापीयो, मांड्यो कुव्यापार ॥ १ ॥ योवनजर रूपे भलो, सोनार चंगो नाम ॥ प्रपंच करी घर तेडीयो, एकांत बोली ताम ॥ २ ॥ सांभलो स्वामि रुयडा, रूप तणा भंडार ॥ जोवनवंतां वेहु जणां, लाहो लीजे संसार ॥ ३ ॥ बुद्धि माधव अम धणी, इंद्र काटलुं तेह ॥ सफल जनम थाय आपणो, तुम मले सुख थाय देह ॥ ४ ॥ धूरत चंगो बोलीयो, सांभल भोली नार ॥ सात व्यसन सेवुं सदा, ए मुज गमे विचार ॥ ५ ॥ तुम वचन मुज लोपतां, ब्रह्महत्यादिक होय ॥ वेद पुराणे आवर्युं, चतुर नर लोपे कोय ॥ ६ ॥

एम कही विहु जण मल्यां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीआ, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन चउ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत धन लेइ गयो, राखी कीध अपार ॥ ए ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह धरंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

राणकपुर रलीयामणुंरे लाल—ए देशी.

भोजन भलां वेगे करोरे लाल, भूख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने झांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, वेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वमी वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम ॥ स० ॥ सू० ॥ २ ॥ तुं वाइ वमी भामनीरे लाल, हुं नानी हुं तेह ॥ स० ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वमपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ भोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडुं

गुज पर कंनेरे साख, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरस सनाव सुंदरी तणोरे
साख, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे साख,
मोह धरी बेठो बार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सावज करेरे साख, उत्तर दीयो कुरंगी
नार० ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ पण दीवसे अमे आवीयारे साख, (दये) सयां वेहुनां
काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे साख, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥
सू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक घहु मल्यारे साख, (तेणे) कह्युं कां पोकारो नार ॥
स० ॥ सरस संपट उपी रहीरे साख, साखी कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥
माधव कहे जूल कां सयोरे साख, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां
गणोरे साख, पाप पडी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ९ ॥ हुं भूख्यो भोजन दीयोरे
साख, लाज न कीजे नरनार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी भणेरे साख, तुं मोटो उतार
॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे साख, भोजन रंधाव्युं तें त्यांहि ॥
स० ॥ उन जा घरमां तेह तणेरे साख, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥
॥ ११ ॥ सोनपाख नंदन घोखीयोरे साख, वापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो
पिता आपणोरे साख, रसोइ नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांभली तव

एम कही विदु जण मद्यां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीआ, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन पछ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत धन लेइ गयो, लाखी कीध अपार ॥ ए ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह परंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

राणकपुर रखीयामणुंरे लाल—ए देशी.

भोजन भलां वेगे करोरे लाल, भूख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने झांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, वेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वही वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम॥ स०॥ सू० ॥२॥ तुं वाइ वही भामनीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वडपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ भोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडुं

तुज घर कंतनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरल स्वभाव सुंदरी तणारे
लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे लाल,
मोह धरी बेठो बार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सावज करेरे लाल, उत्तर दीयो कुरंगी
नार० ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे अमे आवीयारे लाल, (हवे) सयां वेहुनां
काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥
सू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मल्यारे लाल, (तेणे) कणुं कां पोकारो नार ॥
स० ॥ सबल संपट ठपी रहीरे लाल, गाली कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥
माधव कहे जूठ कां लवोरे लाल, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां
गयोरे लाल, पाय पडी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ९ ॥ हुं भूल्यो भोजन दीयोरे
लाल, लाज न कीजे भरतार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी भणेरे लाल, तुं मोटो उतार
॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, भोजन रंधाव्युं तें त्यांहि ॥
स० ॥ उठ जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥
॥ ११ ॥ सोनपाल नंदन बोलीयोरे लाल, वापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो
स्वामी मोह नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांभली तव

एम कही विदु जण गइयां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीथा, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन घउ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ भूरत पन छेइ गयो, लाखी कीध अपार ॥ ए ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह परंत ॥ आगलपी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

राणकपुर रखीयामणुंरे लाल—ए देशी.

भोजन जलां वेगे करोरे लाल, भूख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने झांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, वेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वली वेहेन सुणो विनतिरे लाल, परे आव्या आपणा स्वाम॥ स०॥ सू० ॥२॥ तुं वाइ वली भामनीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वडपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तब सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ भोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडुं

तुज पर कंतनेरे लाख, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरख सनाव सुंदरी तणोरे
लाख, रमवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे लाख,
मोह भरी वेगो पार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सादज करेरे लाख, उत्तर दीयो कुरंगी
नार० ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे अमे आवीयारे लाख, (दूये) सयां वेहुनां
काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाख, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥
सू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मछयारे लाख, (तेणे) कह्युं कां पोकारो नार ॥
स० ॥ सरख लंपट थयी रहीरे लाख, वाली कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥
माधव कहे जूठ कां लगोरे लाख, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह भरी परमां
गणोरे लाख, पाप पडी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ९ ॥ हुं जूठ्यो जोजन दीयोरे
लाख, लाज न कीजे नरनार ॥ स० ॥ कोप भरी कुरंगी जणेरे लाख, तुं मोटो उतार
॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाख, जोजन रंधाव्युं तें त्यांहि ॥
स० ॥ छल जा परमां तेह तणेरे लाख, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥

एम कही विहु जण मळ्यां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीआ, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन पछ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ भूरत पन सेइ गयो, लाखी कीध अपार ॥ ९ ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह परंत ॥ आगसथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

राणकपुर रखीयामणुंरे लाल—ए देशी.

भोजन जसां वेगे करोरे लाल, भूख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने झांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, वेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वही वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम॥ स०॥ सू० ॥२॥ तुं वाइ वही भामतीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वडपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तब सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ भोजन नहीं करे मज घरेरे लाल, करंगी सण संत ॥ स० ॥ स० ॥ ४ ॥ जमाडं

तुज पर कंतनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरल सुभाव सुंदरी तणोरे लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे लाल, मोह धरी वेगो वार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सादज करेरे लाल, उत्तर दीयो कुरंगी नार० ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे अमे आवीयारे लाल, (इवे) सर्यां वेहुनां काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥ सू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक घहु मल्यारे लाल, (तेणे) कह्युं कां पोकारो नार ॥ स० ॥ सबल लंपट ठपी रहीरे लाल, गाली कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥ माधव कहे जूठ कां लवोरे लाल, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां गयोरे लाल, पाय पडी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ९ ॥ हुं भूख्यो भोजन दीयोरे लाल, लाज न कीजे भरतार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी भणेरे लाल, तुं मोटो उतार ॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, भोजन रंधाव्युं तें त्यांहिं ॥ स० ॥ उठ जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥ ११ ॥ सोनपाल नंदन घोलीयोरे लाल, वापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो पिता आपणेरे लाल, रसोइ नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांभली तव

एम कही विदु जण मल्यां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीआ, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन पछ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत पन लेइ गयो, लाखी लीध अपार ॥ ९ ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह परंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

राणकपुर रखीयामणुंरे लाल—ए देशी.

भोजन जलां वेगे करोरे लाल, भूख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने झांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, वेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वही वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम॥ स०॥ सू० ॥२॥ तुं वाइ वही भामनीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वडपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तब सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ भोजन नही करे मज घरेरे लाल, कुरंगी सण संत ॥ स० ॥ स० ॥ ४ ॥ जाणजं

तुज घर कंतनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरस सुजाव सुंदरी तणोरे
लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे लाल,
मोह धरी बेठो बार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सावज करेरे लाल, उत्तर दीयो कुरंगी
नार० ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे अमे आवीयारे लाल, (हवे) सर्या वेहुनां
काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥
सू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मल्यारे लाल, (तेणे) कर्युं कां पोकारो नार ॥
स० ॥ सबल लंपट ठपी रहीरे लाल, गाली कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥
माधव कहे जूठ कां लवोरे लाल, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां
गयोरे लाल, पाय पडी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ९ ॥ हुं भूख्यो भोजन दीयोरे
लाल, लाज न कीजे भरतार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी भणेरे लाल, तुं मोटो उतार
॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, भोजन रंधाव्युं तें आंहिं ॥
स० ॥ उठ जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥
॥ ११ ॥ सोनपाल नंदन बोलीयोरे लाल, वापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो
पिता आपणोरे लाल, रसोइ नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांभली तव

एम कही विदु जण मढ्यां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीआ, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज थयो, दिन पछ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत पन छेइ गयो, राखी कीध अपार ॥ ९ ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह धरंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

ढाल चोथी.

राणकपुर रखीयामणुंरे लाल—ए देशी.

भोजन भलां वेगे करोरे लाल, भूख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने झांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, वेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वमी वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम॥ स०॥ सू० ॥२॥ तुं वाइ वमी भामनीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वरूपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तब सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ भोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडुं

[illegible] सांभळो, न करे भोजन जरूर ॥ मुजने मोकली [illegible] नथी,
[illegible] ॥ १ ॥ कुरंगी जाणुं रंग मोहीयो, परीक्षा करे [illegible] ॥
[illegible] जाण देखीने, [illegible] ॥ २ ॥ जाण कचोयुं नरी करी,
[illegible] ॥ माधव नरी जड आरीयो, [illegible] ॥ ३ ॥ कुरं-
[illegible] सांभळ्युं, देखी [illegible] ॥ जमलां वचाले [illegible], [illegible] ॥४॥
[illegible] माधव [illegible], [illegible] ॥ एकांत जड [illegible], केम [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ महाबुद्धि नर बोलीयो, सुण मामा एक वात ॥ शीघ्र [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ माधव बोल्यो सांभळी, सांभळ तुं [illegible] ॥
[illegible] [illegible], [illegible] ॥ ७ ॥ कुरंगी बोली [illegible], [illegible]
[illegible] ॥ सांभळजो [illegible], [illegible] ॥ [illegible] मुजगुं [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] मुज [illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मुजने [illegible], [illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] माधव

पुत्रनांरे लाल, जय पाम्यो माधव ताम ॥ स० ॥ बोल बोले कुरंगी आकरारे लाल, मुख निहाले नारी तणुं आम ॥ स० ॥ सू० ॥ १३ ॥ कोहाड डसी दांत एम कहेरे लाल, इहां थकी जा जा धूतार ॥ स० ॥ ठेक करवाने आव्यो इहांरे लाल, जणनारने जा घरवार ॥ स० ॥ सू० ॥ १४ ॥ कोप नारीनो जाणी आवीयोरे लाल, सुंदरी घरे ततकाल ॥ स० ॥ मान दीधुं घणुं आवतांरे लाल, सुंदरी मनमां उजमाल ॥ स० ॥ सू० ॥ १५ ॥ लेखे अवतार आज आवीयोरे लाल, स्नान करावे सुंदरी नार ॥ स० ॥ थाल मांड्यो जमवा जणीरे लाल, पासे कचोलांनी हार ॥ स० ॥ सू० ॥ १६ ॥ पक्वान्न पीरस्यां प्रेमे करीरे लाल, साल दाल घृत पूर ॥ स० ॥ माधव महेतो मन चिंतवेरे लाल, कुरंगी रूठी दुःख जूर ॥ स० ॥ सू० ॥ १७ ॥ मधुरी वाण सुंदरी कहेरे लाल, जोजन नवी करो केम ॥ स० ॥ तव माधव एम उंचरेरे लाल, नवि जावे अन्न मुज जेम ॥ स० ॥ सू० ॥ १८ ॥ लघु जामनी शाक आणे इहांरे लाल, तो अमृत लागे अन्न ॥ स० ॥ तव सुंदरी लेवा गइरे लाल, हाथ कचोलो लेइ मन ॥ स० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ढाल चोथी बीजा खंडनीरे लाल, रंगविजय कवि शिष्य ॥ स० ॥ नेमविजय कहे नित प्रतेरे लाल, प्रणति करुं निशदिश ॥ स० ॥ स० ॥ २० ॥

दुहा.

कुरंगी वेन तमे सांभलो, न करे भोजन भरतार ॥ मुजने मोकली सेवा भणी, शाक उपर बहु प्यार ॥ १ ॥ कुरंगी जाण्युं कंत मोहीयो, परीक्षा करुं हवे एह ॥ वृक्ष पखदनो बाण देखीने, चणा दाल खाधी जेह ॥ २ ॥ बाण कचोलुं भरी करी, आप्यो सुंदरी हाथ ॥ माधव भणी जइ आपीयो, उष्ण शाक छे नाथ ॥ ३ ॥ कुरंगीए शाक मोकल्युं, देखी रीझ्यो नाथ ॥ जमतां वखाणे घणुं, रुडा एहना हाथ ॥४॥ जमी उठ्या माधव तिहां, तेड्यो निज भाणेज ॥ एकांत जइ पूछे सही, केम उतायों कुरंगी हेज ॥ ५ ॥ मद्दाबुद्धि तब बोलीयो, सुण मामा एक वात ॥ शील लोप्युं तुम कामनी, खाधुं धन जार संघात ॥ ६ ॥ माधव बोल्यो सांभली, सांभल तुं लघु नार ॥ संपदा सघली किहां अछे, तुमे बावरी कुण वार ॥ ७ ॥ कुरंगी बोली ततक्षीणे, भाणेजनो ए भेद ॥ सांभलजो धुरथी सहु, वात कहुं शुद्ध वेद ॥८॥ मुजशुं हास्य करे बहु, एक दिन पखाल्यो तेण॥हृदय बलुयुं मुज तणुं,अधिक कहुं शुं एण॥९॥पुण्य तणा परभावथी, शील राख्युं में नेठ ॥ कष्ट दीधुं मुजने घणुं, घणी पाडी मुज वेठ ॥ १० ॥ धन खाधुं एणे पछु, तस्करी करतो नित्य ॥ जइ परने देतो सदा, बाबयुं एम घर चित्त ॥११॥ सुणी माधव

कोपे चड्यो, तेमावी ततकाल ॥ जाणेज जणी ढींक पाडुए, मार दीधी तेणे ताल ॥१२॥ घरथी काढी मेलीयो, लोक करे अपवाद ॥ वांक नहीं जाणेजनो, विण वांके कीधो वाद ॥१३॥ लोके मली विचारीने, माधवनो दीयो नाम ॥ अतिमोही नर एहवो, सहु कहे गामोगाम ॥१४॥

ढाल पांचमी.

जंबूद्वीपना भरतमां, एलावरधनपुर सारोरे—ए देशी.

मनोवेग कहे सांभलो, विप्र विचारो जेमरे ॥ अतिमोही नरनी परे, तुमे करशो वली तेमरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जे जेणे वस्तु मोहीया, ते जाणे एह साररे ॥ शुभ अशुभ जाणे नहीं, भूखा भमे गमाररे ॥ सू० ॥ २ ॥ वेद पुराण जे तुम तणां, तेणे मोह्या अपाररे ॥ वचन तेह तणां आदरी, अघटतुं करे संसाररे ॥ सू० ॥ ३ ॥ यथार्थ वचन मुज भाखतां, जो होय शिक्षा पातरे ॥ जाणेज महाबुद्धिनी परे, (केम न) होये अम तणो घातरे ॥ सू० ॥ ४ ॥ भक्ष अभक्ष अंतर कह्यो, पेय अपेय विचाररे ॥ अनाचार आचार नहीं, ते नर मूढ गमाररे ॥ सू० ॥ ५ ॥ ब्राह्मण वयण तव बोलीया, सांभलो भाइ भीलोरे ॥ अम मांहीं मूढ को नहीं, अतिमोही कुशीलोरे ॥ सू० ॥ ६ ॥ बांभव कहे भाइ सांभलो, मंजारमां एक

दोषरे ॥ केम परहरशो अमने कहो, कोइ न करे तुम रोषरे ॥ सू० ॥ ॥ ७ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, विप्र सहुको सुजाणरे॥ वेद पुराणमां जे कह्युं, तेहवी वोलुं अमे वाणरे ॥ ८ ॥ नर्मदा नीर वहे निरमलुं, ते कांठे वन सोहे सारे ॥ तापसी पल्ली तिहां अछे, तापस तपसी अपाररे ॥ सू० ॥ ए ॥ मंडपकोशीक तप करे, अहोरात्रि जपे हरि रामरे॥ तापस सर्व बहु तप तपे, स्नान मज्जन रेवा गामरे ॥ सू० ॥ १० ॥ पंचाग्नि धुम्रपानशुं, कंद मूल भक्षण तेहरे ॥ मोटी जटा मस्तक धरे, पांच इंद्रि दमे देहरे ॥ सू० ॥ ११ ॥ सोमदत्त जजमान भलो, तपसीयांने दीये दानरे ॥ एकदा तापसी नोतर्या, तेड्या सहु देइ मानरे ॥ सू० ॥१२॥ विविध प्रकारे भोजन कर्यां,वेसणां मांड्यां हारवंधरे॥ थाल कचोलां मांड्यां घणां, शाक पक्वान्न सुगंधरे ॥ सू० ॥ १३ ॥ मंडपकोशीक देखीने, बीजे तापसे निंदा कीधरे ॥ थाल मूकीने चाल्या सहु, कोपे दंताधर लीधरे ॥ सू० ॥ १४ ॥ धाइ जजमाने पूछीआ, जमवा वेळा उठ्या केमरे ॥ शुं अपराध अमारडो, काज विणास्यो मुज तेमरे ॥ सू० ॥१५॥ वृद्ध तापस तिहां बोलीया, सांभलो सोमदत्त देवरे ॥ मंडपकोशीक तमे नोतर्या, पंक्तिमां वेसाड्यो खेवरे ॥सू०॥१६॥ मंडपकोशीके पूछीउं, में शुं कीधो अपराधरे ॥ दोष

काढ्यो तापसे थम तणो, फोगट विगोयो कांइ साधरे ॥ सू० ॥ १७ ॥ घरढा तापस तव थोसीया, सांजल मूढ गमाररे ॥ नारी विना तुं वांकीयो, ब्रह्महत्या पग पग साररे ॥ सू० ॥ १८ ॥ पुत्र विना सद्गति नहीं, स्वर्ग मुक्ति नवि होयरे ॥ पुत्र तणुं मुख जोइने, तापस दीक्षा धरे सोयरे ॥ सू० ॥ १९ ॥ मोटो अपराध तुमे कर्यो, थाल विचे चोट्यो तेहरे ॥ पापी नर जाणी उठीया, मूकी नाणां नयां गेहरे ॥ सू० ॥ ॥ २० ॥ मंडपकौशीक एम नणे, सांजलो तापस राजरे ॥ बुढो देखी मुज कोण दीए, विप्र कन्या सारे काजरे ॥ २१ ॥ तापस बोल्या सुणो तापस, पुराण स्मृति बोल्युं एमरे ॥ पांच आपद जे स्त्रीने होये, परणो ते मांहेनी तेमरे ॥ सू० ॥ २२ ॥ नासी गयो नर जेहनो, मरण पाम्यो वली जेहरे ॥ तापस थयो नारी तजी, नपुंसक हुवो पछे तेहरे ॥ सू० ॥ २३ ॥ घरनो हुउं कंत जे तणो, नारीने आपदा पंचरे ॥ एह मांही जेहवी मले, एक परणो करी संचरे ॥ सू० ॥ २४ ॥ नष्टे मृते प्रव्रजे च, क्लिवे च पतिते पतौ ॥ पंचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्यो विधीयते ॥ २५ ॥ बीजा खंड तणी कही, ढाल पांचमी वारुरे ॥ रंगविजय कविरायनो, नेम कहे श्रोता सारुरे ॥ सू० ॥ २६ ॥

दुहा.

अपत्य सहित जे कामिनी, पुरुष चाल्यो परदेशं ॥ आठ वरष वाट जोइने, अन्य नर साथ प्रवेश ॥ १ ॥ संतान रहित जे ब्राह्मणी, कंत गयो व्यापार ॥ चार वरष लगे वाट जोइ, पछे अवर भरथार ॥ २ ॥ स्मृति वाक्यम् ॥ अष्टौ वर्षाणि पश्येत, ब्राह्मणी पतिते पतौ ॥ अप्रसूता च चत्वारि, परतोऽन्यः समाचरेत् ॥ वचन सुणी तापस तणां, मंडप हरख्यो ताम ॥ रांकी ब्राह्मणी परणीउं, पंडाणी तेहनुं नाम ॥ ३ ॥ जोग जोगवतां वेहु थकी, पुत्री हुइ गुण माल ॥ स्वर्ग रंभा जाणे अवतरी, ठाया नाम रसाल ॥ ४ ॥ आठ वरषनी जब थइ, (कहे) मंडपकोशीक सार ॥ सांभल भामनी तुज कहुं, तीरथ जात्रा कीजे अपार ॥ ५ ॥ ठाया (पुत्री) मूंकीशुं किहां, ठाम कहो मुज खास ॥ तापसी कहे स्वामि सुणो, मेलो थापण शंकर पास ॥ ६ ॥ मंडपकोशीक एम भणे, सांभल भोली नार ॥ हर लंपट चंचल सदा, नवि छोडे कन्या सार ॥ ७ ॥ कामनी कहे बोलो कशुं, महादेव त्रिभुवन धीश ॥ लोक सहु पूजे तेहने, व्यभिचारी नोहे ईश ॥ ८ ॥ तापस कहे सुण कामनी, ईश्वरचरित्र कहुं जेह ॥ महीमंडल मोटो भलो, कैलास पर्वत तेह ॥ ९ ॥ गौरी शंकर सुख भोगवे, करे तप जप धरी ध्यान ॥

त्रिकाल संध्या कारणे, गंगाए गया भगवान् ॥ १० ॥ स्नान करी देव पूजीया, संध्या वंदन कर्युं सार ॥ तिणे अवसर कांठे देखीउं, गंगा नारी रूप फार ॥ ११ ॥ गंगा देखी विह्वल थयो, कामबाण पीड्यो ईश ॥ ध्यान मूकी मन चिंतवे, उर्वशी रंभा सुरीश ॥ १२ ॥ एह कन्या मुजने वरे, सफल देह पण थाय ॥ रूप रच्युं कुंवर तणुं, लघु वय कोमल काय ॥ १३ ॥

ढाल छठी.

एणे पुर कंवल कोइ न लेशी, फेर पाछा चाल्या परदेशी—ए देशी.

फेरवी रूप हुवो जग त्रात, गंगा सरसी मांही वात॥ सांभल कुमरी मनोहर नार, मुज वाणी तुं हृदय विचार ॥ १ ॥ एकला वनमां कारण कर्युं, मारुं मन तुज उपर वस्युं ॥ त्रिभुवन मांहिं तुं रुडी नार, जोवन सफल करो संसार ॥ २ ॥ कुमरी कहे मुज गंगा नाम, परणी नथी कंथ अभिराम ॥ केम करीए मोटो व्यभिचार, ए नोहे उत्तम आचार ॥ ३ ॥ शंकर कहे सांभल कुमारी, हुं कुंवारो तुं निरधारी ॥ सरीखो जोग मल्यो छे घणो, करीए कारण विवाह तणो ॥ ४ ॥ गंगा वचन गम्युं ते सार, संक्षेपे कीधो आचार ॥ काम क्रीडा कीधी बेहु घणी, सुख पाम्यो तव ईश्वर धणी

॥ ५ ॥ केलास चडवा चाल्यो जाम, कामनीए कंथ पूछ्युं ताम ॥ परणीने क्यां जाशो
नाथ, अमे आवीशुं तमारे साथ ॥ ६ ॥ शंकर कहे सांभल तुं सुंदरी, मुज मंदिर
छे गिरि उपरी ॥ तिहां रही निरमल ध्यान धरुं, नारी संगति तव परिहरुं ॥ ७ ॥
त्रण काल आवुं तुम भणी, काम क्रीडा करशुं बहु घणी ॥ तमे रहेजो तमारे ठाम,
शीघ्र आवीशुं अमे करी काम ॥ ८ ॥ एम कही ते चाल्यो जाम, पुंठे लागी गंगा
ताम ॥ केलास उपर चमीआं वेय, पारवतीए दीठां तेय ॥ ९ ॥ गोरी कहे सांभल
सुंदरी, कोण नारी तुं केने वरी ॥ गंगा कहे सांभलरे संत, अमे जान्हवी ए मुज कंथ
॥ १० ॥ पारवती कहे तुमे अंग, केम भोगवशो मुज वालंभ ॥ गंगा कहे पूछो वृतांत,
मुज रतिक्रीडा कहेशे कंथ ॥ ११ ॥ उमीया कहे सांभलो भरतार, कुण कामनी ए
केहेनी नार ॥ शंकर पभणे सुण सुंदरी, क्रीडा करतां में गंगा वरी ॥ १२ ॥ गोरी
कहे सुण निर्लज्ज निठोर, लंपट धुतारो तुं छे चोर ॥ असंतोषी कामी तुं सही, हुं
नारीए तृप्ति तुज नहीं ॥ १३ ॥ गंगा सरीखो करशो नेह, तो हुं मारी मूकीश देह ॥
सांभली शंकर बोल्या ताम, रूपवती तुं छे अभिराम ॥ १४ ॥ तुज उपर मुज प्रेम
अपार, गंगा तणो करशुं परिहार ॥ संतोषी पारवती सार, मूकवा चाल्यो गंगा नार

॥ १५ ॥ जान्हवी तीरे लाव्यो जाम, काम कुतूहल कीधो ताम ॥ गंगा राखी जटा मोझार, नारी वेशुं करे व्यापार ॥१६॥ मंमपकौशीक कहे वृतांत, शंकर न होये एहज संत ॥ सुर नर खेचर जाणे सहु, महादेव व्यभिचारी वहु ॥१७॥ यापण ठवीए ईश्वर पास, तो सही पामे पुत्री विणास ॥ दूध भलावीए जो मंजार, तो शंकर शुं करो व्यापार ॥ १८ ॥ तापस नारी बोली ताम, ईश्वर मोटो एहनो ठाम ॥ ठायाने मूकीशुं तिहां, विचार करीने वीजो जिहां ॥ १९ ॥ कामनी कहे सांभलो तुमे कंत, ठाया ठवीए पासे अनंत ॥ वासुदेव भुवन त्रय राय, सुर नर जेना सेव पाय ॥ २० ॥ तापस कहे सांभलरे नार, ए मोटो गोवालणीनो जार ॥ केम ठवीए ए पासे वाल, सहु जाणे ए परस्त्री काल ॥ २१ ॥ तापसीए विनवीया कंत, स्वामि कथा कहो ते संत ॥ मंमपकौशीक बोल्यो ताम, सांभलजो नारी अभिराम ॥ २२ ॥ ढाल ठठी वीजा खंमनी सारी, नेमविजय कहे निरधारी ॥ श्रोता सांभलजो सहु कोय, वात कहुं जे आगल होय ॥ २३ ॥

दुहा.

[illegible]

धरी, वेचण आवी ताम ॥ २ ॥ दहीं दूध भाजन भरी, आवी [illegible]
रिज पाम्या रूपथी, ते वितक सुण तास ॥ ३ ॥ कामे पीडाणो घणो, विरहानल संताप
॥ अवर नारी ते नवि गमे, छेह लागी ते आप ॥४॥ सोल सहस्र गोपी तणो, त्यां उतार्यो
मोह ॥ राधा उपर अति घणो, पाम्यो त्यां व्यामोह ॥ ५ ॥ सुण राधा गोवालणी,
तुजशुं रंग अपार ॥ अवर नार मुज नवि गमे, तुज सम को नहीं संसार ॥६॥ बाण आप
मटुकी तणुं, सांभल मारी वाण ॥ प्रेम धरो अमशुं तमे, म करो खेंचा ताण ॥ ७ ॥
तब बोली राधा तिहां, सांभल राजा राम ॥ पुरुषोत्तम ए वातमां, किम सीजे तुम
काम ॥ ८ ॥ नारायण सुर नर कहे, अयुक्त बोलो आज ॥ मोटा पण खोटा हिये,
राखो तुमारी लाज ॥ ९ ॥ नीच जाति आहीरनी, बोला अमे नरवाम ॥ तेहने पडुं
केम घटे, पेखी किम पडो खाम ॥ १० ॥

ढाल सातमी.

कर जोडी कामनी जंपे, कहेतां थरहर काया कंपे—ए देशी.

सांभलो धर्मशास्त्र विचार, ए नहीं उत्तम आचार ॥ परनारी लंपट नर जेह,
मरीने दुरगति जाये तेह ॥ हो लाल ॥ सुणजो साजन सहुको ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

रात दिवस जे बांधे पाप, नगर मांहीं लहे ते संताप ॥ सदा जब होये अशुभ ध्यान, तेहने को नवि दीये मान ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २ ॥ कर्मजोगे जो राजा जाणे, छेदन भेदन बहु करे कामे ॥ दंडे मुंडे लोकने बांधे, करावे गर्दभ रोहण खांधे ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ३ ॥ लिंग नासिका होये छेद, सज्जन सहुको पामे खेद ॥ काला मुख होवे बांधव तणां, लज्जा पामे कुलवंत घणा ॥ हो ला० ॥सु०॥४॥ फिट फिट करे सहु कोय, मित्रवर्ग सहु दुःखीउं होय ॥ दान पूजा जश लोपाय,कृष्ण वदन लोकमां थाय ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ५ ॥ ते उपर कथा सुणो एक, जेथी आवे तुमने विवेक ॥ कोइ गाम रहे एक शेठ, राज काजनी करे छे वेठ ॥ हो ला० ॥सु० ॥ ६ ॥ तेहने श्रीमती नामे नारी, रूपे रंभा सुर अवतारी ॥ शेठने प्रोहीतशुं मित्राइ, नित आवे जावे घर धाइ ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ७ ॥ एक दिन ते शेठ विचारी, परदेश चाल्या परवारी ॥ प्रोहीतने भलावी गेह, तस नारीशुं मांड्यो नेह ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ८ ॥ शीलवंत नारी कहे ताम, केम कहो छो मुजने आम ॥ तब बोल्या प्रोहीत तेह, जो करशो मुजशुं नेह ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ९ ॥ तो सुख थाशे तुमने, राजी करशो जो अमने ॥ जे कहेशो ते विधि करशुं, तुम वयण अमे दिल धरशुं ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १० ॥ तब चिंतवे नारी एम, शील रहेशे माहरुं

केम ॥ एवी बुद्धि कोइक उपाउं, प्रोहीतनी लाज लोपावुं ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ११ ॥ एम चिंतवी बुद्धि उपाइ, प्रोहीतने कहे समजाइ ॥ पोहोर रात्रि जाये तेणी वार, आवजो थाइ हुशियार ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १२ ॥ प्रोहीत थयो तव राजी, गयो निज घर मनमां गाजी ॥ कोटवाल पासे गइ नारी, तमे तो नगर तणा अधिकारी ॥ हो ला० ॥ सु० ॥१३॥ प्रोहीत वांछे मुजशुं प्रीत, तेनी कहेवा आवी हुं रीत ॥ सांभली कोटवाल तव बोले, नहीं नारी अवर तुम तोले ॥ हो ला० ॥ १४ ॥ अमशुं जो राखशो राग, तो प्रोहीतनो शो लाग ॥ एम सांभली नारी कहे वात, बीजे पोहोरे आवजो रात ॥ हो ला० ॥ १५ ॥ तिहांथी गइ सचीवनी पासे, वात धुरथी कही उल्लासे ॥ तुमे नगर तणा अधिकारी, कोटवालने राखो वारी ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १६ ॥ कामांध थयो नारी देखी, कोटवालने नाखुं उवेखी ॥ मुज आगे बल श्यो एहनो, वयण मानशो मां कांइ कहेनो ॥ हो ला० ॥सु०॥१७॥ सचीव कहे मुज साथे, मेलो मेलव्यो छे जगनाथे ॥ सुंदरी कहे त्रीजे पहोरे, आवजो थइ आपणे तोरे ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १८॥ राजा जणी चाली आवी, वात धुरथी कही संभलावी ॥ राजा पण रीज्यो जोइने, बीसो मां वयण कहे कोइने ॥ हो ला० ॥सु० ॥ १९॥ हुं गाम तणो हुं राजा, कोण लोपे माहरी

माजा ॥ प्रोहीत प्रधान कोटवाल, तेहने काढी मूकुंरे ततकाल ॥ हो ला० ॥ सु० ॥२०॥ हुं थापुं करी पटराणी, बीजी तुम आणे पाणी ॥ तव सुंदरी कहे तुमे राय, चोथे पोहरे मुज घर मांय ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २१ ॥ त्यांथी आवी निज घर मांहे, पाडोसण डोसी छे त्यांहे ॥ तेहने तेमी समजावे एम, कागल लखी आपुं जेम ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २२ ॥ बीजा खंडनी सातमी ढाल, नेमविजय कहे उजमाल ॥ तुमे सुणजो वाल गोपाल, आगल कहुं वात रसाल ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २३ ॥

दुहा.

कागल लइ उतावली, रात रहे घडी चार ॥ रोती रडती आवजे, करती अति पोकार ॥ १ ॥ समजावी पाडोसणी, घरमां एक मजूस ॥ तेहमां खानां चार छे, चोखी करी लइ लूस ॥ १ ॥ एम करतां संध्या थइ, आव्यो प्रोहीत जाम ॥ आदरमान दीधो घणो, लटपट करती ताम ॥ ३ ॥ जोजन जाजन करे घणां, सजी सोल शणगार ॥ हाव जाव देखाडती, पोहोर रात तेणी वार ॥ ४ ॥ कोटवाल रही वारणे, कहे कमाड उघाड ॥ मांहीं थकी बोली तिहां, हुं जोतीती वाट ॥ ५ ॥ तव प्रोहीत नारी जणी, कहे हवे कोण हेवाल ॥ जो जाणे मुजने सही, कहे

मजुस एकले माहरी, तुम पेसो ने मांहिं ॥ गंम न पडे कोइने कशी, मौन करी रहो त्यांहिं ॥ ७ ॥ ओहीतने मांहिं पाछीयो, यंत्र जमीने द्वार ॥ तलार परमां तेमीयो, पोसाये तेणी वार ॥ ८ ॥ स्नानां पीनां खातशुं, दोय पोहोर गइ रात ॥ त्रीजा पोहोरे आवीयो, सचीव थइ रलियात ॥ ९ ॥ वीन्यो कोटवाल एम कहे, मुज सांतो कोइ नाम ॥ मुजने देखे जो इहां, न रहे माहरी माम ॥ १० ॥ बीजे खाने पाछीयो, सचीवने लीधो मांय ॥ गीत गान करती थकी, सचीव तणो गुण गाय ॥ ११ ॥ चोथो पोहोर जब आवीयो, राजा पोढयो वाण ॥ कमाड उघाडो उतावलां, देखे कोइ अजाण ॥ १२ ॥ सचीवे सावज सांभल्यो, थरथर धुजे काय ॥ नारी तणी वोले तिहां, मुज सांतो कोइ नाय ॥ १३ ॥ त्रीजे खाने पाछीयो, राजा लीधो मांहिं ॥ नयण बाण लगाडती, रीझवे राजा तांहिं ॥ १४ ॥ चार घडी रात पाछली, आवी पाडोसण नार ॥ कागल हाथमां लेइ करी, निपट करती पोकार ॥ १५ ॥

ढाल आठमी.

करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे—ए देशी.

उठ उठ रे रांम तुं सूइ रह्यो रे, मूउं तुज नरतार ॥ कागल आव्योरे आज परछी-

पनोरे, सांभल मूर्ख निरधार ॥ सांभलजो श्रोतारे, कथा अचरिज तणीरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सांभली नारी रुदन करे अति घणुंरे, कुटे हृदय ने शीष ॥ सगां साजन सहु आवी मल्यांरे, हार उत्तां पाडे चीस ॥ सां० ॥ २ ॥ मांहे बेठो राजा मन चिंतवेरे, हुवो रंगमां भंग ॥ मुजने सांतो कोइ एकांतमांरे, आवी लाग्यो व्यंग ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ नारी कहे तुमे मोटा राजवीरे, किहां सांतुं नथी ठाम ॥ कहो तो मजूस एक मोटो अठेरे, मौन करी रहो धाम ॥सां०॥४॥ कहे राजा तुमे शीघ्र थइ हवेरे,म करो ढील लगार ॥ चोथे खाने राजाने घालीयोरे, प्रपंच करी तेणी वार ॥ सां० ॥ ५ ॥ नर नारी आव्यां घरमां वहीरे, आरीम कारीम कीध ॥ एम करतां परभात थयो हवेरे, वात थइ परसीध ॥ सां० ॥ ६ ॥ वात सुणी दरबारमां राणीएरे, खबर करो जइ राय ॥ चाकर दोड्या भूपने शोधवारे, दीठा नहीं कोइ राय ॥ सां० ॥ ७ ॥ सचीवने शोध्या सारा शहेरमांरे, दीसे नहीं कोटवाल ॥ प्रोहीतने जोया वली चिहुं दिशेरे, फरी आव्या ततकाल ॥ सां० ॥ ८ ॥ राणी कहे ए शेठ हतो वांझीयोरे, पहनो माल होये जेह ॥ राणी जाणे गुपत राजा वच्चेरे, मंगावी लेउं तेह ॥ सां० ॥ ॥ ९ ॥ सेवक दोडाव्या राणीए ततखणेरे, पहना घरमां वस्तु सार ॥ लावो जइने

कोइ जाणे नहीरे, दील म करजो लगार ॥ सां० ॥ १० ॥ चाकर चाल्या सहु थइ एक मनारे, पहोंचा शेठने गेह ॥ नारीए दीधो आदरनाव आयतारे, पोह्या अनुक्रमे तेह ॥ सां० ॥ ११ ॥ सार वस्तु जे तुज घरमां होयेरे, ते आपो अमने आज ॥ तव बोली ते नारी सांभलीरे, साचा कहुं तुमे राज ॥ सां० ॥ १२ ॥ मजूस मोटी घरमां अछेरे, माल मांहीं छे सार ॥ वृषभ जोडी लेइ जावो तुमेरे, मेल्यो छे मुज भरतार ॥ सां० ॥ १३ ॥ सांभली दोह्या अनुचर उतावलारे, वृषभ आण्या तत-काल ॥ जोडी वृषभ तणावी लेइ गयारे, राणी थइ उजमाल ॥ सां० ॥ १४ ॥ ताखां उघाडी मांहेथी काढीयोरे, प्रोहीतने तेणी वार ॥ राणी कहे तुमे पेठा केम इहांरे, अद्भुत वात अपार ॥ सां० ॥ १५ ॥ तव प्रोहीत कहे बीजुं वारणुंरे, उघाडी देखो देव ॥ ततक्षण उघाड्यो जव सहु मलीरे, दीठो कोटवाल ततखेव ॥ सां० ॥ १६ ॥ अचरिज देखी राणी एम कहेरे, चोकी करवा काज ॥ तस्कर पकड्या पेठा तुमेरे, नली राखी तुमे लाज ॥ सां० ॥ १७ ॥ मुख ढांकीने कोटवाल एम कहेरे, उघाडो त्रीजुं वार ॥ तेहवे राणीए कपाट उघाडीउंरे, सचीव दीठो तेणी वार ॥ सां० ॥ ॥ १० ॥ राणी कहे तुमे दफतर मांडवारे, जइ पेठा एकांत ॥ सचीव कहे तुमे मुजने

शुं कठोरे, केम थइ रह्या निचिंत ॥ सां० ॥ १९ ॥ राजाजी साथे सहु मली अमे गयारे, चोथो उघाडो ठाम ॥ ततक्षण राणीए द्वार उघाडीयुंरे, नीचुं घाल्युं ताम ॥ सां० ॥ २० ॥ चादर उंढी मुखने सांतीयुंरे, फिट फिट करे सहु लोक ॥ उठी त्यांथी गया निज निज घरेरे, चिंतवे मनशुं फोक ॥ सां० ॥ २१ ॥ बीजा खंडनी ढाल ए आठमीरे, नेमविजय कहे सार ॥ श्रोता सांभलजो सहु एक मनारे, जे वात होये निरधार ॥ सां० ॥ २२ ॥

दुहा.

चारे सखी मन चुंपशुं, आणी शुद्धि विवेक ॥ सासरवासो करीये सही, तो उतरे आपणी टेक ॥ १ ॥ ते नारी तेडावीने, कीधी नगनी तेह ॥ सासरवासो करी नलो, बोलावी फरी गेह ॥ २ ॥ एम राधा केशव भणी, समजावे कही वात ॥ परनारीना संगथी, उपजावे उतपात ॥ ३ ॥ नारायण मोटा देवता, लागी चुंडी टेव ॥ दामोदर बोल्या तुरत, सांभलो राधा देव ॥ ४ ॥ धर्मशास्त्र जाणुं अमे, वचन म लोपो आज ॥ परउपगारी परगडु, मोटी तुमारी लाज ॥ ५ ॥ अमे नामनी वधु उधरी, कुब्जा सुरूपा केम ॥ पुराण प्रसिद्ध जाणो सहु, लाभशे तेह ॥ ६ ॥ राधा कहे

राजी थइ, वाखो घर कोइ जोय ॥ तेमां गइ उतावली, मेहु जण मक्षीयां सोय ॥ ७ ॥
वेकुंठे संतोषी घणुं, राधा जोडी हाथ ॥ कहे स्वामी मुज जाण जो, रीस करशो मुज
नाथ ॥ ८ ॥ काम काज धरमां घणां, छुट्यो मुज नरनार ॥ कोपी गाल आपे घणी,
जो जाणे व्यभिचार ॥ ९ ॥ राते मुज घर आवजो, गुप करी गुप रेह ॥ घर निशानी
सो कही, पोढोती निज घर तेह ॥ १० ॥

ढाल नवमी.

कीसके बेटो कीसके पूत, आतम एकीला हे आवपूत–ए देशी–(राग धंगाडी.)

विरहानल वाध्यो गोविंद, रायजी नेरो राधा धंध ॥ मन मान हो ॥ ताडातोडि' टलवले
तन, कोइ सूरज वडो आकाशे मन ॥ म० ॥ १ ॥ शीत लागे हे अगनी समान, एम
करतां आथमीयो जाण ॥ म० ॥ रात पडी छुटो अंधकार, गोविंद पहोंतो गोपालणी
वार ॥ म० ॥ २ ॥ तरकडी परे आवया नेह, मार लीधां लीधां ततखेव ॥ म० ॥
वेकुंठनाथ विमाले साथ, लोक सुता हे एणे ठाम ॥ म० ॥ ३ ॥ वोलावीया
[illegible] लोक, आम चोरी पकडी मुज फोक ॥ म० ॥

पोडुं तो जाणे सहु कोय ॥ म० ॥ ४ ॥ अंगुलीनो संचल कीध, टपोरे कपाटे दीध ॥ म० ॥ राधा बोली जोती वाट, अंगुलीए कोण हणे कपाट ॥ म० ॥५॥ अमे माधव तुं ते महंत, राधा कहे तुमे छो वसंत ॥ म० ॥ नहींरे कामनी हुं चक्रीश, राधा कहे कुंजारनो ईश ॥ म० ॥ ६ ॥ धरणीधर हुं मोटो देव, शेषनाग तुं आव्यो हेव ॥ म० ॥ नारे अहीमर्दन अभिराम, राधा कहे गरुड तुज नाम ॥ म० ॥ ७ ॥ नहींरे हुं हरि जगदीश, राधा कहे तुं वानर ईश ॥ म० ॥ विष्णु कहे राधा म करो हठ, उत्तर देयाने अमे तुं ठठ ॥ म० ॥ ८ ॥ राधा रंगे हास्युं एम करी, बार उघाडी लीधा मांहे हरि ॥म०॥ काम कुतूहल मांड्यो ताम, भानूदय पाम्यो वली जाम ॥ म०॥ए॥ रात्रिए जइ अन्यायज करे, दिवसे आवी राज्य उधरे ॥ म० ॥ नारायण लक्षण छे एह, पाख गोपाख जाणे छे तेह ॥ म०॥ १० ॥ तापस कहे सांभल तापसी, वात विचारी जुओने असि ॥म०॥ सोल सहस्र स्त्री नहीं संतोष, हरिने मोटो परनारी दोष ॥ म० ॥ ११ ॥ थापण ठवीए हरिनी पास, तो पुत्रीनो होये नाश ॥ म०॥ अवर विचार करीशुं जेम, गया वाला मूकीए तेम ॥ म० ॥ १२ ॥ ताम तापसी वदे वर वाण, सांभलो स्वामि तुमे छो जाण ॥ म० ॥ वात कहुं एम विचारी एक, सृष्टि निपाइ ब्रह्माए विवेक

कहो तेह ॥ ७ ॥ गुरु कहे इंद्र सांभलो, ब्रह्मा तप करे अघोर ॥ अरधी चोकमी हुवा पछी, तुम पद लेशे जोर ॥ ८ ॥ सांभली इंद्र उपाय रचे, अपछरा तेडी तिण काज ॥ ब्रह्मा तपथी चालवो, जिम रहे आपणो राज ॥ ए ॥ नृत्यकी कहे देवेंद्र सुणो, ए नवि होय अमशुं काम ॥ गरढो कपटी कोपशे, श्राप देइ फेडे गाम ॥ १० ॥

ढाल दशमी.

नणदलनी देशी.

प्रीतम हे प्रीतम इंद्र, कहे सघली मली ॥ तिल तिल दीउं मुज रूप ॥ प्री० ॥ तिलोत्तमा निपजावीशुं, सर्व कलानो कूप ॥ प्री० ॥ सुणजो साजन वातलडी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तिल तिल रूप नृत्यकी दीयो, तिलोत्तमा घडी सुरराज ॥ प्री० ॥ कर जोडी उभी रही, आदेश दो कोण छे काज ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २ ॥ अमरपति कहे रंभा सुणो, ब्रह्मा तप करो नाश ॥ प्री० ॥ एह चिंता सहुने घणी, पूरो अमारी आश ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ३ ॥ तिलोत्तमा वीडुं धरी, नारद तुंबर देव ॥ प्री० ॥ तप करतो ब्रह्मा जिहां, तिहां आवी ततखेव ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ४ ॥ सनमुख नाटक मांडीयुं, धप मप धों धों कार ॥ प्री० ॥ मादल बाजे मधुर स्वरे, भं भं भेरी विस्तार ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ५ ॥ घम घम घुघरी घमकती,

कह कह मोकी काय ॥ प्री० ॥ हाव भाव देखाडती, नव रस नाटिक थाय ॥ प्री० ॥ सु० ॥
॥ ६ ॥ जेम जेम नीरखे नारीने, तेम तेम ध्यान गयो दूर ॥ प्री० ॥ तिलोत्तमा रूप
देखी करी, दूरथ उपन्यो जरपूर ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ७ ॥ सा री ग म प ध नी गायतां,
चलीयुं ऋषिनुं चित्त ॥ प्री० ॥ विकल रूप ब्रह्मा हुवो, श्रवणे सुणी ते गीत ॥ प्री० ॥ सु० ॥
॥ ८ ॥ ब्रह्मा चक्र चित्त जाणीने, वामांगे मांड्यो नाट ॥ प्री० ॥ छराग छत्रीशे आखवी,
ताल मेंसे नही घाट ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ९ ॥ मोह पाम्यो ब्रह्मा घणुं, चिंतवे मन मांहे एम
॥ प्री० ॥ ऋषि सपक्षामां हुं पडो, मुख फेरवी जोउं केम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १० ॥ जो
नवी नीरखुं नृत्यकी, तो मुज दुःख होये देह ॥ प्री० ॥ नयणे निहाळुं तिलोत्तमा,
सफल जनम मुज तेह ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ११ ॥ एक चोकमी तपने फले, मुख होजो
माहे पास ॥ प्री० ॥ वदन चीजुं ब्रह्मानुं हुवो, देखी रूप विलास ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १२ ॥
पीन पयोधर पेखतां, रंजया भाता जाम ॥ प्री० ॥ नाटक रचीयुं पाछले, आनंद नृत्य
तिहां ताम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १३ ॥ सा री ग म प ध नी गायतां, ब्रह्मा विमासे तेह ॥
प्री० ॥ पानुं फरी अवलोकतां. लाज आवे मुज देह ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १४ ॥ बीजी
चोकमी तपे करी, नीकलजो मुख पुंठ ॥ प्री० ॥ वदन हुवो ब्रह्मा तणो, रूप जोइ हृदये

तूत ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १५ ॥ चित्त चड्युं जाणी करी, नाटक मांड्युं जमणे अंग ॥ प्री० ॥ भाव भेद देखामे घणा, ब्रह्मा नवि जोये रंग ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १६ ॥ कामबाणे वींध्यो तदा, मन मांहीं चिंते ताम ॥ प्री० ॥ लाज लागे मुख फेरतां, विण जोए विणसे काम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १७ ॥ चोकडी त्रीजी तपे करी, मुख नीकलजो सार ॥ प्री० ॥ चोथुं वदन हुवुं जह्युं, दीसे दक्षिण नार ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १८ ॥ तव नाटिक गगने कर्युं, नव रस ब्रह्म विलास ॥ प्री० ॥ सृष्टिकर्ता मन चिंतवे, केम करी देखुं आकाश ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १९ ॥ उंचुं जोतां हास्युं हसे, जोया विण न रहाय ॥ प्री० ॥ अरध चोकडी तप तणे फले, मुज मुख गगने थाय ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २० ॥ गर्दभ वदन नीकल्युं तदा, भूंकारव करे विकराल ॥ प्री० ॥ तव नाठी तिलोत्तमा, स्वर्ग गइ इंद्रने कहे हेवाल ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २१ ॥ दशमी ढाल बीजा खंडनी, रंगविजय कविराय ॥ प्री० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे, सांभलजो चित्त लाय ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २२ ॥

दुहा.

सांभलजो स्वामि तुमे, ब्रह्मानो तप जेह ॥ उंठ चोकडीनो कष्ट कर्यो, विफल थयो सहु तेह ॥ १ ॥ मुख चारे मुज देखीने, पांचमुं रासभनुं होय ॥ विकल थयो नृत्य जोवतां,

नूं नूं करे मुख तोय ॥ २ ॥ आचंब्या सुर सामटा, आव्या जोवा काज ॥ विपरीत रूपने देखीने, खम खम हसत समाज ॥ ३ ॥ तब ब्रह्मा कोपे चढ्यो, सुर उपर कीधी केम ॥ नाठा जाए घर भणी, तोहि नाव्यो नीवेम ॥ ४ ॥ नूंनूंकार करतो थको, धायो केमे जाय ॥ कोलाहल स्वर्गमें थयो, अचरिज सहुने थाय ॥ ५ ॥ के खाशे के मारशे, त्रिभुवनमां पड्यो त्रास ॥ जय पाम्या तापस सहु, तप जप मूकी तास ॥ ६ ॥ नाठा लोक पडु भुजता, केइ पामे पोकार ॥ सुर नर किंनर आगळे, आवे करतां मार मार ॥ ७ ॥ ईश्वर शरणे आवीया, कहे मुज राखो देव ॥ ब्रह्मा संतापे छे घणुं, दुःख भांजो अम देव ॥ ८ ॥ रुद्र जाव रुद्रे कर्यो, खुंखुं मस्तक खर नख ॥ पीडा उपनी ब्रह्मा घणी, पोखे मुखथी अशज ॥ ९ ॥ हत हत्यारा पापीया, तुजने जुंमो टेव ॥ मस्तक माहरुं तोमीयुं, हत्या चड तुज देव ॥ १० ॥

ढाल अगीयारमी.

साहेबा मोती थो हमारो, मोहना मोती थो—ए देशी.

मुज कपाल चमो तुज हाथ, जेम न करे एहवो किहां साथ ॥ मानो तुमे वयण हमारो, सही करी मन मांही धारो ॥ ए आंकणी ॥ आपे ईश्वर थयो तब काळो, महादेव

कहे मनवालो ॥ मा० ॥ १ ॥ शंकर लागे ब्रह्मा पाय, कर जोडी कह्यो जग राय ॥ मा० ॥ में पापीए कीधो बाध, खीमा करो खमजो अपराध ॥ मा० ॥ २ ॥ मुज पापीनी हत्या जाय, स्वामि ते कहेजो उपाय ॥ मा० ॥ खर कपाल पडे वली जेम, वचन जाखजो ब्रह्मा तेम ॥ मा० ॥ ३ ॥ कोमल वचने कृपा तब कीध, कोप तजी शिखामण दीध ॥मा०॥ ब्रह्मा कहे सांभलरे ईश, पापी मोटो तुं जगदीश ॥मा०॥४॥ हत्या माहरी था उतरे एम, वचन कहुं ते करे तुं तेम ॥मा०॥ जटा जूट माथे हर राखो, मसाण राख विलेपन राखो ॥मा०॥५॥ नर कपाल तणो रचो हार, अस्थि रोम मांहीं गुंथो फार ॥मा०॥ कोटे घालो ते वली माल, देखीती मोटी विकराल ॥मा०॥६॥ नाक ने किन्नरी वाउं अपार, जांग धंतुरो खाउं फार ॥मा०॥ नगन थइ हींडो गामो गाम, भिक्षा मागो ठामो ठाम ॥मा०॥७॥ चरणावरण म करशो भेद, सघले लेजो भिक्षा छेद ॥मा०॥ मुज कपाल मांहीं घालो जेह, रात दिवस तमे जमजो तेह ॥मा०॥८॥ एणी परे हत्या जाशे तारी, ए शिखामण सारी ॥ मा० ॥ रुधिर लेइ को पुरशे कपाल, खर मस्तक पडशे तत्काल ॥ मा० ॥ ए ॥ ब्रह्मा वचन सुणी तब ईश, जोगी रूप धर्युं जगदीश ॥ मा० ॥ कपालीक धरीयो तेह नाम, रात दिवस हींडे गामो गाम ॥मा०॥१०॥ एम करतां गयो घणो काल, मसाण भूमि सेवी

उजमाल ॥मा०॥ पापीने घरे गयो ततकाल,रुधिर पूयुं ब्रह्मा कपाल ॥मा०॥११॥ ईश्वरनी
जमी लीधी दृष्या, हाथ थकी तुंबमीपमी धरत्या ॥मा०॥ कपालीक शंकरनो नाम, लोक
कहे जपो शिव नाम॥मा०॥१२॥ वेद पुराण कथा छे एह, बाल गोपाल जाणे छे तेह ॥मा०॥
ब्रह्मानी सांभलजो वात, तप संजम कीधो छे घात ॥ मा० ॥ १३ ॥ अंबर गइ तिलो-
त्तमा जाम, कामे पीड्यो ब्रह्मा ताम ॥ मा० ॥ विकल रूप हुवो छे अपार, भुवन भयुं
देखे ते नार ॥ मा० ॥ १४ ॥ विह्वल थयो मलवाने धाय, नर नारी सहु नाठां जाय ॥
मा० ॥ झाड वीमने सांइ देय, देवी जाणे तिलोत्तमा एय ॥ मा० ॥ १५ ॥ मृग पशु
तणे धामे जाम, लंपट देखी नासे ताम ॥ मा० ॥ रींछमी एक मली वन मांय, लथबथ
करीने तेहने साथ ॥मा०॥१६॥ रूप जाण्युं रंभानुं एह, वृद्ध ब्रह्माए भोगवी तेह ॥मा०॥
रुतुवंती ते हुती ताम, जंबुवंत उपन्यो अभिराम ॥ मा० ॥ १७ ॥ बलवंत बुद्धि तणो
निधान, प्रसिद्ध जाणे सहु वेद पुराण ॥ मा० ॥ रामचंद्र तणो हुवो ते दूत, जग
विख्यात ब्रह्मनो सूत ॥ मा० ॥ १८॥ गरढानी करणी छे एह, किम छवीए पुत्री पासे
तेह ॥ मा० ॥ सृष्टिकर्ता ब्रह्मा कह्यो सार, नीपाइ नहीं एके नार ॥ मा० ॥ १९ ॥
रींछमीशुं कीधो व्यभिचार, तुंमपणुं एहने अपार ॥ मा० ॥ तापस अमे सहुको जाणुं,

ब्रह्मा लक्षण केतां वखाणुं ॥ मा० ॥ २० ॥ बीजा खंडनी इग्यारमी ढाल, सुणजो सहुको बाल गोपाल ॥ मा० ॥ रंगविजयनो कहे एम शिष्य, नेमविजयनी पहोंती जगीश ॥ मा० ॥ २१॥

दुहा.

आप कहुं वात एहनी, सांभल ठाया मात ॥ वेद पुराणमां एहवी, साची कहुं एक वात ॥ १ ॥ सावित्री नार ब्रह्मा तणी, बेटी जग गुणधार ॥ सारदा कुमरी रंभा जीसी, देखी चलीयो तेणी वार ॥ २ ॥ कामे पीड्यो पुंठे थयो, भारती नाठी जाय ॥ वनमां नासी ते गइ, पुत्री पुंठे थाय ॥ ३ ॥ ब्रह्मा ठेतरवा सही, मृगली रूप धर्युं सार ॥ तब ब्रह्मा कुरंगनो, रूप धरी व्यभिचार ॥ ४ ॥ पुत्रीने विलसी करी, एहवो जेनो काम ॥ तो पुत्री ठाया आपणी, केम भलावीए ताम ॥ ५ ॥ तापस कहे नारी भणी, पुत्री न ठोके एह ॥ हरि हर ब्रह्मा सारिखा, पर नारी न मूके तेह ॥ ६ ॥ कर जोडी तापसी भणे, सांभल स्वामि कंत ॥ सूरज पासे सोंपीए, ठाया बाला संत ॥ ७॥ तापस कहे सुण तापसी, दिनकर छे छीनाल ॥ कुंती कन्या जेणे भोगवी, किम छोके ते बाल ॥ ८ ॥

ढाल बारमी.

दीस सगारे बादस वरणी—ए देशी.

सांजस तापसी जादव राजा, समुद्रविजय सुखकारी ॥ तुमे सुणजोरे॥ आगे होइ जे वात, मूकी पर तणी तात ॥तु०॥ ए आंकणी ॥ तेहनी भगनी कुंती कन्या, रूपे रंभा अवतारी ॥ तु० ॥ १ ॥ चतुर्थ स्नान करवाने वाला, जमुना नदी गइ तेह ॥ तु० ॥ वस्त्र विवर्जित स्नान करंती, सूर्यदेवे दीठी तेह ॥ तु० ॥ २ ॥ रूप देखी तव मदने पीड्यो, विप्र वेश वेगे लीधो ॥ तु० ॥ कपांवर पेहेर्यां जनोइ आरोपी, सर्वांग तिलकज कीधो ॥ तु० ॥ ३ ॥ राम राम मुख बोलतो निरमल, आव्यो कुंतीनी पासे ॥ तु० ॥ आशिर्वाद देइ करी जंपे, सांजलो कुमरी उल्लासे ॥ तु० ॥ ४ ॥ काम क्रीडा अमशुं तमे खेलो, जोवननो लाहो लीजे ॥ तु० ॥ कुंती कहे कुमारिका अमे हुं, अघट काम किम कीजे ॥ तु० ॥ ५ ॥ द्विज रूपी सूरज वदे वाणी, सांजलो कुमरी अजाण ॥ तु० ॥ उत्तम वर्ण ब्राह्मण वेद जाण, विना नवि धरुं प्राण ॥ तु० ॥ ६ ॥ पवित्र पात्र अमे जगत् प्रसिद्धा, अमने आपे जे दान ॥ तु० ॥ पाप जाय सुख संपत्ति पामे, स्वर्ग लोके लहे मान ॥ तु० ॥ ७ ॥ विप्र वचन कुमरी मन मान्युं, स्वस्ति भणावी का-

य ॥ तु० ॥ भोग विलास हुवो रंग रोल, हवे प्रीत वेज थाय ॥ तु० ॥ ८ ॥ गर्भ
धर्यो कुंतीए तेणे अवसर, भोग करी वलीयो भाण ॥ तु० ॥ कुमरी कहे किहां जाउं
छो स्वामि, वृतांत कहो छांडी काण ॥ तु० ॥ ९ ॥ द्विजवर कहे सुणो सुंदरी कन्या,
सूर्यदेव अम नाम ॥ तु० ॥ रूप देखी चित्त अम तणुं चलीयुं, विप्र होइ कीधो काम
॥तु०॥ १० ॥ भुवन प्रकाश करुं दिन गगने, जावा थो मुज आज ॥ तु० ॥ कुंती कहे
हुं तुं बाल कुमारी, उधान रह्यो दिनराज ॥ तु० ॥११॥ भासुर भणे भामनी तुम कूखे,
पुत्र होशे दातार ॥ तु० ॥ रूप कला बल बुद्धि विचक्षण, त्रीजा दिवस मोझार ॥
तु० ॥ १२ ॥ मंत्र अपूर्व वली आपुं तुमने, नर आकर्षण होय ॥ तु० ॥ समरतां आ-
वे सहु पासे, काज करशुं आपण दोय ॥ तु०॥१३॥ मंत्र आपी करी कुंती संतोषी, भानु
गयो निज ठाम ॥ तु० ॥ कन्याए काने जण्यो सुत सुंदर, करण हुवो तेह नाम ॥
तु० ॥ १४ ॥ मंगपकोशीक कहे सुण तापसी, कुंतीने भोगवे जेह ॥ तु० ॥ सूरज देवता
मोटो खंपट, ठायाने केम छोडे तेह ॥ तु० ॥ १५ ॥ ढाल बारमी खंड बीजानी, कही
श्रोता जन सारु ॥ तु० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पभणे, नेमविजय कहे वारु ॥ तु० ॥ १६ ॥

दूहा.

नागणी कहे स्वामि सुणो, चंद्र अने मद्दा संत ॥ पुत्री ते पासे नथी, जाग्रा जइए कंत ॥१॥ संकरकौशीक तब कहे, सुण नागणी मान ॥ चंद्र चपल संपट पणो, घटती न होय वान ॥२॥ तेह कथा पक्षी सांभली, सोमे कीध अनाचार ॥ गुरुपत्नी तेणे भोगवी, कहेशुं तेह विचार ॥ ३ ॥ बृहस्पति वसुधामां वडो, सुर सघलानो गोर ॥ तस नारी दीठी रुपडी, चंद्र लीधी चोर ॥ ४ ॥ व्यभिचार तेहशुं आचर्यो, रात दिवस ते चंद्र ॥ सुर गुरुए जाणी करी, गर करी तब इंद्र ॥ ५ ॥ जजमान तुमे सांभलो, चंद्रे हरी मुज नार ॥ अन्याय कीधो एणे घणो, वेगे करो अम सार ॥६॥ सुरपति सैन्य सेइ संचर्यो, जुध करवाने जाम ॥ सोमे शिव संस्या करी, आव्यो ईश्वरने धाम ॥ ७ ॥ कर जोडी शशीकर नमे, सुणो शंकर महाराज ॥ एक कथा देउ सांभली, अम तणो करो काज ॥ ८ ॥ शंकर तब सेना सइ, त्रिशुल धरी निज हाथ ॥ इंद्र सामो वेगे जइ, युद्ध करे ते साथ ॥ ९ ॥ उभय पक्ष एकठे घणां, सुरपति शंकर वेह ॥ संग्राम करतां दिन घणा, फेडेता नावे छेह ॥ १० ॥

ढाल तेरमी.

कंकण मोल लीयो–ए देशी.

संधी तव देवे करीरे साजन, संग्राम निवार्यो ताम ॥ सुगुणा सांभलो ॥ गुरुपत्नी आपो वलीरे ॥ सा० ॥ जाउं तुमे आपणे गाम ॥ सु० ॥ १ ॥ सोम कहे सुर सांभलोरे ॥ सा० ॥ गोरु छे अम तणुं जेह ॥ सु० ॥ उदर मांहीं अवला तणेरे ॥ सा० ॥ आपावो अमने तेह ॥ सु० ॥ २ ॥ सुरगुरु तव तिहां बोलीयोरे ॥ सा० ॥ सांभलो तुमे सहु देव ॥ सु० ॥ उदरे अपत्य छे माहरुंरे ॥ सा० ॥ किम आपावो ततखेव ॥ सु० ॥ ३ ॥ सोम कहे गोरु माहरोरे ॥ सा० ॥ बृहस्पति कहे ए मुज ॥ सु० ॥ गुरु जजमान ऊगमो करेरे ॥ सा० ॥ नवि पामे कोइ सूज ॥ सु० ॥ ४ ॥ वढतां थकां वेहु वारीयारे ॥ सा० ॥ न्याय कीधो तिणे एह ॥ सु० ॥ गर्भवती स्त्रीने पूछीएरे ॥ सा० ॥ साचुं कहेशे तेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुर सघले मली पूछीयुंरे ॥ सा० ॥ गुरु कामनीने ताम ॥ सु० ॥ सुधुं बोलो मावडीरे ॥ सा० ॥ केहनो अपत्य अभिराम ॥ सु० ॥ ६ ॥ गुरुपत्नी कहे सांभलोरे ॥ सा० ॥ उदर मांहे छे जेह ॥ सु० ॥ तेहने तमे पूछजोरे ॥ सा० ॥ साचुं कहेशे पत्नी तेह ॥ सु० ॥ ७ ॥ तव तेणीए ते जनमीयोरे ॥ सा० ॥ पुत्र हुवो अभि-

राम ॥ सु० ॥ बाप तणां लक्षण घणारे ॥सा०॥ देवे मली पूछ्यो ताम ॥ सु० ॥ ८ ॥
सुत साचुं तव उंचरेरे ॥सा०॥ सोम तणो हुं पुत्र ॥ सु० ॥ सुर सबला जाणे सहीरे ॥
सा० ॥ इणी जननीए प्रसूत ॥सु०॥९॥ सोम सूत सहुए कहेरे ॥सा०॥ जाराजात वली
नाम ॥ सु० ॥ बुधवार बुद्धि आगलोरे ॥ सा० ॥ पुराण प्रसिद्धो ताम ॥ सु० ॥ १० ॥
चंद्र तणां लक्षण एहवांरे ॥ सा० ॥ जाणे बाल गोपाल ॥ सु० ॥ एह पासे केम मूकी-
एरे ॥ सा० ॥ पुत्री आया बाल ॥ सु० ॥ ११ ॥ तापसी कहे तापस सुणोरे ॥ सा० ॥
इंद्र अपूरव आज ॥ सु० ॥ तेह पासे पुत्री मेलीनेरे ॥ सा० ॥ पछी कीजे निज काज ॥
सु० ॥ १२ ॥ तापस कहे सुण कामनीरे ॥सा० ॥ इंद्र तणो व्यभिचार ॥ सु० ॥ पुराण
प्रसिद्ध जाणे सहुरे, ॥ सा० ॥ कहेशुं तेह विचार ॥ सु० ॥ १३ ॥ गंगा नदी छे निर्म-
लीरे ॥ सा० ॥ तापस वसे तिहां सार ॥ सु० ॥ गौतम ऋषि सहुमां वडोरे ॥ सा० ॥
अहिल्या तणो भरतार ॥ सु० ॥ १४ ॥ एक वार स्वर्गह थकीरे ॥ सा० ॥ इंद्र सुरासुर
राय ॥ सु० ॥ विमान बेसीने आवीयोरे ॥सा० ॥ वांदवा ऋषिवर पाय ॥ सु० ॥ १५ ॥
अहिल्या दीठी तिहां रुयडीरे ॥ सा० ॥ रूपे करी रंभा समान ॥ सु० ॥ देखी इंद्र
विह्वल हवोरे ॥ सा० ॥ लाग्यां अंग कामनां बाण ॥ सु० ॥ १६ ॥ रूप रची तेणे

रुपगोरे ॥ सा० ॥ अहिल्या निज वश कीध ॥ सु० ॥ मढी मांहे पेसी करीरे ॥सा०॥ इंद्रे आलिंगन दीध ॥ सु० ॥ १७ ॥ स्नान करी तव आवीयोरे ॥ सा० ॥ गौतम तापस जाम ॥ सु० ॥ द्वार दीधां देखी करीरे ॥ सा० ॥ आचंब्यो तेह ताम ॥ सु० ॥ १८ ॥ पर पुरुष देखी करीरे ॥सा० ॥ उपन्यो कोप अपार ॥सु०॥ रंडे मुंडे तापसीरे ॥सा०॥ उपाग वेगे करी वार ॥ सु० ॥ १९ ॥ जय पाम्या तव बेहु जणांरे ॥ सा० ॥ इंद्र हुवो मिंजार ॥ सु० ॥ घर मांहीं नासी गयोरे ॥सा०॥ पेठो चूला मोझार ॥ सु० ॥ ॥ २० ॥ खंड बीजानी ढाल तेरमीरे ॥ सा० ॥ आगे जे होये वात ॥ सु० ॥ रंगविजय कविरायनोरे ॥ सा० ॥ नेमने हर्ष सुखसात ॥ सु० ॥ २१ ॥

दुहा.

तव भूजंती तापसी, वार उघाड्यो जाम ॥ महारंड रांमनी शुं कर्युं, गौतम पूछे ताम ॥ १ ॥ कोण पुरुष तें घालीयो, लंपट लुच्चो जार ॥ साचुं कहेरे पापणी, आपे करुं तुज ठार ॥ २ ॥ कामनी कहे कंथ सांभलो, घरमां छे मिंजार ॥ भ्रांत पडी छे तुम घणी, नहीं कीधो व्यभिचार ॥ ३ ॥ गौतमे ज्ञान विचारीयुं, जाण्युं बेहुनुं पाप ॥ लीला कीध पाखंडनी, अहिल्याने दीध आप ॥ ४ ॥ निकाल्यो वह नासतो, इंद्र

पड्यो तेणी वार ॥ किट पाडी मद्दा रंकना, तापसी कीध ध्यानिचार ॥ ५ ॥ पर नारी
ने जोगवी, ते उपर मुज रंग ॥ सहस्र शरीरे नीकलो, नगाकार उतंग ॥ ६ ॥ ताप-
सने आपे करी, जोनि दुइ तनकाज ॥ मघवा शरीर नर्युं खर्कं, अशुन दीसे विक-
राल ॥ ७ ॥ पाय लागी इंद्र विनवे, सांनल तुं ऋषिराज ॥ लोक हांसुं होशे घणुं,
लागशे पोहोशी लाज ॥ ८ ॥ क्षमा करो स्वामि तुमे, जग टालो मुज अंग ॥ हुं
अपराधी पाडीयो, मुज उपर करो रंग ॥ ९ ॥ इंद्र वचने उपशम करी, गोतम बोल्या
नाम ॥ होजो साहारी कृपा थकी, सहस्र लोचन अभिराम ॥ १० ॥ सहस्राक्ष
नाम तेहनो हुवो, वेद पुराणे तेह ॥ संपट पासे केम मेलीए, वाया पुत्री एह ॥ ११ ॥
तापसी कहे तापस सुणो, बृहस्पति विद्यानो वास ॥ सुर सभाना गुरु जलो, पुत्री छवो
तेह पास ॥ १२ ॥ तापस कहे सुण कामनी, तुं मोटी छे अजाण ॥ जाइनी जामिनी
जोगवी, केम नवीए होय हाण ॥ १३ ॥

दाल चौदमी.

पाया किसनपुरी, तुम विना मंदिरां उजड पडी—ए देशी.

नाम तापस कहे सुण नार, सुर सभा संपट निरधार ॥ साजन वात सुणो, सां-

जधी सद्गुरु गत अवगुणो ॥ ए आंकणी ॥ ते पासे केम उधीए वाल, जामनी सुण तुं पइ उजमाल ॥सा०॥सां०॥१॥ एक वात में हृदय विचार, जम जग मांहीं रुडो ते सार ॥ सा० ॥ जोइ धर्म विचारे तेह, ठाया पुत्री पासे मूकीए एह ॥सा०॥ सां० ॥ २ ॥ मंडपकौशीक तापस ताम, ठाया साव्यो जमने गाम ॥ सा० ॥ कर जोडी कहे सुण महाराय, धर्माधर्म जाणो तुमे न्याय ॥सा०॥ सां० ॥ ३ ॥ शीलवंत स्वामि गुणवंत, महीपल मोटो तुं महांत ॥ सा० ॥ निकलंक तुं सुणीए महाराज, विनति माहरी सांभलो आज ॥ सा० ॥सां० ॥ ४ ॥ तीर्थजात्राए अमे जाउं देव, ठाया थापिण राखो हेव ॥ सा० ॥ तुम प्रासादे करुं अमे जात्र, पवित्र होशे अमारां गात्र ॥ सा०॥ सां० ॥ ५ ॥ जम कहे सुण तापस राज, ए अमने नहीं लागे लाज ॥ सा० ॥ ठोकी जाउं तुमे ठाया एह, अजोगत आवी लेजो तेह ॥ सा० ॥ सां० ॥ ६ ॥ तापस तव रत्रि-पात थयो, जम पासे मूकीने गयो ॥ सा० ॥ अडसठ तीरथ करे फरी जाम, कृतांत पात सांभलजो ताम ॥ सा० ॥ सां० ॥ ७ ॥ ठाया रूप देखी अजिराम, जम सर्वांगे व्याप्यो काम ॥ सा० ॥ मनमां चिंतवे जोगवुं एह, सफल जनम करुं मुज देह ॥ सा० ॥ सां० ॥ ८ ॥ जोखवी घर मांहे तेही वाल, पाप करम मांड्यो विकराल ॥ सा० ॥

अघट काम कन्याशुं कीध, धर्मराज गद्दीपद्म परसीध ॥ सा० ॥ सा० ॥ ९ ॥ ...
सरसुं सुख भोगवे, रात दिवस ते जगत अनुभवे ॥ सा० ॥ सुर सपद्मे तव जाणी नार,
पृथ्वी नहीं त्रिभुवन मोझार ॥ सा० ॥ सां० ॥ १० ॥ दरवा हेरे पकीया देव, यम-
मंदिरनी मांही देव ॥ सा० ॥ रात निमरा ते टांपे पणुं, ध्यान लाग्युं छे गाया तणुं
॥ सा० ॥ सां० ॥ ११ ॥ जमे जाण्यो तेहनो रांग, सुर सपद्मा मुज करशे पंच ॥ सा० ॥
उपाडीने गद्दी ततकाल, उदर मांही अतारी बाल ॥ सा० ॥ सां० ॥ १२ ॥ देव देखे
नहीं गाया तेह, माथुं खंजोडी गया निज गेह ॥ सा० ॥ धर्मराज पिमासण करे,
सार रखे मुज नारी हरे ॥ सां० ॥ सां० ॥ १३ ॥ एकठो निज मंदिरमां जइ, सपद्मे
निरखे उजो पइ ॥ सा० ॥ जोतां स्थान भलि देखे कोय, उपकीने जग काढे सोय ॥
सा० ॥ सा० ॥ १४ ॥ पाप करम तेहनां संचरे, काम कुतूहल एणी परे करे ॥ सा० ॥
काल पम्ने काढे ततकाल, भोग करीने गयो ते बाल ॥ सा० ॥ सां० ॥ १५ ॥ इणी
परे काल भमु तस जाय, जमकरणी केहने जाणी न थाय ॥ सा० ॥ पवनवेग पृथ्वी
माहे भमे, जलमां थलमां आकाश ते रमे ॥सा०॥सां०॥१६॥ अदृश्य रूपे सपद्मे संचरे,
[illegible] ते कारज करे ॥ सा० ॥ तेणे दीठी आवा आग, अति मिलने पर आज्यो
[illegible]व.

साम ॥ सा० ॥ सां० ॥ १७ ॥ विश्वानल तुं सांजल आज, जनम सफल करे महाराज ॥ सा० ॥ रूपवंत ठायानो संजोग, तेहशुं जम करे नित भोग ॥ सा० ॥ सां० ॥१८॥ उदर मांही राखे ते पाप, काज पडये काढे ततकाल ॥सा०॥ विश्वानल कहे सांजल जाय, त्रिभुवन मांहे तुं मोटो वाय ॥ सा० ॥ सां०॥ १९ ॥ खंड बीजानी चौदमी ढाल, नेमविजय कहे उजमाल ॥ सा० ॥ आगल सांजलजो सहु कोय, वायुकुमार करे ते होय ॥ सा० ॥ सां० ॥ २० ॥

दुहा.

जोग मले तेहशुं करो, जीव जातो मुज राख ॥ सांजलजो वायु कहे, वचन अमारां जाख ॥ १ ॥ जम जूठो कामी घणो, घडी एक न मेले वाल ॥ केम मेलाप तेहशुं होये, उदरमां राखे ततकाल ॥ २ ॥ आज एक वात विचारी में, पुण्ये सरशे काज ॥ गंगा स्नान करवा भणी, जम राजा करी साज ॥ ३ ॥ पोहोर एक जाय ध्यानमां, ठाया मेली एक ठाम ॥ संध्या जाप करे तिहां, आपणो होशे काम ॥ ४ ॥ एक पोहोर अवकाशमां, जम नावे ठाया पास ॥ तेणे समे तिहां जाइने, ठाया हरीए खास ॥ ५ ॥

ढाल पंदरमी.

अणसणरारे योगी—ए देशी.

विश्वानल आनंद्यो ताम, सांनल पवन अमारो कामरे ॥ सुणजो तमे नाइ ॥ जो एक पोढोर मलशे संजोग, तो नवि पमशे कांइ विजोगरे ॥सु०॥१॥ विरुद्ध बोलीने चाल्यो जाम, अगनि गयो गंगातट तामरे ॥ सु० ॥ स्नान करवा आव्यो जम जांहीं, विश्वानल खोसीयो त्यांहींरे ॥ सु० ॥ २ ॥ जम आव्यो जमना तट जाम, सघले देखी निरंजन ठामरे ॥ सु० ॥ वमन करी तव काढी नार, ठाया सांती कोतर मोझारे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जम जल पेसी करे सनान, संध्या तरपण मांड्यो ध्यानरे ॥ सु० ॥ अगनि अपूरव रूपज लीध, आभूषण सघलां अंगे कीधरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ ठाया पासे आव्यो ताम, हास्य वचन बोल्यो अभिरामरे ॥ सु० ॥ साचुं सांनल सुंदरी आज, अमे साधुं तमारुं काजरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ त्रिभुवन मांहीं मोटो हुं देव, सुर नर किंनर करे मुज सेवरे ॥ सु० ॥ तेत्रीश क्रोड तणो हुं मुख, हुं देउं सघलाने सुखरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ होम हुताशन जे करे मुज, मारो नाम राखे ते गुजरे ॥ सु० ॥ मुजने जे बली दीये दान, तेहने वाधे सुख संतानरे ॥ सु० ॥७॥ आपण बेहु हुं रूप निधान, जावे दीजीए

जोगनुं दानरे ॥ सु० ॥ ग्रापाने तब उपनो रंग, स्वाहा करीने आप्युं अंगरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ काम क्रीडा कीधी ततकाल, जम आवतो दीठो विकरालरे ॥ सु० ॥ ग्रापा कहे तुं सांभल कन्त, कृतांत करशे तुमारो अंतरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ जीवता जाउं तुमे एवे आज, नहीं तो वेदुने लागशे लाजरे ॥ सु० ॥ कान नाक छेदे तब माहारो, गारी करशे कोपलो ताहरोरे ॥ सु० ॥ १ ॥ कशी संख्या न करो ए वात, नहीं तो आपणो होशे पातरे ॥ सु० ॥ आगे जीववधी यमराय, ते उपरे कीधो अन्यायरे ॥ सु० ॥ ११ ॥ विश्वानल कहे सांभल नार, हुं पग पांगलो तुं अपारे ॥ सु० ॥ चरण होय तो दोडुं आज, यम आगलथी करुं हुं काजरे ॥ सु० ॥ १२ ॥ यम भय पामी ग्रापा पास, अगनि देव गह्यो ततकालरे ॥ सु० ॥ धर्मराज आव्यो तेणी वार, उपाडी गली ग्रापा नारे ॥ सु० ॥ १३ ॥ घर आवीने उबके जेह, जोग करीने वली गले तेहरे ॥ सु० ॥ स्नान करवा जम गंगा जाय, पोहोर एक तप जपने थायरे ॥ सु० ॥ ॥ १४ ॥ ग्रापा तब उबके छे आग, पोहोर एक आवे तसु भागरे ॥ सु० ॥ यम देखीने गले आग ग्रापा, नारीने लागी एम मायारे ॥ सु० ॥ १५ ॥ एणी परे कामिनी जोगवे जेह, अपर वात सांभलजो तेहरे ॥ सु० ॥ दिवस मास वहु जाये एह, अगनि

नाखो जग मांहीं तेहरे ॥ सु० ॥ १६ ॥ लोक तणां तव रांधणां रहीयां, घर हाटे अंधारां पडीयारे ॥ सु० ॥ काचो कोरो खाए लोक, पेटपीडे करी पाडे पोकरे ॥ सु० ॥ १७ ॥ सोनार लोहार पोकज पाडे, अगनि विना केम घाट घाडेरे ॥ सु० ॥ केम करे जगन जानी जाग, नहीं जाप विना कोइ लागरे ॥ सु० ॥ १८ ॥ जाप विना देव थया छे घेला, इंद्र आगे पोकारे गया वेहेलारे ॥ सु० ॥ सुरपति चिंता उपनी जाग, पवनदेव पूछ्यो तेणे तामरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ वायु वदे सांभल मेघवान, अगनि जोयो में सघले गामरे ॥ सु० ॥ एक जायगा छे तेह तणी वारु, जोइने कहेशुं त्रीहुंति[1] वारुरे ॥ सु० ॥ २० ॥ ढाल पंदरमी खंभ बीजानी, आगे कहेशुं वात त्रीजानीरे ॥ सु० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम बोले, नेमविजय नवि वात खोलेरे ॥ सु० ॥

दुहा.

पवने तव सहु नोतर्या, सुर नर किन्नर देव ॥ जमने मांड्यां वेसणां, त्रण जणांनां हेव ॥ १ ॥ जम मन मांहे चमकीयो, वायु कवण ए काम ॥ एकेको आसन सहु तणी, अमने केम त्रण ठाम ॥ २ ॥ वायु कहे साचुं कहुं, उदर मांहीं तुम तेह ॥ सहुना

१ पणो.

संदेह भांजशे, प्रत्यक्ष थाशे जेह ॥ ३ ॥ जमने काढी उवकी, ठायाने ततकाल ॥ पवन कहे भाजी सुणो, मित्र अमारो आल ॥ ४ ॥ ठायाए वमी करी, विश्वदेव कहाव्यो ताम ॥ जम जूठो कोप्यो घणुं, अग्निनो टालुं ठाम ॥ ५ ॥ विश्वानल नाठो तदा, कृतांत पुंठे धाय ॥ पग पांगलो अगनिदेव ते, पडतो नाठो जाय ॥ ६ ॥ तमो-वम नाठा बेहु जणा, व्यभिचारी मारुं आज ॥ पेठो जइ पाषाणमां, विश्वानल तिण ताज ॥ ७ ॥

ढाल सोलमी.

सुण वेनी पीयुमो परदेशी—ए देशी.

अगनि अलोप न दीसे जाम, जम पाछो आव्यो ठामरे ॥ घरे लेइ गयो ठायाने सार, भोगवे कृतांत अपाररे ॥ सांभलजो साजन जे कहुं वात ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांभलो साच, वाभव बोल्युं जे वाचरे ॥ वेद पुराणे छे ए वात, साचुं जूठुं कहो भ्रातरे ॥ सां० ॥ २ ॥ द्विजवर बोल्या सांभल वाच, वचन तुमारो साच-रे ॥ शास्त्र अमारे बोल्युं एम, अमे लोप्युं जाये केमरे ॥ सां० ॥ ३ ॥ मनोवेग बोल्यो वली ताम, सांभलो ब्राह्मण गुणधामरे ॥ जमदेव जाणे सहुए जगमां, अतीत

अनागत वर्तमानमांरे ॥ सां० ॥ ४ ॥ विश्वानल तस पेट मोकार, पोदोर एक नोगवे
नारे ॥ ज्ञाने करी जाण्यो नहीं तेह, जमे हूकमो आपणो देहरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ तो
केम जाणे त्रिभुवन वात, दोष मोटो एक घातरे ॥ जम सघलो जाणे संसार, अगनि
न जाण्यो उदर मोकाररे ॥ सां० ॥ ६ ॥ तेम मुज मीना गंधी जाय, चार जोजन
उंदर न थाय रे ॥ जेम द्विज सहुए जमने मान्यो, तेम मिंजार गुणनो वानोरे ॥
सां० ॥ ७ ॥ वली सांजलो ब्राह्मण तमे वात, एक दोषे गुण नोहे घातरे ॥ उमीया
ईश्वरने अर्धांग, जटा मांहीं राखे गंगरे ॥ सां०॥८॥ पारवती गंगाशुं नेह, तारक केम
कहीए तेहरे ॥ नारायण लंपट अपार, गोवालणीशुं कीधो व्यभिचाररे ॥ सां० ॥ ९ ॥
रीछमी सुताशुं कीधो संग, ब्रह्मचर्य ब्रह्मानो भंगरे ॥ सूरजने समरो तुमे सार, कुंतीशुं
कीधो व्यभिचाररे ॥ सां० ॥ १० ॥ सोम सदा सहुए आराध्यो, गुरुपत्नीनो दोष वाध्यो-
रे ॥ इंद्र देव जपे सहु कर जोड, अहिल्यानी लागी खोडरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ सुरगुरुने
छे बहूनुं आल, जाणे छे वाल गोपालरे ॥ विश्वानल नर घणो व्यभिचारी, हवन
होमनो अधिकारीरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ जमने सहु कहे धर्मनो राय, छाया सरसो करे
अन्यायरे ॥ ऋषि तापस मिथ्याती तेह, तेहनां छिद्र अति घणां जेहरे ॥ सां० ॥ १३ ॥

परनारी तणो दोष एक, वेद पुराणे जुउं विवेकरे ॥ जो देव तणा नहीं लीजे दोष, तो भीलडानो इशो रोषरे ॥ सां० ॥ १४ ॥ पाडव वचन बोल्या तव सार, तुं वादी मोटो गुणधाररे ॥ जयवाद पाम्या तुमे अपार, विप्र हार्या अमे वीश वाररे ॥ सां० ॥ १५ ॥ मनोवेग वली बोल्यो ताम, पवनवेग सुणो अभिरामरे ॥ देव तणा गुण दीठा तुममे, काम विकार कह्या अममेरे ॥सां०॥१६॥ मदन महा सुभट जीत्यो जेह, देव करी मानो तुमे तेहरे ॥ नवी पडे रामा रूपने देखी, विषयने नाखे उवेखीरे ॥ सां० ॥ १७ ॥ सराग वचन जे बोले स्वाम, ते उपर न धरे मन कामरे ॥ इंद्रिनां सुख करे असार, ते देव कहीए निरधाररे ॥सां०॥१८॥ शीख सहस्र पाखे अढार, ते तारण तरण संसाररे ॥ एहवा जाणो जिनवर देव, जावे जगते करो सेवरे ॥ सां० ॥ १९ ॥ त्रिभुवन नायक सेवे जेह, स्वर्ग मुक्ति पामे तेहरे ॥ जीती करी वाहनने वेगे, वनमां आव्या परी तेगेरे ॥ सां० ॥ २० ॥ खंड बीजानी सोलमी ढाल, सांभलजो बाल गोपालरे ॥ रंगविजयनो शिष्य दयाल, नेम कहे थइ उजमालरे ॥ सां० ॥ २१ ॥

दुहा.

पवनवेग तव बोलीयो, सांभलो जाइ विचार ॥ देव दोष जे दाखव्या, सत्य वचन ते

सार ॥ १ ॥ एक उत्तर आपो वली, मनोवेग महंत ॥ देव मांहिं जे गुण अछे, ते सहु
कहो तुमे संत ॥ २ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग पवित्र ॥ सुर सघलाना गुण कहुं,
मनमां विचारो चित्र ॥ ३ ॥ भुवन व्यंतर ज्योतषी, स्वर्गवासी जे देव ॥ तेह तणा गुण
सांभलो, आठ कहुं संखेव॥४॥अणिमा अणुं मात्रज करे, मणिमा मेरु समान॥लघिमा
लघुपणुं आचरे, गरिमा भारी जाण॥५॥ प्राप्ति सर्व प्राक्रम करे, इस तणो गुण देय ॥
काम रूप चिंत्युं करे, वशीकरण वशी तेय॥६॥ आठ गुणो छे एह भला, देव तणे जे
अंग, ब्रह्मादिकने ते नहीं, एक गुण छे उत्तंग ॥ ७ ॥ लघिमा गुण ते पामीया, जेणे हो-
ये पद्मोत्तर लाज ॥ लोक मांही दलवा हुवा, ते कहीशुं गुण आज ॥ ८ ॥ सहु पर्वत
मांहे भलो, कैलास उत्तम ठाम ॥ शंकर तप जप तिहां करे, एकाकी गुणधाम ॥ ९ ॥
नारद ऋषि तिहां आवीया, दूरने करी प्रमाण ॥ कर जोडी वंदे विनति, सांभलो
दूर मुज वाण ॥ १० ॥ पुत्र विना गति नवी होये, पहेले परणो नार ॥ पुत्र तणी उत्पत्ति
करी, पछी ऋषि व्रत धार ॥ ११ ॥ ईश्वर तव तिहां बोलीयो, सांभल तुं मुनिराज ॥
कन्या जुवो तमे रुपमी, वेगे करो अम काज ॥ १२ ॥ उत्पत्ति करुं संताननी, वाधे मुज
तो वंश ॥ परणाव्यानुं पुण्य घणुं, तुम होशे सुख हंस ॥ १३ ॥ नारद तव ते सांभली,

चाल्यो कन्या काज ॥ हेमाचलने जइ मल्यो, सांभल तुं गिरिराज ॥ १४ ॥ तुम कुमरी छे रुयडी, शंकरने थो तेह ॥ वर कन्या ए योग्य छे, महादेवशुं करो नेह ॥ १५ ॥ हेमाचल कहे नारद सुणो, पारवती में दीध ॥ लगन लेइ ऋषि चालीयो, हरने जाण तब कीध ॥ १६ ॥

ढाल सत्तरमी.

चरणाली चामुंडा रण चढे—ए देशी.

ईश्वर वर तब सज थइ, वृषभ पलाणी चमीयोरे ॥ भैरव भूत जोटींग घणां, जान सहित पंथ पडीयोरे ॥ सुणजो साजन वातडी ॥ ए आंकणी ॥१॥ शंकर सासु छे मीनका, वर देखी होइ आंखीरे ॥ मीनका कहे सहु सांभलो, मुज बेटी इहां कुणे नाखीरे ॥ सु० ॥ २ ॥ जग जीरण गरडो ए अछे, चमडानो वखद छे वांकोरे ॥ गाम ठाम एहने नहीं, मात पिता नहीं रांडोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जात ने जात को नवि कहे, भस्म विभूषित देहरे ॥ कोडे छे साप वीहामणो, उंढण गजचर्म तेहरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ नरमुंड माला गले अछे, भांग धंतुरो ते खायरे ॥ हस्त कपाल कांखे झोली, शिर जटा किन्नरी वायेरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ एणे जमाइ मुज खप नहीं, जो देशो तो मरशुं आजरे ॥ जब मांहे

नाखुं ए बालिका, विष चाकं नहीं दूर काजरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ ब्रह्मा वरुमाखे आवीया,
मीनाने कहे सुणो मानरे ॥ नोखी चक्रवरती ईशनी, त्रिभुवन मांहि विख्यातरे ॥
सु० ॥ ७ ॥ पारवती परणावो ईशने, विवाह म मोको ए आजरे ॥ जो रे कोपे एह
शंकरो, करशे अनरथ काजरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ सहुने आपी नस्म एह करे, तुम तणो
टाखे ए गामरे ॥ मीनाए मौन धर्युं तदा, विवाह तणो मांड्यो कामरे ॥ सु० ॥ ९ ॥
वरराजा तोरण आवीयो, मखीयुं ले कामिनी थोक रे ॥ पोमादे हांसखदे नखी, हर-
पादे सोमादे धोक रे ॥सु०॥१०॥ रंगादे नांमखदे देमादे, टहकादे खखके कर चुडीरे ॥
माणकदे आवी मखपती,रतनादे टवकादे रुडीरे॥सु०॥११॥कमखादे काकी नामादे नानी,
मामी मोकखदे फुइ फाहुरे ॥ गोरी सखी चांमी चेटीका, जोगण सीकोतरी खाखुरे ॥
सु०॥१२॥ वर पासे जूत जोटींग घणां,दानव जंगम जोगीरे ॥ तेत्रीश क्रोड देव संचर्या,
ऋषि ब्रह्मा दामोदर जोगीरे ॥सु०॥१३॥ पोंखीने वर लीधो मांहरे,ब्रह्मा साथे खगन ते
सारे ॥ समय वरते सहु सावधान,पाणीवख अंतर नहीं वारे ॥सु०॥१४॥ ब्रह्माए हर गोरी
तणो, हस्त मेखापक कीधरे ॥ गीत गावे वर कामनी, पूछने खतु कन्या दीधरे ॥सु० ॥ १५ ॥
चोरी मांहे बेठां वर वहू, ब्रह्मा भणे वेद चारे ॥ मंगख चार ते वरतीयां, हुवो तिहां

जय जयकाररे ॥ सु० ॥ १६ ॥ शंकर आगल संचरे, पाछलथी गौरी नारीरे ॥ फेरा दीये चोरी पाखले, ब्रह्मा वांचे वेद उचारीरे ॥ सु० ॥ १७ ॥ हुताशन साखे अक्षत नाखे, पाणेतर गौरीए पहेर्योरे ॥ ठेको लाग्यो उमीया तणो, उंचो लइ उंलवतां विहर्योरे ॥ सु० ॥ १८ ॥ जंघा दीठी तव रुपमी, विकल थयो ब्रह्मा तामरे ॥ काम कुतूहल चिंतवतां, खलण हुवो तेणे ठामरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ देव सघला तिहां देखता, लाज्यो ब्रह्मा मन मांहिंरे ॥ वेसु वाली पगे मरदले, वीर्य ढांक्यो निज त्यांहिंरे ॥ सु० ॥२०॥ चुरी वेसु मांही उपन्या, सहस्र अठ्याशी ऋषिरायरे ॥ कमंडल मंड हाथे धर्यां, उठीने लाग्या ते पायरे ॥सु०॥२१॥ वाशुप नाम आदे करीरे, ब्रह्मा पुत्र पुराणे प्रसिद्धरे ॥ वाशुखल रूपे ते रुपमा, तप जप तिहां थकी लीधरे ॥ सु० ॥ २२ ॥ खंड बीजानी ढाल ए कही, सत्तरमी सुणजो वारुरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजय श्रोता सारुरे ॥ सु० ॥ २३ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग विचार ॥ ब्रह्मचर्य ब्रह्मा तणुं, नानुं तिहां अपार ॥१॥

सुर नर सघला देखतां, लज्जा पाम्या तेह ॥ हलुपणुं ब्रह्मा हुयो, लघिमा गुण ने तेह ॥ २ ॥ ब्रह्म पुराणे भाखीयो, मिथ्या मत विचार ॥ जिनशासन नहीं मानीए, खोटुं एह असार ॥ ३ ॥ जगगुरु जिनवर जाणजो, निकलंक स्वामि देव ॥ दोष एक दीसे नहीं, तेह तणी करो सेव ॥ ४ ॥ ईश्वर लघुपणुं पामीयो, सांभलो तेह विचार ॥ कुकविए एम भाखीयुं, लिंग पुराण मोझार ॥ ५ ॥

ढाल अढारमी.

तो चढीयो घण माण गजे—ए देशी.

हेमाचल कुमरी वरी ए, शंकर मन उल्लास तो ॥ हर कैलासे थावी करी ए, गोरीशुं भोग विलास तो ॥ १ ॥ उमीया कहे शंकर सुणो ए, नृत्य करो मनोहार तो ॥ देवदार वनमां जइने, नाटिक मांड्यो सार तो ॥ २ ॥ मस्तक शेखर शशिकला ए, गले गरल[1] वाहिं नाग तो ॥ नरमुंड माला शोभती ए, कटीमेखल कटी भाग तो ॥ ३ ॥ भस्म विलेपन अंग रच्युं ए, घुघरीनो घमकार तो ॥ नव रस नाटिक नाचतां ए, झांझरनो झमकार तो ॥ ४ ॥ नृत्य करीने चालीयो ए, जिहां तापस वास तो ॥ तापस तरुणी विह्वल हुइ ए,

१ फेर.

मोह धरे विश्वास तो ॥ ५ ॥ लांबुं लिंग देखी करी ए, जिह्वा घाले सार तो ॥ कंदमूल वनफल घणां ए, हरने आपे नार तो ॥ ६ ॥ भरतार भगत ठोकी करी ए, हींडे ईश्वर साथ तो ॥ सुंदरी कहे शंभु सांभलो ए, लीजे आपण वाथ तो ॥ ७ ॥ एक कहे शंकर सुणो ए, उधरजो महाराज तो ॥ अंगे आलिंगन रुयडो ए, कृपा करी द्यो आज तो ॥ ८ ॥ वनमां शंकर जइ रह्यो ए, ध्यान धरे अपार तो ॥ तापस कामनी तिहां गइ ए, ईश्वरशुं भोग विकार तो॥९॥ तापस तव दुःखीआ थया ए, नारीए मूक्यो संग तो ॥ विचार करे सघला मली ए, केम रहेशे घर रंग तो ॥१०॥ देवपूजा रही आपणी ए, अंगे गयां सनान तो ॥ रांधण सिंधण सहु तज्यां ए, भूखे गया जीव ज्ञान तो ॥ ११ ॥ आपणने मूकी धरे ए, हरने सेवे नार तो ॥ शंकरने केम आपीए ए, एठे त्रिभुवन तार तो ॥१२॥ नारी मोही आपणी ए, जेह देखीने अंग तो ॥ दंभ करो तुमे तेहनो ए, आपीने करो भंग तो ॥ १३ ॥ तापस मलीने आपीयो ए, लिंग पड्युं ततकाल तो ॥ भुवन मांहे ते विस्तर्युं ए, कर्म करे विकराल तो ॥ १४ ॥ लिंगे लक्षण प्रगट कीयो ए, त्रिभुवन पाड्यो त्रास तो ॥ नर नारी संभावीया ए, लोक पामे बहु हास्य तो ॥ १५ ॥ रुद्र कोप्यो

रुषि उपरे ए, लिंग छेद्युं मुज आज तो ॥ शंकरे रुषि तव आपीया ए, लिंग पड्यां सव काख तो ॥ १६ ॥ लिंग तुट्यां तापस तणां ए, वेदना व्यापी अंग तो ॥ वृद्धदक्ष रुषि सघला हुवा ए, हर शरणे गया चंग तो ॥ १७ ॥ शंकर स्वामि सांभलो ए, तुं मोटो महादेव तो ॥ कृपा करो अम उपरे ए, अमे करुं तुम सेव तो ॥ १८ ॥ हरि हर ब्रह्मा तुं भलो ए, भुवन तणो तुं त्रात तो ॥ सरजी पाली पोषे घणुं ए, सेष्ट करे वली घात तो ॥ १९ ॥ अघट काम अमे आचर्युं ए, क्षमा करो तुमे एह तो ॥ ठोरु कठोरु होये घणुं ए, मावाप नहीं दीए छेह तो ॥ २० ॥ ढाल कही अढारमी ए, खंड बीजानी एह तो ॥ रंगविजयनो शिष्य कहे ए, नेमविजयने नेह तो ॥ २१ ॥

दुहा.

भोलो शंकर बोलीयो, सांभलो तापस सार ॥ लिंग अमारो लेइ करी, छवजो योनि मोझार ॥ १ ॥ प्रतिष्ठा करो तुमे तेह तणी, पूजा रचो सुखकार ॥ भाव भगति करो घणी, आराधो नित्य सार ॥ २ ॥ कामनीशुं सुख भोगवो, लिंग लागे तुम देह ॥ तापस तव सघले मली, लिंग धर्युं तिण तेह ॥ ३ ॥ नाना दोरे लिंग बांधीयुं, घस करे तापस विवेक ॥ हाल हाल करे घणुं, तव तुट्यां दोर अनेक ॥ ४ ॥ खांध भांग्या तापस तणा,

केताकना गया प्राण ॥ दोहले थइने आणीयो, तापस आश्रम ताण ॥ ५ ॥ लिंग प्रतिष्ठा ऋषि करे, सुर नर मलीया ताम ॥ हवन होम मंत्री करी, योनि मांहीं ठव्युं जाम ॥ ६ ॥ कोटे पांपे नर केटला, राखे मस्तक मांहीं ॥ लिंगायत लोक हुवा घणा, लिंग पांप्यां वेहु पांहीं॥७॥तेह दिवस आदे करी,मूढ पूजे लिंग तेह॥आपे लिंग गली पड्युं, पांड विगोव्यो एह॥८॥ शंकर लघुपणुं पामीयो, लिंग पुराणे सार॥हरि इंद्र चंद्र वा सुरपति, पर रमणी लघुपणुं धार॥ ए॥मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुमे आज॥ सुर सघलाना गुण कह्या, जिणे पामीए वहु लाज ॥ १० ॥ परनारी जे भोगवे, तेहने मोटां पाप ॥ दुरगति दुःख पामे घणां, नरके लहे संताप ॥ ११ ॥परनारीजे भोगवे, दोषवंत ते देव ॥ पूज्यपणुं तेने नहीं,किम कीजे तस सेव ॥ १२ ॥ निष्कलंक जिन जाणजो, दोष नहींय लगार ॥ पर तारक आपे तरे, देव जाणो ते सार ॥ १३ ॥ पवनवेग तुमे सांभलो, जैनशास्त्र विचार॥शंकर ब्रह्मा उत्पत्ति कहुं, सत्य वचन जिन सार ॥ १४॥

ढाल उंगणीशमी.

उजी वावाजीरी पोल, देवर आणे आवीयोरे लाल–ए देशी.

भरत क्षेत्र मांहीं सार, गंधार देश रलीआमणोरे लाल ॥ वसीपुर नगर उदार,

सरगंधर राजा सोहामणोरे लाल ॥ १ ॥ सत्यवती राणी तास, सत्यकी सूत नामे भलोरे लाल ॥ सिंधु देश मांही जाण, विशाला नगरी भूपति नीलोरे लाल ॥ २ ॥ चेटक राय करे राज, सुभद्राशुं सुख भोगवेरे लाल ॥ तेहने कन्या छुइ सात, प्रीत कारणी भीनुं भवेरे लाल ॥ ३ ॥ मृगावती सुप्रभा धाल, प्रभावती चेलणा गुणवतीरे लाल ॥ ज्येष्ठा छठी सार, चंदना लघु सातमी सतीरे लाल ॥ ४ ॥ राजगही श्रेणिक भूप, तस पुत्र बुद्धे आगलोरे लाल ॥ अभयकुमार गुणवंत, प्रधान पद भोगवे भलोरे लाल ॥५॥ पदम चितारो जेह, चेलणा पट लखी लायीउंरे लाल ॥ रूप देखी अचंभ्यो राय, श्रेणिक मनमां भावीयोरे लाल ॥ ६ ॥ श्रेणिक लेइ आदेश, अभयकुमार उद्यम करीरे लाल ॥ श्रेणिक पट लखी रूप, वणकारा वेशे पलद भरीरे लाल ॥ ७ ॥ विशाला नगरी उद्यान, जिन भुवने जइ उतर्योरे लाल ॥ चेलणा ज्येष्ठा आवी ताम, जिन प्रतिमा वंदन कर्योरे लाल ॥ ८ ॥ कुमरे प्रसार्यो पट ताम, रूप जोइ कन्या विह्वल हुइरे लाल ॥ आ भवे ए भरतार, चेलणा कुमरी एम लखीरे लाल ॥ ९ ॥ अभयकुमर भणे ताम, तुम मेलुं श्रेणिक भूपतिरे लाल ॥ सुरंगमां थइ आवजो देव, अमे लेइ जाशुं तुम सतीरे लाल ॥ १० ॥ कुमरी घर गइ दोय, चिंतातुर थइ वाखिकारे लाल ॥ श्रेणिक वर मन धार, शृंगार

पेहेरी उजमाखिकारे लाल ॥ ११ ॥ आवी वन विशाल, बीजे दिने वेहु वेनडीरे लाल ॥ टालुं सोकनुं साल, चेलणाए चिंतव्युं तिण घडीरे लाल ॥ १२ ॥ अम विसरीयां वाइ, चेलणा कहे ज्येष्टा सुणोरे लाल ॥ उतावलां तुमे जाइ, आभरण लावो अम तणांरे लाल ॥ १३ ॥ लेवाने तव जाम, ज्येष्टा जव पाछी वलीरे लाल ॥ आवी सहीयरने ठाम, चेलणा तव आवी मलीरे लाल ॥ १४ ॥ अपहरी अभयकुमार, लाव्यो निज पुर ठाम-मांरे लाल ॥ श्रेणिक चेलणा दोय, परणाव्यां उछरंगमांरे लाल ॥ १५ ॥ आभरण ज्येष्टा लेय, आवी तेणे ठामे वहीरे लाल ॥ चेलणाने वन मांहीं, जोइ जाम देखे नहींरे लाल ॥ १६ ॥ आवी जिनने गेह, दुःख करी पाछी वलीरे लाल ॥ एणे मुज देहनो नेम, परणेवा संयम भलीरे लाल ॥ १७ ॥ ज्येष्टाए तव जाम, दीक्षा लीधी रुयडीरे लाल ॥ शास्त्र शीखी ताम, जशोमती वाइ पासे खडीरे लाल ॥ १८ ॥ ज्येष्टा-नी जे वात, सातकी राजाए सांभलीरे लाल ॥ हुवो भोगनो घात, मुज देवी वोली इतीरे लाल ॥ १९ ॥ आव्यो ते मन मांहीं, परणवानो नेम करीरे लाल ॥ दीक्षा लीधी त्यांहिं, समाधि गुप्ति गुरु पय धरीरे लाल ॥ २० ॥ उंगणीशमी कही ढाल, खंड बीजानी ए सहीरे लाल ॥ रंगविजयनो शिष्य, नेमविजय कहे में कहीरे लाल ॥ २१ ॥

ढाल.

सातकी मुनि तप आदरे, पाले पंचाचार ॥ ध्यान धरे अति निरमलुं, गिरि गुफा मोझार ॥१॥ महावीर चोवीशमो, तीर्थंकर ते स्वाम ॥ वाइ सघली ते वांदवा, आवे छे ते धाम ॥२॥ अकाल मेघ तव उमट्यो, गाज वीज अपार ॥ वरसाद वरसे सरवडे, हुवो घणो अंधकार ॥ ३ ॥ चिंहुं दिशि नाठी आर्जिका, भय पामी तेणे ठार ॥ ज्येष्ठा तव नासी गइ, गिरि गुफा मोझार ॥ ४ ॥ अंधकार अधिको थयो, मुनि न दीठो जाम ॥ नीनां पत्र मूकी करी, नीचोवे तेणे ठाम ॥५॥ सातकीए देखी करी, ज्येष्ठानो वली अंग ॥ चित्त चल्युं मुनिवर तणुं, कीधो शीलनो भंग ॥ ६ ॥ उदरे उंधान उपनो, ज्येष्ठा गइ तव जाम ॥ पुनरपि दीक्षा गुरु कने, लीधी सातकी ताम ॥ ७ ॥ चिह्न जाण्यां ज्येष्ठा तणां, जशोमतीए ताम ॥ चेलणा घर आणी करी, आपी तेहने नाम ॥ ८ ॥ उपासना अधिकी करे, टाली शासन लाज ॥ समकित सुधुं दृढ धरे, एह भविनां काज ॥ ९ ॥ नव मास वडे जनमीयो, ज्येष्ठाए सुत जाम ॥ चेलणाए सुत प्रसवीयो, राजा बोले ताम ॥ १० ॥

ढाल वीशमी.

वे कोइ आण मेलावे साजना, साजना वेगले लागनां वे–ए देशी.

श्रेणिक तव महोछव कर्यो, दीधां वोहोलां दाम हो ॥ पुत्र जनम जणावीयो, लोक मांही ताम हो ॥ हो साजन वात सुणो इसी ॥ ए आंकणी ॥१॥ नंदन तव मोटो हुवो, हींडे ते अन्याय हो ॥ रुद्र नाव करे पर तणां, पुत्रने देइ थाय हो ॥हो०॥२॥ राणीए रुद्र नाम कर्युं, लोक ते जपे ताम हो॥रुद्र नाम कहे ठोकरां,नासे ठामो ठाम हो ॥ हो०॥३॥ ढींके पाटु चाबखे, मारे तेह अपार हो ॥ दुष्टपणे दंडे हणे, लोक पाडे पोकार हो ॥ हो० ॥४॥ चेलणाने आवी कह्युं, बहु लोके मली ताम हो ॥ राणी मन मांही चिंतवे,एहने नहीं कोइ ठाम हो ॥ हो० ॥५ ॥ अणाचारथी उपन्यो, केम होए ते संत हो ॥ दूधे सिंच्यो जेम लींबडो, केम होए ते महंत हो ॥ हो० ॥ ६ ॥ रीस करी राणी कहे, सांभल पापी जात हो॥ कुण तन कुणे जनमीयो, कोण ताहरो तात हो ॥ हो० ॥ ७ ॥ सांभलीने रुद्र चिंतवे, एह कारण छे केशुं हो ॥ श्रेणिकने आवी कह्युं, अमे तो नहीं जमेशुं हो ॥ हो० ॥ ८ ॥ मुज माता पिता कहो, कारण शुं छे एह हो ॥ राजाए मांडीने कह्युं, सहु वीत्युं तेह हो ॥ हो० ॥ ए ॥ तव रुद्र तिहां गयो, ज्यां छे पिता ठाम हो ॥ सातकी

मुनि पिता कने, लीधी दीक्षा ताम हो ॥ हो० ॥ १० ॥ सिद्धांत शास्त्र शिखे घणुं,
भणे अंग अग्यार हो ॥ दश पूरव पाठे कर्यां, लीधी विद्या सार हो ॥ हो० ॥ ११ ॥
वली विद्या वसुधा भली, जाणे ते सत पंच हो ॥ लघु विद्या छे सातसें, बोले ते वली
संच हो ॥ हो० ॥ १२ ॥ पुण्य प्रभावे तुम तणे, सिधां सहु अमे आज हो ॥ कर जोडी
विद्या भणे, कांइ दीयो अम काज हो ॥ हो० ॥ १३ ॥ रुद्रे विद्या वश करी, राखी सहु
जाम हो ॥ गोकरण गिरि आवे घणा, श्रावक अभिराम हो ॥ हो० ॥ १४ ॥ सातकी मुनिवर
वांदवा, श्रावक बहु आव्या हो ॥ वाघ सिंह रूप रुद्रे करी, घणो त्रास पडाव्यारे हो ॥
हो० ॥ १५ ॥ सातकी मुनिवर एम भणे, रुद्र सांभलो आज हो ॥ दुष्ट चेष्टा तुं कां करे,
नहीं तुजने लाज हो ॥ हो० ॥ १६ ॥ नारी निमित्त तुज तप तणो, होशे तेहनो भंग
हो ॥ सांभलीने रुद्र वेगे गयो, केलास गिरि उत्तंग हो ॥ हो० १७ ॥ आतापन जोगे
रह्यो, केलास गिरिए जाम हो ॥ अवर कथा तुमे सांभलो, कहेशुं ते अभिराम हो ॥
हो० ॥ १८ ॥ विजयारध पर्वत अछे, दक्षण श्रेणि जाणी हो ॥ त्रिपुर नगर राजा हेम-
रथ, तस मनोरमा राणी हो ॥ हो० ॥ १९ ॥ प्रथम पुत्र ते देवदारु, बीजा विद्युत नाम
हो ॥ राज्ये थापी देवदारुने, दीक्षा लीधी ताम हो ॥ हो० ॥ २० ॥ खंभ बीजानी

ढाल बीशमी, धोताजनने काज हो॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय लहे लाज हो ॥ हो० ॥ २१ ॥

ढुहा.

हेमरथ बहु तप करे, पाले पंचाचार ॥ राज करे ते रुअडो, देवदारु कुमार ॥ १ ॥ विद्युते विश्वास करी, तब मांड्यो संग्राम ॥ वडो भाइ ठंडावीयो, निज राज्यनो ठाम ॥ २ ॥ केसाले नासी गयो, देवदारु कुमार ॥ द्रव्य कुटुंब विमान रची, आव्यो सहु परिवार ॥ ३ ॥ आठ कन्या तस रुयडी, रूपे रंभा समान ॥ रमत करती सरोवरे, गइ करवाने स्नान ॥ ४ ॥ आभरण वस्त्र मूकी करी, अंघोल करवा ताम ॥ रुडे दीठी रुपगी, कन्या रूप निधान ॥ ५ ॥ ते देखी विह्वल थयो, कामे पीड्यो अपार ॥ विद्याए वेगे करी, हर्यां वस्त्र शणगार ॥ ६ ॥ कन्या कहे मुनिवर सुणो, अम देहनो शणगार ॥ तुमे छतां कोणे अपहर्यां, कीहां छे स्वामि सार ॥ ७ ॥ रुडे मुनि तब एम भणे, सांभलजो तुमे पास ॥ अंगीकार करो अम तणो, तो आपुं सुविशाल ॥ ८ ॥ कन्या कहे मुनि सांभलो, केम लोपीए लाज ॥ अमे विद्याधरबेटडी, पिता अणपूछ्यां काज ॥ ९ ॥

रुद्र कहे कन्या सुणो, पिता तणी पूछो आज ॥ वस्त्र आभूषण तुम तणां, खेद करजो काज ॥ १० ॥

ढाल एकवीशमी.

करेखमां घर वेरो—ए देशी.

कुमरी ते तव तिहां गइ, पिता तणे ते पास ॥ वात विचारी सहु कही, विवाहनी ते आस ॥ सुगुण जन सांभलोरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विद्याधर देवदारुए, मोकल्या तव प्रधान ॥ रुद्र पासे आवी कहे, सांभलजो सावधान ॥ सु० ॥ २ ॥ विद्युत विद्याधर अम तणो, मोटो रिपु राज ॥ राज लीधुं ते अम तणुं, तेहने मारो आज ॥ सु० ॥३॥ काज करो जो अम तणो, कन्या देशुं तेह ॥ रुद्रे तव तेहने कह्युं, काज करीशुं एह ॥ सु० ॥ ४ ॥ विद्याए विमान रची, करी कटक अपार ॥ विजयार्धे वेगे जइ, मांड्युं जुद्ध कुकार ॥ सु० ॥ ५ ॥ विद्युत तव सामो थयो, करे सुर संग्राम ॥ रुद्रे रूप घणां करी, फेड्यो तेहनो ठाम ॥ सु० ॥ ६ ॥ विद्याए विजांकीयो, सहुनो कीधो घात ॥ त्रिपुर नगर तेणे जालीयुं, लघु मायों तिहां भ्रात ॥ सु० ॥ ७ ॥ देवदारु राजे तवी, कीधो अति उछाह ॥ विद्याधर सहु भेटीया, मांड्यो तिहां विवाह ॥ सु० ॥ ८ ॥ कुमरी परणी आठ ते, रुद्रे

रूपवंती नार ॥ अपर कन्या परणी घणी, नवि जाणुं तेहनो पार ॥ सु० ॥ ए ॥ सवल काम सेवा जणी, रुद्रे नहीं संतोष ॥ जे जे कामनी जोगवे, ते ते पामे दोष ॥ सु० ॥ १० ॥ मरण पामी ते अति घणी, रुद्रे मांड्यो अन्याय ॥ विद्याधर मारी करी, परण्यो कन्या जाय ॥ सु० ॥ ११ ॥ कन्यानो तेणे क्षय कर्यो, नवि लाजे को पार ॥ हेमाचल राजा जलो, विद्याधरनो सार ॥ सु० ॥ १२ ॥ तस नारी छे रुयमी, मीना तेहनो नाम ॥ पुत्री पारवती तस तणी, रूपे रंभा समान ॥ सु० ॥ १३ ॥ पारवती परणी करी, रुद्रे आणी ताम ॥ काम जोग तेहशुं करे, पामे सुख सुधाम ॥ सु० ॥ १४ ॥ पारवतीशुं संग करी, उठ्यो रुद्र ते जाम ॥ अपवित्र अंगे पूजतां, नाठी विद्या ताम ॥ सु० ॥ १५ ॥ ब्रमा नामे विद्या गइ, रुद्रे रच्यो उपाय ॥ प्रतिमा कीधी तसु तणी, मांगीने ते ध्याय ॥ सु० ॥ १६ ॥ ब्रमा विद्यानो जाप जपे, रुद्र रचीने ध्यान ॥ विघन करेवुं मांडीयुं, विद्याने वलतान ॥ सु० ॥ १७ ॥ नृत्यकी नारी रूप धरी, गीत गावे ते सार ॥ आकाशे उंची रही, नाचे विविध प्रकार ॥ सु० ॥ १८ ॥ नव रस नाटक सांजली, तव चलीयो ते ध्यान ॥ ईश्वर मुख उंचुं करी, जोयुं नृत्यकी तान ॥ सु० ॥ १९ ॥ ढाल ए एकवीशमी, खंड बीजानी एह ॥ रंगविजयनो शिष्य कहे, नेमविजयने नेह ॥ सु० ॥ २० ॥

मोह पाम्यो नृत्य देखतां, नाटकी नख जोइ ताम ॥ विद्याए विपरीत रूप कर्युं, नीचुं रुद्र दीठुं जाम ॥ १ ॥ प्रतिमास्थाने पुरुष एक, वदन चार दीसे तेह ॥ पांचमुं मुख उंचुं खर तणुं, हुंहुंकार हुंके जेह ॥ २ ॥ कठिण चित्त रुद्रे करी, कर नखे खुंखुं कपाल ॥ ब्रह्मा विद्या नासी गइ, दुस्त चोंट्युं विकराल ॥ ३ ॥ कपालिक नाम रुद्रनुं, ते दिनथी कहे लोक ॥ एकदा रुद्र गौरी वेहु, विमान वेसी तजी शोक ॥ ४ ॥ वणारसी वन जायतां, वीर उभा धरी ध्यान ॥ गौरी शंकरने कहे, तुम नाइ रह्यो मूकी मान ॥ ५ ॥ प्रिय कारणी सुत संजमी, तुमे अति लंपट चूर ॥ हास्य करी इम रुद्र भणे, ध्यान करुं एह चूर ॥ ६ ॥ रुद्रे उपसर्ग मांडीयो, मेघवृष्टि करी घोर ॥ गाज वीज घणुं गरगडे, वाघ सिंह सर्प घोर ॥ ७ ॥ वायु अने पाषाणनी, वृष्टि कीधी घणी वार ॥ रात सघली उपद्रव कर्यो, जिन मन न चल्युं लगार ॥ ८ ॥ प्रभात हुवो शिव चिंतवे, में पापी कीध अकाज ॥ मेरु सरिखो निश्चल मुनि, क्षमावंत जिनराज ॥ ९ ॥ निंदा गुरु अति घणी करी, महावीर धर्युं नाम ॥ भक्ति भावे पाय चांपीया, खर मस्तक पड्युं ताम ॥ १० ॥

ढाल बावीशमी.

वेनी प्रीत पूरव पुण्ये पामीए—ए देशी.

अज्ञानी मूढे आचर्युं, चतुर्मुख ब्रह्मा तेहदे ॥ साजन ॥ ब्रह्मविद्या नामे जाणजो, जिनशासन सत्य एहदे ॥ सा० ॥ १ ॥ सुणजो वात सोहामणी ॥ ए आंकणी ॥ जिन वांदी रुद्र घरे गयो, गौरीशुं अति बहु नेहदे ॥ सा० ॥ सांभलो काम शुं शुं करे, विद्याबले शंकर तेहदे ॥ सा० ॥ सु० ॥ २ ॥ ससरो साखो घणुं पीनीया, माने गणे नहीं केहदे ॥ सा० ॥ त्राताए पारवतीने पूछीयुं, हरथी केम रहे विद्या छेहदे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ३ ॥ गौरी कहे जाइ सांभलो, शरीर राखे विद्या पूरहे ॥ सा० ॥ काम सेवा शंकर करे, तप विद्या रहे दूरहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ४ ॥ जगनी संतोषी वचन रसे, कूड रच्यो उपायहे ॥ सा० ॥ हर गौरी शंकर समे, खड्ग दृष्यां वेहु कायहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ५ ॥ ईश्वर अधोगति पामीयो, विद्याए विडंबीया लोकहे ॥ सा० ॥ मरकीए माणस मरे, राजभुवन प्रजा शोकहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ६ ॥ निमित्त जोइ निमित्तिउ कहे, विद्या संतापे सारहे ॥ सा० ॥ आचरण जेने वेहु मुथां, लिंग उपर जलाधारहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ७ ॥ शिखामण एहवी करे, विद्या संतोषाए चंगहे ॥ सा० ॥ तब लोके सहु तिम कर्युं, जोनि

उपर उग्युं शिंगडे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ८ ॥ पूजी प्रतिष्ठी वंदीयो, तव रोग सोग गया दूरडे ॥ सा० ॥ विघ्नाए विघन निवारीयां, सुख संतान घर पूरडे ॥ सा० ॥ सु० ॥९॥ दस्त पाय मस्तक नहीं, जलाधारी मांहे शिंगडे ॥ सा० ॥ निर्लज लोक लाजे नहीं, बीली भंतुरो चढे अंगडे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १० ॥ मूरख मूढ मिथ्यातीया, दस्त शिर कंठे बांधे तेहडे ॥ सा० ॥ दर दर मुख दृष्टे धरे, पूजे पखाले वली जेहडे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ११ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुमे सारडे ॥ सा० ॥ सत्य वचन जे जिन तणां, धरजो मन निरधारडे ॥ सा० ॥सु०॥१२॥ सत्य धरम जिनवर तणो, जिहां जोइए तिहां सारडे ॥ सा० ॥ जे नर निश्चे चित्त धरे, ते पामे भव पारडे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १३ ॥ मिथ्या मत जे मोहीया, वेला ते मूढ गमारडे ॥ सा० ॥ असत्य वचन वली आचरे, भव भव भमशे संसारडे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १४ ॥ पवनवेग तव बोलीउं, सांभलो भाइ चंगडे ॥ सा० ॥ सत्य धरम जिनवर तणो, ते उपर मुज रंगडे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १५ ॥ कुदेव कुशास्त्र कुगुरु सहु, में परीहर्यो मिथ्या धर्मडे ॥ सा० ॥ वचन तुमारां सांभली, जाग्यो सघलो मन भर्मडे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १६ ॥ सुदेव सुगुरुने आदर्यां, आदर्यो जैनतो धर्मडे ॥ सा० ॥ मित्र मनोरथ मुज फल्या,

अशुभ टल्यां मुज कर्महे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १७ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुभविजय शिष्य तेहहे ॥ सा० ॥ भावविजय शिष्य तेहना, सिद्धिविजय शिष्य एहहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १८ ॥ रूपविजय रंगे करी, कृष्णविजय कर जोडहे ॥ सा० ॥ रंगविजय कविराजनी, नावे कोइ होडहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १९ ॥ खंड बीजो पूरो थयो, ढाल बावीशे सारहे ॥ सा० ॥ नेमविजयने नित्य प्रत्ये, जग मांहीं जयकारहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ २० ॥

॥ इति श्री हरिहरब्रह्मार्कचंद्रयमसुरेंद्रसुरगुरु देवादि-
दूषणनामा द्वितीयोऽधिकारः॥

खंड ३ जो.

दुहा.

सकल जिनवर पय नमी, सद्गुरु चरण नमेव ॥ त्रीजो खंड कहेशुं हवे, नेमविजय कहे हेव ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुमे चंग ॥ मिथ्यात पुराण वखी वाखवुं, फेरवी रूप उत्तंग ॥ २ ॥

ढाल पहेली.

मन मधुकर मोही रह्यो—ए देशी.

विद्या प्रभावे रूप पालट्यां, वेहु हुवा साधु महंतरे ॥ पश्चिम पोले प्रवेश करी, द्विजशालाए आवी मंतरे॥ मनोवेग बुद्धि विचक्षणो॥ ए आंकणी ॥१॥ दंड धरी नेरी आवीयो, कीधो पंडाल तामरे ॥ सिंहासन बेठा मुनि रुअडा, जोवा मल्युं सउ गामरे ॥ म० ॥ २ ॥ शब्द सुणी द्विज आवीआ, बोले विरुद अनेकरे ॥ देखी जति प्रते एम कहे, तणो मुनि प्रत्युत्तर एकरे ॥म०॥३॥ छ दर्शन छहुं मत तणा, करो अमपी वाद विशालरे ॥ कोण दर्शन कोण गुरु शिष्य, जवाब देजो दयापालरे ॥मा०॥४॥ विप्र

प्रते मनोवेग भणे, साजलो विप्र सुजाणरे ॥ वाद विद्या अमे नवी लहु, केवां शास्त्र पुराणरे ॥ म० ॥ ५ ॥ जतिवेष आपणे पाखीउं, गुरु नथी अम तणे शिपरे ॥ पाटलीपुर जोवा आवीआ, निगुरा ठइए द्विज विपरे ॥ म० ॥ ६ ॥ कोप करी द्विज पोलीआ, सुणो मुनि मूढ गमाररे ॥ वाद विवाद जाण्यो नहीं, केम कीधो भेरी प्रहाररे ॥ म० ॥ ७ ॥ घंटारव वहु वार कर्यो, सिंहासन वेठा केमरे ॥ नवी गुरु विना वेसा सांभल्या, नगर कोइ प्रेमरे ॥ म० ॥ ८ ॥ माया जति कहे सांभलो, हेलाए पजाव्या घंट भेरीरे ॥ सहजे सिंहासन चांपीआं, न गमे तो वेसीए फेरीरे ॥ म० ॥ ॥ ए ॥ विप्र वचन एम उंचरे, कृपणक मोटा धुताररे ॥ मुनि भणे वामव तुमे सुणो, सत्य केतां सहीए माररे ॥ म० ॥ १० ॥ ते उपर कथा कहुं, सांभलजा सउ साथरे ॥ कोइक गामे एक शेठ रहे, घरमां छे वहु आथरे ॥ म० ॥ ११ ॥ पुत्र वेहु शेठने अछे, जिनपाल अने जिनदत्तरे ॥ गुरु मल्या जिनदत्तने, लीधुं समकित सतरे ॥ म० ॥ १२ ॥ साचुं बोले वणजतां, कूड कपट नवि राखेरे ॥ साचाबोलो सहु कहे, नगर लोक एम भाखेरे ॥ म० ॥ १३ ॥ हाटे वेठो नित्य रहे, आवे लोक अनेकरे ॥ साचो जाणी आवे घणा, बोले विनय विवेकरे ॥ म० ॥ १४ ॥

भाइ मोटो मन चिंतवे, मुजने कीधो नचिंतरे ॥ व्यापारी मोटो थयो, मात पिता मन खंतरे ॥ म० ॥ १५ ॥ साच बोले लाज केम होये, कूड कपट मांहि लाजरे ॥ कूडो संसार सोए कह्यो, कूडो जलधर आजरे ॥ म० ॥ १६ ॥ व्यापार करतां दिन घणा, गया तब लाज न दीसेरे ॥ मात पिता भाइ सहु मली, आवी वेठा बोले रीसेरे ॥ म० ॥ १७ ॥ कहे भाइ तुं शुं करे, लोक आवी मेलां थायरे ॥ एहवो व्यापार किहां शीखीउं, द्रव्य लेइ किहां खायरे ॥ म० ॥ १८ ॥ के लुब्ध्यो वेश्या नारीशुं, के गुप्त दान दीधोरे ॥ के कोइ व्यसन पड्यो अछे, तुं तो दीसे छे सीधोरे ॥ म० ॥ १९ ॥ नामां लेखां संभालीने, बोलावे लघु भाइरे ॥ लाज गमे खोट केम होये, ए शी कीधी कमाइरे ॥ म० ॥ २० ॥ ढाल पेली त्रीजा खंडनी, सांभलो बाल गोपालरे ॥ रंगविजय कविराय छे, नेमविजय उजमालरे ॥ म० ॥ २१ ॥

दुहा.

तब बोल्यो लघु भ्रात ए, तमने द्रव्यनी हुंश ॥ कोटिध्वज थाउं तमे, कूड करी लो हुंस ॥ १ ॥ अमने ए तो नावडे, तुमने तो घणो लोभ ॥ वेसो हाटे जइ हवे, धरना छो तमे मोभ ॥ २ ॥ साचे मारे चालवुं, कहेवुं मारे साच ॥ देवुं लेवुं साचनुं, इणी परे पालुं

वाच ॥ ३ ॥ समकित मारे पालवुं, गुरु वयण केम लोपाय ॥ जीव जाये तो पण सही, किम करुं हुं अन्याय ॥ ४ ॥ एवुं वयण ते सांभली, रीस चढी वृद्ध जाय ॥ धर्मी थइ वेगो हवे, एने केम कहेवाय ॥ ५ ॥ पांच शेरी लइ हाथमां, नाखी सामे लघु भ्रात ॥ लागी मर्म ठामे तदा, मरण पाम्यो जीव जात ॥ ६ ॥ साच बोल्याथी ए थयो, मनोवेग कहे ताम ॥ पुनरपि वात कहुं वली, सांभलजो सहु आम ॥ ७ ॥

ढाल बीजी.

आणे पडवे ससरो सूता, पहेले पडवे वाइजी ॥ एक घडीनी ढील करो तो करशुं राजी, ठेडो नांजी—ए देशी.

पुरोहित हरिभट्टे जेम लहीउं, बंधन तामन दंड ॥ जेहवुं होय तेहवुं भाखतां, तेम अमने थाये भंड ॥ सहुको सुणजो ॥ हांरे तुमे सांभलीने मत कोपो ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ द्विजवर पभणे मुनि तमे सुणजो, हरिभट्ट तणी कहो वात ॥ आप बीती पछी परकाशजो, सांभलशुं तेह ख्यात ॥ स० ॥ २ ॥ वेशधारिक मनोवेग कहे तव, सुणजो विप्र सुजाण ॥ आडकथा निरमली हुं कहुं तुं, सांभलो सुखनी खाण ॥ स० ॥ ३ ॥ अंग देश चंपापुरी नगरी, गुणसागर महाराज ॥ हरि ब्राह्मण राजगर छे तेहना, सेवे भूपति पाय

॥ स० ॥ ४ ॥ एक दिन अशूचि टालवा काजे, झारी भरी चाल्यो दूर ॥ मल मोचन
करी उठ्यो तब, दीठुं नदी आव्युं पूर ॥ स० ॥ ५ ॥ शिखा तरती आवी जल पर, देखी
अचंभ्यो ताम ॥ वेगे जइने नृपने विनव्युं, सांभलो कौतक स्याम ॥ स० ॥ ६ ॥ बाहिर
भूमि गयो हुं वेगलो, नदी कीनारे उभो जाम ॥ मोटी शिखा एक जलमां तरती,
दीठी अमे अभिराम ॥ स० ॥ ७ ॥ पुरोहितनी वाणी सांभलीने, राजा कहे विख्यात ॥
भूत जोटिंग व्यंतरे छलीयो, असंभव बोले वात ॥ स० ॥ ८ ॥ हरिभट्ट शाही दृढतर
बांध्यो, नीक पाडु घणी मूके ॥ जोपा आण्या मंडप तब मांड्यो, चायल दोरी न चूके
॥ स० ॥ ९ ॥ भूणे भंभोले अक्षत छांटे, हाथ पाय शिर कूटे ॥ बुंब करतो हरिभट्ट
चिंते, मरण आव्युं अणखूटे ॥ स० ॥ १० ॥ पुरोहित कहे सांभलो नृप लोका, जूठुं
बोल्युं नोहे साच ॥ भूत जोटिंग वलग्यो नथी मुजने, खोटुं हास्युं हस्यो वाच ॥ स० ॥ ११ ॥
शिखा तरंती नदीए न दीठी, छोडावो महाराज ॥ गुणसागरे ततखिण छोडाव्यो, हरिभट्ट
पाम्यो घणी लाज ॥ स० ॥ १२ ॥ घरे जइ पुरोहित चित्त चिंते, मुज मुख जूठे कर्युं
काजुं ॥ सत्य वचन बोलतां मुने कूड्यो, इह साटुं केम वाजुं ॥ स० ॥ १३ ॥ एकदा
हरिभट्ट वनमां चाल्यो, वाडीमां वानर दीठा ॥ राजागुरुए शिखव्या नृत करवा, नव रस

नाटक करे मीठा ॥ स० ॥ १४ ॥ रमवा राजा वनमां गयो तेहवे, राणीशुं प्रेम धरंतो ॥ एकलो वनवाडी जइ जोइ, दीठो वानर नृत्य करंतो ॥ स० ॥ १५ ॥ नव रस नाटक जोतां नहीं तृपति, आवो राणी जुउं एह ॥ साद सुणी राजा तणो वीना, वानर नाठा तव तेह ॥स०॥१६॥ राणीने आवी नृप कहे सुंदरी, वानरनृत्य देख्युं सार ॥ राजसभा आवी नृप वेगो, प्रोहित सहु परिवार ॥स०॥१७॥ राजा कहे सहुको सांभलजो, कौतिक दीठुं में आज ॥ नव रस नाटिक वानर करता, जोतां थका सीजे काज ॥ स० ॥ १८ ॥ तव राणी कहे में नव दीठुं, सुणजो लोक विचार ॥ नवी दीठुं सांभल्युं आज पहेलुं, भूपति कंखे असार ॥ स० ॥ १९ ॥ हरि प्रोहित कहे सांभलो सज्जन, राजाने वलगाड वन मांहीं ॥ ए वचने राणी नृप वांध्यो, जोपा वेद मल्या त्यांहिं ॥ स० ॥ २० ॥ धूणे धंधोले अंग पखाडे, हरिभट्ट निवार्या तेह ॥ निज हस्ते राजाना वंध छोड्या, वस्त्र विभूपित देह ॥ स० ॥ २१ ॥ प्रोहित जाणे भूपति सुणो लोका, वानर नाटिक जेम वारु ॥ नदी मांहे तरती थकी दीठी, तेम शिखा सत्य मन धारुं ॥ स० ॥ २२ ॥

श्लोक—असंभाव्यं न वक्तव्यं, प्रत्यक्षमपि यद्भवेत् ॥
यथा वानरसंगीतं, तथा सा तरति शिखा ॥ १ ॥

वचन सुणी राजा तव हरख्यो, सत्य वाणी एह सार ॥ प्रत्यक्ष दीठुं तो नवि कहेवुं, नवि माने मूढ गमार ॥ स० ॥ २३ ॥ त्रीजा खंड तणी ढाल बीजी, कही श्रोताजन सारु ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पभणे, नेमविजय कहे वारु ॥ स० ॥ २४ ॥

दुहा.

हरिभट्टनी कथा रुयडी, विप्र सुणी तमे तेह ॥ अद्भुत वचन मुज बोलतां, तामन करशो देह ॥ १ ॥ ते वामव तव बोलीया, सांभलो भाइ भूर ॥ सत्य वचन तुम बोलतां, अमे नवि थाशुं क्रूर ॥ २ ॥ माया मुनि तव बोलीयो, मनोवेग वर वाण ॥ कथा कहुं वली मुज तणी, सुणजो तेह सुजाण ॥ ३ ॥

ढाल त्रीजी.

केसर वरणो हो के काढी कसुंबो मोरा लाल—ए देशी.

श्रीपुर नगरे हो वणिकोत्तम नाम ॥ मारा लाल ॥ जिनदत्त शेठ हो श्रावक कुलकात ॥ मारा लाल ॥ जिनदत्ता नामे हो कहीए तस नारी ॥ मारा० ॥ तेहनो हुं पुत्र हो गुणवंत धारी ॥ मा० ॥ १ ॥ माहरो नाम दीधो हो जिनचरणदास ॥ मा० ॥ भणवा मूक्यो हो मुनिवर पास ॥ मा० ॥ भणी गणीने हो विद्या अनेक ॥ मा० ॥

गुरुने स्थापन्या हो विनय विवेक ॥ मा० ॥ २ ॥ एक दिन मजन हो दीठ राम ॥
मा० ॥ कर्मकुल जरी आवा हो गुणना धाम ॥ मा० ॥ [illegible] हो चाल्या जाम
॥ मा० ॥ ठाकुरा रामा हो दीठा नाम ॥ मा० ॥ ३ ॥ रमता दमा हो जाया रहीया
॥ मा० ॥ निशाहीण जइने हो गुरुने कहीया ॥ मा० ॥ जिनचरणदास हो कर
वहु कीधा ॥ मा० ॥ गुरुजी कमकुल हो नहीं [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] हो
नीकल्या आम ॥ मा० ॥ ठाम एक आवी हो [illegible] ॥ मा० ॥ नामो नाम
हो गुरु आव्या एह ॥ मा० ॥ [illegible] हो [illegible] ॥ मा० ॥ ४ ॥ नय
जीत माठो हो तब हु जाम ॥ मा० ॥ [illegible] हो दीठ नाम ॥ मा० ॥ आ
तो जातो हो आव्यु एक गाम ॥ मा० ॥ [illegible] हो [illegible] नाम ॥ मा० ॥ ६ ॥
पूर्व कीधा हो जे जम पाप ॥ मा० ॥ [illegible] हो [illegible] आप ॥ मा० ॥ नयजीत
गुरुने हो कंप देह ॥ मा० ॥ [illegible] हो [illegible] ॥ मा० ॥ ७ ॥ नासी न
शके हो करिवर आगे ॥ मा० ॥ [illegible] हो [illegible] आगे ॥ मा० ॥ [illegible]
[illegible] हो मे दीठो जाम ॥ मा० ॥ [illegible] हो कर्मकुल नाम ॥ मा० ॥ ८ ॥ कर्मकुल-
ना गुरुमा हो हु जइ पेठो ॥ मा० ॥ [illegible] हो [illegible] दीठो ॥ मा० ॥ नाहुए

केरी दो जोयुं में जाम ॥ मा० ॥ हुं मांही पेठो दो वीठा ताम ॥ मा० ॥ ८ ॥
मादारी पुंछे दो पेठो ते नाग ॥ मा० ॥ हुं नासंतो दो नवी देखुं लाग ॥ मा० ॥
कर्मरूप मांही दो करे पडु केम ॥ मा० ॥ उजावानी दो न करुं जेड ॥ मा० ॥ १० ॥
पाछ पणो मुजने दो नासंतां थयो ॥ मा० ॥ गजवर केडो दो छांडी न गयो ॥
मा० ॥ उजातां मारी दो तुटी काछडी ॥ मा० ॥ हस्तीशुं तव दो सुंढे धरी हडी ॥ मा० ॥
॥ ११ ॥ नागो पडने दो नाठो हुं ताम ॥ मा० ॥ रीसे करिवर दो केमे जाम ॥ मा० ॥
नाशुए नीकली दो जोउं तुं जेह ॥ मा० ॥ पुंछेथी हाथी दो नीकले छे तेह ॥ मा० ॥ १२ ॥
नाशुउं तेवी दो नीकल्यो देह ॥ मा० ॥ पुंछनो केश दो वलग्यो छे तेह ॥ मा० ॥ कोप
करी में दो वीधी गाल ॥ मा० ॥ मर मर हाथी दो तुं अकाल ॥ मा० ॥ १३ पापी जे
नर दो पर पीडा करे ॥ मा० ॥ गजनी परे दो ते नहीं संचरे ॥ मा० ॥ अवकाश लहीने
दो नाठो हुं जाम ॥ मा० ॥ अपर नगर दो वीठुं में ताम ॥ मा० ॥ १४ ॥ जिनवर भुवन दो
वीठुं में चंग ॥ मा० ॥ मुज मन उपनो दो पडोलो रंग ॥ मा० ॥ भाव करीने दो वांद्या अरिहंत
॥ मा० ॥ निरावरण दो नाथुर माहंत ॥ मा० ॥ १५ ॥ वांदी करीने दो हुं बेठो जाम ॥ मा० ॥
नर नारी नवि देखुं लाग ॥ मा० ॥ शून्य भुवन छे दो जिनवर केरुं ॥ मा० ॥ नामे छामे दो

जोउं अजिनेहं ॥मा०॥१६॥ उंची दृष्टि हो जायुं जाम ॥मा०॥ पींछी कमंडल हो दीधुं ताम ॥मा०॥ जतन करीने हो बांध्यां छे जेह ॥मा०॥ हस्ते करीने हो उतार्यां तेह ॥मा०॥१७॥ मन मांही हो विचार्युं एहवुं ॥मा०॥ वस्त्र विहुणा हो करशुं केहेवुं ॥मा०॥श्रावक सुतने हो जाचुं अहीं केम ॥मा०॥ पींछी कमंडल धरीयां तेह ॥मा०॥१८॥ गुरुजी पासे हो दीक्षा में लीध ॥मा०॥ देश विदेशे हो विहारज कीध ॥मा०॥ पाटलीपुरमां हो आव्यो तुं आज ॥मा०॥ कथा कही छे हो में मूकी साज ॥मा०॥१९॥ संबंध कथानो हो कह्यो छे एह ॥मा०॥ द्विज-वर वातो हो विचारो तेह ॥ मा० ॥ साचां वचन हो कह्यां छे अमो ॥ मा० ॥ खोटां वचन हो म करशो तमो ॥ मा० ॥२०॥ खंड त्रीजानी हो ढाल कही त्रीजी ॥ मा० ॥ धोता सहुको हो करे जो जीजी ॥ मा० ॥ रंगविजयनो हो शिष्य एम बोले ॥मा०॥ नेमविजयने हो नहीं कोइ तोले ॥ मा० ॥ २१ ॥

दुहा.

विप्र वचन तब बोलीया, सांभलरे अजाण ॥ जूठो किमही न बोलीए, कवि केम गये भाण ॥ १ ॥ खोटां वचन तमे उंचर्यां, दीसो छोरे सवाम ॥ टिंग मोल्यां छे अपपड्यां, तुमे पूरत महा धाम ॥ २ ॥ कमंडल मांही मयगल तुमो, पेठा छो एह

जूठ ॥ करि नीकलतां नाखुए, केश वखग्यो महा कूट ॥ ३ ॥ माया मुनि तव बोलीयो, सांभलो विप्र विचार ॥ वचन अमारां खंडीयां, असत्य कीयां अपार ॥४॥ जूठां वचन तुमे कां कर्यां, जो नहीं मानो एह ॥ वेद पुराणे जे कह्यां, सत्य करो कांइ तेह ॥५॥ ब्राह्मण तव ते बोलीया, सांभलो भाइ सार ॥ वेद पुराणे नहीं सुण्यां, एहवां वचन लगार ॥ ६ ॥ दीठां सांभल्यां जो होये, वेद पुराणो मांहीं ॥ कपटी केता कां नथी, विलंब करो छो कांहीं ॥ ७ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सुणजो विप्र विचार ॥ सत्य वचन मुज बोलतां, शिक्षापात लहुं मार ॥ ८ ॥ ब्राह्मण वचन वखतो जणे, सांभल मूढ गमार ॥ योग्य वचन परकाशतां, कोइ नवि दीये प्रहार ॥ ९ ॥

ढाल चोथी.

एक दिन दासी दोडती, आवी श्रेणिक पास रे—ए देशी.

वेषधारी मुनि तव कहे, सांभलो द्विजवर जेहरे ॥ वेद पुराण सुण्युं एहुं, तुम पास भाखशुं तेहरे ॥ वेषधारी ॥ १ ॥ कुरुजांगल हस्तीनागपुरे, पांडव पांच ते भ्रातरे ॥ युधिष्टर भीम अर्जुन भलो, सहदेव नकुल प्रख्यातरे ॥ वे० ॥ २ ॥ धर्मराजाए मन चिंतव्युं, पुण्य कीजे अपाररे ॥ विनय करी तेडावीया, खेचर सुर नर सारे ॥ वे० ॥

लीधो सेन केडे फारे ॥ वे० ॥ १२ ॥ बाण छिद्र सहु नीकली, दश क्रोड ते सेनारे ॥ देव साथे संग्राम कर्यो, नाग्या दानव वीनारे ॥ वे० ॥ १३ ॥ जगन संपूरण तब थया, पांडव पांच ते हरख्यारे ॥ वेद पुराणे बोल्युं एहवुं, विप्र जुठ तमे परीक्षारे ॥ वे० ॥ १४ ॥ जट्ट भणे मुनिवर सुणो, सत्य वचन ए मोटुंरे ॥ स्मृति पुराण वेदे कह्युं, केम थाये अम खोटुंरे ॥ वे० ॥ १५ ॥ माया मुनि कहे सांभलो, विप्र एहीज वातोरे ॥ हय गय पायक अहिपति, ऋषिवर चाल्या सातोरे ॥ वे० ॥ १६ ॥ बाण छिद्र समाया सहु, वली नीकल्या जेमरे ॥ कमंडल मुखे हुंकरी, समया वेहु तेमरे ॥वे०॥१७॥ विप्र वचन भणे मुनि सुणो, घटतां दीसे ए दोयरे ॥ वली विचारी कहुं अमे, उत्तर देजो सोयरे ॥ वे० ॥ १८ ॥ कमंडल मांही हस्ती तुमे, माया एह संदेहरे ॥ घणो काल भमतां थका, केम न भांगी भींमी तेहरे ॥ वे० ॥ १९ ॥ नालुए कुंजर केम नीकल्यो, केम वलग्यो पुंछ बालरे ॥ चार संदेह पड्या अछे भो, जुठ दयापालरे ॥ वे० ॥ २० ॥ खंड त्रीजे ढाल ए कही, चोथी सुणो सुविशालरे ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय उजमालरे ॥ वे० ॥ २१ ॥

ढ्ढा.

जिनचरणदास बोल्यो जति, ब्राह्मण सुणजो वात ॥ अगस्त्य ऋषिवर अजिनवो, पुराण प्रसिद्ध ए ख्यात ॥ १ ॥ उठ हस्तीनी देहमी, सायर समीपे वास ॥ तप जप ध्यान धरे वहु, सामग्री राखे पास ॥ २ ॥ ऊोली माजन पात्रने, स्नाने शुद्ध करे गात्र ॥ सायर तीरे वेसी करी, जोंय मेल्यां सवि पात्र ॥ ३ ॥ चाल्यो करवा स्नान ते, समुद्रनी लागी लेहेर ॥ जल कलोले लीधी सहु, उपन्यो ऋषिने जेहेर ॥ ४ ॥ पूजा सामग्री माहरी, पापी जलधिए लीध ॥ तो संहारुं एहने, तव तिहां सागर पीध ॥ ५ ॥ एक चलुमें एटलो, पीधो सागर सर्व ॥ केटलोक काल पेटमां रह्यो, हुं कहुं मूकी गर्व ॥ ६ ॥ द्विज सहु को तमे सांभलो, पुराण प्रसिद्धो ताम ॥ इंद्रिमां समायो जो सही, तो हुं हस्ती वेहु ठाम ॥ ७ ॥ अगस्त्य ऋषिए पीधो सहु, वहाण सायर मठ ॥ एह वात मानो खरी, तो माहरी वातो सच्च ॥ ८ ॥ विप्र बोल्या तव सहु मली, पुराणमां वात मनाय ॥ तुम वयण केम लोपीए, लाग्या तुमारे पाय ॥ ९ ॥ माया मुनि तव बोलीयो, ब्राह्मण सुणजो वात ॥ अपर वात पुराणे कही, सांभलजो विख्यात ॥ १० ॥

ढाल पांचमी.

नंद सद्गुणा नंदनारे लोल, तें मुने नाखी छे फंदमांरे लोल—ए देशी.

सृष्टि उपाइ ब्रह्मानी कहीरे लोल, भूतल वायु वनस्पति गहीरे लोल ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताळमांरे लोल, जीव उपाया उजमाळमांरे लोल ॥ १ ॥ रुद्रे रुद्रपणुं तब कर्युरे लोल, ब्रह्मा सृष्टि वेगे संहर्युरे लोल ॥ प्रलयकाळ वरतावुं आजथीरे लोल, अमे ईश्वर एवुं काज-थीरे लोल ॥ २ ॥ विष्णु वात विचारी एहवेरे लोल, भुवन चोद पाळशुं तेहवेरे लोल ॥ उदर मांही जग लीधो सहुरे लोल, जीवादिक तब राख्यो बहुरे लोल ॥ ३ ॥ विष्णु पोढ्या जइ वन पानमेंरे लोल, ब्रह्मा जोवे रान रानडेरे लोल ॥ बहु काळ गयो जग जोवतांरे लोल, देखे नहीं अणजोवतांरे लोल ॥४॥ तपसीनो वेश तब दीठमोरे लोल, ब्रह्मा आव्यो दीक्ष करी मीठमोरे लोल ॥ अगस्त्य ऋषि दीठा एहवेरे लोल, बहु तापस एकठा मळेरे लोल ॥ ५ ॥ अन्यादे अन्यादे करीरे लोल, कोटे वळग्या वांही धरीरे लोल ॥ सन्मान दीधुं ब्रह्मा तणीरे लोल, आसन उपर बेठा घणीरे लोल ॥ ६ ॥ अगस्त्य कहे ब्रह्मा सुणोरे लोल, केम पधार्या मुजने भणोरे लोल ॥ चिंतातुर

म्यो मद्दीरे लोल ॥ दीठा जाणी आव्या तुम कनेरे लोल, कहो स्वामि आशा अम कनेरे लोल ॥ १६ ॥ विष्णु तव बोल्या सहीरे लोल, सांभलो ब्रह्मा ऋषि वहीरे लोल ॥ चौद भुवन निपाया तुमेरे लोल, तेहनी रक्षा करवी अमे रे लोल ॥ १७ ॥ रुद्र जब मांड्यो संहारनोरे लोल, प्रलयकाल करे अपारनोरे लोल ॥ उदरमां तव वेगे करीरे लोल, सृष्टि तमारी में उंधरीरे लोल ॥ १८ ॥ वचन सुणी रीझ्या तदारे लोल, भलो कीधो तुमे अम मुदारे लोल ॥ स्वामि भुवन देखाडो हवेरे लोल, जीव अमारो घणुं सवेरे लोल ॥ १९ ॥ हरि भणे सांभलो ऋषि तमेरे लोल, मुखमां पेसो जइ उजमेरे लोल ॥ सृष्टि जुओ तमारी एहवी रे लोल, भागे मनना सहु संदेहवीरे लोल ॥ २० ॥ खंड त्रीजे ढाल पांचमीरे लोल, श्रोता सहु जनने गमीरे लोल ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहेरे लोल, नेम ते जश जगमें लहेरे लोल ॥ २१ ॥

दुहा.

ब्रह्मा मुखमां पेठा जइ, चौद भुवन दीठां त्यांहिं ॥ स्वर्ग मृत्यु नरकावासनो, पर्वत सागर मही मांहीं ॥ १ ॥ सुर नर किन्नर देवता, हय गय पंखी अनेक ॥ उदर माहिं दीठो सर्व, जोवां काज गयो नेक ॥ २ ॥ अधोद्वारे नीकलवा, ब्रह्माए विचारी वात ॥ मल

मूत्र अशुचि भंडारनो, दुर्गंध गंध उतपात ॥ ३ ॥ इहां नीकलवुं नवि घटे, वदने थाये पडु पर्व ॥ नाभिकमल जे विष्णुनी, तेमां काढुं देह तो हर्ष ॥ ४ ॥ पहेलो काज विचारीए, तेहने नावे कोइ लाज ॥ विष्णु नाभिने छेडे करी, ब्रह्मा नीकल्या आज ॥ ५ ॥ डुंटी पलग्यो केश अंगनो, धाता न लहे लवलेश ॥ ब्रह्मा तिहां वलगी रह्या, माडु थया पलगे केश ॥ ६ ॥ नाभिकमल रचना करी, पांखडी अष्ट प्रकार ॥ उपर आसन पूरीयुं, नाम कमलासन सार ॥ ७ ॥ दिवस तेहज आदे करी, पदम जात तेह नाम ॥ नाभिकमले हरि उपन्या, कथा जाणो ब्रह्मानी ताम ॥ ८ ॥ माया मुनि हसी बोलीयो, विप्र विचारी जोय ॥ वेद पुराणे कथा कही, साची जूठी होय ॥ ९ ॥ विप्र वचन तव बोलीया, पुराण प्रसिद्धो एम ॥ सर्व शास्त्र मांहीं कह्युं, खोटुं कहीए केम ॥ १० ॥

ढाल छठी.

घडी एक थोने राणी सुंदरी, सुंदरी दरियोरे न जाय—ए देशी.

मनोवेग पवनवेग जणी, सामुं जोइ मित्त ॥ मित्र वचन मुज सांभलो, एक मनमां धरी चित्त ॥ साजन सहुको सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जेम कमंडल सरसव जेटले, मध्ये जग मायंत ॥ तो कमंडल मोटा मांहीं, गज अमे केम न पेसंत ॥ सा० ॥ २ ॥ जेम चोद

भुवन चारे करी, तुलसी काल नवि भंग ॥ तेम मयगल मुज चारथी, नीडी काल न रंग ॥ सा० ॥ ३ ॥ जेम विष्णु उदर मांहीं नम्यो, ब्रह्मा तिहां बहु काल ॥ अपणो जग जोतां थका, एम कहे बाल गोपाल ॥ सा० ॥ ४ ॥ कमंडल मांहीं वेहु नम्या, साव कहुं गज जेम ॥ करि पुंछे नमे घणुं, नाठो जाउं तेम ॥ सा० ॥ ५ ॥ जेम नाभि-कमल छिडे करी, आखो नीकल्यो देह ॥ आंगवाल वलगी रह्यो, ब्रह्मानो वली तेह ॥ सा० ॥ ६ ॥ तेम हस्ती नाखुए नीकल्यो, पुंछनो वलग्यो केश ॥ वलवतरे बहु बल कर्यां, हाल्यो नहीं लवलेश ॥ सा० ॥ ७ ॥ वचन सुणी द्विज बोलीया, सांभलो साधु नरेश ॥ कर जोडी तुज पाय पड्या, उत्तर नोहीं लवलेश ॥ सा० ॥ ८ ॥ मनोवेग मन उलसी, बोल्यो मधुरी वाण ॥ पवनवेग सहु सांभलो, वचन विरोध पुराण ॥ सा० ॥ ९ ॥ जो विश्वलोक सघलो गल्यो, विष्णुए उदरज मांहीं ॥ तो कमंडल बाहेर केम रह्युं, कहो केम पेठा त्यांहीं ॥ सा० ॥ १० ॥ अगस्त्य तुलसी झाडवे, कमंडल तुम मोझार ॥ वड वृक्ष तणे पांदडे, पोढ्या देव मोरार ॥ सा० ॥ ११ ॥ ए सो जग बाहिर घटे, तिहां करजो विचार ॥ विप्र सहु पुराणनां, वचन विरोध अपार ॥ सा० ॥ १२ ॥ जे ब्रह्मा ध्याये थके, मूकाए नव पास ॥ विष्णुनी नाभिकमले रह्यो, पाम्यो दुःख निरास

॥ सा० ॥ १३ ॥ जो ज्ञानवंत ब्रह्मा होये, तो कां पूजे अगस्ति ॥ सृष्टि मारी को हरी गयो, कहो ऋषिवर किहां वस्ति ॥ सा० ॥ १४ ॥ ब्रह्माए सहु सरजीयुं, तो सरजी नहीं एक नार ॥ रींछमीने सेवे सदा, कामांध होये गमार ॥ सा० ॥ १५ ॥ नारायण जाणे सहु, सृष्टि तणो संहार ॥ तो सीताहरण नहीं जाणीयो, पूछ्यो सयल संसार ॥ १६ ॥ जक्रबंध बांध्या थका, वूटे सघला लोक ॥ रामचंद्र समरथ सदा, भांजे सहुनो शोक ॥ सा० ॥ १७ ॥ रावण पुत्र पराक्रमी, इंद्रजित जेहनुं नाम ॥ सकल सेन तेणे बांधीयो, लक्ष्मण ने वली राम ॥ सा० ॥ १८ ॥ शोक सहुने उपन्यो, रवि उगमते एह ॥ सल्य विसल्या औषधी, नावे तो मरे तेह ॥ सा० ॥ १९ ॥ हणुमंते वेगे करी, आणी सल्य विसल्य ॥ राम लक्ष्मण सेना तणां, भांज्या सघलां शल्य ॥ सा० ॥ २० ॥ निज बंधन जेणे नहीं टल्यां, नहीं टल्या शोक संताप ॥ परनां ते केम टालशे, विचारो महा पाप ॥ सा० ॥ २१ ॥ खंड त्रीजे छठी ढालमां, भाख्या नवनवा भेद ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमने हर्ष उमेद ॥ सा० ॥ २२ ॥

दुहा.

ब्राह्मण सहु ठाना रह्या, नहीं उपजे ते बोल ॥ मनोवेग मन उलस्यो, विप्र हुवा

निहोल ॥ १ ॥ वाद जीती वनमां गया, विद्याधर वेहु मित्र ॥ मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग पवित्र ॥ २ ॥ पूर्वापर विरोध घणा, कहेतां लागे लाज ॥ देव तणा गुण सांभलो, जेम सरे तुम काज ॥ ३ ॥ क्षुधा तृषा भय द्वेष नहीं, राग क्रोध मद लोभ ॥ मान मोह माया नहीं, जन्म जरा मृत्यु क्षोभ ॥ ४ ॥ खेद खेद विषाद नहीं, निद्रा चिंता नहीं जेह ॥ अष्टादश दोष वेगला, आराधो वली तेह ॥ ५ ॥ अतिशय चोत्रीश जेहने, प्रातिहार्य अष्ट सार ॥ अनंत चतुष्टय मंडीया, ते देव भवजल तार ॥ ६ ॥ ब्रह्मा हरि हर देवता, राग द्वेष भंडार ॥ दूषण भूषण भूषिता, पुत्र कलत्र परिवार ॥ ७ ॥ सुदेव कुदेव परीक्षा करो, धर्माधर्म विचार ॥ साचुं होय ते अंगी करो, हेम प्रकार जेम चार ॥ ८ ॥ ताप ताडन छेद वर्षण, दान दया तप जाप ॥ शस्त्री शास्त्र गुरु कुगुरुनो, परीक्षा धरो निःपाप ॥ ९ ॥

ढाल सातमी.

राधा रूपे दीसे रुडी, हाथे खलके सोनानी चुडी, मारी सइरे समाणी–ए देशी.

कुगुरु कुदेव कुधर्म तणा जेह, दोष दाखव्या पूरवे घणा एहरे ॥ मारा साजन सणजो, ग्रंथ वधवाने कारण जेह ॥ पाछल कथा विचारो तेहरे ॥ मारा साजन० ॥

॥ १ ॥ लोक अलोकाकाश मोझार, उंचो चौद राज विस्तारे ॥ मा० ॥ सात राज हेठो अधो लोक, मेरु कंदथी गणजो थोकरे ॥ मा० ॥ २ ॥ मेरु समो उंचो मध्य लोक, तिहांथी सात राज मोक्ष रोकरे ॥ मा० ॥ अधो सात राज मध्य एक, पूर्वापर करजो विवेकरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ ब्रह्म लोक राज छे पांच, एक राज उपर वली खांचरे ॥ मा० ॥ दक्षिण उत्तर सघले तास, वायु त्रण विधो विख्यातरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ लोक मध्य उभी तस नाल, चौद राज उंची विशालरे ॥ मा० ॥ त्रस नाडि त्रस थावर भरी छे, एक राज विस्तारे करी छेरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ बाहेर भरीया थावर पंच, आगम कहीए एहवो संचरे ॥ मा० ॥ धनराज जाणो त्रिलोक, त्रणसें तेंताली थोकरे ॥ मा० ॥ ६ ॥ कटीकर कीधो पुरुषाकार, अथवा मादल दोढ आकाररे ॥ मा० ॥ अर्ध मादल धर्युं अधो लोक, आखुं मादल उपर कर्युं थोकरे ॥ मा० ॥ ७ ॥ अधो लोक छे नरकावास, छ राज मांहीं सात अवकासरे ॥ मा० ॥ एक राज अधो हेठो लोक, थावर पांच भर्यो ते थोकरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ लोक त्रणनो घणो विचार, सिद्धांत थकी सुणजो साररे ॥ मा० ॥ कोणे नहीं ए सृष्टि निपाइ, अनादि कालनी एह सदाइरे ॥ मा० ॥ ९ ॥ मिथ्याती एम कहे छे केता, जल व्याप्त ब्रह्मांडे वहेतारे ॥

॥ मा० ॥ जल मांही उपन्यो पंपोट, तेहथी इंडु जायु खाटरे ॥ मा० ॥ १० ॥ इंडु
कीधुं प्रण अंक, तेथी उपन्यो सहु ब्रह्मांडरे ॥ मा० ॥ जलमां मूक्युं ब्रह्माए इंडु, तेथी
जायुं ते वली रिंडुरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ सृष्टि नहोती किहां रह्या ब्रह्म, जल पोट इंडु केम
जमारे ॥ मा० ॥ मिथ्या मतना कहुं विचार, सृष्टि उपनी घणे प्रकाररे ॥ मा० ॥
॥ १२ ॥ आदि दो तुं एक अनादि, तेथी उपन्यो आदिता सादिरे ॥मा०॥ आदि-
ननो उपन्यो ॐकार ॐकारनो वेद अपाररे ॥मा०॥१३॥ वेदनो दृव्य दृव्यनो धूम, धूमनो
मेघ जल रूमरे ॥ मा० ॥ जल व्याप्युं उंचुं अखंड, जड व्याप्युं एकवीश ब्रह्मांडरे ॥
मा० ॥ १४ ॥ तेणे काल आदि विष्णु जलसार, जल साइ पोढ्या अपाररे ॥
मा० ॥ पोढ्याथी गया बहु काल, वर्ष सहस्र वही गयां रसालरे ॥ मा० ॥१५॥ तदा
काल नहीं आदि अनादि, पृथ्वी अप तेउ नहीं वली सादिरे ॥ मा० ॥ वायु आकाश
तरुवर नहीं एह, चंद्र सुरज ग्रह नहीं वली तेहरे ॥ मा० ॥ १६ ॥ अग्नि आदि करी
नहीं एक, तदा आदि विष्णुए निपायो ठेकरे ॥मा०॥ प्रथम पेदेलुं निपायुं तेज, तेज
थकी ज्योति उपन्यो हेजरे ॥ मा० ॥ १७ ॥ ज्योति थकी उपन्यो वली फेन, फेनथी
उपन्यो अदबुद सेनरे ॥ मा० ॥ अदबुदथी उपन्यो वली अंक, अंड थकी उपन्यो

ब्रह्मा अवंतरे ॥मा०॥१७॥ ब्रह्मानो काश्यपी ऋषि जात, काश्यपथी काश्यपी ऋषि संघातरे ॥ मा० ॥ काश्यप ऋषि पतनी हुइ तेर, दीतीए जाया दैत्य दाणव ढेररे ॥ मा० ॥ ॥ १९ ॥ आदितिथी उपन्या अपार, तेत्रीश क्रोड देव सुत सारे ॥ मा० ॥ कडुए जाया नवकुली नाग, वनिता सुत गरुड विषजागरे ॥ मा० ॥ २० ॥ सुप्रजाए पुत्री जणी सात, नवसें नवाणुं नदी विख्यातरे ॥ मा० ॥ एकीए जणीया द्वीपज सात, सातें सागर जाया एकीए रातरे ॥ मा० ॥ २१ ॥ एकीए जाया पर्वत वृंद, सेना ब्राह्मणी जणीया चंदरे ॥ मा० ॥ एकीए सहुए सूरज जाया, तारा ग्रह नक्षत्र बहु मायारे ॥ मा० ॥ २२ ॥ दृव्यकाए जाया ऋषिवर स्वाम, अठ्याशी सहस्र तणां छे नामरे ॥ मा० ॥ खडनेत्री जणीया चारे खाण, स्वेद अंड जरा अदबुद जाणरे ॥ मा० ॥ २३ ॥ चार खाणथी चोराशी लाख, जीव योनिनी उत्पत्ति जाखरे ॥ मा० ॥ पैंतालीश लाख थलचर जोय, जलचर नभचर बाकी होयरे ॥ मा० ॥ २४ ॥ जीव थकी उपन्या जुग चार, कृत त्रिता द्वापर कलि सारे ॥ मा० ॥ एणी परे सृष्टि तणो छे लाग, मिथ्यादृष्टि कह्यो विजागरे ॥ मा० ॥ २५ ॥ खंड त्रीजानी सातमी

ढाल, सुणजो सहु वाल गोपालरे ॥ मा० ॥ रंगविजय शिष्य एम भाखे, नेमविजय गुण एम दाखेरे ॥ मा० ॥ २६ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग गुणवंत ॥ मूढ मिथ्यातनी वारता, आप विगोए एकंत ॥ १ ॥

ढाल आठमी.

वणजारानी देशी.

मारा नाथकरे, विष्णु ब्रह्मा वेद, वाद वदे सृष्टि कारणे ॥ मा० ॥ ब्रह्मा कहे सृष्टि एह, में सरजी सुख कारणे ॥ मा० ॥ १ ॥ मा० ॥ विष्णु वदे मुज तणी सार, सृष्टि रक्षा करुं अमे खरी ॥ मा० ॥ मा० ॥ जुग काजे वलगता तेह, शंकर पासे गया मन धरी ॥ मा० ॥ २ ॥ मा० ॥ कहो ईश्वर महाराज, अमे वेहु मांहे सृष्टि केहु तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ शंकर कहे सुणो ब्रह्मा विष्णु, मुज लिंग छेडे जाए ते धणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ मा० ॥ ब्रह्मा तुमे जाउं उर्ध लोक, मुज लिंगनो अंत ज्यां होये ॥ मा० ॥ मा० ॥ विष्णु जाउं अधो लोक, लिंग

ठेको आवे सोइ ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए वधाव्युं लिंग, हस्त धरी उंचो चढे ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वखगी चाल्यो कान, वेगे पाताले हरी जडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां थयो घणो काल, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाछो वली हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नविलह्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीउं हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खसी पड्युं केवडी पत्र, लिंग उपरथी तले यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, कूडी साख देजो केवडी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ वेहु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं ठेठे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग उपरथी एह, केवडी आणी साचो जयो ॥ मा० ॥ ए ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवडी कहे सुण स्वाम, ब्रह्मा वचन नवि मगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी थापी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चडीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज तेवडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मा० ॥ खोटा बोलो ब्रह्मा तुं जांण, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ सत्यवादी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेग विचारी जोय, मलती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

ग्रही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा० ॥ जिनशासननना भेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए॥ मा०॥१४॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरिराय, शुभविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ भावविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय शिष्य एहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही एह, शिष्य कह्या जाणो सही ॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कवि मांही, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा०॥ रंगविजय रंग लाय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम, नित्य उदय होजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥ मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंड, ढाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे निल, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

ठेको आवें सोइ ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए वधाव्युं लिंग, हस्त धरी उंचो चढे ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वसगी चाल्यो कान, वेगे पाताले हरी जडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां घणो घणो काल, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाछो वली हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नवि-लह्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीउं हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खसी पड्युं केवडी पत्र, लिंग उपरथी तत्र यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, कूडी साख देजो केवडी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ वेदु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं ठेठे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग उपरथी एह, केवडी आणी साचो जयो ॥ मा० ॥ ९ ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवडी कहे सुण स्वाम. ब्रह्मा वचन नवि मगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी थापी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चमीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज सेवडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मा० ॥ खोटा बोलो ब्रह्मा तुं जांण, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ सत्यवादी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेग विचारी जोय, मलती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

मही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा० ॥ जिनशासनना भेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए ॥ मा० ॥ १४ ॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरिराय, शुभविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ भावविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय शिष्य एहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही एह, शिष्य कह्या जाणो सही ॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कलि मांहीं, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा० ॥ रंगविजय रंग लाय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम, नित्य उदय होजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥ मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंड, ढाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे नित्य, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

ठेमो आवे सोइ ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए वधाव्युं लिंग, हस्त धरी उंचो चढे ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वलगी चाल्यो कान, वेगे पाताले हरी नडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां थयो घणो काल, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाछो वली हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नविलह्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीउं हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खसी पड्युं केवडी पत्र, लिंग उपरथी तले यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, कूडी साख देजो केवडी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ वेहु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं ठेठे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग उपरथी एह, केवडी आणी साचो नयो ॥ मा० ॥ ए ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवडी कहे सुण स्वाम, ब्रह्मा वचन नवि मगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी आपी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चडीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज तेवडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मा० ॥ खोटा बोलो ब्रह्मा तुं जांण, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ सत्यवादी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेग विचारी जोय, मलती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

प्रही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा० ॥ जिनशासननां भेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए ॥ मा० ॥ १४ ॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरिराय, शुभविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ भावविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय शिष्य गहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही गह, शिष्य कह्या जाणो सही ॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कवि मांही, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा० ॥ रंगविजय रंग लाय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम, नित्य उदय होजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥ मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंड, ढाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे नित्य, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

ठेगो थावें सोइ ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए वधाव्युं लिंग, हस्त धरी उंचो चढे ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वसगी चाल्यो कान, वेगे पाताले हरी नडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां थयो घणो काल, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाछो वली हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नविलह्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीउं हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खसी पड्युं केवडी पत्र, लिंग उपरथी तले यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, कूडी साख देजो केवडी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ वेहु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं वेठे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग उपरथी एह, केवडी आणी साचो नयो ॥ मा० ॥ ९ ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवडी कहे सुण स्वाम, ब्रह्मा वचन नवि भगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी थापी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चडीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज तेवडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मा० ॥ खोटा बोलो ब्रह्मा तुं नांम, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ सत्यवादी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेग विचारी जोय, मलती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

मही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा० ॥ जिनशासनना भेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए ॥ मा० ॥ १४ ॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरिराय, शुभविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ भावविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय शिष्य एहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही एह, शिष्य कह्या जाणो सही ॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कलि मांही, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा० ॥ रंगविजय रंग साय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम, नित्य उदय दीजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥ मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंड, ढाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे नित्य, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

खंड ४ थो.

दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी बे कर जोड ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं हुं गर्वने छोड ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो भणे, पवनवेग भणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांभलजो तुमे भ्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज भणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि उंलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां भलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्या, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

भेर वजाडी रुयडीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे ॥ सिंहासन बेठा चडीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तापस देखी अचंभीयारे, जट्ट एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदो तुमे आत घणारे, प्रथम वचन कहे भंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा भंभोली अम तणीरे, भेर वजावी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमतुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥ को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांभलो विप्र विचार ॥मा०॥ विनोद कारण वाजां वाज्यांरे, सिंहासन वेठा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ वेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहवोरे, भण्या नहीं निशाल ॥ मा०॥ को० ॥ ५ ॥ विप्र वचन तव उंचरेरे, सांभलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहा थकी तुमे आवीयारे, कोण उपन्यो छे काज ॥ मा० ॥ को०॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण छे तमारी जात ॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रह्योरे, उत्तर देउं अम भ्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ सांचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बोले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिखा वली जेणे कहीरे, जेणे कह्यो मकट नाच ॥ मा० ॥ असंभव वाक्य लवता थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥ मूरख मोटा होये घणारे, सभा मांहीं नर वली जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

खंड ४ थो.

दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी वे कर जोड ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं तुं गर्वने छोड ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो भणे, पवनवेग भणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांभलजो तुमे भ्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज भणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि उलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां भलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्या, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

भेर वजाडी रुयडीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे ॥ सिंहासन वेठा चडीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तापस देखी अचंभीयारे, नट एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदा तुम आव
घणारे, प्रथम वचन करुं भंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा धंधोली अम तणीरे, नेर व-
जावी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमनुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥
को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांभलो विप्र विचार ॥मा० ॥ विनोद कारण वाजां
वाड्यांरे, सिंहासन वेठा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ वेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए
नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहवोरे, जाण्या नहीं निशाल ॥ मा०॥ को० ॥ ५ ॥
विप्र वचन तव उंचरेरे, सांभलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहा थकी तुमे आवीयारे,
कोण उपन्यो छे काज ॥ मा० ॥ को०॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण छे तमारी जात
॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउं अम व्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनो-
वेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ साचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बो-
ले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिखा वली जेणे कहीरे, जेणे कर्यो मर्कट ना-
च ॥ मा० ॥ असंभव वाक्य लवता थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥
मूरख मोटा होये घणारे, सभा मांहीं नर वली जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे
नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

खंड ४ थो.

दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी वे कर जोड ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं हुं गर्पने ठोड ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो भणे, पवनवेग भणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांभलजो तुमे भ्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज भणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि उलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां भलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्या, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

भेर वजाडी रुयमीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे ॥ सिंहासन वेठा चमीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तापस देखी अचंभीयारे, नह एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदो तुमे अति घणारे, प्रथम वचन कहे नंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा घंघोली अम तणीरे, जेर व-ताणी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमनुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥ को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तब बोलीयोरे, सांभलो विप्र विचार ॥मा०॥ विनोद कारण वाजां पाइयारे, सिंहासन वेठा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ वेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहयोरे, जाण्या नहीं निशाल ॥ मा०॥ को० ॥ ५ ॥ विप्र वचन तब उचरेरे, सांभलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहा थकी तुमे आवीयारे, कोण उपन्यो छे काज ॥ मा० ॥ को०॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण छे तमारी जात ॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउं अम व्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनो-वेग तब बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ सांचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बो-ले छहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिखा वली जेणे कहीरे, जेणे कह्यो मर्कट ना-च ॥ मा० ॥ अमंतव वावय छयना थकारे, ताडन छणुं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ए ॥ मूरख मोटा होये घणारे, सत्ता मांही नर वली जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

खंड ४ थो.

दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी वे कर जोड ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं तुं गर्वने छोड ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो भणे, पवनवेग भणी वात ॥ थवर पुराणनी वारता, सांभलजो तुमे भ्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज भणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि उलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां भलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्या, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

भेर वजाडी रुयमीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे ॥ सिंहासन वेठा चमीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तापस देखी अचंभीयारे, नट एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदो तुमे अति
घणारे, प्रथम वचन करुं भंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा धंधोली अम तणीरे, जेर व-
जावी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमनुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥
को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांभलो विप्र विचार ॥मा०॥ विनोद कारण वाजां
वाज्यारे, सिंहासन वेगा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ वेगा तुमने नवि गमेरे, उतरीए
नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं दोय केहवोरे, भण्या नहीं निशाल ॥ मा०॥ को० ॥ ५ ॥
विप्र वचन तव उचरेरे, सांभलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहा थकी तुमे आवीयारे,
कोण उपन्यो छे काज ॥ मा० ॥ को०॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण छे तमारी जात
॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउं अम त्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनो-
वेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ सांचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बो-
ले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिला वली जेणे कहीरे, जेणे कह्यो मर्कट ना-
च ॥ मा० ॥ असंभव वाक्य लवता थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥
मूरख मोटा होये घणारे, सभा मांहीं नर वली जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे
नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

खंड ४ थो.

दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी वे कर जोड ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं तुं गर्पने ठोड ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो भणे, पवनवेग भणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांभलजो तुमे भ्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज भणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि उलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां भलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्या, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

भेर वजाडी रुयमीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे ॥ सिंहासन वेठा चमीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तापस देखी अचंतीयारे, नट एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदा तुम आत
घणारे, प्रथम वचन करुं भंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा घंघोली अम तणीरे, नेर व-
जावी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमतणुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥
को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांभलो विप्र विचार ॥ मा० ॥ विनोद कारण वाजां
वाइयांरे, सिंहासन वेठा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ वेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए
नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहवोरे, भणा नहीं निशाल ॥ मा० ॥ को० ॥ ५ ॥
विप्र वचन तव उचरेरे, सांभलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहा थकी तुमे आवीयारे,
कोण उपन्यो छे काज ॥ मा० ॥ को० ॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण छे तमारी जात
॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउं अम त्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनो-
वेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ साचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बो-
ले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिला वली जेणे कहीरे, जेणे कह्यो मर्कट ना-
च ॥ मा० ॥ असंभव वाक्य लवता थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥
मूरख मोटा होये घणारे, सभा मांहीं नर वली जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे
नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

कहो तुमे सार ॥ माo ॥ मोटा मूरख ने किसारे, बोलो तेह अधिकार ॥ माo ॥ कोo ॥ ११ ॥ मनोवेग तव उचरेरे, सुणजो विप्र विचार ॥ माo ॥ मूरख कथा तुमने कहुं रे, श्रुतसागर तुमे पार ॥ माo ॥ कोo ॥ १२ ॥ सभा मांहीं मूरख नरेरे, कोइ होशे द्विजवर आज ॥ माo ॥ तो खोटी कथा करे मुज तणीरे, नवि सरे अमारो काज ॥ माo ॥ कोo ॥ १३ ॥ मूरख होय ते शुं करेरे, सुणजो कथानो समाज ॥ माo ॥ एक चित्ते मौनज धरीरे, दरख उपजे जेम आज॥ माo ॥ कोo ॥ १४ ॥ चार नर मारग सांचर्यारे, मूरख मोटा वली तेह ॥ माo ॥ मुनिवर एक सामो मल्योरे, उत्तम चारित्र गेह ॥ माo ॥ कोo॥ १५ ॥ मौन धारी जोग आगलोरे, सुमति गुपति व्रत धार ॥ माo ॥ नगन मुद्रा परिसह सहेरे, भव्य जीव भवजल तार ॥ माo ॥ कोo ॥ १६ ॥ एहवो मुनिवर दीठमोरे, तव मूरख चारे चंग ॥ माo ॥ वांद्यो मुनिवर भाव धरीरे, तव जतिवर बोल्यो रंग ॥ माo ॥ कोo ॥ १७ ॥ धर्मवृद्धि तुमने होजोरे, वचन सुणी चारे ताम ॥ माo ॥ मारग चाल्या मलपतारे, जोजन दोढ गया जाम ॥माo॥कोo॥१८॥ चोथा खंड तणी कहीरे, प्रथम ढाल रसाल ॥ माo॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमविजय उजमाल ॥माo॥ कोo ॥ १९ ॥

दुहा.

तव मूरख एक बोलीयो, आशिष दीधी मुनिराज ॥ धर्मवृद्धि मुजने कही, सरशे अमारो काज ॥ १ ॥ बीजो कहे मुजने कही, त्रीजो बोले तेणी वार ॥ चोथो कहे मूजने कह्यो, आशिष मुनि गुणधार ॥ २ ॥ मांहोमांहे वलगे घणुं, पाछा आव्या तिणे गाम, मुनिवर तिहां दीठा नहीं, न्याय कारण अन्य ग्राम ॥३॥ बुद्धिवंत व्यवहारीआ, तेहने जइ मल्या ताम ॥ न्याय करो शेठ अम तणो, महा मूरख अम नाम ॥४॥ तव शेठे ते पूछीया, केशी मूरखाइ अंग ॥ चार मध्ये एक बोलीयो, मूरख मूरखाइ चंग ॥ ५ ॥

ढाल बीजी.

टंक अने टोमा वचेरे, मेंदीनां दोय रूख, मेंदी रंग लागो—ए देशी.

मारे मंदिर दो नारी अछेरे, चंगी निरंगी सुखखाण ॥ साजन सांभलो ॥ एक दिवस सूतो सज्यारे, थयो निद्रावश आण ॥ सा० ॥ १ ॥ तव नामनी आवी वेहुरे, सूती गावे जमणे पास ॥ सा० ॥ एकेको हाथ मारो ग्रहीरे, हृदय उपर करी आस ॥ सा० ॥ २ ॥ तेणे अवसर मुज मंदिररे, दीपक हतो एक चंग ॥ सा० ॥ तव उंदर वलग्यो आवीरे, दीवट ताणी चाल्यो रंग ॥ सा० ॥ ३ ॥ मुज उपर उंचो रहीरे,

पामांग नेत्र पाडी पाट ॥ सा० ॥ में मनशुं विचारीयुं रे, दुस्ते करी टाळुं उपघात ॥ सा० ॥ ४ ॥ जो माथो हाथ चालवुंरे, तो रंगी करे मुज रीस ॥ सा० ॥ जमणो हाथ जो फेरवुंरे, पंगी कहेशे हणे शीश ॥ सा० ॥ ५ ॥ नारी नेह तुटे रखेरे, नेत्र तणो नही काज ॥ सा० ॥ माथो चक्षु तव वळोरे, नाम दीधो शुकराज ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी नेहने कारणेरे, नेत्र तणी करी हाण ॥ सा० ॥ मह्या मूरखपणुं माहरुंरे, विचारो तमे बुद्धि आण ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव बीजो नर एम भणेरे, मुज मूरखनी सुणो वात ॥ सा० ॥ मुज घर नारी पे सहीरे, खरी रीठमी नामे ख्यात ॥ सा० ॥ ८ ॥ जमणो पग खरीने दीयोरे, माथो रीठमीने ताम ॥ सा० ॥ एणी परे सुख हुं भोगवुंरे, महीला सरसो काम ॥ सा० ॥ ॥ ९ ॥ एक दिवस परे हुं गयोरे, खरी आथी जल क्षेत्र ॥ सा० ॥ जमणो पग पखाल-वारे, रीठमी जोय दृष्टि देय ॥ सा० ॥ १० ॥ जब खरी जमणो भोइ गइरे, माथा उपर में धर्यो पाय ॥ सा० ॥ तव रीठमी कोपे भरीरे, मुसल आणी कर्यो घाय ॥ सा० ॥ ११ ॥ जमणो पग मुज भांजीयोरे, तव खरी करी घणो रोष ॥ सा० ॥ हुं मोटी कुलम रीठमीरे, मान मच्छर अति शोष ॥ सा० ॥ १२ ॥ निज पतिने हुं नवि धरेरे, अन्य पुरुषशुं रमे रात ॥ सा० ॥ तव रीठमी कहे मुने कहोरे, आपणी वांमो आ

चूंकी जात ॥ सा० ॥ १३ ॥ चोरे चोवटे तुं रमेरे, अन्य जाणे सहु लोक ॥ सा० ॥ जरतार आपको पाधरोरे, नाक कान छेदे बीजो रोक ॥ सा० ॥ १४ ॥ तब खरीने चमी रीसमीरे, सबलो मुसल कर लीध ॥ सा० ॥ प्रहार मेल्यो पग उपरेरे, चरण भाग्यो खोको कीध ॥ सा० ॥ १५ ॥ मारो पग तें भांजीयोरे, तारो पग कयों में भंग ॥ सा० ॥ साट साटुं वल्युं आपणुंरे, हवे बेहु शोक्योमां रंग ॥ सा० ॥ १६ ॥ पग बेहु फूटी भांजीयारे, नारी में हुइवी न लगार ॥ सा० ॥ मोटो मूरख मुज समोरे, कोइ नवि दीसे गमार ॥ सा० ॥ १७ ॥ चोथा खंड तणी कहीरे, ढाल बीजी सुविशाल ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य नेमनेरे, होजो मंगल माल ॥ सा० ॥ १८ ॥

दुहा.

तब त्रीजो एणी परे भणे, सांभलो बुद्धि निधान ॥ मुज सरीखो मूरख नहीं, श्री गुरु केरी आण ॥ १ ॥ नागर लोक पूछे तदा, कहे मूरख तुज वात ॥ जेम न्याय विचारी कीजीए, विनोद होये विख्यात ॥ २ ॥

ढाल त्रीजी.

नाह गयो तो वाडीएरे, लाव्यो चंपानो फूल ॥ नानो नाहलोरे—ए देशी.

तव त्रीजो मूरख कहेरे, तुमे सहु सांभलो आज ॥ साजन सांभलोरे ॥ मुज मूरखपणुं वरणवुंरे, जेम सरशे मुज काज ॥ सा० ॥ १ ॥ एक दिवस नारी अमेरे, मलीयां एकण सेज ॥ सा० ॥ होड पाडी मौने रह्यांरे, एम बोली बेहु हेज ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ जे हारे ते होडे दीएरे, घृत खांड भरी दश पोली ॥ सा० ॥ साकर साथे मिश्र करीरे, सुगंध घृतमां झबोली ॥ सा० ॥ ३ ॥ एम परठी मौन रह्यांरे, नर नारी बेहु चंग ॥ सा० ॥ तेहवे तस्कर आवीयारे, धन हरवा उत्तंग ॥ सा० ॥ ४ ॥ खात्र देइ घरमां गयोरे, वित्त काढ्युं अपार ॥ सा० ॥ आभरण वस्त्र घणां लीयांरे, मोती लीयां दीनार ॥ सा० ॥ ५ ॥ तोही अमे नवि बोलीयांरे, होड हारवा माट ॥ सा० ॥ स्त्री शणगार उतारीनेरे, लेवा लाग्यो तव घाट ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी कहे कंत सांभलोरे, चोरे हर्युं द्रव्य क्रोड ॥ सा० ॥ हसी करी में ताली दीधीरे, नारी तुं हारी होड ॥ सा० ॥ ७ ॥ पोली घृत खांडे भरीरे, मुज आपो तुमे आज ॥ सा० ॥ तस्कर वित्त लेइ गयारे, लोक मांहीं लागी लाज ॥ सा० ॥ ८ ॥ एवी कथा छे मुज तणीरे, महा मूरख मारो नाम ॥ सा० ॥ सकल लोक विचारजोरे, धर्म बुद्धिनो हुं ठाम ॥ सा० ॥ ॥ ९ ॥ चोथो नर तव बोलीयोरे, स्वकीय कथा परसंग ॥ सा० ॥ मुज मूरखपणुं

सांजलोरे, जेम होये तुमने रंग ॥ सा० ॥ १० ॥ एक दिवस सासरे गयारे, श्री आणाने
काज ॥ सा० ॥ तव माता मुज शिखव्युंरे, सांजल पुत्र तुं आज ॥ सा० ॥ ११ ॥
सासरे नित्य जमीए नहींरे, उदर भरीने अपार ॥ सा० ॥ एक दिवस भूख्या रहोरे,
बीजे पण थोडो आहार ॥ सा० ॥ १२ ॥ शिखामण देइ मोकल्योरे, बहु लेवाने काज ॥
सा० ॥ सासरे गयो उलट धरीरे, सहुने मल्यो हुइ लाज ॥ सा० ॥ १३ ॥ खेम
कुशल पूछी साखकेरे, जमवा उठो जगनी वोर ॥ सा० ॥ अमे कह्युं तमे सांजलोरे,
जमी आव्यो हुं घोर ॥ सा० ॥ १४ ॥ बीजे दिन लोक आवीयारे, जमण तणो नहीं
लाग ॥ सा० ॥ सात पडी साखा बोलीयारे, जमाइ आरोगो महा भाग ॥ सा० ॥
॥ १५ ॥ साखा प्रते हुं बोलीयोरे, निशिभोजन नहीं चंग ॥ सा० ॥ भूख नथी मुज
अति घणीरे, अबाधा उपनी बली अंग ॥ सा० ॥ १६ ॥ सासुए मनशुं विचारीयुंरे,
दहुउ कीजे अन्न ॥ सा० ॥ चोखा भींजव्या वाटलीरे, कुर निपावाने मन्न ॥ सा० ॥
॥ १७ ॥ जब मागशे तब पीरसशुंरे, एवो करी सुविचार ॥ सा० ॥ कचोलुं भरी तंदुल
मूकीयोरे, ढोलीया हेठे आधार ॥ सा० ॥ १८ ॥ मुज महिला तब सांचरीरे, आंगणे
लघु नित काज ॥ सा० ॥ नवरुं देखी में चिंतव्युंरे, तेह सांजलो धनराज ॥ सा० ॥

॥ १९ ॥ लुपाए पीड्यो रही नव शकुंरे, दोय खांपण थइ मुज ॥ सा० ॥ तांडुल सेइ में मुख नर्युरे, नहीं जाणे कोइ गुज ॥ सा० ॥ २० ॥ तब नारी आवी मुज तणीरे, मुख दीनुं विकराल ॥ सा० ॥ बोलाव्यो हुं बोलुं नहींरे, नामनी कीयो बुंवाल ॥ सा० ॥ २१ ॥ खंम चोथानी ए कहीरे, ढाल त्रीजी गुणखाण ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहीरे, नेमे उलट आण ॥ सा० ॥ २२ ॥

दुहा.

मुज स्वामी मुख शुं थयुं, धाजो जाइ बाप ॥ लोक बहु आवी मल्यो, कोलाहल संताप ॥ १ ॥ वेगे वैद बोलावीया, माह्या सात ने पांच ॥ ते आव्या उलट धरी, औषध मेलो करी सांच ॥ २ ॥ रोग परखे लोक अति घणा, कर्णशूल गंमोल ॥ एक कहे पीत कोपीयो, जोग मंमावो मंमोल ॥३॥ उतारणां करो शक्तिनां, कुलदेवीने जोग ॥ गोगा गणेश जक्ष पुजतां, टले गलानो रोग ॥४॥ वेगे वैद निहालीयो, खाट देठे नयों पाट ॥ तांडुले नयों कंठ समो, मध्ये दीगो घाट ॥ ५ ॥ मस्तक धूणी ते बोलीया, न जीवे जमाइ आज ॥ तांडुल व्याधि ए उपनी, गलामां रोग असाज ॥६॥ तांडुल सरिखा उपन्या, कीटक विषम ठे अंग ॥ वित्त वस्त्र घणां आपजो, जमाइने करुं चंग ॥ ७ ॥

शस्त्र काढी गाल बेदीयो, साही रह्या जण चार ॥ चुंबारव करता थका, काढ्या तांडुल तेणी वार ॥ ८ ॥ रुधिराला ते नीकळ्या, वेदे लीधां वस्त्र दान ॥ गालस्फोटक मुज नाम दीयो, मूरख मोटो नहीं सान ॥ ९ ॥ मूरख चारे कथा कही, सांभळी सघळे लोक ॥ न्याय नहीं ए तुम तणो, शुं कहीए अमे फोक ॥ १० ॥ धर्मबुद्धि मुनीश्वरे कही, मद्दा मूरख तमे चार ॥ वडवाग तजी जाउं मंदिरे, एकेक अक्षर लेयो तार ॥ ॥ ११ ॥ तब द्विजवर ते बोलीया, सांभळो तापस वात ॥ एवो मूरख अममां नहीं, कहो हवे तमारी ख्यात ॥ १२ ॥

ढाल चोथी.

एणे सरोवरी चारी पाखी, उनी दोय नागरी मोरा लाल—ए देशी.

मनोवेग नामे द्विजराज, सुणो तमे सहु मली ॥ मारा लाल ॥ सु० ॥ साकेत्ता नामे नगरी, अछे ते निरमली ॥ मारा लाल ॥ अ० ॥ विश्वभूति नामे ब्राह्मण, एक तिहां रहे ॥ मारा लाल ॥ ए० ॥ तेहने कन्या छे एक, जोवन वयमां वहे ॥ मारा लाल ॥ जो० ॥१॥ मुज पिता तणी ताम, विवाह ते मेलीयो ॥ मा० ॥ वि० ॥ मांडयो विवाह मोच्छव, मनोरंगे नेलीयो ॥ मा० ॥ म० ॥ कीधो हाथ मेलावो, वर कन्या बेहु तणो

क० ॥ पीहर ते रही कृष्ण, करे वात तेहनी ॥ मा० ॥ क० ॥ ७ ॥ नव मास थाडा, पूरण थया आवीया ॥ मा० ॥ पु० ॥ जमवा कारण तापस, घणा तेडावीया ॥ मा० ॥ घ० ॥ विश्वभूतिए अघरणी, करी जमाडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ सनमुख उभो विनति, करे हाथ जोडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ ८ ॥ नारी तणो तिहां तात, पूछे तापस भणी ॥ मा० ॥ पू० ॥ भवितव्यतानो विचार, कहो बुद्धिना धणी ॥ मा० ॥ क० ॥ कहे तापस तमे सांभलो, वात कहुं नवी ॥ मा० ॥ वा० ॥ तुम देश मांहीं दुकाल, थाशे सही संभवी ॥ मा० ॥ था० ॥९॥ बार वरसांनो काल, सही करी जाणजो ॥ मा० ॥ स० ॥ पेट मांहींथी में सुणी, वाणी परमाणजो ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुं हवे रहुं पेट मांहीं, दुकाल एम लागीए ॥ मा० ॥ दु० ॥ बोल्या तापस वयण, थाशे एम पालीए ॥मा०॥ था० ॥ ॥ १० ॥ सुकाल थया पछी नीकलुं, तो सुखी थाइए ॥ मा० ॥ सु० ॥ जो नीकलुं दुकाल मांहीं, तो मालुं थाइए ॥ मा० ॥ तो० ॥ ते तापस तेणी वार, चाल्या परदेशमां ॥ मा० ॥ चा० ॥ बार वरस फरी आव्या, नवनवा देशमां ॥ मा० ॥ न० ॥ ११ ॥ दीधो आदरमान, आहार घणो आपीयो ॥ मा० ॥ आ० ॥ पाम्या हरख अपार, सुकाल नाम थापीयो ॥ मा० ॥ सु० ॥ उदर मांहींथी वात, सुणी में तेहवे ॥ मा० ॥

क० ॥ पीदर ते रही कुण, करे वात तेहनी ॥ मा० ॥ क० ॥ ७ ॥ नव मास थाडा, पूरण थया आवीया ॥ मा० ॥ पु० ॥ जमवा कारण तापस, घणा तेडावीया ॥ मा० ॥ घ० ॥ विश्वभूतिए अघरणी, करी जमाडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ सनमुख उभो विनति, करे हाथ जोडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ ८ ॥ नारी तणो तिहां तात, पूछे तापस भणी ॥ मा० ॥ पू० ॥ भवितव्यतानो विचार, कहो बुद्धिना धणी ॥ मा० ॥ क० ॥ कहे तापस तमे सांभलो, वात कहुं नवी ॥ मा० ॥ वा० ॥ तुम देश मांहीं दुकाल, थाशे सही संभवी ॥ मा० ॥ था० ॥९॥ बार वरसांनो काल, सही करी जाणजो ॥ मा० ॥ स० ॥ पेट मांहींथी में सुणी, वाणी परमाणजो ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुं हवे रहुं पेट मांहीं, दुकाल एम लागीए ॥ मा० ॥ दु० ॥ बोल्या तापस वयण, थाशे एम पालीए ॥मा०॥ था० ॥ ॥ १० ॥ सुकाल थया पछी नीकलुं, तो सुखी थाइए ॥ मा० ॥ सु० ॥ जो नीकलुं दुकाल मांहीं, तो मालुं थाइए ॥ मा० ॥ तो० ॥ ते तापस तेणी वार, चाल्या परदेशमां ॥ मा० ॥ चा० ॥ बार वरस फरी आव्या, नवनवा देशमां ॥ मा० ॥ न० ॥ ११ ॥ दीधो आदरमान, आहार घणो आपीयो ॥ मा० ॥ आ० ॥ पाम्या हरख अपार, सुकाल नाम थापीयो ॥ मा० ॥ सु० ॥ उदर मांहींथी वात, सुणी में तेहवे ॥ मा० ॥

क० ॥ पीहर ते रही कुण, करे वात तेहनी ॥ मा० ॥ क० ॥ ७ ॥ नव मास थाडा, पूरण थया आवीया ॥ मा० ॥ पू० ॥ जमवा कारण तापस, घणा तेडावीया ॥ मा० ॥ घ० ॥ विश्वभूतिए अघरणी, करी जमाडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ सनमुख उभो विनति, करे हाथ जोडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ ८ ॥ नारी तणो तिहां तात, पूछे तापस भणी ॥ मा० ॥ पू० ॥ भवितव्यतानो विचार, कहो बुद्धिना धणी ॥ मा० ॥ क० ॥ कहे तापस तमे सांभलो, वात कहुं नवी ॥ मा० ॥ वा० ॥ तुम देश मांहीं दुकाल, थाशे सही संभवी ॥ मा० ॥ था० ॥९॥ बार वरसांनो काल, सही करी जाणजो ॥ मा० ॥ स० ॥ पेट मांहींथी में सुणी, वाणी परमाणजो ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुं हवे रहुं पेट मांहीं, दुकाल एम लागीए ॥ मा० ॥ दु० ॥ बोल्या तापस वयण, थाशे एम पाखीए ॥मा०॥ था० ॥ ॥ १० ॥ सुकाल थया पछी नीकलुं, तो सुखी थाइए ॥ मा० ॥ सु० ॥ जो नीकलुं दुकाल मांहीं, तो मालुं थाइए ॥ मा० ॥ तो० ॥ ते तापस तेणी वार, चाल्या परदेशमां ॥ मा० ॥ चा० ॥ बार वरस फरी आव्या, नवनवा देशमां ॥ मा० ॥ न० ॥ ११ ॥ दीधो आदरमान, आहार घणो आपीयो ॥ मा० ॥ आ० ॥ पाम्या दरख अपार, सुकाल नाम थापीयो ॥ मा० ॥ सु० ॥ उदर मांहींथी वात, सुणी में तेहवे ॥ मा० ॥

सु० ॥ नीकल्यो हुं गर्भ मांहीथी, शीघ्र घइ एहवे ॥ मा० ॥ शी० ॥ १२ ॥ खाउं खाउं पारोवार, करुं हुं तव जदा ॥ मा० ॥ क० ॥ जमण दीयो मुज मात, कहुं तुमने मुदा ॥ मा० ॥ क० ॥ तापस कहे तेणी वार, ए पुत्र कुलक्षणो ॥ मा० ॥ ए० ॥ धन धान्यनो संहार, करे कुल भक्षणो ॥ मा० ॥ क० ॥ १३ ॥ जे भूषणे तुटे कान, ते सोने शुं कीजीए ॥ मा० ॥ ते० ॥ कोलुं धान जो होय, वाडे नाखी दीजीए ॥ मा० ॥ पा० ॥ जा जारे मुज आगलथी, मुख लेइ पापीया ॥ मा० ॥ मु० ॥ नहीं तो फेडीश गाम, सही दुःख व्यापीया ॥ मा० ॥ स० ॥ १४ ॥ मंदिर माहरा मांहीं, हवे तुं मत रहे ॥ मा० ॥ र० ॥ सांभली मातानां वचण, कुमर तिहांथी वहे ॥ मा० ॥ कु० ॥ पाछो जाउं परदेश, तापस टोलामां भल्यो ॥ मा० ॥ ता० ॥ रूपिनो लीधो वेश, अयोध्या आवी मल्यो ॥ मा० ॥ अ० ॥ १५ ॥ तिहां परणी मुज माय, दीठी में ते-हये ॥ मा० ॥ दी० ॥ तापस प्रणमी पाय, पूछ्या में एहवे ॥ मा० ॥ पू० ॥ तव तापस कहे एम, सांभल तुं वारता ॥ मा० ॥ सां० ॥ स्मृति पुराण जे शास्त्र, मांहीं अमे धारता ॥ मा० ॥ मां० ॥ १६ ॥ अकृत योनि परणी ते, नहीं दोष एहमां ॥ मा० ॥ न० ॥ जे नारीनो नाथ, गयो परदेशमां ॥ मा० ॥ ग० ॥ चार वरष लगे वाट,

ते जुवे वेशमां ॥ मा० ॥ ते० ॥ जो नरतार नाव्यो, करे बीजो लेशमां ॥ मा० ॥ क० ॥ १७ ॥

स्मृत्युक्तं—सद्भिर्वाचा प्रदत्ता या, यदि पूर्वतरो मृतः ॥
सा चेदक्षतयोनिः स्यात, पुनः संस्कारमर्हति ॥ १ ॥

पुत्रवती जे नार, मुउं धणी तेहनो ॥ मा० ॥ मु० ॥ बेठी रहे आठ वरस, लगे मान एहनो ॥ मा० ॥ ल० ॥ फरी बीजो नरतार, करे नारी वली ॥ मा० ॥ क० ॥ तो शास्त्रे कह्यो दोष, नारीने जाये टली ॥ मा० ॥ ना० ॥ १८ ॥

श्लोकः—अष्टौ वर्षाणि सपुत्रा, ब्राह्मणी पतितंपति ॥
अप्रसूता च चत्वारि, पुरतोन्यः समाचरेत् ॥ २ ॥

परणी छे तुम माय, विचार तेहनो नहीं ॥ मा० ॥ वि० ॥ ते सांभलीने हुं आव्यो, ब्राह्मशाला मही ॥ मा० ॥ ब० ॥ कौतिक कारण नेर, घंटानाद में कीयो ॥ मा० ॥ घं० ॥ चाल्यो तापस साथ, तिहां वेश में लीयो ॥ मा० ॥ ति० ॥ १९ ॥ चोथा खंडनी ढाल, चोथी ए सही ॥ मा० ॥ चो० ॥ रंगविजयना शिष्य, नेमविजये कही ॥

मा० ॥ ने० ॥ सांभलजो सहु कोय, आगल वात छे घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ वचनमां न करशो व्याघात, राखो रंग सहु मली ॥ मा० ॥ रा० ॥ २० ॥

दुहा.

तव ब्राह्मण एम बोलीया, असत्य वचन गमार ॥ पुरुष तुज लाग्या थकी, केम रहे गर्भ आधार ॥ १ ॥ गर्भ मांहीथी केम सांभले, तापस कह्यो जे विचार ॥ बार वरस कहो केम रहे, उदरमां गर्भ ते सार ॥ २ ॥ जात मात्र बालक कहो, केम ते वेश धरंत ॥ तुज सरीखो खोटो नहीं, मही मंडल जोयंत ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सांभलो द्विजवर वाच ॥ स्मृति पुराणे जे कह्युं, ते शुं वचन असाच ? ॥ ४ ॥ तव पाडव कोपी कहे, रे तापस अजाण ॥ वेद पुराणे जे कह्युं, ते कहो अमने वाण ॥ ५ ॥

ढाल ७६ी.

मेडते नगारो वाजीयोरे ढोला, पमीरे दवा में ठोर ढोला, भाजी
मत जाजोरे सगताउंत ढोला—ए देशी.

मनोवेग तव बोलीयोरे, साजन सांभलो ब्राह्मण वात ॥ साजन तुम नयथी भुजुं घणुंरे, सा० केम कहुं शास्त्र विख्यात ॥ सा० ॥ १ ॥ साजन सहु सुणजोरे, आगे जे होय

॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ तव द्विजवर बोल्या वलीरे, सा० सुणजो तापस [illegible] ॥ [illegible]
शंका भय मेली करीरे, सा० पुराण कथा कहो रंग ॥ सा०॥ २ ॥ मनोवेग चित्त हर-
खीयोरे, सा० बोल्यो तव मनोहार॥सा०॥ वेद पुराण माने नहीरे,सा० ते नर जाणो गमार
॥सा०॥ ३॥ मनोवेग तापस तणीरे, सा० वाणी पुराणनी अचंग ॥सा०॥ अंग उपांग प्रसिद्ध
छेरे, सा० वेद माने ते चंग ॥ सा०॥ ४ ॥ चिकित्सा वली वैद्यनीरे, सा० ज्योतिष शास्त्र देश
आदि ॥ सा० ॥ सीधी आज्ञाए सहीरे, सा० शास्त्र वचन अनादि ॥ सा० ॥ ५ ॥

उक्तं च–पुराणमानवोधर्म–सांगोवेदचिकित्सितम् ॥
आज्ञासिद्धानि चत्वारि, न हंतव्यानि हेतुभिः ॥ १ ॥

सर्व वेद रीखीनी कहीरे, सा० वाणी करे अप्रमाण ॥ सा० ॥ ते माप्र हत्यारो
कहोरे, सा० भवभव होये अजाण ॥ सा० ॥६॥

उक्तं च–मंतव्यं व्यासवासिष्टं, वचनं वेदसंयुतम् ॥
अप्रमाणं तु यो ब्रूयात्, स भवेद्धर्मघातकः ॥ १ ॥

तव ते द्विजवर बोलीयारे, सा० कहो तापस ए सार ॥ सा० ॥ कांइक वचन मात्र-
थीरे, सा० पाप न लागे लगार ॥ सा० ॥ ७ ॥ जेम अगनि उनो घणुंरे, सा० कहेतां न

वले अंग सार ॥ सा० ॥ तेम शास्त्र तणो दोष कहामतां, सा० कहेतां न पाप लगार ॥ सा० ॥ ८ ॥ तव वचन सुणीने एशुं रे, सा० नय तजी बोल्यो ऋषिदेव ॥ सा० ॥ हुं तो वेद पुराणनारे, सा० दोष सुणो कहुं खेव ॥ सा० ॥ ९ ॥ एक नगर मांहीं रहेरे, सा० नारी दोय अति सार ॥ सा० ॥ एक नागी बीजी रथीरे, सा० जोवनजर मनोहार ॥ सा० ॥ १० ॥ बाल कुंवारी ते बेहुरे, सा० बेहु सूती सेहेज मोझार ॥ सा० ॥ ते बेहु नारी संजोगथीरे, सा० जायो सुत सुविचार ॥ सा० ॥ ११ ॥ नाम दीधुं तव तेहनोरे, सा० नागीरथी पुत्र चंग ॥ सा० ॥ ए तो नारत पुराणमांरे, सा० वखाण्यो मनने रंग ॥ सा० ॥ ॥ १२ ॥ जुउ नारीना जोगथीरे, सा० जायो पुत्र सुविचार ॥ सा० ॥ तो नारी नर संजोगथीरे, सा० हुं जनम्यो तेम सार ॥ सा० ॥ १३ ॥ अवर दृष्टांत वली कहुंरे, सा० सांजलो द्विजवर राज ॥ सा० ॥ जेम संदेह मन नांजशेरे, सा० सरशे तमारां काज ॥ सा० ॥ १४ ॥ गंधारी एक नारीएरे, सा० धृतराष्ट्र करे ए काज ॥ सा० ॥ एवो निश्चय कीधो तिहांरे, सा० सांजलो तुमे द्विजराज ॥ सा० ॥ १५ ॥ तव नारी गंधारी सहीरे, सा० रोमांचित हुइ जाम ॥ सा० ॥ तव नारी तणे धरमें हुइरे, सा० माथे हुइ ते ताम ॥ सा० ॥ १६ ॥ चोथे दिवसे नारीएरे, सा० स्नान कर्युं तेणी वार ॥ सा० ॥ पठी वस्त्र विहुणी हतीरे, सा०

फणस आलिंगन अपार ॥ सा० ॥ १७ ॥ तेह काल समे पछीरे, सा० मास गया जब एक ॥ सा० ॥ तेह नाथ परण्यो तिहांरे, सा० धृतराष्ट्र धरनो विवेक ॥ सा० ॥ १८ ॥ तब पुष्पवती नारी तणीरे, सा० नवि गइ मुखनी वांह ॥ सा० ॥ कंत नय थकी नारी-एरे, सा० नर विष्णुनी धरी बांह ॥ सा० ॥ १९ ॥ तेह वृत्तांत गर्भनोरे, सा० नाथ कह्यो तेणी वार ॥ सा० ॥ नर नारायणे करीरे, सा० मनशुं करीय विचार ॥ सा० ॥२०॥ चोथा खंड तणी कहीरे, सा० पांचमी ढाल ए सार ॥ सा० ॥ रंगविजय तस शिष्यनेरे, सा० नेमविजय जयकार ॥ सा० ॥२१॥

दुहा.

तब कुटुंब तेमावीया, अंधक विष्णु आदि सार ॥ धृतराष्ट्र वेसामीने, कह्यो तेहने सुविचार ॥ १ ॥ तब सहुने संतोषीया, दिवस गया तेणी वार ॥ एक दिवस गंधारीए, फणस जाणो उदार ॥ २ ॥ ते तो फणस माहींथी, सुत नीकल्या शत एक ॥ ए तो जारते जाणीयुं, तुम तणे शास्त्र विवेक ॥ ३ ॥ मुज माता ने तातने, संजोगे हुवो हुं सार ॥ तो मुज माता पिता तणो, केम कीजे ते विचार ॥४॥ तब वाडव बोल्या सहु, तुम तणां वचनो सत्य ॥ तमे तापस मुद्रा जली, नवि नाखो असत्य ॥ ५ ॥ पण सांभलो एक वात-

में, बोल्यो खोटो जेम ॥ गर्ज थकी केम सांजल्युं, खोटुं वयणज एम ॥ ६ ॥ एह वचन केम मानीए, सांजलो तापस राय ॥ एह कथा अमने कहो, मन धरी बहु पसाय ॥७॥

ढाल सातमी.

प्रीतमी न कीजेरे नारी परदेशीयारे—ए देशी.

वचन सुणी तव मनोवेग बोलीयोरे, सांजलो वाम्ब तुमे विचार ॥ गर्ज मांहींथी साद ते में सुण्योरे, वाद निवारुं ते निरधार ॥ सुणजो साजन जे कहुं वातमीरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ महाभारत मांहे वाणी जे कहीरे, ते नवि जाणो सुख अभंग ॥ एक मना थइ सुणजो सहु तमेरे, संदेह निवारण ए उत्तंग ॥ सु० ॥ २ ॥ जादव वंशे वसुदेव जाणीएरे, तेनी बेटी अमृत वाण ॥ रूप कला विभ्रम विलासनीरे, सुभद्रा नाम गुणखाण ॥ सु० ॥३॥ विष्णु तणी ए भगनी जाणजोरे, अर्जुन वर कीधो भरतार ॥ गर्भ धर्यो सुभद्रा नारीएरे, पूरा मास हुवा जब त्यार ॥ सु० ॥ ४ ॥ असमाधि उपनी तव ते बालनेरे, कृष्ण कथा कहो भाइ विचार ॥ चक्रावो वर्णन करीने दाखव्योरे, सुभद्रा पामी निद्रा अपार ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रत्युत्तर नवि बोले को तिहांरे, गर्भे हुंकारो दीधो ताम ॥ नारायण तव मन विस्मय पड्योरे, ए कोइ पुरुष मोटो जाम ॥ सु० ॥ ६ ॥ गर्भ

हुंकारो सुणीउं जेहवेरे, दामोदर चिंतवे तेह ॥ कथा सुणीने हुंकारा दीधारे, [illegible]
वचन सही एह ॥ सु० ॥ ७ ॥ द्विजवर कहे सहु साचुं कर्युंरे, स्मृति पुराणे बोल्युं
जेह ॥ वली अमने एक विस्मय उपन्योरे, वार वरस रह्यो गर्भे तेह ॥ सु० ॥ ८ ॥
मनोवेग बोल्यो तब फरी वलीरे, कृपि वचन न जाणो गमार ॥ मय नामा तापस छे
एक रुपकोरे, वनमें रहे निरधार ॥ सु० ॥ ९ ॥ एक दिन रजनी सूतो छे तिहांरे, स्वप्न
दीठो निद्रामां ताम ॥ नारी सरसो भोग मनशुं करेरे, वीर्य खलित हुवो आम ॥ सु०
॥१०॥ ते वीर्य संदर्युं हाथ मांहीं जदारे, मनशुं कीधोरे विचार ॥ रखे मुज वीर्य फोक
जाये सहीरे, देखी हसशे नर नार ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोपीने वीर्यने लेइ पत्र कमल-
नुंरे, वीर्यु वाली तेणी वार ॥ निरमल नदीना जल मांहीं तदारे, वेहेतुं मेल्युं
निराधार ॥ सु० ॥ १२ ॥ देडकीए ते खाधुं पांदडुंरे, गर्भ रह्यो उदर मांहीं ॥
तब तेहने ऋतुनो समो हतोरे, डुर्दरीने पेट रह्युं त्यांहीं ॥ सु० ॥ १३ ॥ स्त्रीनां लक्षण
प्रगट्यां अंगमेंरे, मास दिवस गया अपार ॥ जनम हुवो शुभ लगने करीरे,
उंच ग्रह उपन्या छे फार ॥ सु० ॥ १४ ॥ बेटीनुं नाम दीधुं मंदोदरीरे, रूप सोभागी
अभिराम ॥ माताने रूप जोवाथी हांश घणीरे, बोलावे लेइ नाम ॥ सु० ॥ १५ ॥

एहवुं रूप केनु नवि होयरे. एहने वेगां माणस जोय ॥ कीधो विचार तेणे एम चित धीर. ग्रीष्म कमलदले मेली माय ॥ सु० ॥ १६ ॥ स्नान करवा निज जाये वहीरे. नदीए थावे मय ऋषि सार ॥ कमल उपर दीठी ते कुमारिकारे. तापस चिंतवे मन मोझार ॥ सु० ॥ १७ ॥ मुज वीर्य थकी उपनी ए बालिकारे. ते कारण मुज बाधे नेह ॥ माहरी पुत्री होइ संसारमांरे रूप लक्षणे दीसे एह ॥ सु० ॥१८॥ नाम थाप्युं पेटीनुं मंदोदरीरे. सहु आव्यो निज स्थानक ताम ॥ भोजन करीने जमाडे बालिकारे, जोबनवंती होइ जाम ॥ सु० ॥ १९ ॥ चोथा खंड तणी ढाल दोसमांरे, रंगविजय कवि सार ॥ श्रोता सांभलजो सहु एक मनारे. नेमविजय जयकार॥ सु० ॥२०॥

दूहा

एक दिन ऋतुवंती हुइ. कापीन तापसनी मार ॥ वीर्य तणी खरडी अछे, पेहेरी पुत्रीए तेणी वार ॥ १ ॥ ते कापीन परवेशथी गर्भ रह्यो तिहां मांही ॥ दिन दिन पाधे अनुक्रमे. कुमरीने मुख नांही ॥ २ ॥ तापस जाणे चित्तमां, मुज वीर्य निरधार॥ गर्भ थयो ए कुमरीए, होशे कोइक अवतार ॥ ३ ॥ जो अवर ऋषि कोइ जाणशे, तो हसशे निश दिश ॥ लाज शरम जाशे खरी, श्ये मुख बोलीश जीह ॥ ४ ॥

एदृषी करी विचारणा, गर्जने राखुं गोप ॥ खीलुं मंत्र जंत्रे करी, कोइ नवि जाणे लोप ॥ ५ ॥ कमंडल लेइ हाथमां, जल छांटे भणे मंत्र ॥ जिहां लगे वर पामे नहीं, गर्भ रहेजो मांहीं जंत्र ॥ ६ ॥ बेटी बोले बापने, गर्भ खीड्यो महा पाप ॥ तव मय तापस बोलीयो, भवितव्यताने प्रताप ॥ ७ ॥ राक्षस कुले लंकापति, विश्रवसु तात केके माय ॥ रावण परण्यो मंदोदरी, बार वरसनी अवधे थाय ॥ ८ ॥ रावणने पहेलो जाणजो, सात सहस गयां वर्ष ॥ रावणने पुत्र ए कह्यो, उपन्यो पाम्या हर्ष ॥ ९ ॥ सात सहस वर्ष गये छते, इंद्रजित नाम कुमार ॥ बार वरस हुं रह्यो गर्भमें, तो शुं करो विचार ॥ १० ॥ सांभलीने द्विज बोलीया, सत्य वचन तुम सार ॥ जात मात्र थका तुमे, वेष लीधो निरधार ॥ ११ ॥ जे नारीए जनमीयो, करी परणी ते नार ॥ तुम जनम थया पछी, केम परणी बीजी वार ॥ १२ ॥ दोय संदेह एवा अछे, तेह निवारो आज ॥ जेम मत निश्चय अम तणा, सरे सहुनां काज ॥ १३ ॥

ढाल सातमी.

अमली लाल रंगावो वरनां मोलीयां—ए देशी.

मनोवेग कहे भाइ सांभलो, सूत्रकंठ तुमे छो सुजाणरे ॥ भ्रांति भाजे जेम

सपली मन तणी, तेम बोलुं हुं हवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुउं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिषिमां कह्यो, एक दिवस कीधो विहाररे ॥ गंगा नदी उपकंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक साररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम छे तेहनो, कुरूप अनागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे, बीजुं नाम धर्युं वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे, नावे बेठो जोइ तस रूपरे ॥ जाग्यो मनोजव तव स्तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ रूषि कहे अमशुं कृपा करो, दान देउं कायानी सारीरे ॥ सुणो तपसी तव जणे कामनी, मुज तनु दुर्गंध धारीरे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआले लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंपर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ जोग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुउं वेद व्यासरे ॥ मुख कुंठने कमंडल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख बोले जासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कोटे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उत्तंगरे ॥ कर जोडी लाग्यो तापस रूपे, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो रूषीश्वर अछे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ए ॥ वनमां शिख देइ रूषि गयो, एकली

रही वाडा जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, दीठी जोजनगंधा तामरे ॥
स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ जेम कन्याए
वेद व्यास जाइउं, तास सरूप शुभ देहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ ततकाल जण्यो तापस
जेम हुवो, तेम मुजने द्विज जाणोरे ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम
मुज जननी वखाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ वलता विप्र करी एम उचरे, सुणो तापस
तुमे तो मुजाणरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे
॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ वली विप्र सांभलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधक-
वृष्टि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ कुंती नामे तेहनी
कुमारिका, रूप सोभागी अभिरामरे ॥ घर छिडे किरण सूरज तणां, पेठां कुंता काने
तामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्भ धर्यो तव ते सूरज तणो, काने करण ते वेटो जायोरे ॥
पछे पांडु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणे उमायोरे ॥स्मृ० ॥१६॥ करण तणी
माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली
सांभलो वे कर जोडरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंड तणी ढाल सातमी, कही विशेष
करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांभलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ० ॥ ॥१८॥

सघली मन तणी, तेम बोलुं हुं हवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुउं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिषिमां कह्यो, एक दिवस कीधो विहाररे ॥ गंगा नदी उपकंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक साररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम छे तेहनो, कुरूप अनागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे, बीजुं नाम धर्युं वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे, नावे बेठो जोइ तस रूपरे ॥ जाग्यो मनोभव तव स्तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ रूषि कहे अमशुं कृपा करो, दान देउं कायानी सारीरे ॥ सुणो तपसी तव भणे कामनी, मुज तनु दुर्गंध धारीरे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआले लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंयर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ भोग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुउं वेद व्यासरे ॥ मुख कुंठने कमंडल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख बोले भासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कोटे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उत्तंगरे ॥ कर जोडी लाग्यो तापस रूपे, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो रूषीश्वर अछे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ९ ॥ वनमां शिख देइ रूषि गयो, एकली

रही पाखा जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, दीठी जोजनगंधा तामरे ॥
स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ जेम कन्याए
वेद व्यास जाइने, तास सरूप शुन देहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ ततकाल जण्यो तापस
जेम हुवो, तेम मुजने द्विज जाणोरे ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम
मुज जननी वखाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ वखता विप्र करी एम उचरे, सुणो तापस
तुमे तो सुजाणरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे
॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ पछी विप्र सांभलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधक-
वृष्टि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ कुंती नामे तेहनी
कुमारिका, रूप सोभागी अजिरामरे ॥ घर विडे किरण सूरज तणां, पेठां कुंता काने
नामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्भ थयो तव ते सूरज तणो, काने करण ते वेठो जायोरे ॥
पछे पांडु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणे उमायोरे ॥स्मृ० ॥१६॥ करण तणी
माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली
सांभलो वे कर जोडरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंड तणी ढाल सातमी, कही विशेष
करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांभलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ० ॥ ॥१८॥

सपली मन तणी, तेम वोलुं हुं हवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुउं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिषिमां कह्यो, एक दिवस कीधो विहाररे ॥ गंगा नदी उपकंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक साररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम छे तेहनो, कुरूप अनागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे, बीजुं नाम धर्युं वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे, नावे बेठो जोइ तस रूपरे ॥ जाग्यो मनोजव तव स्तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ रूषि कहे अमशुं कृपा करो, दान देउं कायानी सारीरे ॥ सुणो तपसी तव जणे कामनी, मुज तनु दुर्गंध धारीरे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआखे लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंयर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ जोग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुउं वेद व्यासरे ॥ मुठ कुंठने कमंडल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख वोले जासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कोटे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उत्तंगरे ॥ कर जोडी लाग्यो तापस रूपे, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो रूषीश्वर अछे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ए ॥ वनमां शिख देइ रूषि गयो, एकली

रही वाला जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, दीठी जोजनगंधा तामरे ॥
स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ जेम कन्याए
वेद व्यास जाइउं, तास सरूप शुभ देहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ ततकाल जण्यो तापस
जेम हुवो, तेम मुजने द्विज जाणोरे ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम
मुज जननी पखाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ वलता विप्र फरी एम उचरे, सुणो तापस
तुमे छो मुजाणरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे
॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ वली विप्र सांजलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधक-
वृष्टि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ कुंती नामे तेहनी
कुमारिका, रूप सोभागी अजिरामरे ॥ घर छिडे किरण सूरज तणां, पेठां कुंता काने
तामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्भ धर्यो तव ते सूरज तणो, काने करण ते बेटो जायोरे ॥
पछे पांडु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणे उमायोरे ॥स्मृ० ॥१६॥ करण तणी
माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली
सांजलो ये कर जोडरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंड तणी ढाल सातमी, कही विशेष
करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांजलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ० ॥ ॥१८॥

सपक्षी मन तणी. तेम घोडुं दुं दृवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुउं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिषिमां कह्यो. एक दिवस कीधो विहाररे ॥ गंगा नदी उपकंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक सारररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम छे तेहनो. कुरूप अनागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे. बीजुं नाम धर्यु वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे. नावे बेठो जाइ नम रूपरे ॥ जाग्यो मनोभव तव तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ रूषि कहे अमशुं कृपा करो, दान देउं काथानी सारीरे ॥ सुणो तपसी तव तणे कामनी, मुज तनु दुर्गंध पारीरे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआले लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंयर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ जोग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुउं वेद व्यासरे ॥ मुख कुंठने कमंडल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख घोखे जासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कांठे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उजंगरे ॥ कर जोडी लाग्यो तापस रूपे, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो रूषीश्वर अछे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ९ ॥ वनमां शिख देइ रूषि गयो, एकली

रही वाखा जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, दीठी जोजनगंधा तामरे ॥
स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ जेम कन्याए
वेद व्यास जाइजे, तास सरूप शुज देहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ ततकाल जण्यो तापस
जेम हुवो, तेम मुजने द्विज जाणोरे ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम
मुज जननी वखाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ वलता विप्र फरी एम उचरे, सुणो तापस
तुमे छो सुजाणरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे
॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ वली विप्र सांजलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधक-
वृष्टि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ कुंती नामे तेहनी
कुमारिका, रूप सोजागी अजिरामरे ॥ घर छिडे किरण सूरज तणां, पेठां कुंता काने
तामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्ज धर्यो तव ते सूरज तणो, काने करण ते बेटो जायोरे ॥
पछे पांडु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणे उमायोरे ॥स्मृ० ॥१६॥ करण तणी
माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली
सांजलो वे कर जोडरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंड तणी ढाल सातमी, कही विशेष
करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांजलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ० ॥ ॥१८॥

दुहा.

उदायिन तापस अठे. तप जप करे उदार ॥ क्लेश करावे क्रोधथी. तेणे वीहे नर नार ॥ १ ॥ एक दिवस सूतो थको. स्वप्नमां भोगवे काम ॥ वीर्य खलित हुवो तदा. मनशुं विचारे नाम ॥ २ ॥ वीर्य मूकवाने कारणे. गंगा गयो ततखेव ॥ कमलमां वीर्य मूकीने. स्नान कर्युं तेणे हेव ॥ ३ ॥ रघु राजानी पुत्रिका. चंद्रमती नाम विवेक ॥ गंगा नदीए झीलवा, आवी एकाएक ॥ ४ ॥ पुष्पवती ते बालिका. कमलशुं कीधी पाल ॥ पदम लइ नाके धर्युं. गर्भ रह्यो तेणे काल ॥ ५ ॥

ढाल आठमी.

वाघाना जावनीरे—ए देशी.

सगर्भा बेटी दीधी मात. सांभल बेटीना तातहे ॥ ससनेही सुंदर ॥ अनाचार पुत्रीए कीधो, गर्भ पारको लीधोहे ॥स०॥ साजन सहुको सांभला ॥ ए आंकणी ॥१॥ रघु राजाए लाज धरी मनमां, बेटी मूकी वन मांहे ॥ स० ॥ वाघ सिंहना शब्द घणा थाये, दुःखे करीने जरायेहे ॥स०॥सा०॥२॥ ते वन मांहे तापस वास, वांकु तापस मोटो आसहे ॥स०॥ पडु करे जतन तापस तेहनो, नारीने मन एहनोहे ॥स०॥सा० ॥३॥ नागकुमर तेणीए

जण्यो सार, रूपे जाणे नागकुमारदे ॥ स० ॥ तव चंद्रमती एम कहे माय, पुत्र तुं तात जोवाने जायदे ॥ स० ॥ सा० ॥ ४ ॥ मजूस मांहे सुत घाल्यो जाम, गंगा प्रवाहे मेल्यो तामदे ॥ स० ॥ प्रवाह मांहे मजूस ते चाली, उदायिने दीठी आलीदे ॥ स० ॥ सा० ॥ ५ ॥ आणी ठाम उघाडी जाम, पिताए पुत्र दीठो अभिरामदे ॥ स० ॥ सुत देखी उपन्यो बहु नेह, चंद्रमती आवी तव गेहदे ॥स०॥सा०॥६॥ कुंवरी कन्या कहे छे सार, उदायिन तुं मुज भरतारदे ॥ स० ॥ विवाह करी तुमे परणो आज, जेम सरे वेहुनां काजदे ॥ स० ॥ सा० ॥७॥ उदायिन तव बोल्यो जति, ए वात अमने नहीं घटतीदे ॥ स० ॥ तुज पिता परणावे सोय, तेह तारो भरतारज होय ॥ स० ॥ सा० ॥ ८ ॥ तापसे जइ माग्यो रघु राय, बेटी अमने करो पसायदे ॥ स० ॥ नहींतो आपीने भस्मज करुं, के तुज मारुं के हुं मरुंदे ॥ स० ॥ सा० ॥ ९ ॥ राजा कहे बेटीने वरो, उदायिन तमे कोप परिहरोदे ॥ स० ॥ तापस तव जमाइ कर्यो, चंद्रमतीने वेगे वर्योदे ॥ स० ॥ सा० ॥ १० ॥ वेद पुराणे बोल्यो एम, चंद्रमती परणी ते केमदे ॥ स० ॥ पुत्र जणे कन्या जे होय, पछी विवाह करो ते जोयदे ॥ स० ॥ सा० ॥ ११ ॥ जेम चंद्रमती कन्या कही सार, तेम मुज मातानो कशो विचारदे ॥ स० ॥ सूत्रकंठ कहे साची वात, तुमे कर्युं

ते अग विख्यातहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १२ ॥ मनोवेग वाहया गुणनाज, पवनवेग संबोधन बाजहे ॥ स० ॥ वेद पुराण कथा कही सार, तुम आगम कही विस्तारीहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १३ ॥ पुत्र जणी कन्या विवाह, श्री मजाग उपजे गज उदारहे ॥ स० ॥ कणस आखिगन नारी सार शत वेगाना हुवा अवतारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १४ ॥ सुतद्वानो गर्ज सांजली शब्द नारायण हुकारा सुबंधहे । स० । देमकाण जणी मदादर्गी नार, गर्ज रहा पिताना सारहे ॥ स० ॥ सा० । १५ ॥ सात सहस्र थया त्र वर्ष, पुत्र ६८ जित रावण हर्षे ॥ स० ॥ पारासुर भागवत नार वेद व्यास सुत उपन्यो सारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १६ ॥ कान्ने कण जण्या दातार कमल सुगधना गज अपारहे ॥ स०॥ पूर्वापर ते विरोध अपार तुम पुराण साचा न उगारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १७ ॥ वांसनां बहु साग खेद, तुम पुराण नही साचा वेदहे ॥ स० ॥ सुधर्म आराधा जो वली नमे, जिन आप्यु ते कहीए अमेहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १८ ॥ चाया खरुनी आठमी ढाल, कहे आगम वात रसालहे ॥ स० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम जंपे, नेमविजय एम पर्यंपेहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १९ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुमे आज ॥ स्मृति वेद पुराणनां, वयण विपरीत अकाज ॥ १ ॥ उपवन आवण जइ करी, कहेशुं तुमने सार ॥ जिनशासन मत वाचनुं, सुणजो सार विचार ॥ २ ॥ पूर्व वनमां तव गया, रह्या अपूरव ठाम ॥ कर्ण कथा पांडव तणी, मनोवेग कहे ताम ॥ ३ ॥

ढाल नवमी.

भण समरथ पीयु नानडो—ए देशी.

मित्र पवन मुज सांभलो, होजी पवनवेग गुणधार ॥ कुरुजांगल देशज भलो, होजी हस्तीनागपुर सार ॥ साजन सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुरु वंशी राजा हुवो, होजी सोमप्रभ श्रेयांस ॥ तेह परंपरा उपन्या, होजी नृपति घणा अवतंस ॥ सा० ॥ २ ॥ सांतनु सुत सोहामणो, होजी व्यास नाम गुणवंत ॥ रूपणी नामा भामनी, होजी पुत्र त्रण हुवा संत ॥ सा० ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्र पहेलो भलो, होजी पांडु बीजो जेह ॥ त्रीजो विदुर मनोहरु, होजी करे राज्य सहु तेह ॥ सा० ॥ ४ ॥ पांडु कुंवर चिंता भर्यो, होजी गयो वन अभिराम ॥ कुसुम

जाजो वली तुमे सार ॥ रूपवंत थइ विलसजो, होजी कुंतीशुं परवार ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ नवमी ढाल चोथा खंडनी, होजी सांभलो बाल गोपाल ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, होजी नेमने मंगल माल ॥ सा० ॥ १६ ॥

दुहा.

मुद्रकी लीधी रुपडी, चाल्यो सुरीपुर वास ॥ अदृश्य रूप लेइ करी, गयो कुंती आवास ॥ १ ॥ काम कुतूहल करी रमे, कुंतीशुं करे वात ॥ रात्रि दिवस एम भोगवे, गया वासर सात ॥ २ ॥ पांडु कुमर निज घर गयो, गर्भ धर्यो कुंती कुमार ॥ सुभद्रा जननीए जाणीयो, प्रगट गर्भ आकार ॥ ३ ॥ गुप्तपणे घरमां रही, पुत्र जण्यो विख्यात ॥ कुटुंब वेसी विचारीयुं, वाधशे अपक्षपात ॥ ४ ॥ मंजूस मांही घाली करी, मूक्यो जमुना मांही ॥ चंपापुरी गइ पाधरी, आदित्य राजा छे त्यांही ॥ ५ ॥

ढाल दशमी.

काली पीली वादली राज, वरसण लाग्यो मेह, साहीबोरे, मारो कवहीक घर आवे हो रंग लाय—ए देशी.

निज मंदिर आणी करी राज, मजूस उघाडी जाम ॥ बालक दीठो रुपडो राज,

संतोष थयो पछी ताम ॥ मारा साजनरे ॥ सुणजो एक मना थइ, वात चित्त लाय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ उत्तम लक्षण एह तणां राज, कर दोय कीधा कान ॥ गात्र पवित्र देखी करीरे राज, करण धर्युं अभिधान ॥ मा० ॥ २ ॥ अपुत्रीयो राजा रवि राज, रतनादे राणी तास ॥ तेहने हस्ते समर्पीयो राज, हुवो ते सुख निवास ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांडु पुत्र पावन जसोरे राज, करण ते महा राय ॥ काने सुत ते केम जण्यो राज, धातु रहित रवि राय ॥ मा० ॥ ४ ॥ अंधकवृष्टिए तेडी करी राज, पांडु कीधो विवाह ॥ कुंती मुंडी परणावीया राज, कीधो अति उच्छाह ॥ मा० ॥ ५ ॥ अंधकवृष्टि जाइ जसो राज, नरपति विष्टि नाम ॥ गंधारी पुत्री रुयडी राज, धृतराष्ट्र परणी ताम ॥ मा० ॥ ६ ॥ पांडु कुंतीए पुत्र जण्या राज, युधिष्टर भीम ने पार्थ ॥ मुंडीए ये जनमीया राज, नकुल सहदेव साथ ॥ मा० ॥ ७ ॥ धृतराष्ट्र राजा थकी राज, गंधारी अभिराम ॥ शत पुत्र कुरुवे उपन्या राज, दुर्योधनादिक नाम ॥ मा० ॥ ॥ ८ ॥ पांडव करण उत्पत्ति कही राज, कौरवनी वात एह ॥ जरासंध चक्री जसो राज, उत्तम नर छे तेह ॥ मा० ॥ ए॥ अघट मान तुमे परिहरो राज, रवि सुत नोहे करण ॥ युधिष्टर नोहे जम तणो राज, उत्तम नर ए वरण ॥ मा० ॥ १० ॥

पांडु पुत्र नांदे भीमडो राज, नांदे शक्रनो अर्जुन ॥ अश्वनीकुमारथी नहीं जन्या राज, सहदेव नकुल बे धन ॥ मा० ॥ ११ ॥ अर्जुन नारी रुक्मी राज, सती द्रुपदी जे सार ॥ मिथ्या वचन नवि मानीए राज, जे खोटां छे असार ॥ मा० ॥१२॥ सुत विद्याधर महीपति राज, मदनसुंदरी नार ॥ तस बेटी मंदोदरी राज, सती शिरोमणि सार ॥ मा० ॥ १३ ॥ रावण रंगे परणीउं राज, मंदोदरी गुण नार ॥ इंद्रजित सुत उपन्यो राज, मोक्षगामी नवनार ॥ मा० ॥ १४ ॥ दशमी ढाल चोथा खंडनी राज, सांभळजो नर नार ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे राज, नेमने जयजयकार ॥मा० ॥१५॥

दुहा.

मिथ्या वचन न मानीए, पवनवेग खगेश ॥ व्यासे महाभारत रच्यो, सत्य तणो नहीं लेश ॥ १ ॥

ढाल अगीयारमी.

नदी जमुनाके तीर उभे दोय पंखीडा—ए देशी.

सांभळो भाइ वात जे वेद पुराणनी, व्यासे रच्यो ग्रंथ खास ॥ सचाइ चुरणनी सें न विचार्यु, एम मूरख सहु लोकमां ॥ महाभारतनी वात करशे सहु लोकमां ॥ १ ॥

किंवा सत्य करशे एह किंवा नहीं करे, ए वातनो संदेह ते मनमां अति धरे ॥ पुस्तक लेइने घाल्यो व्यास जात्रा तणी, गंगा आव्यो शुभ गात्र करवा हुंश घणी ॥ २ ॥ ताम्र तणुं एक भाजन भलुं छे माहरुं, रखे तस्कर लेइ जाय इहांथी परुं ॥ वेलुनो कीधो पुंज गंगा तटमां जइ, ते मांही घाल्यो भाजन शंका मननी गइ ॥ ३ ॥ गंगा नदी मांही व्यास पेठो आवी वही, हरि हरि करी मुख जंपे उठाले जल रही ॥ जात्रा करण बहु लोक मली सहु आवीया, व्यासे कीधो वेलु थोक देखी मन भावीया ॥ ॥ ४ ॥ कोइ कहे एवुं लिंग होये ईश्वर तणुं, हुं पण थापुं एहवुं करीने अतिपणुं ॥ जे आव्या हता लोक तेणे पुंज थापीया, वेलु तणा हुवा गंज अन्योअन्य व्यापीया ॥ ॥५॥ स्नान तर्पण करी व्यास नीकल्यो उतावलो, ताम्र भाजनना पुंज देखी थयो भां-गलो ॥ पोता तणो कीधो पुंज ते नवि उलख्यो, सरखा सरखुं रूप देखी मनमां धख्यो ॥ ६ ॥ जो भांजुं सवि पुंज तो अपजश सहु करे, ईश्वर देवना लिंग तणो रूप केम फिरे ॥ ताम्र तणुं मुज भाजन जाउं तो जाउं परुं, अपजश बोले लोक तेहथी हुं डरुं ॥ ७ ॥ तेम माहरी कथा फोक ते केम होये वली, जेम एक ढगली देखी कर्या सहुए मली ॥ एक करे तेम सर्व करे लोक एणी परे, परमारथनी बुद्ध कोइ मन नहीं

परे ॥ ८ ॥ मूरख लोक मह्या छे ए सहु सारथी, ताम्र भाजन खोयुं ताम एणी परे हारथी ॥ महाभारतनी वात विस्तारे थायशे, साचुं खोटुं परीक्षा करीने जायशे ॥९॥

श्लोक—गतानुगतिको लोको, न लोकः परमार्थिकः ॥
पश्य लोकस्य मूर्खत्वं, हारितं ताम्रभाजनम् ॥ १ ॥

पवनवेग सुणो मित्र विचार जे एटला, मिथ्या वचन विचार कहुं लहु केटला ॥ जिनशासननो धर्म साकर सम जाणीए, खाइए जे वारे तेह मीठो परमाणीए ॥१०॥ आठ करमना वारक देवता ते खरा, तरण तारण गुरु नाम कहीए जे नरा ॥ केवली भाषित धर्म कहीए ते खरो, अवर मिथ्या भर्म तेहने कां वरो ॥ ११ ॥ सूत्र सिद्धांत ने शास्त्र भाख्यां जे जिन तणां, तेहमां विनय विवेक गहन अर्थ छे घणा ॥ जिनवाणीनी वात साची करी मानीए, तो सरशे तुम काज शिवसुखने जाणीए ॥ ॥ १२ ॥ सांभली पवनवेग कहे पावन थया, द्विज सघला मली ताम कहे संदेह गया ॥ जगमां जोतां जेने धरमनो आधार छे, भूला जे भवि लोक तेहने ए पार छे ॥ १३ ॥ हे भाइ तुम वात हृदये मारे पसी, पाम्यो शुद्ध आचार फिकर नहीं कसी ॥ मनोवेग तुमे भाइ साचा छो सही, एटला दिवस गम मुजने रही नहीं ॥ १४ ॥ ब्राह्मण

घोसे तव वाणी मनोवेग सांभलो, धर्म परीक्षा कीध नथी कांइ आंमलो ॥ पूरण चोथो खंड ढाल अग्यारमी, श्रोता सुघड होये तो दिल तेहने रमी ॥ १५ ॥ हीरविजय सूरिराय तपगछनो धणी, अकबर शाह प्रतिबोधित अमार पमावी घणी ॥ शुभविजय तस शिष्य भावविजय कवि, सिद्धिविजय तस शिष्य वात हुइ तेवी ॥ १६ ॥ रूपविजय रंग खाय कृष्णविजय कहुं, रंगविजयने नित्य हुं प्रणिपति वहुं ॥ नेमविजय कहे एम ढाल अग्यारमी, पूरण चोथो खंड कर्यो ते सहुने गमी ॥ १७ ॥

इति धर्मपरीक्षारासे मिथ्यातपुराणडूपणे मिथ्यामतध्वंसनो नामा चतुर्थोऽधिकारः

खंड ५ मो.

दुहा.

पवनवेग भाइ सांभलो, मनोवेग कहे सार ॥ अवर पुराण वली दाखवुं, जेम लहो विवेक विचार ॥ १ ॥ शुद्धो जिन धर्म कीजीए, नहीं विरुद्ध लगार ॥ मिथ्या मारग परिहरो, जेम तरो संसार ॥ २ ॥ बोध रूप बेहु जणे धर्यां, पहेर्यां रक्त सुवस्त्र ॥ शिर मुंडा झोली घांही छे, कर दंड धरीने शस्त्र ॥ ३ ॥ पाटलीपुर प्रवेश करी, वाद-शालाए गया चंग ॥ भेर घंटारव तव कीयो, बेठा सिंहासन रंग ॥ ४ ॥ नाद सुणी विप्र आवीया, देखी पोह्या ताम ॥ खट् दर्शन विवाद करो, उंचा बेठा अम ठाम ॥ ५ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, विप्र तमो छो सुजाण ॥ वाद शास्त्र जाणुं नहीं, अमे खरे नुं अजाण ॥ ६ ॥ विप्र कहे मूरख सुणो, केम कर्यो घंटानाद ॥ केम सिंहासन चांपीयुं, जो नहीं भण्या विवाद ॥ ७ ॥ कुण गाम ठामथी आवीया, कुण दीक्षा धरी अंग ॥ कपट तजी साचुं कहो, नहींतो लहेशो भंग ॥ ८ ॥ बोध रूपे मनोवेग वदे, सुणो भट्ट भाइ सार ॥ साचुं कहेतां अमे एकला, कुटाइए निराधार ॥ ९ ॥ तुम

तेहने दीयुं ए ॥ जब मन जाणे तेह तणुं, तब लांच आपे ते धन घणुं, एणी परे बुद्धि वधे काम निगमे ए ॥ ४ ॥ लुब्धनी देहे उपन्यो, पाप प्रभावे रोग उपन्यो, औषध अनेक कर्यां तोही नवि टले ए ॥ भूमि घाल्यो लुब्धदत्त जेहवे, आयुकर्म तुछ हतुं तेहवे, आरतध्यान पाम्यो ते तरफडे ए ॥ ५ ॥ पुत्र कहे पिताजी सांभलो, चिंतातुर कांइ टलवलो, दान पुण्य जे कहो ते कीजीए ए ॥ वृद्ध पापी ते कहे ताम, धर्म दान नहीं मुज काम, पुत्र तमे सांभलजो जे हुं कहुं ए ॥६॥ नेम भांग्यो एक मुज तणो, कार्य करो तुमे अति घणो, तो वली प्राण जाये सुख माहरो ए ॥ सकल लोक वंकावीया, तुंगभद्र दंड नहीं फावीया, लांच आपीने एणे हुं वारीयो ए ॥ ७ ॥ लाजे काज एहनो सिद्धो, राजदंड शिरमें नवि कीधो, गो महिषी धण कण एहने जे घणु ए ॥ माहरी बुद्धि हृदडे धरो, ठकनी वात रखे कंइए करो, रोउं तो आण देउं नुं मुज तणी ए ॥ ८ ॥ प्राण गया पछी मुज वली, वस्त्र शृंगार पहेरावो वली, पाछली रात्रि मुज खेड उजो राखजो ए ॥ तुंगभद्र खेत्र सेढे रही, मुज हस्ते काढी ग्रही, गाय भैंस घाली तुमे उंबवी रहो ए ॥ ९ ॥ कणवी आवी मुज खरुयकशे, जीव रहित अंग भूमि पडशे, धूम पाडी तुमे लोक बहु मेलजो ए ॥ मुज तातनो कीधो

त्यारो ए लोक सुणो वात, पोकारी राजा कने दंडावजो ए ॥ १० ॥ मुज हस्ते ल देउं, शिख सघली पाली लेउं, तव पुत्र बोल दीधो पिता करे ए ॥ प्राण गया क्षुब्धदत्तना, नरक द्वारे पहोंच्या तर्तना, शिख सहु करी पुत्रे तुंगभद्र दंडावीयो ए ॥ ११ ॥ पर विघन संतोषीयो, नर होये जो एहवो राशीयो, तो केम विप्र सभामां बोलीए ए ॥ वाडव कहे तुमे सांभलो, अममां एहवो मा बोलो, साचां ते वचन बोलो तुमे आपणां ए ॥ १२ ॥ पांचमा खंड तणी कही, ढाल पहेली ए सही, श्रोता सांभलजो तुमे सहु मली ए ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय ते सद्दहे, निरवहे साचो नर संसारमां ए ॥ १३ ॥

दुहा.

खगपति कहे द्विजवर सुणो, पूरव दिशि सुखखाण ॥ विक्रमपुर सोहामणुं, चतुर नर नारी वखाण ॥ १ ॥ तात मात मुज तिहां वसे, बोध भक्ति करे तेह ॥ बोध पासे अम मूकीया, लेवा विद्यानो छेह ॥ २ ॥ भणुं गणुं शास्त्रज घणां, गुरुनां करुं बहु काम ॥ एक वार गुरु सुगमां, नदीए धोइ सुकाव्यां ताम ॥ ३ ॥

ढाल बीजी.

मारी अरज सुणजो हो, गढरा नायक, विनति अवधारी गुजर पधारजोजी—ए देशी.

पाणी बाहिर नखी भूमि हो, गुण नायक, सुकवीए रतांबर अमे वेहु जणाजी ॥ शियाल वे आव्यां ताम हो, गु० भय उपन्या अमने अति घणाजी ॥ १ ॥ रातां खुगमां खेड दोय हो, गु० नाइ अमे दोय नाला उतावला ॥ पुंठे धायां ते शियाल हो, गु० नव गिरि उपर चड्या अमे वखाजी ॥ २ ॥ बूम पाडी अमे वेहु नाय हो, गु० धाउ लोक अम रक्षा करोजी ॥ डुंगर उचेखी ताम हो, गु० अम वेहु सहित आकाशे धरोजी ॥ ३ ॥ खेड गया शियाल हो, गु० जोजन बार विक्रमपुर थकीजी ॥ मूकी वन मोकार हो, गु० भक्षण लाग्यां शियाल वे थकीजी ॥ ४ ॥ वेहु जंबुक मखी जाम हो, गु० अमने खाशे क्षुधा वश पड्याजी ॥ पारधी आव्या ताम हो, गु० श्वान सहित पापे नड्याजी ॥ ५ ॥ श्वान भयथी तेह हो, गु० नाठां वेहु ते शियालीयांजी ॥ डुंगरथी उतर्यां वेह हो, गु० पारधी पुंठे पाछीयाजी ॥ ६ ॥ भयभीत थया अमे वेह हो, गु० भूमि जोइ तब अति घणीजी ॥

संवत रहित अपार हो, गु० वार नहीं वली केह तणीजी ॥ ७ ॥ वली विचार्युं एम हो, गु० बोध धर्म छे अम तणोजी ॥ लेइए दीक्षा वेह हो, गु० रक्त वस्त्र छे गुरु गुणाजी ॥ ८ ॥ वेहु भाइ चिंतवी एम हो, गु० मस्तक मुंडाव्यां वेहु जणाजी ॥ रातां वस्त्र पहेरेय हो, गु० बोध धर्म मुखे भण्योजी ॥ ९ ॥ काठी कर धरेय हो, गु० घर घर भिक्षा वेहु भमुंजी ॥ पात्र पडे ते लेय हो, गु० सात सात घरी मांहे जमुंजी ॥१०॥ भमतां देश विदेश हो, गु० तुम नगरे आवीयाजी ॥ तव बोल्या द्विजराज हो, गु० असत्य वचन तुमे लावीयाजी ॥ ११ ॥ जे सहु खोटुं संसार हो, गु० तोली करी तुने घड्याजी ॥ तव बोल्यो मनोवेग हो, गु० ए सहु तुम पुराणे जड्याजी ॥ १२ ॥ सांभलजो द्विजराज हो, गु० देखाडुं जेजे जिहां कहुंजी ॥ रामायण पुराण हो, गु० वाल्मिके भाख्युं ते सहुंजी ॥ १३ ॥ एक वार श्रीराम हो, गु० सीताशुं वनवासे गयाजी ॥ खरदूषण मारी जाम हो, गु० लक्ष्मण सहु वन मांही रह्याजी ॥ १४ ॥ सुर्पनखा गइ ताम हो, गु० रावण राजा उपाइउंजी ॥ सीता लेवाने काज हो, गु० धसमस्यो रावण धाइयोजी ॥ १५ ॥ सीता लेइ गयो तेह हो, गु० मोहथी राम दुःखीयो हुवोजी ॥ एहवे

वानर राज हो, गु० सुग्रीवनो विचार सुयोजी ॥ १६ ॥ सुग्रीव तणी जे नार हो, गु० वाली वानर क्षेत्र हारीयोजी ॥ तव श्रीरामे तेह हो, गु० वाली वानर ते मारीयोजी ॥ १७ ॥ सुग्रीव थापीयो राज हो, गु० नारी आवी तारा रंग भरीजी ॥ तव बोल्यो सुग्रीव राय हो, गु० कार्य कहो स्वामि कृपा करीजी ॥ १८ ॥ तुमे परउपकारी हो, गु० कीधो स्वामि मुज अति घणोजी ॥ नेह थकी तुमे देव हो, गु० सेवक हुं तुं स्वामि तुम तणोजी ॥ १९ ॥ राम कहे सुणो मित्र हो, गु० नारी गइ छे मुज तणीजी ॥ तेहनो करो संजाल हो, गु० किहां छे सीता वल्लभ घणीजी ॥ २० ॥ पांचमा खंड तणी ढाल हो, गु० बीजीए कही निरमलीजी ॥ रंगविजयनो शिष्य हो, गु० नेमविजय कहे अति भलीजी ॥ २१ ॥

दुहा सोरठी.

सुग्रीवे तेड्यो ताम, हनुमंत वीर सोहामणो ॥ ते गयो लंकाए सार, शुद्ध करेवा भामणो ॥१॥ मुद्रिका आपी सार, संदेशा कह्या श्रीराम तणा ॥ प्रशंसी सीता नार, कह्यो कुशल छे बेहु जणा ॥ २ ॥ लंका वाली हनुए, शुद्ध आणी सीता तणी ॥ श्रीराम हुयो संतोष, सैन्य चाल्युं लंका भणी ॥३॥ वानर सहु मिलेव, परवत उचेली

आणीया ॥ बांधी समुद्रमां पाज, पाणी उपर तर्या पाहाणीया ॥ ४ ॥ राम लक्ष्मणना सेन, सागर पाजे उतारीया ॥ लंका जइ कीधुं युद्ध, रावण राक्षस मारीया ॥ ५ ॥ सल्य विसल्या काज, ओषधिगिरि उचेली धरीय ॥ आण्यो लंकापुरी मांही, हनुमंत सेन वेगो करीय ॥ ६ ॥ रामायण वाल्मिक रिषि, भाषित ते मांही कह्युं ॥ जो साचुं होय एह, मुज भाख्युं खोटुं केम लह्युं ॥ ७ ॥ तव बोल्या द्विजराज, ए खोटुं केम भाखीए ॥ वली मनोवेग कहे वात, एक वयण तुम दाखीए ॥ ८ ॥ वानर पांचे मिलेव, डुंगर मोटा उचेलीया ॥ लाव्या जोजन लाख, सागर बांध्यो ज्युं भेलीया ॥ ॥ ए ॥ तो लघु डुंगर तेह, शियाल वे केम नवि धरे ॥ वचन सुणी द्विजराज, सत्य सत्य कही गया घरे ॥ १० ॥ वाद जीपी वन मांही, आव्या पूर्वली परे ॥ मनोवेग कहे सुणो भाय, सुग्रीव हनुमंत वानर करे ॥११॥ विद्याधर हुवा राम, रावण राक्षस नवि होये॥ खगपति तणो वंश चंग, पवनवेग तुमे सांभलो ॥ १२ ॥

ढाल त्रीजी.

राम पुरा बजारमां—ए देशी.

कोशल देश अयोध्यापुरी, राज पाले भाजि भर्दित ॥ तोरी सखीवारीरे आदि जिणंदनी॥

ए आंकणी ॥ हाजी मरुदेवी उदरे उपन्या, रिषभदेव प्रथम जिणंद ॥ तो० ॥ १ ॥ ऊगणी लाख पूरव गया पछी, भरतने आप्युं निज राज ॥ तो० ॥ आदि देवे दीक्षा ले अनुसरी, कायोत्सर्ग धरी करे काज ॥ तो० ॥ २ ॥ ध्यान धरे जिन जेहवे, तेहवे आव्या साखा वेह ॥ तो० ॥ नमि विनमी नामे नखा, आदि देव प्रते कहे तेह ॥ तो० ॥ ३ ॥ पुत्र सहुने ऋद्धि आपीया, देश नगर तुमे देव ॥ तो०॥ अमने कांइ नहीं आपीयुं, तुमारी घणी कीधी सेव ॥तो०॥४॥ घणी परे मागे साखा दोय, दृढ सेइ धरी रक्षा थाय ॥ तो० ॥ ध्यान विघन स्वामीने करे, दीन वचने कृपा थाय ॥ तो० ॥ ५ ॥ आसन कंप्युं धरणेंद्रनुं, नागराज आवी करे काज ॥ तो०॥ विद्या आपी वेहुने घणी, रूप धरी जिनराज ॥ तो०॥ ६ ॥ विजयारध सेइ चाखीयो, दक्षिण श्रेण नगर पचास ॥ तो० ॥ पचास कोमी गाम तिहां नखां, नमि थाप्यो चक्रवालपुर वास ॥ तो० ॥ ७ ॥ उत्तर श्रेणि नगर साठ, तेटला क्रोम छे वली गाम ॥ तो० ॥ रथनोपुर स्वामी विनमी करी, नागराज गयो निज ठाम ॥ तो० ॥ ८ ॥ नमिवंशे विद्याधर घणा हुया, चक्रवालपुर तणा ईश ॥ तो० ॥ अनुक्रमे पूर्णमेघ नृप हुवो, दक्षिण श्रेण तणो महीश ॥ तो० ॥ ९ ॥ विनमी अनुक्रमे नृप हुवा, उत्तर श्रेणना राय ॥ तो० ॥ शत-

लोचन खगपति भलो, रथनुपुर सेवे नर पाय ॥ तो० ॥ १० ॥ चक्रवालपुर जइ वीटीयो, शतलोचने तेणी वार ॥ तो० ॥ पूर्णमेघ रणवट करी, हणीयो शतलोचन मार ॥ तो० ॥ ११ ॥ सहस्रलोचन तिहां आवीयो, पिता तणो सांभली मरण ॥ तो० ॥ विषम संग्राम ताम तव तेणे कर्या, पूर्णमेघ गयो जम शरण ॥ तो० ॥ १२ ॥ तेह तणो सुत मेघवाहन, सहस्रलोचन साथे संग्राम ॥ तो० ॥ मेघवाहन नाठो भाजीने, विमाने बेसी निज जाम ॥ तो० ॥ १३ ॥ सहस्रलोचन पुंठे थयो, समोसरण दीठुं मनोहार ॥ तो० ॥ मेघवाहने प्रवेश कर्यो, अजितनाथ वांद्या भवतार ॥ तो० ॥ १४ ॥ पाठलथी शत्रु आवीयो, सहस्रलोचन वली काल ॥ तो० ॥ मानस्थंभ दीठे मानज गल्युं, शांत रूप थइ वांद्या दयाल ॥ तो० ॥ १५ ॥ वयर मूकी दोय जण मल्या, नर कोठे बेठा ठे जाम ॥ तो० ॥ पूर्व भवांतर जिनेश्वर कह्या, सांभली हरखीया ताम ॥ तो० ॥ १६ ॥ पांचमा खंड तणी भली, ढाल त्रीजी कही सुविशाल ॥ तो० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम भणे, नेमविजयने मंगल माल ॥ तो० ॥ १७ ॥

दुहा.

राक्षस इंद्र भीम महाभीम, व्यंतर कोटी सुण तेह ॥ मेघवाहन भवांतर जा-

णीयो, पूर्वे थम पुत्र एह ॥ १ ॥ राक्षसने मेह उपन्यो, राक्षसी विद्या दीध ॥ नव-सर हार आप्यो भलो, नव मुख दीसे मांही सीध ॥ २ ॥ मेघवाहन लंका द्वीप, सातसें जोजन मान ॥ त्रिकुट गढ नव जोजन लगे, बत्रीश जोजन पुर थांन ॥ ३ ॥ तत्र मुगट धजादिक शीरे, राक्षस लांछन सोय ॥ नीम महाजीमे सहु दीयो, मेघ-वाहन लंकापति मोय ॥ ४ ॥

ढाल चोथी.

ए केम विसरेरे मुखडां, वालाजीना जोवा मुखमा ॥ मुखडे मोह्यारे इंदा, वदन कमल जाणे शारद चंदा—ए देशी.

मेघवाहन राणी तनुमती, महा राक्षस सुत हुवो शुभ मति ॥ गुणवंती राणीना पुत्र बेह, भानु राक्षस देव राक्षस तेह ॥ १ ॥ समुद्र मांही द्वीप अनेक, लोक व-साव्या तेणे विवेक ॥ भानु राक्षस देव राक्षस केडे, एकसठ राजा गया छे तेडे ॥ २ ॥ कीर्तिधवल राजानो वंश, लंका राज करे परशंस ॥ लक्ष्मीमती छे राणी तास, सुख भोगवे करेय विलास ॥ ३ ॥ रतनसंचय पुर दक्षिण श्रेण, श्रीकंठ खगपति

राजा आनंद, साखाने आलिंग्या जन वृंद ॥ लक्ष्मीमती मली जाइने, मान सनमान दीधां धाइने ॥ ५ ॥ कीर्तिधवल कहे सांभलो सार, तुज साथे मुज स्नेह अपार ॥ जे जे लक्ष्मी छे अमारे, ते ते श्रीकंठ छे तुमारे ॥ ६ ॥ द्वीप देश पुर पाटण जाणो, जे आपणे छे ते तुमे माणो ॥ जे जोइए ते मागो आज, रत्नद्वीपादिक भोगवो राज ॥ ७ ॥ वानरद्वीप माग्युं अभिराम, श्रीकंठ सालाने आप्युं ताम ॥ वेन वनेवीने मोकलावी, वानरद्वीपे आण पलावी ॥ ८ ॥ कुटुंब सेनादिक परिवार, द्वीपे आणी वास्या नर नार ॥ वानरद्वीप मध्ये छे सार, कीष्कंध पर्वत उंचो अपार ॥ ९ ॥ कंधपुर वास्यो श्रीकंठ, राज्य भोगवे मन उत्कंठ ॥ खगे विद्या वानरी साधी, ते माटे कहेवाय हरिवांधी ॥ १० ॥ वानरद्वीपे घणा वानर, विनोद क्रीडा करे ते फरफर ॥ श्रीकंठ विद्याधर नरवरेश, वानर रमत करे विशेष ॥ ११ ॥ मुगट छत्र धजादिक गेह, सघले वानर लीलीया तेह ॥ वानर कहे लोक अजाण, विद्याधर राजाए सुजाण ॥ १२ ॥ एणी परे मेघवाहन लंकेश, मुगट ध्वज छत्रे राक्षेस ॥ मेघवाहन कुले उपन्या राय, त्रिखंड पति रावण ते थाय ॥ १३ ॥ श्रीकंठ खगेश परंपरा जाण, वाली सुग्रीव पवन्नादिक भाण ॥ नमि विनमी वंशे विख्यात, वानर राक्षस नोहि

वात ॥ १४ ॥ वानर तो तिर्यंचनी जाति, व्यंतर राक्षस होये जाति ॥ पशु व्यंतर केम होय युरू, ए सहु जाणो महा विरुद्ध ॥ १५ ॥ विद्याधर विद्याबल चाले, गिरि उचलतां ततक्षिण काले ॥ कदाचित् होये तो सबली होय, सागर बंधन घटतुं जोय ॥१६॥ मनोवेगे कथा कही साची, पवनवेग मनमां रह्यो राची ॥ जिनवर वचन कयां अंगीकार, मिथ्या वचन कीधां परिहार ॥ १७ ॥ पांचमा खंड तणी ढाल, चोथी कहीए निपट रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम बोले, नेमविजयने नहीं कोइ तोले ॥ १८ ॥

दुहा.

पवनवेग कहे जाइने, रावण केरो वृत्तांत ॥ के मिथ्यातिए थठे, के जिनशासन सांत ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, रावण केरी वात ॥ जेम निश्चय तुमने पडे, भांगे मननी भ्रांत ॥ २ ॥ त्रिकुट गढ लंका तणो, मोटो महीयल मांहीं ॥ रावण राज तिहां भोगवे, हार तणे महीमाहीं ॥ ३ ॥ त्रिखंड राज्य तणो धणी, नव ग्रह बांध्या पाय ॥ वीश भुजा तेणे करी, सुर नर सेवे पाय ॥ ४ ॥ त्रीश सहस वर्षा तणी, आयुस्थिति कहेवाय ॥ नव धनुष काया तणो, मान कह्यो जिनराय ॥ ५ ॥ बत्रीश सहस नारी थठे, पुत्र पुत्री परिवार ॥ जामाताए जस घणा, कहेतां नावे

पार ॥ ६ ॥ लाख चैंतालीश गज तुरी, लाख चैंतालीश रथ ॥ क्रोड अडतालीश पा-
यक जला, आयुध उग्रीश सह ॥ ७ ॥ सोल सहस सामंत छे, क्रोड अडतालीश
गाम ॥ अठार कोणी कटक तणो, राजा रावण नाम ॥ ८ ॥

ढाल पांचमी.

वयरागी थयो–ए देशी.

लंका परिसर एकदारे, मुनिसुव्रत जिनराय ॥ विहार करंता आवीयारे, साधु
तणो समुदायोरे ॥ सुगुण सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ खरदूषण भूपति भलोरे,
रावण पनेथी तेह ॥ चंद्रनखा नारी तणोरे, पति कहेवाये एहोरे ॥ सु० ॥ २ ॥ स-
मोसरण देवे रच्युंरे, आमंत्रे करी सार ॥ त्रगडे बेठा देशनारे, करे भविक जन
निस्तारोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ वनपालक जइ विनवेरे, सांभलो स्वामिरे वात ॥ आज
आव्या छे आपणेरे, त्रिभुवन स्वामी विख्यातोरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ वारु दीध वधा-
मणीरे, थयो मन उछरंग ॥ चतुरंग सेना लेइ करीरे, वाजते ढोल मृदंगोरे ॥ सु०
॥ ५ ॥ बेठा जिन वांदी करीरे, अभिगम सांचवी पांच ॥ देशना सांभली जिन

नणीरे, मूकी मन गख खांचोरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ दीजे अमने सुखासिकारे, स्वामि आपो मेस ॥ अरथ सरे अमने घणोरे, तुमने खान विशेषोरे ॥सु०॥७॥ तब त्रिभुवन स्वामी कहेरे, सांभलो राय सुजाण ॥ जोग करम तुमने घणोरे, केम पालशो पच-खाणोरे ॥ ८ ॥ तब रावण फरी विनवेरे, मुजथी थाये जेह ॥ तेह उपाय कहो हू-वेरे, पामुं निश्चय तेहोरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ वीशमा स्वामी तब कहेरे, तुमथी थाशे जेह ॥ तब नेवे जे शीख ठेरे, तेहनो भांगो एहोरे ॥ सु० ॥ १० ॥ जे स्त्री राजी थइ कहेरे, तेहशुं जोग विलास ॥ राजी विना अकशो मतीरे, एहवो व्रत उल्लासोरे ॥ सु० ॥ ११ ॥ तब व्रत लीधो जिनने मुखेरे, रावण मनने रंग ॥ तब खरदूषण एम कहेरे, व्रत लेवा उछरंगोरे ॥ सु० ॥ १२ ॥ जिननी मूरति नित्य प्रतेरे, पूजीने लेवुं अन्न ॥ न कहे वातण पूजा विनारे, त्रिकरण रामुं मन्नरे ॥ सु० ॥ १३ ॥ व्रत लीधो ये जणे तिहांरे, आव्या आपणे वास ॥ मन शुद्धे पाले तिहांरे, पाम्या हरख उल्लासोरे ॥ सु० ॥ १४ ॥ विद्यानी शक्तिए करीरे, चाले अंबर वेग ॥ तीर्थयात्रा करता फरेरे, सघली जेहनी तेगोरे ॥ सु० ॥ १५ ॥ विहार कर्यो जिनवरे तिहांरे, फ-रता देश विदेश ॥ भविजनने प्रतिबोधवारे, तरण तारण विशेषोरे ॥ १६ ॥ पांचमा

खंड तणी कहीरे, पांचमी ढाल रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमने मंगल माखोरे ॥ सु० ॥ १७ ॥

दुहा.

सवि सामग्री सज करी, रावण राजा जाय ॥ मंदोदरी राणी सहित, अष्टापद तीरथ आय ॥ १ ॥ विद्या तणी शक्ते करी, चढी उंचा ततकाल ॥ प्रणम्या रिषभदेवने, पहेरावी मंगल माल ॥ २ ॥ धूप दीप आरती करी, सवि सजी शणगार ॥ मंदोदरी अधर रही, नाचे देवल मोझार ॥३॥ रावण जंत्री लेइने, गाये वाये गीत ॥ भावे भावे भावना, बत्रीश बहूनां नृत्य ॥ ४ ॥ श्रीमंडलने सज करी, तांत बत्रीशे तार ॥ उद्भट आणी अंगमें, तान मान झणकार ॥ ५ ॥ अढलिक भावे जे भवि, भावे अधिक जे भाव ॥ तेहने सागर संसारनो, उतारे भव नाव ॥६॥ भाव बले करी भावतां, वातां तांतनो तार ॥ तुट्यो तेण समे रावणे, नस काढी तेणी वार ॥ ७ ॥ सांधी तांत तेणे समे, खंकित न कर्यो लगार ॥ नहींतो मंदोदरी नारीनो, मरण होत तेणी वार ॥ ८ ॥ लाभ उपायो अति घणो, लीधो तीर्थंकर पाट ॥ आवती चोवीशीमां होशे, जिनरूपी सम घाट ॥ ९ ॥

ढाल छठी.

द्रौपदीनी वे कर जोडी तामरे चक्र विनवे—ए देशी.

तिहांथी आव्या निज घरेरे, रावणनो परिवार, चंद्रनखा जगनी सही ए ॥ तेहनो पुत्र छे एकरे, विघनपति नामे, नित्य जाये छे वन वही ए ॥१॥ पर विघननी विचारे, साधवाने काजे, वंशजाल गुफा मांही ए ॥ साधे नित्य प्रते तेहरे, एकाकी वन मांहे, नवी देखे कोइ तांहे ए ॥ २ ॥ तेहने भोजन काजरे, माता तेहनी, लइ आवे छे नित्य प्रते ए ॥ एम करतां एक दिनरे, राम ने लक्ष्मण, सीता साथे लेइ छते ए ॥३॥ आव्या छे वनवासरे, तेह निज ठामे, लक्ष्मण चोकी करता फरे ए ॥ चिंतवी मनमां एमरे, दुर्धर कोइक जीव, उपद्रव आवीने करे ए ॥४॥ ते माटे लेइ खड्गरे, वांसनी जालमां, छेदे ते खड्गे करी ए ॥ ते कुंवर विघनपतिरे, बेठो छे ध्याने, घा वाग्ये गयो मरी ए ॥ ५ ॥ दीठो लक्ष्मणे तामरे, उंरतो कर्यो घणो, निमित्त मात्र मिटे नहीं ए ॥ पाछा फरी चली आवेरे, कुंवरनी माता तिहां ॥ भोजन लेइ आवी वही ए ॥६॥ देखी कलेवर तामरे, रुदन करे घणुं, पुत्र कोणे मारो मारीयो ए ॥ शीश कुटे लट तोडेरे, हृदये आस्फाले, नयणे आंसु जारीयो ए ॥ ७ ॥ मनमां चिंतवे एमरे, कोण होशे दु-

श्मन, जइ नीहालुं तेहने ए ॥ आवे पग जोती तामरे, दीठो लखमण, आवीने कहे एहने ए ॥ ८ ॥ देखी लक्ष्मण रूपरे, विकल थइ मने, पुत्र चिंता मटी गइ ए ॥ कहे मुखथी तव बोलरे, अहो अहो सोभागी, हुं तुम पर राजी थइ ए ॥ ए ॥ तुं माहरो भरतारे, माहरे श्रण भवे, एम निश्चय करी जाणजो ए ॥ ताहरी उत्तम प्रजातरे, जो होये तो सही, नाकारो मत आणजो ए ॥ १० ॥ लक्ष्मण कहे तव वातरे, ए काम हुं नवि करुं, परनी स्त्री केम भोगवुं ए ॥ मीठुं पण थयुं एठुंरे, परनुं जे चाख्युं, ते तो हुं नवि जोगवुं ए ॥ ११ ॥ चंद्रनखा कहे वातरे, माहरे में कह्युं, मत उथापे तुं हवे ए ॥ जो सुख वांछे एमरे, तो मन धारजे, कुरु वयण तुं मत लवे ए ॥ १२ ॥ लक्ष्मण कहे हवे एमरे, भगनी माहरी, धर्मनी माता तुं अछे ए ॥ क्रोधातुर थइ एमरे, खबर राखे माहरी, एम कहीने पाछी गछे ए ॥१३॥ तुज सरीखो छे भाइरे, तो चिंता कशी, एम हुं नित्य जाणती हती ए ॥ माहरो विघनपति पुत्ररे, मार्यो लक्ष्मणे, तो हुं नारी अछती छती ए ॥ १४ ॥ वार करो हवे मारीरे, ढील न करो कशी, जे घमी जाये जुग समी ए ॥ सांभली रावण तामरे, दूत एक मोकल्यो, सामंत भेला कर्या भमी ए ॥ १५ ॥ खरदूषण परिवाररे, लश्कर करी भेलो, चल्या कटक गेडी थइ ए ॥ आवी केरा दीधारे,

सायरने काठ, प्रतिमा घरे विसरी गइ ए ॥ १६ ॥ दातण करवा नीसरे, लीधो पच-
खाण, जिनवचन केम भांगीए ए ॥ ठाण वेसु करी नेखोरे, बिंब कीधो नवो, पूजा
करी पगे लागीए ए ॥ १७ ॥ अनुक्रमे दरशन कीधोरे, प्रतिमा कुपक मांही, मूकीने
सहु चालीया ए ॥ घणा काल लगी मांहीरे, अधिष्ठाता तिहां, धरणेंद्र तिहां जा-
लीया ए ॥ १८ ॥ आवी काढ्यो बिंबरे, अंधर अधर राखी, अंतरिक नाम थापीयो
ए ॥ आगे पहनो विस्तारेरे, बहुश्रुत ते जाणे, माहरी मत साख व्यापीयो ए ॥ १९ ॥
पांचमा खंड तणीरे, ढाल छठी ए कही, श्रोता सुगुण जणी गमी ए ॥ रंगविज-
यनो शिष्यरे, नेमविजय कहे, माहरा दिलमां ए रमी ए ॥ २० ॥

दुहा.

लश्कर सहु नेखो मली, आव्या वन वंशजाल ॥ रामचंद्र लक्षण बेने, खबर
थइ ततकाल ॥ १ ॥ लक्षण कहे रामचंद्रने, तुमे सीताने पास ॥ रहेजो सावधान
थइ ॥ २ ॥ जो हुं नाद करुं सिंहनो, तो मुज करजो वार ॥
लक्षण चाल्या फुरवा, लश्कर सन-

शमन, जइ नीहाळुं तेहने ए ॥ आवे पग जोती तामरे, दीठो लखमण, आवीने कहे एहने ए ॥ ८ ॥ देखी लक्ष्मण रूपरे, विकल थइ मने, पुत्र चिंता मटी गइ ए ॥ कहे मुखथी तव वोलरे, अहो अहो सोभागी, हुं तुम पर राजी थइ ए ॥ ए ॥ तुं माहरो भरतारे, माहरे इण भवे, एम निश्चय करी जाणजो ए ॥ ताहरी उत्तम प्रजातरे, जो होये तो सही, नाकारो मत आणजो ए ॥ १० ॥ लक्ष्मण कहे तव वातरे, ए काम हुं नवि करुं, परनी स्त्री केम भोगवुं ए ॥ मीठुं पण थयुं एटुंरे, परनुं जे चाख्युं, ते तो हुं नवि भोगवुं ए ॥ ११ ॥ चंद्रनखा कहे वातरे, माहरे में कह्युं, मत उथापे तुं हवे ए ॥ जो सुख वांछे एमरे, तो मन धारजे, कुरु वयण तुं मत लवे ए ॥ १२ ॥ लक्ष्मण कहे हवे एमरे, भगनी माहरी, धर्मनी माता तुं अछे ए ॥ क्रोधातुर थइ एमरे, खबर राखे माहरी, एम कहीने पाछी गछे ए ॥१३॥ तुज सरीखो छे भाइरे, तो चिंता कशी, एम हुं नित्य जाणती हती ए ॥ माहरो विघनपति पुत्ररे, मार्यो लक्ष्मणे, तो हुं नारी अछती छती ए ॥ १४ ॥ वार करो हवे मारीरे, ढील न करो कशी, जे घडी जाये जुग समी ए ॥ सांभली रावण तामरे, दूत एक मोकल्यो, सामंत भेला कर्या भमी ए ॥ १५ ॥ खरदूषण परिवाररे, लश्कर करी भेलो, चल्या कटक गेडी थइ ए ॥ आवी केरा दीधारे,

सायरने कांठे, प्रतिमा घरे विसरी गइ ए ॥ १६ ॥ दातण करवा नीसर, लाव[illegible]
खाण, जिनवचन केम भांगीए ए ॥ ठाण वेसु करी जेसोरे, बिंब कीधो नवो, पूजा
करी पगे लागीए ए ॥ १७ ॥ अनुक्रमे दरशन कीधोरे, प्रतिमा कुपक मांही, मूकीने
सहु चालीया ए ॥ घणा काल लगी मांहीरे, अधिष्ठाता तिहां, धरणेंद्र तिहां जा-
लीया ए ॥ १८ ॥ आवी काढ्यो बिंबरे, अंबर अधर राखी, अंतरिक नाम थापीयो
ए ॥ आगे एहनो विस्तारेरे, बहुश्रुत ते जाणे, माहरी मत सारु व्यापीयो ए ॥ १९ ॥
पांचमा खंड तणीरे, ढाल छठी ए कही, श्रोता सुगुण तणी गमी ए ॥ रंगविज-
यनो शिष्यरे, नेमविजय कहे, माहरा दिलमां ए रमी ए ॥ २० ॥

दुहा.

लक्ष्मण सहु जेसो मली, आव्या वन वंशजाल ॥ रामचंद्र लक्ष्मण वेने, खबर
थइ ततकाल ॥ १ ॥ लक्ष्मण कहे रामचंद्रने, तुमे सीताने पास ॥ रहेजो सावधान
थइ, हुं जाउं लडवा तास ॥ २ ॥ जो हुं नाद करुं सिंहनो, तो मुज करजो वार ॥
[illegible] ॥ ३ ॥ लक्ष्मण चाल्या कुरुवा, लक्ष्मण सन-

शमन, जइ नीहासुं तेहने ए ॥ आवे पग जोती तामरे, दीठो लखमण, आवीने कहे एहने ए ॥ ८ ॥ देखी लक्ष्मण रूपरे, विकल थइ मने, पुत्र चिंता मटी गइ ए ॥ कहे मुखथी तव बोलरे, अहो अहो सोभागी, हुं तुम पर राजी थइ ए ॥ ए ॥ तुं माहरो भरतारे, माहरे इण भवे, एम निश्चय करी जाणजो ए ॥ ताहरी उत्तम प्रजातरे, जो होये तो सही, नाकारो मत आणजो ए ॥ १० ॥ लक्ष्मण कहे तव वातरे, ए काम हुं नवि करुं, परनी स्त्री केम भोगवुं ए ॥ मीठुं पण थयुं एटुंरे, परनुं जे चाख्युं, ते तो हुं नवि भोगवुं ए ॥ ११ ॥ चंद्रनखा कहे वातरे, माहरे में कह्युं, मत उथापे तुं हवे ए ॥ जो सुख वांछे एमरे, तो मन धारजे, कुम वयण तुं मत लवे ए ॥ १२ ॥ लक्ष्मण कहे हवे एमरे, भगनी माहरी, धर्मनी माता तुं थछे ए ॥ क्रोधातुर थइ एमरे, खबर राखे माहरी, एम कहीने पाछी गछे ए ॥१३॥ तुज सरीखो छे भाइरे, तो चिंता कशी, एम हुं नित्य जाणती हती ए ॥ माहरो विघनपति पुत्ररे, मार्यो लक्ष्मणे, तो हुं नारी थछती छती ए ॥ १४ ॥ वार करो हवे मारीरे, ढील न करो कशी, जे घडी जाये जुग समी ए ॥ सांभली रावण तामरे, दूत एक मोकल्यो, सामंत भेला कर्या भमी ए ॥ १५ ॥ खरदूषण परिवाररे, लश्कर करी भेलो, चढ्या कटक गेडी थइ ए ॥ आवी केरा दीधारे,

ढाल सातमी.

शियालो रे नंदे आवीयो–ए देशी.

सीता सीती एकली, चिंतवे मन मांही रावण विचार के ॥ कोइक बुद्धि हवे केवुं, केम आवे हे माहरे हाथे नार के ॥ सुगुण सोभागी सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अतिशय रूप करी अति भलो, जिहा कारण हे आव्यो ततकाल के ॥ अशोक बगाव्यो आंगणे, सीता आवी हे उभी उजमाल के ॥ सु० ॥ २ ॥ केम स्वामि तुमे आवीया, मन जोगी हे पोते मुज पास के ॥ ताहरे पीयु मने मोकल्यो, तेडवा आव्यो हे तुमने निज वास के ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकर आव्यो छे पणो, कोइ दुश्मन हे तुमने लेइ जाय के ॥ ते माटे उतावलां, तुमे बेसो हे आ विमान मांय के ॥ सु० ॥ ४ ॥ सीताए जाण्युं ए सही, मांहे बेठां हे उपाड्युं विमान के ॥ आगल जातां रामो मिल्यो, विद्याधर हे एकलो तेणे स्थान के ॥ सु० ॥५॥ पूछ्युं रावणने तिहां, कुण नारी हे केएनी कहेवाय के ॥ तब रावण कहे रामनी, सीता नारी हे कहेजे लेइ जाय के ॥ सु० ॥ ६ ॥ ते विद्याधरे रामने, संभलावी हे सीतानी वात के ॥ रामने लक्ष्मण बे मली, दुःख पाम्या हे कहेतां नावे पात के ॥ सु० ॥ ७ ॥ राम रोइ पणुं दुखवशे, मुख

जंपे हे तरुवर जणी एम के ॥ कहो मुजने तुम इहां रह्या, केम मलशे हे सीता मुज जेम के ॥ सु० ॥ ८ ॥ तरुवर वाये मोलतां, राम जाणे हे कहे धुणीने शीश के ॥ अमे न जाणुं किहां गइ, एम धारी हे मुजने करे रीस के ॥ सु० ॥ ९ ॥ तव केकी पंखी प्रते, राम बोले हे तुमे उमो आकाश के ॥ सीता माहरीनी वातमी, पतावो हे हुं आपुं शावाश के ॥ सु० ॥ १० ॥ तव पंखी बोले मुख थकी, क्यां वा क्यां वाहे न जाणुं अमे आप के ॥ राम जाणे ए जे कहे, किम खोवे हे आपनो माप के ॥ सु० ॥ ११ ॥ पशु चोपगने पूछे वली, जातां वलतां हे दीठी सीता नार के ॥ शियाल बोल्यां ततक्षणे, सांभलीने हे रामे कीधो विचार के ॥ सु० ॥ १२ ॥ उंउंउंउं जे मुखथी कहे, लेइ जातां हे न दीठी उण ठाण के ॥ लक्ष्मण राम जणी कहे, जंजालनां हे बोलो मुख वाण के ॥ सु० ॥ १३ ॥ जाइ तुमने केम घटे, स्त्री माटे हे श्यो करो वेखास के ॥ जो विद्यमान वेठा तुमे, काले लावशुं हे राखो विश्वास के ॥ सु० ॥ १४ ॥ रोयां राज न पामीए, राखो धीरज हे आवे आपण लाज के ॥ लाजे काज वगाडीए, जाइ तुमने हे केम घटे आज के ॥ सु० ॥ १५ ॥ धीरा धीरा राउंता, धीरां धीरां हे सर्वे काज होय के ॥ चार पहोरने आंतरे, दूध फीटी

सायर केम उतराय ॥ सात मास ने नव दिने, सायर पाज बंधाय ॥ ६ ॥ सीताने लेइ गयो, रावण लंका मांय ॥ फुलवाडी आवासमां, राखी छे तेणे ठाय ॥ ७ ॥ नित्य आवे सीता प्रते, पूछे वारंवार ॥ पट्टराणी थापुं करी, मान वचन निरधार ॥ ८ ॥

ढाल आठमी.

वेरुले जार घणो छे राज–ए देशी.

जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम छे अंतर जामी ॥ पछो अमारो छोडी दे पापी, कुलमां लागशे खामी ॥ मुजने अरुसो मां जो राज, नाहलीयो डुहवाशे ॥ ए आंकणी ॥१॥ मरु महीधर ठाम तजे जो, पथ्थर पंकज उगे ॥ सायर जो मरजादा मूके, पांगलो अंबर पुगे ॥ मु० ॥ २ ॥ तोपण तुं सांभलरे रावण, निश्चे हुं शील न खंडुं ॥ प्राण अमारा परलोके जाये, तोपण सत न छंडुं ॥ मु० ॥ ३ ॥ हुं धणीयाती पीयु गुणराती, हाथ छे माहरे छाती ॥ रहे अलगो न चडुं तुज वयणे, कां कुल वाये काती ॥ मु० ॥ ४ ॥ कोण मणिधरनी मणि लेवाने, हइडे घाले हाम ॥ सतीय संघाते स्नेह धरीने, कहो कोण साधे काम ॥ मु० ॥५॥ कहो परदारा संग करीने, आखो कोण उगरीयो ॥ उंडुं तुं तो जोय आलोची, सही तुज दहाडो फरीयो ॥ मु० ॥६॥ अग्निकुंडमां निज

तनु दोमे, वाम्युं विष कोण सेवे ॥ जेह अगंजित कुसना जोगी, ते केम फरी विष सेवे ॥मु०
॥७॥ लोक हसे निज गुण सवि नीकसे, विकसे दुरगति वारी ॥ एम जाणीने कहो कोण
सेवे, पाप पंक पर-नारी ॥मु०॥८॥ वलीय विशेषे स्त्रीने संगे, बोध बीज वली जावे ॥
लोको मांही अपजश थावे,तो केम मरण न आवे ॥मु०॥९॥ कोइ मूरख चंदन काजे,
ठारके कोयला आणे ॥ विष दुखादुख पीधा थकी जे, कोण चिरंजीवित माणे ॥ मु०
॥ १० ॥ सीता बोली वचन रसालां, जेम अंकुश शुंडाल ॥ तोपण रावण न मेले चाला, ए-
हनां कर्मनां काला ॥ मु० ॥ ११ ॥ एहवी सीतानी जे वाणी, सांजले नित्य एम जा-
णी ॥ सती जाणीने न कहे ताणी, आणतां शुं तो आणी ॥ मु० ॥१२॥ लीधा मेली
वात थइ ते, अहिए उंदरी पकडी ॥ मेले तो थाय आंखे अंधो, खाये मरे पड्यो
जकडी ॥ मु० ॥ १३ ॥ एणी परे मनमां जाणे रावण, करतां शुं तो कीधी ॥ थानारो
थाशे जे आगल, लेतां शुं जे लीधी ॥ मु० ॥१४॥ पांचमा खंड तणी ए ढाल, आठमी
सही करी जाणो ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पजणे, नेमनी वात वखाणो ॥ मु०॥१५॥

दुहा.

सात मास नव दिन लगे, पूज्या थंभणपास ॥ अधिष्ठाता शेषनागजी, पसाय

कीधो तास ॥ १ ॥ लश्कर पाजे उतर्यो, लंका नेडी लीध ॥ खबर थइ रावण तणी, नगरमां वात प्रसिद्ध ॥ २ ॥ विभीषण भाइने कहे, राम चमू आव्या आज ॥ भाइ करीने थापीए, सरवे सरशे काज ॥ ३ ॥ रावण कहे भाइ सुणो, राम छे दुश्मन जात॥ पनेवी आपणो मारीयो, विघनपति नाम सुजात ॥ ४ ॥ एवो वेरी मेलीए, तो अपजश जग होय ॥ घर आंगण आव्यो थको, जावा दे कहो कोय ॥ ५ ॥ विभीषण कहे रामशुं, भाइजी म करो वेर ॥ वेध पडशे ए वातमां, थाशे ए कामे फेर ॥ ६ ॥ तब रावण कहे भाइने, न गमे तुजने एम ॥ तो तुं राम भेलो जइ, थापे भाइ करी जेम ॥ ७ ॥ विभीषण राम भेलो मल्यो, रावणने चड्यो मान ॥ सेना सरवे सज करी, फेरा दीधा रण थान॥ ८ ॥

ढाल नवमी.

कडखानी देशी.

दस वादस चड्या मेह सम गाजीया, वाजिंत्रनी ध्वंस आकाश वागी ॥ छत्रीश आयुध सज्यां आमुहा सामुहा, फूफनी हुव उमंग लागी ॥ ८० ॥१॥ सिंदूरीया गज दस आगल कर्या, अश्व तणी पाखरे रोख जाकी ॥ नाख घोडा तणी, धसमस पडे

घणी, आवी अड्या घणा शूरमांजी ॥ द० ॥ २ ॥ सिंधूडे राग सरणाइए टहुकीयो,
वंदीए सरस गाया पवाडा ॥ चारणे चरचीया विरुद डुहडाखडा, मेली मेखा कर्या
मख अखाडा ॥द०॥ ३ ॥ शक्ति विद्या तणी अंबर चडी कूकता, रूप करी कारीमा कूक
मांडे ॥ आयुध आकाशमां घन जेम गडगडे,वीज झबका सम ज्योति खांडे ॥द०॥४॥
त्रीठीयो वरठीयो पार निरठीयो, सणण वहे बाण अरि वेग दरवा ॥ चणण गोखी
वहे ढाल तिहां खडखडे, कडकडे तुंड रहमांही फरवा ॥ द० ॥ ५ ॥ गोखीए कंइ
मुआ बाण खाग्यां घणां, केइ पड्या दय गय पय पसारी ॥ आरडे केइ आकुल व्याकुल
थका, जाणे वणजारनी पोठ उतारी ॥ द० ॥ ६ ॥ जम लोहा थकी जे नर नागीया,
खडथडता धड उठे वली पडम ॥ शूर कूके तिहां कायर कंपे घणा, थरथरे काय मुख
तृण लीधां जेम ॥ द० ॥७॥ केइ रथ चूरीया नाखशुं कूरीया, केइ उडी गया छत्रधारी
॥ केइ सुखासन मांहे बेठा थका, अकाल मरणे गया वणुंज हारी ॥ द० ॥ ८ ॥ दश
मस्तकी तणी तत्र आवी बनी, वासुदेव उपरे चक्र फेर्यो ॥ त्रेसठ शलाखा पुरुष ते
उपरे, सहस पचवीश ते देवे घर्यो ॥ द० ॥ ९ ॥ अवरना मारीया केम मरे एहवा,
तेहवे चक्र पाछो चलायो ॥ लक्ष्मणे रावण मारवा कारणे, शीश दश छेदी धराशुं

जलायो ॥ द० ॥ १० ॥ तेहवे तिहां हाहाकार वरत्यो घणो, रामनी जीत जगति प्रसिद्धी ॥ लक्ष्मण विभीषण वेहु भेला मेली, नगरी लंका ततकाल लीधी ॥ द० ॥ ॥ ११ ॥ पाट थाप्यो विभीषणने वक्षीसमां, त्रिकूट गढमे आण फेरी ॥ तेहवे राम ने लक्ष्मण वेहु जणे, तेमावी नारी सीताजी आप केरी ॥ द० ॥ १२ ॥ दंपती वेहु मल्यां हर्षमां सहु भल्या, विभीषणे तिहां वहु भक्ति कीधी ॥ घणा दिवस रही रिद्ध समृद्धि लही, शीख दीधी वल्या पाछ सिसि ॥ द०॥ १३॥ अनुक्रमे आवीया अंजणपासे देवले, मास चोमास रह्या तेह गामे॥ पूजा प्रभावना मोछव कीधा घणा, थापना कीधी अंजणोपास नामे ॥ द० ॥ १४ ॥ पांचमा खंड तणी ढाल नवमी भली, रंगविजय गणि शिष्य भाखी ॥ नेमविजय कहे श्रोता सहु सांभलो, रावण रायनी वात आखी ॥ द० ॥ १५ ॥

दुहा.

अनुक्रमे सीता नारीने, स्वकीय उदर मांय॥ गर्भ वाधे दिन दिन भलो, हृदे हरख न माय ॥ १ ॥ एक दिन लक्ष्मण सीता वंने, सूतां छे वे जण पास ॥ लक्ष्मणने माता समी, सीता नारी तास ॥ २ ॥ निद्रावश सूतां थकां, वस्त्र रहित थयां वेह ॥

दीगां रामचंद्र तिहां, शंका उपनी तेह ॥ ३ ॥ लक्ष्मण सरिखो भाइ मुज, मारवो न घटे मुज ॥ सीताने हुं जाणतो, सीतानां लक्षण युक्त ॥ ४ ॥ ए तो वगडी ते सही, मार्यें अपजश थाय ॥ तो केम हुं हवे करूं, काढी मेलुं वन मांय ॥ ५ ॥ लक्ष्मणने वातो कही, एहने मेलो वनवास ॥ तब लक्ष्मण बोल्या तिहां, भाइ तुमने श्यावास ॥ ६ ॥ कष्ट उपजावी लावीया, सीता सुलक्षणी नार ॥ एहने वनवासे मेलतां, लाज जाये संसार ॥ ७ ॥ रामचंद्र माने नहीं, मनमां पडी बहु भ्रांत ॥ साचे साचुं चालशे, कर्म न जाणे नानि जात ॥ ८ ॥

ढाल दशमी.

निद्रमी वेरण हुइ रही—ए देशी.

रामे मेली सीता वनवासमां, तिहांथी आवी हो तापसने आवास के ॥ गिरि कंदर गुफा जिहां, तापसनां हो आश्रम निवास के ॥ सुगुण सोभागी सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अंतराय कर्मना योगथी, आवी लाग्यां हो कर्मनां फल एह के ॥ राम गया घर आपणे, सीता नारी हो विसारी मेली तेह के ॥ सु० ॥ २ ॥ अनुक्रमे मास पूरण थया, दोय कुमर हो जनम्या श्रीकार के ॥ लव ने कुश नाम थापीयां,

भलायो ॥ द० ॥ १० ॥ तेहवे तिहां हाहाकार वरत्यो घणो, रामनी जीत जगति प्रसिद्धी ॥ लक्ष्मण विभीषण बेहु भेला मेली, नगरी लंका ततकाल लीधी ॥ द० ॥ ॥ ११ ॥ पाट थाप्यो विभीषणने वक्षीसमां, त्रिकूट गढमे आण फेरी ॥ तेहवे राम ने लक्ष्मण बेहु जणे, तेमावी नारी सीताजी आप केरी ॥ द० ॥ १२ ॥ दंपती बेहु मल्यां हर्षमां सहु भल्या, विभीषणे तिहां बहु भक्ति कीधी ॥ घणा दिवस रही रिद्ध समृद्धि लही, शीख दीधी वल्या पाछ सिसि ॥ द०॥ १३॥ अनुक्रमे आवीया थंभणपासे देवले, मास चोमास रह्या तेह गामे॥ पूजा प्रभावना मोछव कीधा घणा, थापना कीधी थंभणोपास नामे ॥ द० ॥ १४ ॥ पांचमा खंड तणी ढाल नवमी भली, रंगविजय गणि शिष्य भाखी ॥ नेमविजय कहे श्रोता सहु सांभलो, रावण रायनी वात आखी ॥ द० ॥ १५ ॥

दुहा.

अनुक्रमे सीता नारीने, स्वकीय उदर मांय॥ गर्भ वाधे दिन दिन भलो, हृदडे हरख न माय ॥ १ ॥ एक दिन लक्ष्मण सीता वंने, सूतां छे वे जण पास ॥ लक्ष्मणने माता समी, सीता नारी तास ॥ २ ॥ निद्रावश सूतां थकां, वस्त्र रहित थयां बेह ॥

दीगां रामचंद्र तिहां, शंका उपनी तेह ॥ ३ ॥ लक्ष्मण सरिखो भाइ मुज, मारयो न घटे मुज ॥ सीताने हुं जाणतो, सीतानां लक्षण गुक्त ॥ ४ ॥ ए तो वगडी छे सही, मायें अपजश थाय ॥ तो केम हुं हवे करुं, काढी मेलुं वन मांय ॥ ५ ॥ लक्ष्मणने वातो कही, एहने मेलो वनवास ॥ तव लक्ष्मण बोल्या तिहां, भाइ तुमने श्यावास ॥ ६ ॥ कष्ट उपजावी लावीया, सीता सुलक्षणी नार ॥ एहने वनवासे मेलतां, लाज जाये संसार ॥ ७ ॥ रामचंद्र माने नहीं, मनमां पडी बहु भ्रांत ॥ साचे साचुं चालशे, कर्म न जाणे नाति जात ॥ ८ ॥

ढाल दशमी.

निद्रडी वेरण हुइ रही—ए देशी.

रामे मेली सीता वनवासमां, तिहांथी आवी हो तापसने आवास के ॥ गिरि कंदर गुफा जिहां, तापसनां हो आश्रम निवास के ॥ सुगुण सोभागी सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अंतराय कर्मना योगथी, आवी लाग्यां हो कर्मनां फल एह के ॥ राम गया घर आपणे, सीता नारी हो विसारी मेली तेह के ॥ सु० ॥ २ ॥ अनुक्रमे मास पूरण थया, दोय कुमर हो जनम्या श्रीकार के ॥ लव ने कुश नाम थापीयां,

सेवा चाकरी हो करे तापस नार के ॥ सु० ॥ ३ ॥ विषविषमां करे आवीने, पुण्य
योगे हो सर्व विधि व्यवहार के ॥ अनुक्रमे कुंवर मोटा थया, जर जोवन हो पाम्या
तेणी वार के ॥ सु० ॥४॥ करम जोगे आवी मल्यो, सरकर नेखो हो कीधो अपार के॥
वनिता नगरी उपरे, चढी आव्या हो समजाने तेणी वार के ॥ सु०॥५॥ कोइ विद्या-
धर आवी विनवे, तुम जनक हो रामचंदर राय के ॥ ते साथे तुम समतां थका,
जगमां अपजश हो तुमने पणो थाय के ॥ सु० ॥६॥ वली विद्याधर जइ कहे, राम
आगल हो विनवे महाराज के ॥ ए कुंवर दोय तुम तणा, तेहने तेडी हो मनावो
आज के ॥ सु० ॥ ७ ॥ तब राम ने लक्ष्मण बे मली, दोय कुमर हो तेडाव्या तेणी
वार के ॥ साजन सहु आवी मल्या, अंग उछट हो उपन्यो अपार के ॥ सु० ॥ ८ ॥
सीता तेडावी तत्क्षणे, शंका टाली हो मननी ततकाल के ॥ उजम अंगमें अति
घणा, सुख विलसे हो दंपती उजमाल के ॥ सु० ॥ ९ ॥ सीतानी शोक ते एम
कहे, राम आगल हो कुड कपटनी वात के ॥ सीता नारी जे तुम तणी, रावणे
राखी हो संपट कुजात के ॥ सु० ॥ १० ॥ वगडी नारी जे तेहने, केम राखवी हो
घरे पर मांय के ॥ निंदा थाय छे नातिमां, काढी मेखो हो बीजे कोय राय के ॥

सु० ॥ ११ ॥ तब राम मनमां चिंतवे, शोकनो संबंध हो लागे मनमा खार के ॥ ते
माटे सहु एम कहे, मुज न घटे हो काढवी घर बार के ॥ सु० ॥ १२ ॥ एक दिन वस्त्र
ते धोयवा, धोबीने दीधां हो रामचंद्र तेणी वार के ॥ राते पखाळी मूकीयां, प्रभात
उठी हो जगाडे नार के ॥ सु० ॥१३॥ उठरे रांड तुं सुइ रही, राजा करशे हो आप-
णने रीस के ॥ वेहेलां वस्त्र जो आपीए, तो नृपति हो आपे आशीष के ॥ सु०
॥ १४ ॥ तब धोबण मुखथी कहे, उं मूरख हो शुं खब करे आज के ॥ तुं ने राजा वे
जण मली, जाउं उंचा हो ज्यां छे जमराज के ॥ सु० ॥१५॥ राजानो सेवक एक जणो,
सूची आवा हो बेठो तेणे ठाम के॥ सांभळे धोबीनी वातमी, कहे नारीने हो तुं सांभळ
आम के ॥ सु० ॥ १६ ॥ ताहरा नाक कान वाढुं हुं तो, राजाने घरे हो एहवा आये
चयन के ॥ रावणे बार वरस लगे, सीता राखी हो कीधां मोटां फयन के॥ सु० ॥ १७ ॥
ते वगडी घर मांय छे, हुं तो नवि राखुं हो एहवी जे नार के ॥ ते सेवके वात सां-
भली, राय पासे हो विनवे तेणी वार के ॥ सु० ॥ १८ ॥ रामचंद्र मन चिंतवे, नारी
माथे हो कलंक चढ्यो जेह के ॥ सीता सती माहरी खरी, पण एहनो हो उतारुं एह

के ॥ सु० ॥ १९ ॥ पांचमा खंड तणी कही, ढाल दशमी दो सुणजो नर नारी के ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय दो नित्य नित्य जयकारी के ॥ सु० ॥२०॥

दूहा.

रामचंद्र सीता प्रते, कहे एक दिन वात ॥ निंदा करे छे लोक सहु, कलंक चढावे नात ॥ १ ॥ तेहनो साच करो तुमे, पावकमां थो पग ॥ निंदा न थाये नातमां, वातो आवे पग ॥ २ ॥ सीता कहे साचुं कर्युं, लोकापवाद न जाय ॥ साहेब करशे ते सही, धानारो ते घाय ॥ ३ ॥ अणमें दाध खाइ खणी, जयों खेर अंगार ॥ राउ राणा नेगा मळ्या, आव्या जोवा नर नार ॥ ४ ॥ नाइ धोइ सीता सती, पहेरी उत्तम चीर ॥ समरण करी साहेब तणो, संभार्यो इष्ट वीर ॥ ५ ॥ पावक मांही प्रवेश कर्यो, अगन फीटी थयो नीर ॥ अचरिज पाम्यां आदमी, धन धन एहनी धीर ॥ ६ ॥ धन धन एहना शीलने, धन धन एहनी जाति ॥ धन एहना मावित्रने, धन कुंवरी सुजाति ॥ ७ ॥ पावक मांहींथी नीकली, प्रगटी अगननी झाळ ॥ सती सती मुख सहु कहे, देव थयो नभकाळ ॥ ८ ॥ पुष्पवृष्टि थइ नभा, जयजयकारनी वाण ॥ चरम शरीरी ते अछे, मुक्तिरूप निरवाण ॥ ९ ॥

मयणरे हा सती—ए देशी.

उछरंग सीता जणीरे हां, रामचंद रंग लाय ॥ सुगुणा सांभलो ॥ पाछा हाथी शणगारीया रे हां, गीत गान गवराय ॥ सु० ॥ १ ॥ सुखासने बेसामीनेरे हां, आव्या निज पर मांय ॥ सु० ॥ शोक सरवे रीते पखीरे हां, नीचुं मुख करी जाय ॥ सु० ॥ २ ॥ तेणे अवसर सीता सतीरे हां, विनवे निज पति पास ॥ सु० ॥ जो आज्ञा आपो तुमेरे हां, दीक्षा हरख उल्लास ॥ सु० ॥ ३ ॥ रामचंद्र सीता जणीरे हां, कहे वचन अमोख ॥ सु० ॥ न घटे एवुं बोलवारे हां, राखो मोटो तोख ॥ सु० ॥ ४ ॥ स्वामि कर्म घणां अछेरे हां, ते क्षय करवा काज ॥ सु० ॥ तप जप करुं एक ध्यानथीरे हां, आज्ञा आपो आज ॥ सु० ॥ ५ ॥ आज्ञा लीधी निज पतिरे हां, सद्गुरु लीधी शीख ॥ सु० ॥ साधुना संजोगथीरे हां, उछरंगे लीधी दीख ॥ सु० ॥ ६ ॥ विहार करां अन्य देशमांरे हां, पाले चारित्र पांच ॥ सु० ॥ पांच महाव्रत पालवांरे हां, पांच सुमतिना संच ॥ सु० ॥ ७ ॥ त्रण गुपतिने गोपवीरे हां, चार कषायने वार ॥ सु० ॥ राग द्वेषने टालीनेरे हां, छतायां कर्मनो भार ॥ सु० ॥ ८ ॥ आयुस्थिति पूरी करीरे हां, मास

ए ॥ रामचंद्र पण भावथीरे हां, पोहोता सिद्धने ठाम ॥ सु० ॥ लक्ष्मणनो जीव नारकीरे हां, कर्म तणां एह काम ॥ सु० ॥ १० ॥ लव ने कुश राज थापीयारे हां, सुख विलसे संसार ॥ सु० ॥ ए अधिकार एम जाणजोरे हां, सूत्र थकी निरधार ॥ सु० ॥ ११ ॥ बहु श्रुत होशे ते जाणशेरे हां, निर्बुद्धि शुं जाणे लोक ॥ सु० ॥ शास्त्र प्रमाणे कथा कहीरे हां, वांची जोजो थोक ॥ सु० ॥ १२ ॥ हीरविजय सूरिसरुरे हां, शुभविजय तस शिष्य ॥ सु० ॥ भावविजय भगते करीरे हां, सिद्धि नमुं निश दिस ॥ सु० ॥ १३ ॥ रूपविजय रंगे करीरे हां, कृष्णविजय कर जोड ॥ सु० ॥ रंगविजयना रूपनेरे हां, नावे अवर कोइ होड ॥ सु० ॥ १४ ॥ पांचमो खंड पूरो थयोरे हां, ढाल अग्यारे रसाल ॥ सु० ॥ नेमविजयने नित्य प्रतेरे हां, होजो मंगल माल ॥ सु० ॥ १५ ॥

इति श्रीमिथ्यात्वखंडन, रावणोत्पत्ति, सीताहरण, रामचंद्रमिलण, धर्मपरीक्षारासे पांचमो खंड संपूर्ण.

खंड ६ ठो.

खंड ६ ठो.

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग सुजाण ॥ छठो अधिकार दाखवुं, मिथ्यामत अवर पुराण ॥ १ ॥

ढाल पहेली.

जाटणनी देशी.

विद्याधर कुंवर बेहु जणे, कीधां जोगीनां रूप ॥ पाटलीपुर मांहे सांचर्या, लोक जोवे अकल सरूप ॥ १ ॥ जाइ तुमे जोजो मिथ्यात वातडी ॥ ए आंकणी ॥ ब्रह्मशालाए बेहु जण आवीया, कीधो भेरी घंटानाद ॥ कनक सिंहासन आरोहीयुं, द्विज आव्या करवा वाद ॥ जा० ॥ २ ॥ जोगी सिंहासन देखीने, विप्र कहे सुणो तमे वात ॥ वाद जीती बेसो आसने, नहींतो थाशे तुम तणो घात ॥ जा० ॥ ३ ॥ मनोवेग तिहां बोलीयो, नहीं गमे जो तुमने एम ॥ तो अमे उतरी देगा बेसशुं, सहु सुख पामो द्विज तेम ॥ जा० ॥ ४ ॥ जद बोले सुणजो जाइ तुमे, कोण वाद

करशो सुजाण ॥ शेव सांख्य बोध जनना, ज जाणो ते बोलो वाण ॥ जा० ॥ ५ ॥ कोण देश कोण तुम गाम छे, कोण जातिना कोण गोर ॥ कोण कारण इहां आवीया, सत्य कहो मांमीने धूर ॥ जा० ॥ ६ ॥ जोगी रूपे खगपति ते भणे, सांभलो द्विजवर तुमे सार ॥ वाद विवाद अमे जाणुं नहीं , केवा कहीए शास्त्र प्रकार ॥ जा० ॥ ७ ॥ आपणपो वेष अमे धर्यो, गुरु नवि दीठो कोय जोय ॥ गाम ठाम कुल जाति हुं कहुं, सुणजो द्विजवर वातो सोय ॥ जा० ॥ ८ ॥ छठा खंड तणी ए में कही, पहेली ढाल ए सोय ॥ रंगविजयनो शिष्य ते एम कहे, नेमनी आशा पूरण होय ॥ जा० ॥ ९ ॥

ढाल बीजी.

आ चित्रशाली आ सुख सज्यांरे—ए देशी.

गुर्जर देश वंशवाडे सुणो गामरे, भरवाड वासो वसे अभिरामरे ॥ अम तणो पिता मांरुण भरवाडरे, ठाठां ठाली गाडर बहु धाडरे ॥ १ ॥ ठाठां गाडरनो घणो डुकाणोरे, सकल कुटुंब सुखीयो तुमे जाणोरे ॥ अमो गाडर रक्षक गोवालरे, गाडर सहु राखुं वनमालरे ॥ २ ॥ एक दिवस पिता मांदो पडीयोरे, पुत्र सांभलो अमने ज्वर

चडीयोरे ॥ वाखां गाडर [illegible] तुमे जाउरे, सुखे करो घर निरवाउरे
॥ ३ ॥ मांरुण घरडे एम शीख दीधीरे, तात आज्ञा अमे मस्तक कीधीरे ॥
गामर रहण गया अमे वेयरे, वनो जाइ हुं लघु जाइ एहरे ॥ ४ ॥ वन मांहीं गामर
रामुं तुं जेहरे, वनकीना करीए वली जाइ वेहरे ॥ कोल वृक्ष दीठो तिहां सारे, पा-
कां कोल दीठां अपारे ॥ ५ ॥ लघु जाइने कशुं में तामरे, गामर मंढां राखो तुमे जा-
मरे ॥ कोल तणां फल खाउं एहरे, तिहां लगे राखो वाखां तेहरे ॥ ६ ॥
फलीत फल खाउं घणां तुमनेरे, क्षुधा तणी वेदन जाये अमनेरे ॥ गामर वन जणी
हांकी जाएरे, तेम चारे जेम मुखीयां थायरे ॥ ७ ॥ मढां वाखां चारी लावजे इहांरे,
पछे आपण वे मलशुं तिहांरे ॥ गामर हांकी चाल्यो वन मांहींरे, कोल खावाने रह्यो
हुं त्यांहिंरे ॥ ८ ॥ कोल वृक्ष दीठो उत्तंगरे, चढवा शक्ति नहीं मुज अंगरे ॥ विचार्यो
में वृक्ष घणो उंचोरे, चढाय नहीं हुं तुं नीचोरे ॥ ९ ॥ कटी मांहींथी कातुं काढीरे,
मस्तक निज हाथेशुं वाढीरे ॥ उंचुं ठेलीने मूक्युं हाथेरे, चडी वेतुं कोला तणे माथेरे
॥१०॥ वांते प्रेमी खाधां घणां कोलरे, मुख भरायुं नवि आवे वेगरे ॥ जेम जेम माथे
खाधुं कोल ठेगरे, तेम तेम पेट भरायुं देगरे ॥ ११ ॥ तृप्ति पाम्यां मुज मस्तक देहरे,

रे॥ त्रिभुवन वली वीनति करीरे, उभारे रावणरे ॥ द० ॥ आराधीएरे, तो आपे त्रिभुवन राजरे ॥ एम मनमां विचारीने गयोरे, हर प्रासादे करवा काजरे ॥ द० ॥ ३ ॥ एक दिन ईश्वरनी पूजा करीरे, आराधे अतिही चंगरे ॥ नव मस्तक हस्ते छेदी करीरे, पूज्युं ईश्वरनुं लिंगरे ॥ द० ॥ ४ ॥ एक मस्तक राख्युं धड उपरेरे, नवि कीधी एह तणी पूजरे ॥ ईश्वर तो मुजने त्रसे नहींरे, केशुं करुंरे अबुजरे ॥ द० ॥५॥ नव शिरकमले शंकर अरचीयारे, लोचनकमल अढाररे ॥ ईश्वरे वरदान नहीं आपीयोरे, कशो वली करुं हुं विचाररे ॥ द० ॥ ६ ॥ रावणे निज वांहीं सघला छेदीयारे, नस काढी वली देहरे ॥ रावणहथो वांधी तेणे कीयोरे, नसा जाली गुंथी तेहरे ॥ द० ॥७॥ सा री ग म प ध नी सरस जलीरे, तान मान ध्यान उल्लासरे ॥ गीत गान गाये अति घणुं रे, छ राग छत्रीशे जासरे ॥ द० ॥ ८ ॥ तांडव नाटिक नृत्य करे वलीरे, गीत तणो उछले घोपरे ॥ ईश्वर तव मनमां उलस्यारे, पाम्या अतिही संतोपरे ॥ द० ॥ ए ॥ चौद चोकडी राज भोगवोरे, मस्तक मखजो छामरे ॥ रामायण वाल्मिके एम बोलीयुंरे, अन्य पुराणे वली तामरे ॥ द० ॥ १० ॥ विप्र वचन वलतुं बोलीयारे, सांभल भाइ अम तणी वाचरे ॥ पुराण प्रसिद्ध रावण तणीरे, कथा कही ते साचरे

॥ द० ॥ ११ ॥ नव मस्तक छेदी हस्ते करीरे, पुज्युं ईश्वर तणुं लिंगरे ॥ चाद चो-
कमी राज्य आप्युं खरुं रे, माथां वलग्यां तेह तणां अंगरे ॥ द० ॥ १२ ॥ रावणहथो रा-
जाए करीरे, गीत गान नृत्य कीधरे ॥ दूर तुष्या ते अमे सुण्युं वणुंरे, पुराण मांही
छे प्रसिद्धरे ॥ द० ॥ १३ ॥ मनोवेग तव एवुं बोलीयोरे, सांभलो द्विजवर एहरे ॥
नव शिर चोट्यां जो रावण तणांरे, तो एक शिर लाग्यो भुज देहरे ॥ द० ॥ १४ ॥
मनोवेग वली एम बोलीयोरे, सांभलो विप्र विचाररे ॥ तापस सघले ईश्वर आपी-
योरे, लिंग पड्युं तेहज साररे ॥ द० ॥ १५ ॥ ईश्वरे वलता ऋषिवर आपीयारे, तापस
लिंग पड्यां साररे ॥ पर मरणादिक दुःख टालीएरे, आपण सहीए अपाररे ॥ द०
॥ १६ ॥ अपर कथा पुराणनी सांभलोरे, विप्र करोरे विचाररे ॥ मस्तक मात्रज जे
वली उपन्योरे, दधिमुख नामे कुमाररे ॥ द० ॥ १७ ॥ छठा खंड तणी ढाल त्रीजी-
एरे, वात कही सुविचाररे ॥ आगल सहुको साजन सांभलोरे, नेमविजय कहे वि-
स्ताररे ॥ द० ॥ १८ ॥

दुहा.

श्रीकंठ नगर सोहामणुं, विप्र वसे तिहां एक ॥ तेहनी ब्राह्मणी रुयमी, दधिमुख

जणे, नगर प्रसिद्ध कुमार ॥ २ ॥ पुण्य दान दिन दिन करे, पिता तणे घर रहे रंग ॥ अगस्त्य ऋषि तव आवीयो, दधिमुख मंदिर चंग ॥ ३ ॥ मान सनमान दीधां घणां, अभ्यादे करीय प्रणाम ॥ पवित्र मंदिर आज अम तणो, बोले दधिमुख जाम ॥ ४ ॥ विनय करी कहे पग धुउं, भोजन करो ऋषिराय ॥ जनम सफल होये अम तणो, तुम दरशने सुख थाय ॥ ५ ॥

ढाल चोथी.

आज हजारी ढोलो प्राहुणो—ए देशी.

अगस्त्य ऋषि बोल्या एशुं, सांभलो दधिमुख तुमे वाण ॥ साजन मारा हे ॥ विनय विवेकी तुज समो, नहीं दीठो कोइ सुजाण ॥ साजन मारा हे ॥ श्रोता सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दधिमुख तुं छे कुंवारडो, नारी परण्यो नहीं सार ॥ सा० ॥ कुंवाराने घेर जमवो नहीं घटे, अघटतो दीसे आचार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ २ ॥ दान देवा नर योग्य ते, जेहने घरे नारी होय ॥ सा० ॥ स्त्री विना दान पुण्य नहीं, स्मृति श्लोक पहवो जोय ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ३ ॥

श्लोकः—दानयोग्यो गृहस्थश्च, कुमारो न क्षमो भवेत् ॥
दानधर्मक्षमः साधु– र्गृहीणी गृहमुच्यते ॥ १ ॥

एम कहीने अगस्ति गया, दधिमुख तव निज गेह ॥ सा० ॥ आदर कर्यो विवाह तणो, मात तात परणावे वेह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ४ ॥ पिता कहे पुत्र तुमे सुणो, कन्या नवि दीए विप्र कोय ॥ सा० ॥ परण्या विना भोजन तणो, दधिमुख निम लीधो सोय ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ५ ॥ मातपिता शोक उपन्यो, तेह नगरे विप्रज एक ॥ सा० ॥ दुर्बलने धन आप्युं घणुं, तेहनी पुत्री परणी विवेक ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ६ ॥ विवाह करी घरे आवीया, घरे द्रव्य नहीरे लगार ॥ सा० ॥ चार माणस घर खरच घणो, पिता तव कहे तेणी वार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ७ ॥ दधिमुख सुत तमे सांभलो, वित्त खरच्युं अमे विवाह ॥ सा० ॥ अमे उद्यम हवे नहीं थाये, तुमे करो खर्च निर्वाह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ८ ॥ दधिमुख कहे कामनी सुणो, मातपितानो अपमान ॥ सा० ॥ घर रहेवा घटतुं नथी, जो होय हइडामां सान ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ९ ॥ दधिमुख शिर सीके धर्युं, तेह नारी लेइ चाली ताम ॥ सा० ॥ देश नगर गामे सांचरे, पतिव्रता नारीनो नाम ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १० ॥ भरतार भगति घणी करे, सती

जाणीने सहु लोक ॥ सा० ॥ धण कण दान दीये घणुं, सुख पाम्यां दोये गयो शोक ॥ सा० ॥ धो० ॥ ११ ॥ भमतां भमतां उजेणी गया, छूतनी शाखा मोझार ॥ सा० ॥ जुआरी पणा जुवटे रमे, तिहां खावी तेह भरतार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १२ ॥ सीकुं खुंटे बांधीने गइ, सती हाट शेरी जिहा काज ॥ सा० ॥ एहवे जुआरीने कुक हुवो, खडे हण्यो छूतराज ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १३ ॥ शिर तुटी भूमिए पड्युं, सीकुं छेदाणुं वली ताम ॥ सा० ॥ दधिमुख पुण्य प्रगट थयुं, मस्तक लाग्युं धड ठाम ॥ सा० ॥ धो० ॥ १४ ॥ अन्य कबंध शिरपर तणुं, दधिमुख निपन्यो एह ॥ सा० ॥ विप्र कहो केम नवि मिले, भुज शिर भुज तणो देह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १५ ॥ छठा खंडनी ढाल बोधीए, विवेक तणी कही वात ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजयने सुख सात ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १६ ॥

दूहा.

ब्राह्मण कहे जोगी सुणो, सत्य वचन तुम एह ॥ स्मृति पुराणे अमे सांभल्युं, खोटुं कहीए केम तेह ॥ १ ॥ खग कहे अपर वली सुणो, रावण लाव्यो हरी सीत ॥ हनुमंत अंगद मोकल्यो, गमे विरटाणी प्रीत ॥ २ ॥ वाली पुत्र अंगद जणो, बोल्यो

मोटा बोल ॥ रावणे रीसे मारीयो, खड्गे कीधो बे तोल ॥ ३ ॥ अंगद फाडी दोय फाडीयां, हनुमंते लीधां बेह ॥ वनमां आणी सांधीयां, लाग्यो तेहनो देह ॥ ४ ॥ पुनरपि ते वली जीवीयो, अंगद अपूरव जेह ॥ माहरुं मस्तक मुज धड चड्युं, केम न मले मुज तेह ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी.

चोपाइनी देशी.

अपर कथा ब्राह्मण तुमे सुणो, संबंध कहुं पुराण तुम तणो ॥ दानवपति ते दशरथ नाम, बे नारी तेहने अजिराम ॥ १ ॥ पुत्र पाखे ते दुःखीयां थया, ईश्वर जणी ते त्रणे गयां ॥ महादेवनी मांगी भक्ति, आराधे पूजे बहु जुक्ति ॥ २ ॥ महादेव तव तुष्या तेह, पुत्र होशे तुमारे देह ॥ मुज लाडु चमीयो छे एक, भक्षण भामनी करो विवेक ॥ ३ ॥ में वरदान दीधो छे आज, पुत्र होशे तुमारे काज ॥ घर निज लइ गया लाडु तेह, बे फाडी कीधो वली एह ॥ ४ ॥ भामनी बेहुने बेंची दीध, भार्याए ते भक्षण कीध ॥ गर्भ रह्या बेहुने वली ताम, नव मास वाडा गया ते जाम ॥ ५ ॥ एके दिवसे ते बेहु जण्या, अरधो अरध अंग तेहज भण्यां ॥ जइ

संजलाव्यो दशरथ तात, पुत्र एक दोय खंडज जात ॥ ६ ॥ बापे दीधी आज्ञा तेह, लेइ नाखो वनमां एह ॥ माताने तव उपन्यो नेह, जोर करी संधाड्यो देह ॥ ७ ॥ जरासंध परव्यो वली तेह, जोरे बंधाणो तेहज देह ॥ जरासंध ते नामज धर्युं, नारायणशुं वेरज कर्युं ॥ ८ ॥ सबल संग्रामे ते कुकार, शरीर मल्युं वे खंड अपार ॥ तेम मुज माथुं माहरे देह, एह वातनो नहीं संदेह ॥ ९ ॥ अपर वली कहुं सांजलो बात, शास्त्र पुराणे तेह विख्यात ॥ ईश्वर मोटो सबलो देव, पारवती नारीशुं टेव ॥ १० ॥ उमीयाने जोगवतां गयां, सहस वरस देवतानां थयां ॥ सुर सघलाने चिंता थाय, केम करीशुं आपण जाय ॥ ११ ॥ पुत्र उपजशे एहनो जेह, सबल संतापी दोशे तेह ॥ देव दानवने करशे ताम, जगत् जगमशे ते महा पाप ॥ १२ ॥ तो आपण हवे करीए एम, जोग दिजोग उपाइए तेम ॥ देव मली विचार ए कीध, गोरी बांधवने आज्ञा दीध ॥ १३ ॥ विश्वानर तुमे विश्वना देव, सुर नर करे तुमारी सेव ॥ पार्वतीना जाइ जणी, काज आवो सहु देवज तणी ॥ १४ ॥ ईश्वर जोग करो अंतराय, तो सहुने सुख हर्षज थाय ॥ अग्निदेव तेणे मान्यो बोल, उमीया ईश तिहां गयो निटोल ॥ १५ ॥ जइ खोंखारो बाहीर जाम, विघन उपन्यं वीर्य खलतां

ताम ॥ पार्वती उठी तेणी वार, जाइ देखी लाजी अपार ॥ १६ ॥ ईश्वरने बहु कोपज चड्यो, लष्टि मुष्टि विश्वानर पड्यो ॥ साला माटे मार्यो नहीं, मुख धररे वीर्य मूकुं सही ॥ १७ ॥ वीर्य पृथ्वी रेखाइ सहु, ते माटे मुख धररे कहुं ॥ तब विश्वानरे मुख ते धर्युं, उदरे वीर्य सघलुं सांचर्युं ॥ १८ ॥ वीर्य बले तब कोढी थयो, अग्निदेव ते दुःखीयो नयो ॥ ऋषिपत्नी तब गंगा जइ, स्नान करी आवे ते सही ॥ १९ ॥ नारी कार्तिका तेहनो नाम, अग्नि सगर्भीए तापे ठे ताम ॥ वीर्य काढ्युं मुख मांही थुंक, योनि संचार्युं मांहीं फुंक ॥ २० ॥ गर्भ वाधे हवे नारी तणो, ऋषिए जाण्यो नहीं आपणो ॥ पेट मांहींथी काढी करी, सर्वण वनमां मूक्यो धरी ॥ २१ ॥ गर्भ तणा ठ कटका तेह, एकठा मेली कीधो देह ॥ कार्तिकेय हुवो तस नाम, षड्जनमा बीजो अभिराम ॥ २२ ॥ षड्मुख नाम कहे ते सहु, षड्मातुर जाणे ते बहु ॥ ठ कटका तस देहज मले, तो मुज शिर धडसें नवि मले ॥ २३ ॥ ठठा खंडनी पांचमी ढाल, सांभलजो तमे बाल गोपाल ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजयनो वयण सहहे ॥ २४ ॥

दुहा.

अपर कथा तुमे सांभलो, गोरीनंदन गणपत ॥ पार्वती एक अवसरे, मज्जन करवा निमित्त ॥ १ ॥ अंग मेल उतारवा, सखी संघाते वेठ ॥ अंग उगटणो घणो, पुरुष निपायो तेठ ॥ २ ॥ गणेश रूप करी थापीयो, जीवतो कीधो तेह ॥ खड्ग आप्यो निज हाथमें, समजावे वली जेह ॥ ३ ॥ वेसाड्यो ते वारणे, चोकी करवा काज ॥ अवर म देजे आववा, नावा वेठी आज ॥ ४ ॥ ईश्वर आव्या उतावला, वेठो दीठो तेह ॥ अन्योअन्य पूछे फरी, कोण तुं माहरे गेह ॥ ५ ॥

ढाल छठी.

चोपाइनी देशी.

गणेश बोल्यो तव कोण छे तुं, घरमां पेसण नहीं देउं हुं ॥ तव ते लाग्यो जुद्ध अपार, गणेश ईश्वर कुके कुकार ॥ १ ॥ तव ते ईश्वर कोपे करी, खड्गे मार्युं मस्तक धरी ॥ उडी गयुं मस्तक ते तणुं, व्यासी जोजन पोच्युं घणुं ॥ २ ॥ ईश्वर तव आव्या घर मांहीं, पार्वती नाहे छे त्यांहीं ॥ केम स्वामि आव्या इहां ईश, द्वारपाल मार्यो में रीस ॥ ३ ॥ पार्वती बोल्यां जगदीश, एह पाप शुं कीधुं ईश ॥ पुत्र माहरो

मायां तुमे, नहीं बोलुं हवे तुमशुं अमे ॥ ४ ॥ पुत्र हत्या लागी तुज हाथ, ए अध-
टतुं कीधुं काज ॥ पुत्र हत्यारा घरथी जाय, काला मुखवालो केम थाय ॥ ५ ॥ जो
जीवंतो करशो एह, तो तुमशुं धरीशुं स्नेह ॥ ईश्वर तव आवी जोये वार, धड दीठुं
एकलुं तेणी वार ॥ ६ ॥ खेत्रपालने तव दीधी शीख, जोइ लावो गणपतिनुं शीश ॥
खेत्रपाल जोवे जग मांहीं, नवि देखे मस्तक वली कयांहीं ॥ ७ ॥ ठाम ठाम जोयुं
ते मुंड, नवि दीसे गणपतिनुं तुंड ॥ मुआ हस्तीनी आणी मुंड, चोडी गणेश तणे
जे रुंड ॥ ८ ॥ गजवदन हुवो तसु नाम, जीवतो हुवो तेहज ताम ॥ मिथ्याति सहु
पूजे लोक, एह वचन साचां के फोक ॥ ९ ॥ विप्र सांभलो एहज साच, अमारी
नहीं मानो तुमे वाच ॥ आपणुं वचन आपणने गमे, वाकी सहु ते फोके धमे ॥१०॥
शूद्र अन्य अग्राह्य एम कहे, भूत पक्ष ते सहुने ग्रहे ॥ द्विजवर सहु ते झांखा थया,
मौन धरीने वखता रह्या ॥११॥ ब्राह्मण एक बोल्यो वली एम, धूर्त वेहु दीसो छो तेम ॥
तुमे कह्या ते मान्या सहु, एक संदेह छे अमने बहु ॥ १२ ॥ कोठ उपरथी खाधां
मुंड, हेतुं केम धरायुं रुंड ॥ पर खाय ने पर केम भाय, एह वात केम घटती थाय
॥ १३ ॥ मनोवेग तव बोल्यो वाण, सांभलो वाम्भव तुमे अजाण ॥ इह लोके विप्र

भोजन करे, परलोके पूर्वज तृप्ति धरे ॥ १४ ॥ मातपिता सहु मुवा घणां, चोराशी लाख जोनिए जएयां ॥ काल घणो हुवो छे तेह, न जाणीए अवतरीया केह ॥ १५॥ अर्ध पक्षना पंदर दीस, संवछरी छमासी प्रीस ॥ ब्राह्मण सगां जमे छे सहु, ते पामे पूरवज वली वहु ॥ १६ ॥ पितर भवांतर पाम्या जेह, विप्र सगां जमतां पामे तेह ॥ तो मुज माधुं कोठां खाय, मारुं पेट कहो केम न भराय ॥ १७ ॥ छठी ढाल खंड छठा तणी, एहवी वात ते द्विजवर सुणी ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजयनी वात एम रहे ॥ १८ ॥

दुहा.

ब्राह्मण सहु हाथ जोडीया, बोले वचन अनाथ ॥ जीत्यो जीत्यो मुखथी वदे, हार्या अमे जगनाथ ॥ १ ॥ तुम साथे अमे बोलतां, नथी पुरवतो कोय ॥ साचा संपाते केम घटे, स्मृति पुराणे होय ॥ २ ॥ वाद जीती वनमां गया, मित्र वेहु आणंद ॥ पवनवेग कहे जाइ सुणो, मिथ्या पुराण कह्यो वृंद ॥ ३ ॥ ते में खोटां जाणीयां, जिनवचननो नहीं भेद ॥ तेह कथा कहो निरमली, मिथ्या कथा करो छेद ॥ ४ ॥

ढाल सातमी

आंगण वानुं एकलीरे, पमवे नागरवेल, धणरा बोला-ए देशी.

मनोवेग नव बोलीयोरे, सांभलो मित्र सुजाण ॥ मतरा खोजी ॥ रावण आदे देह कहूंरे, जिन नाखित सुख खाण ॥ म० ॥ १ ॥ मानो मानोरे सुगुण कहीयो मानो, माहारी एक अरदास ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ मेघवाहन अनुक्रमे हुवारे, लंकापति नरेश ॥ म० ॥ संख्या पार न पामीएरे, कहुं शास्त्र सवलेशरे ॥ म० ॥ मा० ॥ २ ॥ रतनश्रवा लंका धणीरे, केके जसी राणी राय ॥ म० ॥ रावण पुत्र ते अवतर्योरे, सुर नर सेवे पाय ॥ म० ॥ मा० ॥ ३ ॥ मय विद्याधर पुत्री भलीरे, मंदोदरी रूपनी खाणी ॥ म० ॥ ते आदे रावण परणीयोरे, अढार सहस्र घर राणी ॥ म० ॥ मा० ॥ ४ ॥ हय गय रथ सुभट तणोरे, चक्रीनो अरधो मान ॥ म० ॥ प्रतिनारायण आठमोरे, जिन पूजे दीये दान ॥ म० ॥ मा० ॥ ५ ॥ हार प्रनावे नव मुख होयेरे, मुखगुं एकज देह ॥ म० ॥ दशमुख नाम हारे करीरे, लोक मांही हुवो तेह ॥ म० ॥ मा० ॥ ६ ॥ राम नारी सीता हरीरे, राम रावण हुवो संग्राम ॥ म० ॥ रावणनुं दल भांजीयुंरे, राम सुभटे फेल्यो नाम ॥ म० ॥ मा० ॥ ७ ॥ लक्ष्मणे मार्यो लंकापतिरे, नरक चोथी

गयो तेह ॥ म० ॥ अनागत चोवीशीए जिन होशेरे, पंच कल्याणक गेह ॥ म० ॥ मा० ॥ ८ ॥ जैन रामायण मांही कहीरे, विस्तारपूर्वक कथा राम ॥ म० ॥ दधिमुख कथा तिहां जाणजोरे, बीजा अधिकार मांही ताम ॥ म० ॥ मा० ॥ ९ ॥ ईश्वर लिंग तणी कथारे, बीजे अधिकारे कह्यो भेद ॥ म० ॥ जिन-मत शिवमत वेहु तणेरे, ते जोइ करजो छेद ॥ म० ॥ मा० ॥ १० ॥ जरासंधनी उत्पत्ति सुणोरे, संखेपे कहुंरे विचार ॥ म० ॥ मगध देश राजग्रहीरे, नृप हुवा संख्या न पार ॥ म० ॥ मा० ॥ ११ ॥ हरिवंश मुनिसुव्रत हुवारे, तेहज अनुक्रमे जाण ॥ म० बृहद्रथ राजा रुपमोरे, श्रीमती राणी गुणखाण ॥ म० ॥ मा० ॥ १२ ॥ जरासंध सुत उपन्योरे, अरध चक्री तुमे एह ॥ म० ॥ कालिंदी आदि करीरे, सोल सहस्र गुण गेह ॥ म० ॥ मा० ॥ १३ ॥ कालयवन आदे करीरे, पुत्र हुवा महा शूर ॥ म० ॥ अश्व करि रथ सुभट जसारे, त्रिखंड लक्ष्मी भरपूर ॥ म० ॥ मा० ॥ १४ ॥ आठ विद्याधर प्रतिहरिरे, भूचर नवमो जरासंध ॥ म० ॥ कुरुक्षेत्रे संग्राम हुउरे, नारा-यणे छेद्यो कंध ॥ म० ॥ मा० ॥ १५ ॥ त्रीजी पृथ्वी गया ते दोइरे, होशे तीर्थंकर देव ॥ म० ॥ पवनवेग विचारजोरे, शास्त्र कह्युं में संखेव ॥ म० ॥ मा० ॥ १६ ॥

सातमी ढाल ठठा खंभनीरे, सुणजो सहु नर नार ॥ म० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमने हर्ष अपार ॥ म० ॥ भा० ॥ १७ ॥

दुहा.

गणेश कर्यो देहमेलनो, केम आव्यो जीव मांही ॥ सप्त धात केम नीपजे, समजावो मुज आंही ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, गणेश संबंध अधिकार ॥ जिनशासन मतमां घणो, सुणजो ते सुविचार ॥ २ ॥ अयोध्या नगरी अनोपम कही, रामचंद्र नामे राय ॥ तेहनो हस्ती मद जर्यो, मुनि पुंठे मारण धाय ॥ ३ ॥ समीपे आव्यो जेहवे, मुनि देखी उपसंत ॥ पूरव भव मुनीश्वरे कह्यो, सुणतां उपनी खंत ॥ ४ ॥ जातिस्मरण गज उपन्यो, वैराग पाम्यो अभिराम ॥ मुनि पासे व्रत उंचर्यां, द्वादश जिनमत ताम ॥५॥ फासु आहार करे निरमलो, फासु जल पीए ताम ॥ लोक मांहीं जस वाप्यो घणो, वेगो रहे एक ठाम ॥ ६ ॥ धर्मथी सामी सहु कर्यां, थाप्यो विनायक नाम ॥ संयम पाली निरमलो, गज मरी देवलोक ठाम ॥ ७ ॥ ते लोक मांहीं व्यापीयो, गणेश विनायक नाम ॥ विपरीत रूप करी सहु, पूजे राखी धाम ॥ ८ ॥ सिद्धि बुद्धि नामे नारी दो, लख लाभ दो पुत्र ॥ मूढ मिथ्याति मानवी,

मागे परनां सूत्र ॥ ए ॥ अढार दोषथी वेगला, वीतराग गुणवंत ॥ तेहने पूज्ये पामीए, सुगति सुख अनंत ॥ १० ॥ पवनवेग तुमे सांभलो, कार्तिकेय वृत्तांत ॥ जिनवचने जेम भाखीयुं, एक मना सुणो शांत ॥ ११ ॥

ढाल आठमी.

सुविवेक विचारी जुउं, जुउं वस्तु स्वभाव—ए देशी.

कार्तिकपुर नगर भलुंजी, अगनिश्श नामे छे राय ॥ विमलमति ते भामनीजी, उमीया सरखी काय ॥ पवनवेग जाणजो जैन विचार, करजो मिथ्यात परिहार, पवनवेग ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कृतिका पुत्री रूपमीजी, रूपे रंभ समान ॥ अष्टानिका व्रत आचरीजी, महोत्सव नृत्यज ग्यान ॥ प० ॥ २ ॥ श्रावक साथे सहु घणाजी, राजा गयो वन मांहीं ॥ नवण कीधां जिनवर तणांजी, उपवास अष्टमी त्यांहीं ॥ प० ॥ ३ ॥ कार्तिका गंधोदक लेइजी, पिता भणी आवी ताम ॥ तात वांदो ए निरमलुंजी, शेष लेजो जिन स्वाम ॥ प० ॥ ४ ॥ शरीर देखी पुत्री तणुंजी, रूपे मोह्योरे राय ॥ कामबाणे करी तामीयोजी, नृपचित्त विह्वल थाय ॥ प० ॥ ५ ॥ राजसभाए आवी करीजी, खट् दर्शन तेमी लोक ॥ शैव सांख्य बौध पूछीयाजी, भट्ट सन्यासीना थोक ॥ प० ॥ ६ ॥ मुज

मंदिर रतन उपज्युंजी, कहेजो केनुंरे तेह ॥ प्रत्येक पंच दरशनी कहजा, राजा तणुं
होय एह ॥ प० ॥ ७ ॥ मुनि पूछ्या जिन दरशनीजी, कहो जति केहनो स्त्रीरत्न ॥
मुनिवर बोल्या नृप सुणोजी, जैन मारग कह्यां यत्न ॥ प० ॥ ८ ॥ चोद रतन विचार
वणोजी, सात चेतन शुन होय ॥ अचेतन सात जाणजोजी, घर उपन्युं स्त्रीरतन
जोय ॥ प० ॥ ९ ॥ वचन सुणी नृप कोपीयोजी, निंद्या तिहां मुनि तेह ॥ देशे न
रहेवुं अम तणोजी, जाजो सहु जैन ठेह ॥ प० ॥ १० ॥ मुनिवर तिहांथी चालीयाजी,
दक्षिण देश मोझार ॥ पापी राजा परणीयोजी, पुत्री कीधी घर नार ॥ प० ॥ ११ ॥
अहीश कामांधो थकोजी, पुत्रीशुं भोगवे भोग ॥ गर्भ रह्यो कृतिका उदरेजी, जनक
तणे संजोग ॥ प० ॥ १२ ॥ पूरे मासे सुत जनमीयोजी, कार्तिकेय तेहनुं नाम ॥
रूपे सहु लोक रंजीयाजी, महोत्सव कीधो अभिराम ॥ प० ॥ १३ ॥ पुत्री जणी एक
निरमलीजी, वीरमति नामे सार ॥ रूप सोभागे आगलीजी, कार्तिकेय सम मनोहार
॥ प० ॥ १४ ॥ क्रौंच नाम नरपति भलोजी, रोहीड नयरनो राय ॥ वीरमती पर-
णावी तेहनेजी, महोत्सव करी उछाह ॥ प० ॥१५॥ क्रौंच परणी निज गामे गयोजी,
वीरमतीने लेइ ताम ॥ कार्तिकेय भणवा मूकीयोजी, गुरु पासे पढी शास्त्र जाम

मागे घरनां सूत्र ॥ ए ॥ अढार दोषथी वेगला, वीतराग गुणवंत ॥ तेहने पूज्ये पामीए, सुगति सुख अनंत ॥ १० ॥ पवनवेग तुमे सांभलो, कार्तिकेय वृत्तांत ॥ जिनवचने जेम भाखीयुं, एक मना सुणो शांत ॥ ११ ॥

ढाल आठमी.

सुविवेक विचारी जुउं, जुउं वस्तु स्वभाव—ए देशी.

कार्तिकपुर नगर भलुंजी, अगनिश्श नामे छे राय ॥ विमलमति ते भामनीजी, उमीया सरखी काय ॥ पवनवेग जाणजो जैन विचार, करजो मिथ्यात परिहार, पवनवेग ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कृतिका पुत्री रूयडीजी, रूपे रंभ समान ॥ अष्टानिका व्रत आचरीजी, महोत्सव नृत्यज ग्यान ॥ प० ॥ २ ॥ श्रावक साथे सहु घणाजी, राजा गयो वन मांहीं ॥ नवण कीधां जिनवर तणांजी, उपवास अष्टमी त्यांहीं ॥ प० ॥ ३ ॥ कार्तिका गंधोदक लेइजी, पिता भणी आवी ताम ॥ तात वांदो ए निरमलुंजी, शेष लेजो जिन स्वाम ॥ प० ॥ ४ ॥ शरीर देखी पुत्री तणुंजी, रूपे मोह्योरे राय ॥ कामबाणे करी ताडीयोजी, नृपचित्त विह्वल थाय ॥ प० ॥ ५ ॥ राजसभाए आवी करीजी, [illegible] ॥ [illegible] ॥ प० ॥ ६ ॥ मज

मंदिर रतन उपज्युंजी, कहेजो केनुंरे तेह ॥ प्रत्येक पंच दरशनी कहेजी, राजा तणुं होय एह ॥ प० ॥ ७ ॥ मुनि पूछ्या जिन दरशनीजी, कहो जति केहनो स्त्रीरत्न ॥ मुनिवर बोल्या नृप सुणोजी, जैन मारग कह्यां यत्न ॥ प० ॥ ८ ॥ चोद रतन विचार घणोजी, सात चेतन शुभ होय ॥ अचेतन सात जाणजोजी, घर उपन्युं स्त्रीरतन जोय ॥ प० ॥ ९ ॥ वचन सुणी नृप कोपीयोजी, निंद्या तिहां मुनि तेह ॥ देशे न रहेवुं अम तणेजी, जाजो सहु जैन ठेह ॥ प० ॥ १० ॥ मुनिवर तिहांथी चालीयाजी, दक्षिण देश मोझार ॥ पापी राजा परणीयोजी, पुत्री कीधी घर नार ॥ प० ॥ ११ ॥ अग्नीश कामांधो थकोजी, पुत्रीशुं भोगवे भोग ॥ गर्भ रह्यो कृतिका उदरेजी, जनक तणे संजोग ॥ प० ॥ १२ ॥ पूरे मासे सुत जनमीयोजी, कार्तिकेय तेहनुं नाम ॥ रूपे सहु लोक रंजीयाजी, महोत्सव कीधो अभिराम ॥ प० ॥ १३ ॥ पुत्री जणी एक निरमलीजी, वीरमति नामे सार ॥ रूप सोभागे आगलीजी, कार्तिकेय सम मनोहार ॥ प० ॥ १४ ॥ क्रोच नाम नरपति भलोजी, रोहीम नयरनो राय ॥ वीरमती परणावी तेहनेजी, महोत्सव करी उछाह ॥ प० ॥१५॥ क्रोच परणी निज गामे गयोजी, वीरमतीने स्नेह ताम ॥ कार्तिकेय भणवा मूकीयोजी, गुरु पासे पढी शास्त्र जाम

॥ प० ॥ १६ ॥ नीशाळीआने अनेक नणजी. सहु साथे रमे वळी तेह ॥ एक दिवस सुखडी आवीजी माशाळवी घणी जेह ॥ प० ॥ १७ ॥ खाद खाजां अति घणांजी. मेवा मीठाइ अपार ॥ रथ आभूषण उपनांजी पहेर्या सघळे नणी वार ॥ प० ॥ १८ ॥ सुखडी वहेंची आप आपणीजी नीशाळीए अनेक ॥ कार्तिक नाइ तुमे खेलजी. माशाळनी छे प्रत्यक्ष ॥ प० ॥ १९ ॥ कार्तिक कामामणाजी. रूपे चोदनो कुमार ॥ घरे आवी वेगे पूछीयुजी मुज कहो माय विचार ॥ प० ॥ २० ॥ अमने माशाळनी सुखडीजी. नवि आवे काइ माय ॥ अश्रुपात माताए कर्याजी. मन मांहे दुःख घणुं थाय ॥ प० ॥ २१ ॥ कुंतिका बोले सुत साभळोजी. कर्म कार्णी कहु केम ॥ घाट न आवे कहेतां घणुजी. पर्षदा मां वळी तम ॥ प० ॥ २२ ॥ सुत बोल्या माता सुणोजी, तो जमशुं अमे आज ॥ जेवु होय तेहवु कहोजी. मुज आगळ नाखो लाज ॥ प० ॥ २३ ॥ माता कहे तुज तणो पिताजी, मुज बाप तेहज होय ॥ अन्याय कीधो राजाए घणोजी, बाप वेहुनो सोय ॥ प० ॥ २४ ॥ छठा खंडनी आठमीजी, ढाल कही सुविशाल ॥ रंगविजयनो शिष्य कहेजी, नेमविजय मंगल माल ॥ प० ॥ २५ ॥

कार्तिकेय नंदन कहे, सांभलो मोरी माय ॥ काम निवार्यां कोणे नहीं, एहवो जे अन्याय ॥ १ ॥ अघट मान एणे कीयो, को नहीं हुवो तव धर्म ॥ पापी अन्यायी जीवमा, ते बांधे निज कर्म ॥ २ ॥ मात कहे सुत सांभलो, मुनिवर जे गुणराय ॥ तेणे घणी परे प्रीतव्यो, तोही कीधो अन्याय ॥ ३ ॥

ढाल नवमी.

वर वाघेलो वाणीए उतर्यो–ए देशी.

कार्तिकेयरे कहे माता सुणो, किहां छे मुनिवर वली तेहरे ॥ जननी वालरे सुतजी सांभलो, जेन मुनिवर हता जेहरे ॥ साजन सहुकोरे सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तुज पिताएरे ते निरघाटीया, इहांथी गया दक्षिण देशरे ॥ जिहां तुज तातनी आण फरे नहीं, लोक सहु जिनधर्म शीशरे ॥ सा० ॥ २ ॥ मात कहो ते आचार केहवो, जेहनो आवो निरमल धर्मरे ॥ राजा अन्यायेरे जेणे वारीयो, दूषण रहित करे छे कर्मरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ कुमरने मात कहे तुमे सुणो, चोवीश परिग्रहथी ते

झूरे ॥ निर्ग्रंथ साचा ते गुरु जाणीए, मोह मद टाखण ते कह्या शूरे ॥ सा० ॥४॥ उंपो मुहपत्ति माखा कर धरे, तप जप संजमनां ते गेहरे ॥ दोष बेंतालीश टाली आहार करे, अंतराय बत्रीश पाखे तेहरे ॥ सा० ॥ ५ ॥ वचन एहवांरे सुणी माता तणां, वैराग उपन्यो सुतने अंगरे ॥ क्षमा करीने तिहांथी नीकल्यो, मुनिवर गुरुने जोवा रंगरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ दक्षिण देश कार्तिकेय गयो, वांद्या जइने मुनिना चरणरे ॥ दीक्षा मागे श्रीगुरुनी कने, संसारसागर स्वामि तरणरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ गुरु तव पोह्या वछ तुमे सांभलो, दीक्षा मारग दुकर तेहरे॥तुमे छो बालक लघुमतिना धणी, नवि संचवाए साधुपंथ जेहरे ॥ सा०॥८॥ अति आग्रह करी संजम लीधो, चारित्र आचर्युं पांच प्रकाररे ॥ गुरुनी सेवा शास्त्र भणे घणां, राग द्वेष तजीने अहंकाररे ॥ सा० ॥९॥ कृत्तिका नारी पुत्रविजोगथी, आरत ध्याने तजीने देहरे ॥ व्यंतर गतिमां जीव जइ उपन्यो, सुख विलसे तिहां तेहरे ॥ सा० ॥ १० ॥ विहार करंता कार्तिकेय मुनि, रोहिड नगरे पोह्या जामरे ॥ ज्येष्ठ मास अमावास्याने दिने, पारणुं करवाने ते तामरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ इर्यापथिकी भूमिका शोधता, मौनव्रती मुनि अधीशरे ॥ क्रोध राजानी सत भूमि तले, सुतो राणी खोले शीशरे ॥ सा०॥ १२ ॥ जगिनीए जाइ

तिहां देखीयो, मुनिवर साधुनो रूपरे ॥ भाइ जाणीने मोह व्यापीयो, उंसीसे मस्तक धरी भूपरे ॥ सा० ॥ १३ ॥ वीरमती राणी देवी उतरी, बांधवने कर्यो रे प्रणामरे ॥ आलिंगन देइ घणुं भीडीयो, पोहोंचो भाइ आपणे धामरे ॥ सा० ॥ १४ ॥ क्रोच राजा तिहां तव जागीयो, राणी किहां गइ कहो आजरे ॥ दुष्ट मंत्री तिहां तव एम भणे, जुउं जुउं राणीने महाराजरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ खमणो वलग्यो तुम राणी भणी, हस्ते करी देखाडे तेहरे ॥ क्रोच राजाए कोपी धनुष्य धर्युं, बाणे भेद्यो मुनिवर देहरे ॥ सा० ॥ १६ ॥ विषम बाण लाग्युं मुनिने घणुं, भूमि पडीयो मुनिवर खामरे ॥ राग द्वेष मोह मान परिहरी, मन धरी जिनवरना गुणग्रामरे ॥ १७ ॥ वीरमती ते देखी दुःख नयो, भाइ तणो उपन्यो सोगरे ॥ विलाप करे अति घणुं वलवले, धाजो सहु श्रावक लोकरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ छठा खंडनी नवमी ढालमां, सुणजो सहुको बाल-गोपालरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एणी परे भणे, नेमविजयने हर्षे उजमालरे ॥ सा० ॥ १९ ॥

दुहा.

वीरमति विलाप करे अति, मुख करे हाहाकार ॥ बांधव ए मुज सोहामणो,

मुनिवर ए व्रतधार ॥ १ ॥ वहुज जाइ उठो तमे, मुज घर लेजो आहार ॥ निराधार छुं वेनडी, एक वार दीउं आधार ॥ २ ॥ जो वीरा तमे वोलशो, तो दुःख सुख कहुं वात ॥ पापी राजाए शुं कर्युं, हणीयो मारो भ्रात ॥ ३ ॥ लघु वेशे संयम ग्रह्यो, मूकी माप ने बाप ॥ राज रिद्धि सुख परिहरी, खम्यो परिसह ताप ॥४॥ मास पारणे पहोत्या मुज घरे, बाणे बींध्यो शुज अंग ॥ वेदना व्यापी हशे घणी, देव कीधो रंगनो भंग ॥ ५ ॥

ढाल दशमी.

उठ कसाखणी नर घडो रे—ए देशी.

एम विलपंती कूटे हैयुं हे, शिर फोडे पाडे पोक ॥ हाहाकार हुवो घणो हे, मसीया नगरना लोक ॥ साजन सांजलो हे, कर्म तणी ए वात ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ महीपति पासे आवीयो हे, जाण्यो सहु वृत्तांत ॥ काम कीधो में पामुं ए, दुःख धरेरे एकांत ॥ सा० ॥ २ ॥ पापी मंत्रीए आज तो हे, कराव्यो वृथा पाप ॥ नरक निदान बंधावीयो हे, मुनि हत्यानो संताप ॥ सा० ॥ ३ ॥ व्यंतरीए तव जाणीयो हे, पुत्रने कष्ट अपार ॥ वेगे करी आवी तिहां हे, परव माव मझार ॥ सा० ॥ ४ ॥

रूप रच्युं मयूर तणुं हे, उजी कार्तिकेय पास ॥ मूर्छा पामी मुनिवर पड्यो हे, लीधो वृष्टि निवास ॥ सा० ॥ ५ ॥ मयूर चाल्यो सामी लेइने हे, वन मांही छे प्रासाद ॥ शीतल जिनवरदेवनो हे, दीठे टले विषवाद ॥ सा० ॥ ६ ॥ तिहां मूक्यो जति निरमलो हे, श्रावक करे बहु सेव ॥ मूर्छा गइ सावधान थइ हे, मुनि ध्याये जिनदेव ॥ सा० ॥ ७ ॥ करीय संन्यासी मन चिंतवे हे, अनुपेक्षा ते बार ॥ पवनवेग तुमे सांभलो हे, भावना संखेप विचार ॥ सा० ॥ ८ ॥ धण कण शरीर अथिर छे हे, नहीं थिर कुटुंब परिवार ॥ राज रिद्ध सहु अथिर अछे हे, जेसो वीज झबकार ॥ सा० ॥ ९ ॥ शक्र सचीवने राखवा हे, समरथ नोहीं सहु ॥ मरण काले प्राणीने जथा हे, सिंह धर्यो मृग वहु ॥ सा० ॥ १० ॥ चार गति जीव दुःख सहे हे, कहेतां न लहुं पार ॥ द्रव्य खेत्र भव भावे भम्यो हे, काल ते पंच संसार ॥ सा० ॥ ११ ॥ चार गते जीव एकलो हे, साथे नहीं तिहां कोय ॥ दुःख सुख सहे ते एकलो हे, चोराशी लाख जोनि जोय ॥ सा० ॥ १२ ॥ अन्य कलेवर अन्य जीवडो हे, अन्य सहु परिवार ॥ जनम जनम ते जुजुया हे, मोह म करशो लगार ॥ सा० ॥ १३ ॥ शरीर अछे सात धातुमें हे, मल मुत्र तणो भंडार ॥ रेत ने रुधिरे उपन्युं हे, अशुचि देह मोझार ॥

सा० ॥ १४ ॥ मिथ्या मत अविरत कषायना हे, तेहना भेद अपार ॥ पन्नर प्रमाद वली जोगना हे, कर्माश्रव ए धार ॥ सा० ॥ १५ ॥ समकित सुधे संजम हे, सुमति गुपति पर धर्म ॥ परिसर संवर उपजे हे, सुगति मुगति होय शर्म ॥ सा० ॥ १६ ॥ चार गतिना जीवने हे, निर्जरा होये सविपाक ॥ मुनिवर स्वामी तपवले हे, निर्जरा करे अविपाक ॥ सा० ॥ १७ ॥ अधो मध्य ऊर्ध्व कह्यो हे, त्रण प्रकारे लोक ॥ उंचो राज चोद तणो हे, त्रणसें त्रिताखां थोक ॥ सा० ॥ १८ ॥ नरभव दुलहो जाणवो हे, दुलहो श्रावक धर्म ॥ रतन त्रय व्रत दुलहो हे, मुगति गमन जिहां शर्म ॥ सा० ॥ १९ ॥ क्षमा मार्दव आर्जव गुणे हे, संजम शौच तप त्याग ॥ सत्य निर्ग्रंथ व्रत पालवुं हे, एह धर्म तणा दश भाग ॥ सा० ॥ २० ॥ ढाल दशमी उठा खंडनी हे, सांभलजो सहु कोय ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे हे, नेमविजय सुख होय ॥ सा० ॥ २१ ॥

दुहा सोरठी.

कार्तिकेय मुनि नाम, शुभ ध्यान मनमां धरी ॥ आतम ध्याये सुख, होय सुगति मुगति जीवे वरी ॥ १ ॥ देखो देखो नवि जाय, तेह शरीर वेदन भेदन सहे ॥ अप्पा

आप्ये जावजो तेम, जेम पासे मुगति रहे ॥ २ ॥ पाषाण हेम घृत दूध, तिल मांही जेम तेल रह्यो ॥ करमे वींट्यो ए जीव, शरीर मेल जिनजीए कह्यो ॥ ३ ॥

ढाल अगीआरमी.

मोरा साहेब हो श्री शीतलनाथके विनति सुणो एक मोरडी—ए देशी.

पुरुषाकारे हो ध्याउं आतमा सारके, शरीर मांहे तेज पुतलो ॥ जेम कोस मांहि हो रहे तरवारके, तेम आतमा अति उजलो ॥ १ ॥ सासो सासे हो रुंधी करी तामके, दशमे दुआरे चली लीजीए ॥ टालीए एम हो संकल्प विकल्प विचारके, मन निश्चल दृढ कीजीए ॥ २ ॥ शुध बुध हो चेतन चिदानंदके, केवलज्ञान सरूप छे ॥ शुद्ध चिद्रूप हो हुं वली सिद्धके, परम जोति सुख कूप छे ॥ ३ ॥ एम चिंतवी हो आतम ध्यानके, कार्तिकेय स्वामी मन रली ॥ समाधिमरणे हो साधी हुवो कालके, सर्वार्थ सिद्धि विमन फली ॥४॥ तेत्रीश सागर हो भोगवी आपके, मध्य लोके नरभव लही ॥ कर्म हणीने हो लही केवलज्ञानके, शीवरमणे वरशे सही ॥ ५ ॥ देव सहु तिहां हो आव्या ततकालके, पूजा महोछव घणो कर्यो ॥ लोक सहुए हो ए आवर्यु तीर्थके, प्रसिद्ध स्वामी महिमा विस्तर्यो ॥ ६ ॥ माता व्यंतरी हो तेणे उपाइ व्याधके,

लोक पाका घणी करे ॥ आवे जात्राए हो जे नर नारके, तेहनां रोग संकट हरे ॥ ७ ॥ मयुरवाहनो हो स्वामी कार्तिकेयके, नाम कही लोक तीर्थे जाये ॥ वीरमती जगिनीथी होये जावला वीजके, पर्व हवुं ते दिनथी थाये ॥ ८ ॥ श्रीजिनवरदेवे हो कह्या सकल विचारके, कुमार स्वामी कार्तिकेय तणो ॥ पवनवेग तुम हो ए जाणजो सत्यके, अपर ग्रंथ विस्तार घणो ॥ ए ॥ मिथ्यात्वीनां हो ए वचन असारके, मन मांही थकी ए टालजो ॥ जोला लोकज हो भूला जमे गमारके, जिनवर वचनज पालजो ॥ १० ॥ पवनवेगने हो आणंद जयो तामके, समकितधारी श्रावक थयो ॥ मनोवेग मित्रने हो करी प्रणामके, विमान रची लेइ निज गामे गयो ॥ ११ ॥ मनोवेग कहे हो सांजलो मित्रके, श्रावकनो धर्म हुं कहुं ॥ आदि समकित हो सुधुं धरे चित्तके, सात व्यसनथी दूरे रहुं ॥ १२ ॥ मूल गुण हो पाले आठज नेमके, कंदमूल सहु परिहरे ॥ व्रत पाले हो श्रावकनां वारके, सामायिक त्रण काल करे ॥ १३ ॥ तिथि पर्वणी हो पोसो करे शुद्धके, सचित वस्तु दूरे तजो ॥ रात्रिजोजन हो निवारो ब्रह्मचर्यके, पालो नव भेद शील भजो ॥ १४ ॥ गृह व्यापारे हो टालो पापारंभके, परिग्रह दूरे टालीए ॥ विवाह आदे हो अनुमत नवि देयके, उदेस्यो आहारने

निहाखीए ॥ १५ ॥ एकादश हो प्रतिमा ए सारके, श्रावकनी शुद्धि कही ॥ सांभलीने
हो हरखयो कुमारके, पवनवेगे मन दृढ ग्रही ॥ १६ ॥ पवनवेग हो पवित्र व्रतधारके,
जैनधर्म लीधो खरो ॥ दोय मित्रज हो आनंद हुयो सारके, भव्य जीव धर्म खेद
धरो ॥ १७ ॥ व्रत पालीने हो आयुषा अंतके, बेहु मित्र स्वर्गे गया ॥ पाम्या अति
घणी हो देवीनी रिद्धके, देवीशुं भोग सुखीया थया ॥ १८ ॥ अवतरीने हो पामशे
मनुष्यनो जन्मके, चारित्र पाली जिन तणुं ॥ अष्ट करमनो हो वली करीने घातके, मोक्ष
लक्ष्मी पामशे घणुं ॥ १९ ॥ हीरविजय सूरि हो तपगछ मंडाणके, शुभविजय शिष्य
जाणीए ॥ नयविजय हो जगमें जयवंतके, सिद्धिविजय परमाणीए ॥ २० ॥ रूपवि
जय हो रूपवंत कहेवायके, कृष्णविजय कर जोडीने ॥ रंगविजयने हो प्रणमुं निश-
दीसके, अंग छठे अंग मोडीने ॥ २१ ॥ खंड छठो हो पूरो थयो आजके, ढाल
अग्यारे सुणो सही ॥ नेमविजये हो उलट मन आणके, वात अनोपममें कही ॥२२॥

इति धर्मपरीक्षारासे षष्ठोऽधिकारः संपूर्णः ॥

खंड ७ मो.

दुहा.

एकदा पाटलीपुर भणी, विहार करंता एम ॥ आव्या आर्यसुहस्ती सूरि, परिवारे करी तेम ॥ १ ॥ वनपालक दे वधामणी, संप्रति राजा भणी जाय ॥ सघलो साथ लेइ करी, वंदण आव्यो राय ॥ २ ॥ द्विज आव्या सघला मली, सुणवाने उपदेश ॥ गुरु कहे मूल छे धर्मनो, समकित मर्म विशेष ॥ ३ ॥ समकित विण शिवपद नहीं, सांभलजो सहु कोय ॥ आण सहित क्रिया अलप, बहु फलदायक होय ॥ ४ ॥ जिनवरदेव सुसाधु गुरु, केवली भाषित धर्म ॥ सद्दहीए सुधां सहित, ए समकितनो मर्म ॥ ५ ॥ तेणे कारण भवियण तुमे, वारी विकथा वात ॥ एक मना अवधारजो, समकितनां अवदात ॥ ६ ॥

ढाल पहेली.

समुद्रपाल मुनिवर जयो—ए देशी.

जंबुद्वीप भरत क्षेत्रमां, ए तो मगध देश मनोहार ॥ सनेही ॥ राजग्रही नयरी राजा

तिहां, ए तो श्रेणिक चेलणा नार॥ सनेही ॥ १ ॥ संप्रति राजा सांभला, समकित
कथा सुजाण सनेही॥ ए आंकणी॥ बुद्धिनिधान बडो पुत्र छे, ए तो नामे अभयकुमार॥
सनेही॥ सर्व कला कही पुरुषनी, ए तो राजधुरंधर धार ॥ स० सं० ॥ २ ॥ अर्द्धदास
शेठ तिहां वसे, जेहने घर वित्त भरपूर ॥ स० ॥ चित्त उदार जिन चरचीने, दुःखी
जन करे दुःख दूर ॥ स० सं० ॥ ३ ॥ आठ रमणीशुं सुख भोगवे, पाले ते नव वाडे
शील ॥ स० ॥ समकित सुधुं सद्दहे, धर्म करतो न करे ढील ॥ स० सं० ॥ ४ ॥
गिरि वैभारे एकदा, समोसर्या श्रीमहावीर ॥ स० ॥ वनपालके वधामणी, पाले
गौतमस्वामी वजीर ॥ स० सं० ॥ ५॥ सांभली संतोष्यो शुभ परे, पृथ्वीपतिए परभात ॥ स० ॥ महा मोछव करी वांदवा, आव्यो आणंद अंग न मात ॥स० सं०॥६॥
पांच अभिगम साचवी, भगवंत उपर धरी भाव ॥ स० ॥ वांदी वेगा विधिपूर्वके,
कहे भवजल तारण नाव ॥ स० सं० ॥ ७ ॥ पूजाभाव आणे चित्तमें, ए तो चोथ
तणो फल जोय ॥ स० ॥ पूजोपगरण हाथे ग्रहे, छठ तणो फल होय ॥ स० सं०
॥ ८ ॥ गमणागमणे फल अठमे, पाले आव्यो दशम फल जाण ॥ स० ॥ डुबालस
फल जिन परवेशे, प्रदक्षिणे पक्ष फल आण ॥ स० सं० ॥ ९ ॥ मास फल जिन-

विंध देखीए, पगजणे शत उपवास ॥ स० ॥ सहस्र फल विशेषने कह्यो, फुलमा-
साए लाख फल तास ॥ स० सं० ॥ १० ॥ अनंत फल गीत नृत्यथी, एहवां फल
सुणी शेठे तास ॥ स० ॥ नीम धायों त्रण कालनो, जिनपूजा विना उपवास
॥ स० सं० ॥ ११ ॥ आव्यो उछव एहवे, कौमुदी कौतिककार ॥ स० ॥ सुंदर वेश
सजी सवे, नगर बहार आवे नर नार ॥ स० सं० ॥ १२ ॥ खेलो हसो मन खांतशुं,
हुकम करे राजान ॥ स० ॥ कार्तिक पुनेमने दिने, गाउ वजाउ तान ॥ स० सं० ॥
॥ १३ ॥ चार वरसने अंतरे, पडहो वजाडे एम ॥ स० ॥ अर्हदास शेठ मन चिंतवे,
मुज व्रत रहेशे हवे केम ॥ स० सं० ॥ १४ ॥ उंडुं मनमां आलोचीने, आव्यो शेठ
नृपने पासे ॥ स० ॥ मोती आगल मूकीने, उभो अरज करे उल्लासे ॥ स० सं० ॥
॥ १५ ॥ में लीधुं छे व्रत नेम जे, ते तुमे जाणो छो स्वाम ॥ स० ॥ आज आदेश
हुवो एसो, केवुं करवुं हवे काम ॥ स० सं० ॥ १६ ॥ धन देइ धन धन कही, ए तो
पणुं प्रशंसे राज ॥ स० ॥ जिनधरमी जयवंत तुं, करो जइ घरनां काज ॥ स०
सं० ॥ १७ ॥ चोकी मेली चिहुं दसे, ए तो सुभट रह्या सावधान ॥ स० ॥ रात
पडी राजा कहे, ए तो सांभल तुं परधान ॥ स० सं० ॥ १८ ॥ पहेली दाख खंड

सातमे, सांभलजो सहु नर नार ॥ स० ॥ रंगविजय कविराजनो, नेमविजय जय-कार ॥ स० सं० ॥ १९ ॥

ढ्ढा.

चालो जोवा जाइए, बोले श्रेणिक राय ॥ अभयकुमार वलतुं कहे, नावे मारे वाय ॥ १ ॥ नारी जाति भली तिहां, पुरुष नहीं छे छेक ॥ आपण केम जइए तिहां, मनमां धरो विवेक ॥ २ ॥ इंद्रि पांच जीती जीके, ते विनयी कहेवाय ॥ गुणवंत कहीए ते नरा, सहु जनमां पूजाय ॥ ३ ॥ राजा कहे परधानने, हुं तुं इंद्र समान ॥ लोको शुं करशे मने, बलवंत हुं राजान ॥ ४ ॥ प्रधान वलतुं एम कहे, अभिमान न कीजे फोक ॥ परजा थकी सुख पामीए, दुःख न दीजे लोक ॥ ५ ॥ वली नर-पति एम उंचरे, घणे न सीजे काज ॥ सूरज उग्यो एकलो, तारा जाये भाज ॥ ६ ॥ प्रधान कहे नरपति तमे, बहुशुं न करो वेर ॥ घणां भली कष्टाण करे, घणांथी उपजे जेर ॥ ७ ॥ ते उपरे कथा कहुं, सुजोधन नृपनी वात ॥ वातो मन शीतल करे, वात करे उतपात ॥ ८ ॥

ढाल बीजी.

फोस्या कामनी कहे चांदला, चांदा तुं छे परउपगारीरे—ए देशी.

हस्तीनागपुर वर भलो, राजा सुजोधन तिहां रायरे ॥ मंत्री पुरुषोत्तम तेहने, राजा पुरोहित कापिल कहेवायरे ॥ १ ॥ जमदंड नामे कोटवाल छे, राजा वेगा सजा मोकाररे ॥ दूत आवी एक एम कहे, राजा अरिदल आव्युं अपाररे ॥ २ ॥ दूतनुं वयण सुणी एशुं, राजा भ्रकुटी चढावी भाखरे ॥ घाउं निसाणे घमकीया, राजा कोप्यो रिपुनो काखरे ॥ ३ ॥ हय गय रथ पायक सजी, राजा राये प्रयाणज कीधरे ॥ राज नगरनी रक्षा करे, राजा जमदंडने भलामण दीधरे ॥ ४ ॥ लश्कर लेइ अरि उपरे, राजा वेहु दल झुके अपाररे ॥ दिवस घणा तिहां लागीया, राजा सांभलो वात विचाररे ॥ ५ ॥ जमदंडे जस उपराजीउं, राजा रुडी परे प्रजा राखेरे ॥ राजकुंवर लोक वश थया, राजा यमदंड वयण जे भाखेरे ॥ ६ ॥ अरि जीती नृप आवीउं, राजा सनमुख सहु लोक जायरे ॥ राजा पूछे कुशल सहु, राजा कहे यमदंड पसायरे ॥ ७ ॥ विलंब करी पूछे वली, राजा तुमने अछे समाधिरे ॥ यमदंडना परसादथी, राजा कशी नथी असमाधिरे ॥ ८ ॥ चिंतवे भूपति चित्तमें, राजा राज्य

मुखे जे जायरे ॥ दूध विलाडी राखवा, राजा पठे ते पस्तायरे ॥ ९ ॥ कूड
राखी मनमां घणो, राजा मोन करे भूपालरे ॥ इंगित आकारे उलखे, राजा
जाणे मनमें कोटवालरे ॥ १० ॥ मंत्री पुरोहित भूपति, राजा त्रणे मली एक
वायरे ॥ यमदंडने यमघर भणी, राजा मूकण विचार करायरे ॥ ११ ॥ देखो डुर-
जन दुरमति, राजा पर जश देख्यो न सुहायरे ॥ राजा परधान पुरोहित मली,
राजा कुकरम एह कमायरे ॥ १२ ॥ खजानो निज खोसवा, राजा मध्य रात्रे पेठो
तेहरे ॥ कूड कपट करे घणां, राजा थंते पडी मुख खेहरे ॥ १३ ॥ मुद्रा जनोइ
पादुका, राजा मुखे मूके लेइ खात्ररे ॥ धन काढे ते धसमसी, राजा काम करे एह
कुपात्ररे ॥ १४ ॥ खात्र मुखे विसरी गया, राजा पादुका मुद्रा जनोइरे ॥ प्रातः समे
यमदंडने, राजा तेडीने भाखे सोइरे ॥ १५ ॥ रे निर्लज्ज तुं नगरने, राजा राखे छे
कडी रीतरे ॥ आज भंडार फाडी गया, राजा तुं सुइ रह्यो निर्चिंतरे ॥ १६ ॥ वस्तु
सहित जो चोरने, राजा नहीं लावे माहरी पासरे ॥ चोर तणो दंड तुजने, राजा
थाशे सही एम विमासरे ॥ १७ ॥ तुरत गयो मुख खात्रने, राजा पादुकादिक पड्या
दीठरे ॥ पाम्या चोर ते पापीया, राजा मन मांहीं हरख पइठरे ॥ १८ ॥ कोटवाल

चित्त चिंतवे, राजा जुउं राय एम करंतरे ॥ तो कहीए केहने जइ, राजा सुणजो सहु जन संतरे ॥ १९ ॥ राजा आगल आवीने, राजा चोर न लाव्यो सामरे ॥ कोपे करी राय एम कहे, राजा एहने मारो तस ठामरे ॥ २० ॥ मली महाजन विनवे, राजा अवध दीजे दिन सातरे ॥ चोर वस्तु आणे नहीं, राजा मनमानी करजो वातरे ॥ २१ ॥ कष्टे भूपे कह्युं कर्युं, राजा परजानुं राख्युं मन्नरे ॥ यमदंड सहु आगल कहे, राजा सुणजो एक वचनरे ॥ २२ ॥ राजानुं मन पहुवुं, राजा कहोने हवे कीजे केमरे ॥ महाजन कहे वीजो रखे, राजा न्यायीने थाशे खेमरे ॥ २३ ॥ परमेश्वर पक्ष न्यायनो, राजा करशे सही जाणो साचरे ॥ ढाल वीजी खंड सातमे, राजा नेमविजयनी वाचरे ॥ २४ ॥

दूहा.

शठपणे सघले फरे, चोर गवेषण काज ॥ पहेले दिवस सजा गयो, तव पूछे महाराज ॥ १ ॥ चोर न लाव्यो चोरटा, जमदंड कहे नरनाथ ॥ ठाम ठाम में जोइयो, चोर न आव्यो हाथ ॥ २ ॥ हवडी वार किहां रह्यो, कहे कोटवाल ते वार ॥ कथा

एक कहेतो हतो, सांभलतां थइ वार ॥ ३ ॥ जेणे मरण तुज विसर्युं, ते कहे मुजने वात ॥ उत्पातकी बुद्धि करी, कथा कहेशे सात ॥ ४ ॥

ढाल त्रीजी.

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी–ए देशी.

कहे कथा यमदंड युक्तिशुं, सांभल राय सुजोधरे ॥ मन मांहीं जाणे यमदंड जो वली, पामे किमही प्रतिबोधरे ॥ कहे कथा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वन मांहीं एक मोटो सरोवर, सजल कमल विस्तारे ॥ तेहनी पाले सरखो अति उंचो, तरुवर अठे उदारे ॥ क० ॥ २ ॥ हंस घणा रहे छे तरु उपरे, व्याध तणो नहीं लागरे ॥ वेले अंकुर तस मूले देखी, वमो हंस कहे महाजागरे ॥ क० ॥ ३ ॥ चंचुपुटे करी अंकुर प्रोमो, तो तुमने सुख थायरे ॥ वधती वधती एहज वेलना, थाशे तुम दुःखदायरे ॥क० ॥४॥ तरुना हंस हस्या सवि तेहने, वीकण मोटो तुं मूरुरे ॥ एम सांभली मौन कर्युं तेणे, पामशे आपणुं कीधुं रे ॥ क० ॥ ५ ॥ काले वधी ते सवली वेलडी, जइ लागी तरु शीशरे ॥ ते व्याध चढीउं ते अवलंबीने, नाख्यो पास जगीशरे ॥ क० ॥६॥ घुण करीने सांजे हंस सघला, पासे पडीआ आयरे ॥ आक्रंद करतारे पूछे मूरुने,

वुटण तणो उपायरे ॥ क० ॥ ७ ॥ जोवन मद मतवाला मुरख जे, नवि मान्युं मुज वयणरे ॥ तेह तणां फल ए छे प्रत्यक्ष, देखो आपणे नयणरे ॥ क० ॥ ८ ॥ अण-जाणे अथवा परमादे, कारज विणसुं संजाखरे ॥ पछे प्रयास होये विफल सघलो, जल गये बांधी पाखरे ॥ क० ॥ ९ ॥ दीन वचने बोले उ दादाजी, तुमे छो बुद्धि-निधानरे ॥ दया करी निज बालक उपरे, दीजे वंछित दानरे ॥ क० ॥ १० ॥ प्राण रहित सरीखा थइ रहेजो, सघले मानी शीखरे ॥ परजाते देखी ते पापीयो, चिंते जांगी जीखरे ॥ क० ॥ ११ ॥ हंस सकलने हेठा नाखीया, उड्या ते समकाखरे ॥ मान्युं वचन पमानुं तेमणे, पाम्या सुख विशाखरे ॥ १२ ॥

गाथा—दीहकालंतीया जत्र, पायवे निरुवदवे ।
मुखाउ उठीयावखी, जायं सरणं उत्तयं ॥ १ ॥

गाथा एह कही छे वडे हंसे, समजो राय मयाखरे ॥ कथा पहेली संपूरण ए कही, समजो श्रोता दयाखरे ॥ क० ॥ १३ ॥ सातमा खंड तणी डाख श्रीजीए, समजाव्यो राय मुजाखरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजय परमाणरे ॥ क० ॥ १४ ॥

अभिप्राय पूछ्यो नहीं, दुराग्रहयंत नरिंद ॥ मगसेलीयो नीजे नहीं, वरसे पुष्कर वृंद ॥ १ ॥ बीजो दिन आव्यो वली, पूछे तेम महीराय ॥ कथा एक कहेतो हतो, ते मुज आयी वाय ॥ २ ॥ कोइक नगर कुंनार एक, खाण खणी मन खंत ॥ नाजन निपजायी नखां, वेची थयो धनवंत ॥ ३ ॥ जुवन कराव्युं अति नलुं, पुत्र विवाहज कीध ॥ जाचक जन संतोषीया, नगर थयो प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ माटी खणवा एक दिन, गयो खाण मोझार ॥ तड तुटी उपर पडी, गाथा कहे कुंनार ॥ ५ ॥

गाथा—जेण जिखं वखिंदमि । जेण पोसेमीनायउं ॥
तेण मे पठिया नगा । जायं सरणं उजयं ॥ १ ॥

कथा कही निज घर गयो, समज्यो नहीं राजान ॥ त्रीजे दिन कथा कहे, ते सुणजो सावधान ॥ ६ ॥

ढाल चोथी.

वंगालो राग.

देश पांचाल कांपिलपुर सार, सुधरमा राजा सिरदार ॥ सुणो वारता ॥ जेन धरम

उपरे तसु राग, मंत्री जयदेव छे चार्वाक ॥ सु० ॥ १ ॥ शत्रु तणो पराजव जाण, चाल्यो नरपति निग्रह जाण ॥ सु० ॥ जीती नगरमां आवे जाम, पोल वडी पमी आगल ताम ॥ सु० ॥ २ ॥ अपशुकन जाणी निरधार, वहार रह्यो राजा तेणी वार ॥ सु० ॥ उतावली कीधी ते पोल, पेसे बीजे दिन करत कलोल ॥ सु० ॥ ३ ॥ पमी वली तिमहीज ते पोल, मंत्री करावी देइ वहु मोल ॥सु०॥ त्रीजे दिने पेसे जव भूप, पुनरपि थयो तेह सरूप ॥सु० ॥४॥ मंत्री कहे राजन अवधार, कोइक सुर कोप्यो सुविचार ॥सु०॥ निज हाथे माणस एक मार, तेहने रुधिरे जो दीजे धार ॥ सु० ॥ ५ ॥ तो निश्चय ए थाये स्वाम, अवर पूजा वलि नावे काम ॥ सु० ॥ भूप भणे हिंसा जिहां होय, तेह नगरशुं काम न कोय ॥ सु० ॥ ६ ॥ जे सुवरणे तुटे कान, पहेरे तेने कोण अजाण ॥ सु० ॥ जिहां हुं तिहां नगर विशाल, कोण करे एहवो जंजाल ॥ सु० ॥ ७ ॥ निश्चय राजानो ए जाण, मंत्री महाजनशुं करे वाण ॥सु०॥ राजा नवि माने ए वात, निज नगर केम छोड्यो जात ॥ सु० ॥ ८ ॥ सहु मली विनवीउं राय, अमे करशुं एह उपाय ॥सु०॥ पुण्य तणो जेम छठो विभाग, पामे नरपति पाप विभाग ॥ सु० ॥ ए ॥ पाप तणुं फल अमने देव, तमे पुण्यवंत प्रभु नित्यमेव ॥ कंचन पुरुष कराव्यो एक, अलंकर्यो तेने सुविवेक ॥ सु०

॥ १० ॥ एम आलोच करी नर तेय, नाखे पुत्र आगे सो खेय ॥ सु० ॥ [illegible]
ब्राह्मण रंक, रुद्रदत्तशुं कहे निःशंक ॥ सु० ॥ ११ ॥ सातमो रुद्रदत्त देइने दान, सोनुं
प्रीति तेम वाधे वान ॥ सु० ॥ एम आलोच करी निज वाच, दीधो कनक लीधो तत-
काल ॥ सु० ॥ १२ ॥ चिंते रुद्रदत्त मन मोकार, अहो स्वारथी मीठो संसार ॥ सु० ॥
आव्यो कुंवर राजाने पास, दस्यो कुंवर पूछे नृप तास ॥ सु० ॥ १३ ॥ वच्चा मरणथी
नहीं तुज बीह, कारण दसवानुं कहे सीह ॥ सु० ॥ माता मारे सुतने जाम, पिता
करे पुत्र जाये ताम ॥ सु० ॥ १४ ॥ मात पिता पीड्यो नृप पास, नृप पीड्यो महाजन
न्यायाग ॥ सु० ॥ जो माता हाथे विष देय, तात गले ठरी वाहेय ॥ सु० ॥ १५ ॥

श्लोक—माता यदि विषं दद्यात् । पिता विक्रयते सुतम् ॥
राजा हरति सर्वस्वं । का तत्र प्रतिवेदना ॥ १ ॥

[illegible] मेरे तेहने पक्षी, मारण महाजन धन दे मक्षी ॥ सु० ॥ तो कहो केहवो
एने लोग, [illegible] करण तणो कोण जोग ॥ सु० ॥ १६ ॥ पोल नगरशुं नहीं मुज काज,
[illegible] कले महाराज ॥ सु० ॥ धराधवनुं धीरज देख, नयर देवी तुठी सुवि-

शेष ॥ सु० ॥ १७ ॥ कीधी कूख तणी तिहां वृष्टि, धरापतिने थइ सुख सृष्टि ॥ सु० ॥ सातमा खंडनी चोथी ढाल, नेमविजय कहे रंग रसाल ॥ सु० ॥ १८ ॥

दुहा.

आरक्षक वली आवीउं, चोथे दिवस अकाल ॥ रे नवि लाव्यो चोरने, एम पूछे नरपाल ॥ १ ॥ मारग मांहीं आवतां, आज अपूरव नाथ ॥ कथा एक में सांभली, सहु सांभलजो साथ ॥ २ ॥

ढाल पांचमी.

रे जाया तुज विण घडीय न जाय–ए देशी.

वन मांहीं एक हरणलीजी, निज बालकने संग ॥ हरी चरे निकरण तणांजी, जल पीए मनरंग ॥ सुजोधन सांभलजो मुज वात, मत करजो व्याघात ॥ सुजोधन० ए आंकणी ॥ १ ॥ वनने पासे डुंकडुंजी, नयर वसे मनोहार ॥ नयर तणा राजाननेजी, यदोला बाल कुमार ॥ सु० ॥ २ ॥ आहेडे वन एकदाजी, जइने मांड्यो जाल ॥ बीजा मृग नासी गयाजी, पास पड्यो एक बाल ॥ सु० ॥ ३ ॥ कोइक नृपना कुंवरनेजी, आणीने ते दीध ॥ बीजाने रमवा नवि दीएजी, तेणे सघले रद कीध ॥ सु० ॥ ४ ॥

पारधी तेमी पूछीयुंजी, कुरंग घणां छे केय ॥ वन तणा तहवतीयाकुंजी, ...
तेथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ व्याध वेष राये पहेरीयोजी, पारधीनो परिवार ॥ पीछे मृगने
पापीयोजी, व्याप्यो मोह अंधकार ॥ सु० ॥ ६ ॥ खणी अजामी खांतशुंजी, फोमी
सरोवर पाल ॥ बंधन सघले मांमीनेजी, ऊाख्यां मृगनां वाल ॥ सु० ॥ ७ ॥
पारधीने परशंसतोजी, हमहड नूप हसंत ॥ कोइक पंमित देखीनेजी, गाथा एम
नणंत ॥ सु० ॥ ८ ॥

गाथा—सवदिसंजहिं सलीलं । सवारणं च कुवसंथन्नं ॥
राया य सयंवादो । तहमियाणं कउं वासो ॥ १ ॥

मूरख नृप समज्यो नहींजी, बुद्धि घमी संसार ॥ धन पामवुं ते सोहेलुंजी, सम-
जण दोहिली नर नार ॥ सु० ॥ ९ ॥ पूछे वली दिन पांचमेजी, तिणहीज परे नूपाल ॥
आज कथा में सांनलीजी, कहे वसतुं कोटवाल ॥ सु० ॥ १० ॥ देश नेपाल पाटली-
पुरेजी, वस्तुपाल महीपाल ॥ कवित कला शुद्धि लहेजी, जाणे वालगोपाल ॥ सु०
॥ ११ ॥ नारतीनूषण तेहनोजी, मंत्रीश्वर कहेवाय ॥ राय कवित तेणे सुःखीयोजी,
वेठा महा कविराय ॥ सु० ॥ १२ ॥ रीसे नूपति धमहड्योजी, मंत्री बंधाव्यो ताम ॥

गंगा मांहीं नखावीयोजी, वहेतो जाये जाम ॥ सु० ॥ १३ ॥ पुण्य जोगे थल पामीनेजी, ह्ये विश्राम जे वार ॥ अकस्मात् पुर आवीयोजी, कहेवे करी पोकार ॥ सु० ॥ १४ ॥

यतः—जेण वीयावरोहन्ति । जेण सिज्झंति पायवा ॥
तस्स मज्झे मरिस्सांमि । जायं सरणं उज्जयं ॥ १ ॥

शीतल जल गुण ताहरोजी, निरमल ठे तुज देह ॥ अशुचि शुचि संगत हरेजी, थाये नहीं संदेह ॥ सु० ॥ १५ ॥ ताहरा गुण केता कहुंजी, तुं जीवन आधार ॥ नीच पंथ तुं आदरेजी, तो कोण तारणहार ॥ सु० ॥ १६ ॥ ठाना चर मूक्या हताजी, सांजल्युं तेणे सर्व ॥ राजाने आवी कहेजी, गिरुआ न करे गर्व ॥ सु० ॥ १७ ॥ निंदा करतो आपणीजी, कोमल करी प्रणाम ॥ जलथी तुरत कढावीनेजी, थाप्यो पहेले ठाम ॥ सु० ॥ १८ ॥ वात सुणावी एहवीजी, गयो जमदंड निज गेह ॥ सातमा खंडनी पांचमीजी, ढाल कही नेमे एह ॥ सु० ॥ १९ ॥

दुहा.

जब आव्यो तब पूछीयो, छठे दिन भूपाल ॥ तस्कर खबर नवि करे, दीसे वको बाचाल ॥ १ ॥ सूनां मंदिर शोधीयां, वेश्या तणां निवास ॥ जुआरी घर जोइयां, एम

नवि पामुं नास ॥ २ ॥ सरस कथा में सांभली, लाग्यो तेणे मन्न ॥ प्रभु पासे मुज आवतां, अधिको आव्यो दन्न ॥ ३ ॥

ढाल छठी.

में तोजी खणावी वावडी—ए देशी.

आज कथा में सांभली, सुणजो सहु सावधानरे; राज ॥ गजपुर नयर कुरु देशमां, नर कुबेर नयर समानरे ॥ रा० आ० ॥ ए आं० ॥ १ ॥ राज करे तिहां रंगशुं, नामे सुजड नरिंदरे ॥ रा० ॥ वरुवका राणा राजीया, वांदे चरण अरिवृंदरे ॥ रा० आ० ॥ २ ॥ परिताप रवि सारिखो, कोइ न खंडे आणरे ॥ रा० ॥ शीषे फुल जेम सहु धरे, दिन दिन पामते वानरे ॥ रा० आ० ॥ ३ ॥ क्रीडा वानर तेहना, निरभय नगर भ्रमंतरे ॥ रा० ॥ उपद्रव अति घणो करे, नवि कोइ वरजंतरे ॥ रा० आ० ॥ ४ ॥ विविध जातिनां वृक्ष तिहां, वेल अनेक प्रकाररे ॥ रा० ॥ पान फुल फले नयुं, उद्यान ठे सुखकाररे ॥ रा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ वनथी आवी वांदरा, तामी पी थया मत्तवाखरे ॥ रा० ॥ रक्षके वार्या नवि रहे, तोडे तरुवर साखरे ॥ रा० आ० ॥ ६ ॥ वनपालक आवी कहे, विनतडी अवधारोरे ॥ रा० ॥ बाग विणासे वांदरा, वनचर वेगे वारोरे ॥ रा० आ० ॥ ७ ॥ क्रीडा

कपि राये मूकीया, तेहने जीतण काजेरे ॥ रा० ॥ जइ मलीया निज जातिशुं, वृक्ष विशेष नांजेरे ॥ रा० आ० ॥ ८ ॥ असमंजस देखी एशुं, एम चिंते रखवालरे ॥ रा० ॥ गाथा एक तिहां भणी, सुणो ते कहुं प्रजापालरे ॥ रा० आ० ॥ ९ ॥

आमरप्पया जथ्थ मक्कमा । सुरारप्पया मुंमा ॥
अजारस्याविजया जथ । मूल विणठंतु कज्जं ॥ १ ॥

अपूरव वात संभलावीने, कही यमदंड गयो घेररे ॥रा० ॥ अणसमजु समजे नहीं, तेहनी शी करवी पेररे ॥रा०आ०॥१०॥ सातमे दिन सविशेषथी, मोडो आव्यो मांडरे ॥ रा० ॥ भ्रकुटी भाले चढावीने, भडक्यो भूत भराडरे ॥ रा० आ० ॥ ११ ॥ रे निर्लज्ज निरलक्षणा, सांभल माहरी वातरे ॥ रा० ॥ पारिपंथक पाम्या विना, केम छूटीश तरजातरे ॥ रा० आ० ॥ १२ ॥ त्रिक चाचर ने चोवटा, धूरत लंपटनां ठामरे ॥ वन गहवर में जोइआं, चोर न लाध्यो स्वामरे ॥ रा० आ० ॥ १३ ॥ पासे तुमारे आवतां, सुण्यो में एक विरतंतरे ॥ रा० ॥ कहुं हुं ते तुमने कथा, मन धरजो मतिवंतरे ॥ रा० आ० ॥ १४ ॥ देश सकलमां दीपतो, मोटो मालव देशरे ॥ रा० ॥ उज्जेणी नगरी भली, जितशत्रु नामे नरेशरे ॥ रा० आ० ॥ १५ ॥ गढ मठ मंदिर गोरडी, नदी

निर्वाण अनुपरे ॥ रा० ॥ शिव मंदिर जिन देहरां, सरगपुरी सम रूपरे ॥ रा० आ०
॥ १६ ॥ देवदत्त नामे कापडी, तीरथ करे सुविवेकरे ॥रा०॥ देश नगर वहोला नमी,
अचरिज देखी अनेकरे ॥ रा० ॥ रा० आ० ॥ १७ ॥ जरा पहोती जाणीने; उज्जेणी
थिर वासरे ॥ रा० ॥अकसठ तीरथ एणे कर्यां, सेवे बहु जन तासरे ॥ रा०आ०॥१८॥
आव्यो पर्व हवे एकदा, पाम्यो सरस आहारारे ॥ रा० ॥ खासचपणे लीधो घणो,
निशि थयो उदर विकाररे ॥ रा० आ० ॥ १९ ॥ जीरण तने जरे नहीं, नारी सबलुं
अन्नरे ॥ रा० ॥ मंदानल जेम मोटके, इंधणे शमे अगनरे ॥ रा० आ० ॥ २० ॥
उपचार कीधा अति घणा, नवि उपशमीउं रोगरे ॥ रा० ॥ गाथा एक कहे कापडी,
सांभलजो सहु लोगरे ॥ रा० आ० ॥ २१ ॥

गाथा—जया जीवंति विश्वानि, जया तुष्यन्ति देवता ।
तयाहं मारितो लोका, जातं सरणतोजयं ॥ १ ॥

एम नृपति प्रतिबोधवा, कही कथा करी बुद्धरे ॥ रा० ॥ समस्या मांहीं सम-
ज्यो नहीं, मोटो राजा मूढरे ॥ रा० आ० ॥ २२ ॥ सातमा खंडनी ए कही, ढाल

छठीए आव्यो आवासरे ॥ रा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजयनी पूरवा आशरे ॥ रा० आ० ॥ २३ ॥

दुहा.

आव्यो वासर आठमे, यमदंड सभा मोझार ॥ तेमज भूप पूछ्यो तुरत, तस्कर तणो विचार ॥ १ ॥ देव न लाध्यो एम सुणी, नरपति कीधो रोष ॥ परजाने कहे सांभलो, मारो नहीं कांइ दोष ॥ २ ॥ कथा कही मुज वंचीयो, सात दिवस पर्यंत ॥ दंड चोरनो देइने, एहनो करशुं अंत ॥ ३ ॥ कहे माजन यमदंडने, चोर तणुं कोइ चिह्न ॥ देख्युं होय तो दाखवो, मत करजो भय मन्न ॥ ४ ॥

ढाल सातमी.

वांगरीयानी वाइरे गरवडो–ए देशी.

वयण सुणी महाजन तणुंरे, एम बोले यमदंडरे ॥ परज सुणो ॥ अहिनाणी आण्या पछीरे, श्यो करशो तस दंडरे ॥ प० ॥ १ ॥ राजसुतादिक सहु कहेरे, जो होशे नरराजरे ॥ प० ॥ चोर तणो दंड एहनेरे, करशुं मूकी लाजरे ॥ ॥ प० ॥ २ ॥ निश्चय एहवो जाणीनेरे, काढो त्रणे वस्तरे ॥ प० ॥ सभा मांहे मेली

कहेरे, ए चोर मोटो मस्तरे ॥ प० ॥ ३ ॥ पावकीए नृप परखीउरे, पाटीए नरे
धानरे ॥ प० ॥ यमसूत्रि करी जाणीउरे, पुरोहित पापनिधानरे ॥ प० ॥ ४ ॥ बोलावो
चोरी करेरे, याम चीजनां खायरे ॥ प० ॥ दांत विणासे जीवनेरे, तिहां कोण आमो
थायरे ॥ प० ॥ ५ ॥ चमत्कार देखी चित्तमेंरे, चोर तणां अहिनाणरे ॥ प० ॥ जे मन
माने ते करोरे, जेम न करे ए कामरे ॥ प० ॥ ६ ॥ नृपति कपिल प्रधाननांरे, तुरत
थयां गुण श्यामरे ॥ प० ॥ सहुको कहे हवे तेम करोरे, आगोहे आमयवानरे ॥ प०
॥ ७ ॥ नगर थकी ते काढीनेरे, पाटीए निज निज पुत्ररे ॥ प० ॥ थाप्या महाजन
मंत्री करीरे, सहु राख्युं एम सूत्ररे ॥ प० ॥ ८ ॥

यतः–मित्रं शाठ्यपदं कलत्रमसती पुत्रं कुलध्वंसिनम् ।
मूर्खमंत्रिणमुत्सुकं नरपतिं वेश्यं प्रमादास्पदम् ॥
देवं रागयुतं गुरुं विषयिणं धर्मं दयावर्जितम् ।
यो नेवं व्रजति प्रमादवशतः स त्यज्यते श्रेयसा ॥ १ ॥

सुणी सुजोधन वारतारे, श्रेणिक करे प्रशंसरे ॥ प० ॥ धन्य प्रधान मति ताहरीरे,
तुं मुज कुल अवतंसरे ॥ प० ॥ ९ ॥ राजा कहे रजनी घणीरे, ठे हजी अभयकुमा-

रे ॥प०॥ कांइक अचरिज जोइएरे, जमीए नगर मोझाररे ॥प०॥१०॥ जमतां एकण चाचरेरे, दीठी माणस ठांढरे ॥ प० ॥ पुरुष नारी दीसे नहींरे, अचरिज थयुं मन मांहीरे ॥ प० ॥ ११ ॥ कहो प्रधान दीसे किशुंरे, लोहपुरो प्रभु चोररे ॥ प० ॥ अंजन बल अदृश्य थइरे, नगर पडावे सोररे ॥ प० ॥१२॥ जोइए ए किहां जाय ठेरे, कौतके चाल्या पीठरे ॥ प० ॥ अर्हद्दास घर आंगणेरे, वडे चमी वेठो धीठरे ॥ प० ॥ ॥ १३ ॥ अलक्ष थका वेहु जणारे, आवी वेठा हेठरे ॥ प० ॥ एहवे कुंदलता कहेरे, सुणो वयण मुज शेठरे ॥ प० ॥ १४ ॥ महोछव मूकी कौमुदीरे, देव पूजादिक कर्मरे ॥ प० ॥मांमी वेठा मेहेलमांरे, केणे लगाड्यो जर्मरे ॥ प० ॥ १५ ॥ परलोकार्थी कीजीएरे, ए करणी सुणी वामरे ॥ प० ॥ केणे दीठो परलोकनेरे, इहलोके सुख कामरे ॥ प० ॥ १६ ॥ परलोके सही पामीएरे, धर्म थकी सुख लक्षरे ॥ प० ॥ इहलोके फल एहवुंरे, में दीठुं प्रत्यक्षरे ॥ प० ॥ १७ ॥ कांता ते तुजने कहुंरे, धर्म तणां अवदातरे ॥ प० ॥ खंड सातमानी ए थइरे, ढाल सातमी नेम विख्यातरे ॥ प० ॥ १८ ॥

दुहा.

इणहीज नगरे राजवी, थयो प्रसेनजीत नाम ॥ तास पुत्र राजा अछे,

श्रेणिक गुणनो धाम ॥ १ ॥ जिनदत्त शेठ हुवा २६, ...
नंदन रूपपुरा तणो, सोहपुरो छे तेह ॥ २ ॥ सांभली चिंते चोर एम, कांइक मारा
वात ॥ करशे तेणो निश्चय सुणो, राजा ते पण धात ॥ ३ ॥

ढाल आठमी.

रामचंद्रके बाग चांपो मोरी राणोरी—ए देशी.

शेठ कहे सुण नार, रूपपुरो जे तस्कर ॥ चोरी करे अपार, साथे कोइ न सस्कर
॥ १ ॥ अंजन विद्या सिद्ध, नगर मांही परसीधो ॥ हाथ न आवे तेह, नृप उपाय
बहु कीधो ॥ २ ॥ जाणी ते दुःख साध्य, राजा एम पर्यंपे ॥ घरघर दीठ दीनार,
दीजे तसु एम जंपे ॥ ३ ॥ मांकडीए वली तास, एक विश्वो करी दीधो ॥
वृत्तिए थयो निर्चिंत, वानरने मद पीधो ॥ ४ ॥ काकण चडीय जरख,
कोण तेहने कहो पाखे ॥ नगरे फरे निःशंक, मन गमते पंथ माखे ॥ ५ ॥
नट विटने रहे साथ, सात व्यसनने सेवे ॥ द्यूत मांस परदार, मदिरा चोरी छेवे ॥६॥
जइ आहेडे जीव, जात जातना मारे ॥ वेश्याशुं बहु प्रीत, रात दिवस चित्त धारे
॥ ७ ॥ रूपपुरो एक दिन, नृप घर परिसर जावे ॥ रसवती सरस सुगंध, परिमल

सहना आव ॥ ॥ चित चिंतमा ॥ ॥ अहा अहा ॥ अंजन ॥ करी काइ दाय उपाय. अमी० ना [illegible] दिन ॥ [illegible] माला दाला [illegible] मास. नाव नातनां व्यंजन ॥ वेसी राजा साथ [illegible] जम नयन [illegible] अंजन [illegible] रसलपट थया चार. स्वाद ते न मूकाय ॥ [illegible] मतिसागर परधान. पूछे नृपने जाया । [illegible] अन्न अमृत तुम काय अषधा धीजी चिंता । [illegible] ॥ १३ ॥ तुजथी छानी वात, मारे नहीं [illegible] ॥ १४ ॥ पणुं जमु दिन दिन [illegible] मांहे कह्यु न जाये तेह ॥ १५ ॥ सांजला ॥ [illegible] अहंद्य थका नर काय. नोजन नक्की करेरी ॥ १६ ॥ [illegible] अंजन [illegible] आग ॥ मूका अकनां पान, फूल विखेर्यां विजाग ॥ [illegible] ॥ आप रह्या परधान अंजन अवसर आया ॥ चरणे चांप्यां पान, मंत्रीसर मन भाया ॥ १८ ॥ दीधा हडतर वार सुजट चिहुं दिश मूपया ॥ करीस तणा ज नाम पुम थयं ते फूक्या ॥ १९ ॥ नृप तणे संजोग, नयन अंजन सवि नाखो ॥ रूपपुरो प्रत्यक्ष, सघले सुजट दीठो ॥२०॥ पाठवाइ बांध, आण्यो

ढाल नवमी.

नमणी खमणी ने गयगमणी ए देशी.

चोर पड्यो सांजल व्यवहारी तु तो माग परउपगारी ॥ शियाले खाधा मुज चरण, कागे मस्तके पाड्या वरण ॥ १॥ पुरव हम कमाया पाप ते सवि उदय आव्यां आते ॥ पाणी मागुं वहु जण पास कोइ न पाये सहुका नास ॥ २ ॥ ए दीवसनो तरस्यो हुं हुं, तुजथी पाणी पीवा वांछु ॥ तु धरमी पाणी जो पाये तो मुज प्राण सुखे सही जाये ॥ ३ ॥ उपसमीन कमणा कहे शेठ वाणी हमणां तुजने पाशु पाणी ॥ हुं सेवा जउं तुं आप पच परमेष्ठी जप तु जाप ॥ ४ ॥ एम कहीने तम गंवज आव्यो, मुजने तेने पानक राख्या जब सुइने आवे वेहेला चोर प्राण तज्या ते पेहेला ॥ ५ ॥ महा मंत्र मन निश्चल ध्याया पहेले देवलोके देवगति पाम्यो ॥ जब सेठने आव्यो मुज नान चार तणा दीधां ते पान ॥ ६ ॥ मुजने घरनो दुःख दीधो, पोते देहरे काउस्सग्ग कीधो ॥ माणस ज मूक्यानां ठाने, तेणे वात कही राजाने ॥ ७ ॥ शेठ तणे पर मूढ़ा धारा काप्या नृप कहे जइने मारो ॥ दोड्या सेवक मारवा सही, अवधिनाण दीठो सुर तवही ॥ ८ ॥ आए सोनो ठे उपकारी,

एणे माहरी दुरगति वारी ॥ मारा गुरुने ए दुःख देशे, हारे रह्यो दंभ धरीने वेषे ॥ ए ॥ एटले जण राजाना आव्या, हांक्या पेसण मांहि नव पाव्या ॥ रोष करी हणवा ते मुंक्या, देवे निज दंभे ते छुट्या ॥ १० ॥ पछी नृपे मूक्यो कोटवाल, तेहने पण सुरे देइ गाल ॥ दंडे हणीने वली ते पाड्यो, नृप सुणीने अति घणुं त्राड्यो ॥ ११ ॥ पोते बल वाहन लेइ चाल्यो, जब नजरे ते देवे निहाल्यो ॥ मारी हांक कटक सबी भागो, प्राण लेइने राजा नागो ॥ १२ ॥ एकले सकल नगर एम जीत्युं, मतिसागर मंत्रीसरे चिंत्युं ॥ माणस रूप नहीं सुण नृप, ए तो दीसे देव सरूप ॥ १३ ॥ भूप क्षेप बल वाकुल दीधो, विनति करीने परगट कीधो ॥ केणे अपराध कर्यो तुज स्वामि, नाखो नाम कहुं शीर नामी ॥ १४ ॥ अविवेक ए राजा ताहारो, सज्जन शिरोमण धर्मगुरु माहारो ॥ जिनदत्त शेठने निरापराध, करवा मांगी अति आबाध ॥ १५ ॥ तेणे हुं नगर लोकने मारुं, माहारा गुरुनी पीडा वारु ॥ तुम गुरु शेठ थयो केम देव, पूरव भव दाख्यो तव देव ॥ १६ ॥ धन्य तुं देव मंत्रीसर बोले, जन्मांतर उपगारी तुं तोले ॥ पहेली वय पाणी जे पीधुं, अंतकाले श्रीफल ते दीधुं ॥ १७ ॥

यतः—प्रथमवयसि पीतं तोयमल्पं स्मरंतः ।
शिरसि निहितभारा नालिकेरा नराणाम् ॥
उदकममृतकल्पं दद्युराजीवितांतं ।
न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति ॥ १ ॥

नगर तणुं टालो दुःख देव, जे कह्यो ते हवे कीजे सेव ॥ सहुको शरण करो जिनदत्तनुं, जो मन छे तुमने जीवितनुं ॥ १८ ॥ राजा प्रजा सहु देहरे आवे, पगे लागी अपराध खमावे ॥ हाथीपर बेसारी शीषे, नगर मांहीं आण्यो अवनीशे ॥ १९ ॥ उठ्या सुभट थयो जयकार, सोवन वृष्टि करी अति सार ॥ रतन त्रण अमुलक दीधां, शेठ तणां मनवंछित सीधां ॥ २० ॥ सहुको लोक करे परशंसा, धर्म तणी न करे कोइ खींसा ॥ देखो धर्म तणां फल वीर, नवमी ढाल नेमे कही सधीर ॥२१॥

दुहा.

रतन लेइ ते भुज पिता, शेत्रुंजय गिरनार ॥ चैत्य करावी अजिनवां, तिलक चढाव्यां सार ॥ १ ॥ प्रसेनजीतने आपीयां, रतन त्रण उदार ॥ माहरा गुरुनो भक्त ए, ए मन करी विचार ॥ २ ॥ लोहपुराने वली दीयां, रतन त्रण सुखकार ॥ तेणे भूते ते

हारीयां, सुर गयो स्वर्ग मोझार ॥ ३ ॥ केणे दीक्षा केणे बार व्रत, केणे समकित सु-
विशेष ॥ बालपणे दृढ हुं थयो, धरम तणां फल देख ॥ ४ ॥ कहे सघली साचुं कह्युं,
कुंदलता कहे जूठ ॥ राजा श्रेणिक चिंतवे, अहो नारी ए झूठ ॥ ५ ॥ मुज पि-
ताना राजमां, ए थइ सघली वात ॥ पापण ए माने नहीं, पूछीश हुं परभात ॥ ६ ॥
शेठ कहे जयश्री प्रते, सुण गोरी गुणराश ॥ तें दीठुं कंइ सांभल्युं, धर्मफल तेह
प्रकाश ॥ ७ ॥

ढाल दशमी.

चोपाइनी देशी.

कहे पहेली नारी सुणो कंत, नगरी उज्जेणीए नृप गुणवंत ॥ संग्रामसुर नामे
जयकारी, शेठ रिषभसेन समकितधारी ॥ १ ॥ तेहने घर जयसेना नारी, शील
गुणे सीता अवतारी ॥ समकितवंत सदा सत्य संधा, कर्म वशे करी ते छे वंध्या ॥
२ ॥ एकदा नाह भणी ते भाखे, पुत्र विना कोण वंशने राखे ॥ एक घडीमां घडी
जल बुडे, नंदन विण नाम क्षणमां रुडे ॥ ३ ॥ बीजी नारी तणो विवाह, कंत करो
करी मन उच्छाह ॥ वय परिणत थइ सुण नारी, बात म काढे ए मुख वहारी ॥

४ ॥ लोक हसे कहे बुढो वेख, वरघोडे चढीउं थइ ठेख ॥ संतति काजे नहीं कोइ
दूषण, पुत्र थया पछी थाशे भूषण ॥ ५ ॥ जोरे इभ्य तणी एक बेटी, परणावी सुं-
दरी गुण पेटी ॥ सुंदरीने सोंपी घर भार, जयसेना करे धर्म व्यापार ॥ ६ ॥ सुंद-
रीने जन्म्यो सुत सार, बांझीयानां उघड्यां घरबार ॥ पीहर सुंदरी पहोती जाम,
बंधूसरी माता पूछे ताम ॥ ७ ॥ सुखणी तुं छे माहरी जाइ, शोक्य संकटमां केशो
सुख माइ ॥ शोक उपर दीधी तुमे जाणी, पूछवुं घर पीने पाणी ॥ ८ ॥ शोक मांही
घाखी सुख इच्छा, माथुं मुंडावी नक्षत्रनी प्रीछा ॥ जयसेना मुज घणुं संतापे, मा-
हारी छांम देखे तिहां कापे ॥ ९ ॥ भंभेरी मूक्यो भरतार, दासीथी अवगणे अ-
पार ॥ बंधूसरी सुणी ए वचन, जंपे पुत्री धीरज धर मन ॥ १० ॥ जयसेनानुं जी-
वित हरशुं, तुजने सुख थाशे तेम करशुं ॥ एहवे एक जोगी तिहां आव्यो, बंधूसरी
मन अधिको सोहाव्यो ॥ ११ ॥ उठी उभी थइ चरणे लागी, सरस भिक्षा दीधी अनु-
रागी ॥ संतोष्यो आसन बेसारी, मुज घर भिक्षा लेजो हितकारी ॥ १२ ॥ आवे ते
दिन दिन आवासे, नवि रसवती आपे उल्लासे ॥ भगते रीझयो जोगी बोले, ताहरे

कोइ न माइ तोखे ॥ १३ ॥ मन माने ते हवे तुं माग, वंधूसरी चिंते मुज लाग ॥ गद्गद साद पुत्री विरतंत, जयसेनाने मारो महंत ॥ १४ ॥ कालीचोदश कहे कपाली, विद्या साधीश समरीश वाली ॥ हरखी वंधूसरी मन कूनी, दशमी ढाल नेमे कही रुनी ॥ १५ ॥

ढुहा.

कालीचोदशने दिने, जोगी जइ मसाण ॥ वेताली देवी तणुं, समरण करे सुजाण ॥ १ ॥ प्रत्यक्ष थइ देवी कहे, वच्छ समरी श्ये काज ॥ जयसेनाने मारो जइ, करो वेगे ए काज ॥ २ ॥ देवी आवी मारवा, कर साही करवाल ॥ सामुं जोइ नवि शकी, पोसह व्रत रखवाल ॥ ३ ॥ त्रण प्रदक्षणा देइने, आवी जोगी पास ॥ तिमहिज पाछी मोकली, जयसेना आवास ॥ ४ ॥ वार त्रण एम देवता, आवी फरी मसाण ॥ जोगी चिंते मुजने, मारे हवे निदान ॥ ५ ॥ जयसेना अथ सुंदरी, वेहुमां विरुइ जेह ॥ मारो माता तेहने, म करो कोइ संदेह ॥ ६ ॥ जइने मारी सुंदरी, देवीए ततकाल ॥ परने चिंते पाडुउं, तेना एवा हाल ॥ ७ ॥

ढाल अगीआरमी.

इवीसा जादव इव करी इरीय मनावीए हो साख–ए देशी.

जयसेनाए पारीयोरे साख, पोसह व्रत परजातरे॥ शासनदेवी॥ मूइ दीठी सुंदरीरे साख, इा केणे कीधी घातरे ॥ शा० ॥ सार करो मुज सामनीरे साख॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साच जूठ कोण जाणशेरे साख, शोक्या तणो व्यवहाररे ॥शा०॥ सहु कहेशे मारी होशेरे साख, कलंक तणो अवताररे ॥ शा० सा० ॥॥२॥ शासनसुरी आराधवारे साख, काउस्सग्ग कीधो सारे ॥ शा० ॥ परगट थइ देवी कहेरे साख, म करो दुःख अगारे ॥ शा० सा० ॥ ३ ॥ वंधूसरी हरखित थकीरे साख, जमाइने घर जायरे ॥ शा० ॥ जाण्युं जयसेना मूइ हशेरे साख, सुंदरी देखी दुःख थायरे ॥ शा० सा० ॥ ४ ॥ रोती माथुं कूटतीरे साख, आकंद करती अपाररे ॥ शा० ॥ जयसेनाए मारी सुंदरीरे साख, जइ पोकारी दरबाररे ॥ शा० सा० ॥ ५ ॥ जयसेनाने तेडवारे साख, माणस मूके रायरे ॥ शा० ॥ तब शासन रखवाखीकारे साख, जोगीने उपायरे ॥ शा० सा० ॥ ६ ॥ जयसेना मोटी सतीरे साख, एहवां न करे कामरे ॥ शा० ॥ राय आगल जोगी कहेरे साख, सोने न लागे श्यामरे ॥ शा० सा० ॥ ७ ॥ वंधूसरीए मु-

जनेरे लाल, जमाडी जली जातरे ॥ शा० ॥ प्रारथना एहवी करीरे लाल, जयसेना करो घातरे ॥ शा० सा० ॥ ८ ॥ में वेताली आराधीनेरे लाल, मूकी मारण तासरे ॥ शा० ॥ कोण मारे पुण्यवंतनेरे लाल, सुंदरी मारी पापराशरे ॥ शा० सा० ॥ ९ ॥ एहवे शासनदेवतारे लाल, आवी जाखे साखरे ॥ शा० ॥ वचन मल्यां वेउ सारिखांरे लाल, वलतुं राजा जाखरे ॥ शा० सा० ॥ १० ॥ वंधूसरी देश वाहरेरे लाल, काढो करे कुकमरे ॥ शा० ॥ आज पछी कोइ एहवांरे लाल, न करे अशुभ कामरे ॥ शा० सा० ॥ ११ ॥ रिपनसेननी नारीनेरे लाल, महोच्छव करे महाराजरे ॥ शा० ॥ निज मंदिर पोहोती करीरे लाल, सिध्यां वंछित काजरे ॥ शा० सा० ॥ १२ ॥ सोवन वृष्टि करी तिहांरे लाल, महिमा कीधो देवरे ॥ शा० ॥ साचो धरम संसारमांरे लाल, सहु करजो नित्यमेवरे ॥ शा० सा० ॥ १३ ॥ राजा समकित पामीउंरे लाल, धरम तणां फल देखरे ॥ शा० ॥ हुं धरमे निश्चल थइरे लाल, ते देखी सुविशेषरे ॥ शा० सा० ॥ १४ ॥ शेठ सहित व जामनीरे लाल, कहे साचुं कह्युं एहरे ॥ शा० ॥ लता कहे मातु सहीरे लाल, जाण्युं कृत्रुं तेहरे ॥ शा० सा० ॥ १५ ॥ श्रेणिकादिक चिंतवेरे लाल, जुओ हवीली नारेरे ॥ शा० ॥ सातमो खंड पूरो थयोरे लाल, नेमविजय सुख-

कारे ॥ शा० सा० ॥ १६ ॥ हीरविजय सूरि तणोरे लाल, शुभविजय तस शिष्यरे ॥ शा० ॥ भावविजय कवि दीपतारे लाल, सिद्धि नमुं निशदिसरे ॥ शा० सा० ॥ १७ ॥ रूपविजय रंगे करीरे लाल, कृष्णविजय कर जोडरे ॥ शा० ॥ रंगविजय गुरु माहरारे लाल, नावे कोइ पहनी होडरे ॥ शा० सा० ॥ १८ ॥ सातमा खंड तणी कहीरे लाल, अग्यारमी ढाल रसालरे ॥ शा० ॥ नेम कहे भवियण तुमेरे लाल, सांभलो वालगोपालरे ॥ शा० सा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे सप्तम खंड संपूर्ण.

दुहा.

पूछे चंदनश्री प्रते, अर्हद्दास उल्लास ॥ नामनी तें नगवंतनो, लह्यो धर्म तेम जास ॥ १ ॥ कहे नारी कपीथपुरे, अरिमर्दन राजान ॥ सोमदत्त ब्राह्मण वसे, दारिद्र तणो निधान ॥ २ ॥ तेहनी नारी सोमीला, ताप थकी मूइ सोय ॥ रति नवि पामे द्विज किहां, करे दुःख बहु रोय ॥ ३ ॥ सोमदत्त वनमां गयो, मह्यो साधु महाजाग ॥ तेहने वचने उपन्यो, निर्नय मन वैराग ॥ ४ ॥

यतः– नवश्रोतविलेऽमुष्मिन् । कलेवरगृहे किल ॥
जीवस्य वसतः काल–व्यालतः कुशलं कियत् ॥ १ ॥

श्रावकनां व्रत आदरी, आव्यो नगर मोझार ॥ धर्म प्रजावे धन मल्युं, तज्या पाप व्यापार ॥ ५ ॥ वाहवने माने घणुं, व्यवहारी धनपाल ॥ स्वामी जाणी आपणो, करे सार संजाल ॥ ६ ॥ रोगाकुल थयो एकदा, ब्राह्मण ते सोमदत्त ॥ तेडावी धनपालने, कहे बांधव सुण वत्त ॥ ७ ॥

ढाल पहेली.

मुज लाज वधारो रे—ए देशी.

ब्राह्मण कहे वातरे, सुण शेठ सुजातरे, दिन रयणी न जात चिंता छे मुजनेरे ॥ ते टालो भाइरे, जेम सद्गति थाइरे, तुं परम सखाइ कहुं तुं तुजनेरे ॥ १ ॥ चिंता हेतु दाखोरे, कांइ मनमां न राखो, जे मुजने भाखो ते करशुं सहीरे ॥ सोमदत्त वली बोलेरे, तुं पुरुष अमोलेरे, तारे कोण तोले आवे इण महीरे ॥ २ ॥ सोमा मुज कन्यारे, गुण लक्षणे धन्यारे, नहीं एवी अन्या सोपुं तुज भणीरे ॥ ब्राह्मण नहीं खीणोरे, जिन धर्मे लीणोरे, जोइ प्रवीणो करजो एहनो धणीरे ॥ ३ ॥ शेठे कह्युं वारुरे, परमेसर सारुरे, एम करशुं विचारी आणी निज मंदिरेरे ॥ द्विज सरगे पहोतरे, जिहां सुख वहोतरे, शेठ गुणयुत पाले पुत्रीनी परेरे ॥ ४ ॥ संगति साध्वीनीरे, साते धाते भीनीरे, जिन धरमे लीनी करती जिन पूजनारे ॥ दीठी रुद्रदत्तेरे, लागी तस चित्तेरे, निज मित्रने पूछे ए केहनी धूआरे ॥ ५ ॥ मित्र कहे सुण भाइरे, सोमदत्तनी जाइरे, धनपाल घरे आइ वाधे सुंदरीरे ॥ रुद्रदत्त कहे परणीरे, करीश हुं परणीरे, ए अनोपम तरुणी सोवन मुद्रीरे ॥ ६ ॥ हुती वमजागीरे, दीक्षिता-

विक मागीरे, हृथा बहु रागी जिन विण थइ नहीरे ॥ तुं तो जुआरार, सात व्यस-
नतो धारीरे, केणी परे अविचारी पामशे एहनेरे ॥ ७ ॥ बोले अहंकारीरे, जो जो
मति मारीरे, न परणुं ए नारी तो कहेजो पशुरे ॥ चाल्यो पर हीचेरे, एक
साधु समीपेरे, सपखी विधि वीप जेम श्रावक शिशुरे ॥ ८ ॥ फरी आव्यो
वेगेरे, मनने उद्वेगेरे, देहरे संवेगे आवी पूजा करीरे ॥ गाये गीत रसा-
खरे, चोखी कहे वाखरे, देखी धनपाल पूछे उखट धरीरे ॥ ९ ॥ किहांथी तुमे
आव्यारे, कोण जाते कहाव्यारे, मनमां बहु नाव्या वाणारसी नयरे वसुंरे ॥ मा-
पाये काखरे, कीधो अकाखरे, ब्राह्मण दयाल अनुं कहुं केशुंरे ॥ १० ॥ धीरज मन
धरतारे, तीरथ जात्रा करतारे, एणी परे फरतां एक दिन मुनिवर मल्योरे ॥ तेणे
नाख्यो धर्मरे, जेहथी शिव शर्मरे, सुणी जिनधर्म मुज मिथ्या मत टल्योरे ॥ ११ ॥
चैत्यवंदन काजरे, आव्यो इहां आजरे, अवधारो महाराज शेठ कहे अशुंरे ॥ घर
आवो देवरे, करशुं तुम सेवरे, सोमा ततखेव तुजने परणावशुंरे ॥ १२ ॥ विष सरी-
खी वामरे, तेहशुं नहीं कामरे, तस लीजे नहीं नाम ठग एम कहेरे ॥ आग्रहअति
कीधरे, जाण्युं फारज सीधरे, परणीने परसीध संधा निरवहीरे ॥ १३ ॥ जुवारी जेथरे,

जाइ जाखे तेथरे, सहु आवो एथ कंकण बांधी आवीउरे ॥ कीधो परपंचरे, हुवो रोमंचरे, जुउं मुज संच सोमा घर लावीउरे ॥ १४ ॥ करे के तव प्रशंसारे, कर जोडी नमस्यारे, न करे कोइ खींसा ते सुख जोगवेरे ॥ पूरे मन आशरे, नर-नारी आवासरे, सवि विलास रयणी दिन जोगवेरे ॥ १५ ॥ गयो केतो कालरे, वली तेहज हवालरे, नवि जाये ढाल जेहने जे पमीरे ॥ प्रकृति जासरीररे, विचले नवि धीररे, पहेली सुणो वीर ढाल खंड आठमे जमीरे ॥ १६ ॥

दुहा.

मरजादा पाली जली, दिवस केटला सीम ॥ द्यूतासक्त वली थयो, श्यो कपटीनो नीम ॥ १ ॥ सुमित्रा वेश्या सुता, कामलता तसु नाम ॥ तेहशुं विलसे रातदिन, तजी आपणी वाम ॥ २ ॥ सोमा मनमां दुःख धरे, नयणे मूके नीर ॥ सुणी वात शेठे सहु, दे पुत्रीने धीर ॥ ३ ॥ बेटी दुःख कीजे नहीं, दीजे कर्मने दोष ॥ सुख दुःख सरज्यां पामीए, श्यो कीजे हवे शोष ॥ ४ ॥ आशा तजी जरतारनी, धरी बेठी धर्म ध्यान ॥ इह जव परजव जेहथी, सुख पामशे निरवाण ॥ ५ ॥ मानी वात पिता तणी, एक प्रासाद कराव ॥ प्रतिमा श्री शांतिनाथनी, थापी मनने जाव ॥ ६ ॥ प्रतिष्ठा कीधी

पछी, संघ जगत करी सार ॥ सुमित्रा कामलता सहित, तेड्यो रुड जुवार ॥ ७ ॥ भोजन भलां करावीने, दीधां फोफल पान ॥ भजे न उत्तम अधम पाप, चंड तणो अहिनाण ॥ ८ ॥

यतः–निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु । दयां कुर्वंति साधवः ॥
न हि संहरति ज्योत्स्नां । चंद्रश्चांडालवेश्मनि ॥ २ ॥

ढाल बीजी.

काची कलीय म तोड सखिंगरी मालीयां, पीयु चाल्या परदेश वेली होती मालीयां–ए देशी.

सोमानुं रूप देखी सुमित्रा शिर धूणे, चिंते चित्त मांही एम अहो ए किम बने ॥ एहवी सुंदर नारी तजी केम पापीए, अथवा के तव बुद्धि विचारे नवि हीये ॥ १ ॥ काम एह कर्युं जे पुत्रीने जायगे, जो रहे जीवती एह थाये शल्य जायगे ॥ एम विचारी फूल सर्प घाली घडे, कामलता लेइ साथ आवी आदर वडे ॥ २ ॥ सरस कुसुमनी माल आणी में जोवती, पूजी एणे जिनराज पापमल धोवती ॥ सरलपणे करस्पर्श कर्यो घटे जेटले, भुजंगम फूलमाल थयो ते तेटले ॥ ३ ॥ लेइ सुगंधी

फूल जिनेश्वर अरचीया, केसर चंदन अगर कपूरे चरचीया ॥ कामलता गले हार पाड्यो रमत मिषे, नाग डस्यो ततकाल पडी भोंय तसे ॥ ४ ॥ मृत पुत्रीने देख अपा कूटे हेयुं, आक्रंद करे अपार दैव तें शुं कीयुं ॥ करे विलाप अनेक नयणे आंसु झरे, पट सरप लेइ वेगे आवी नृप मंदिरे ॥ ५ ॥ करती हाहाकार कहे पोकार करी, देव सुणो अरदास सोमा अति मद भरी ॥ माहरी बाल हवे हुं केम करुं, हुं मोशी निराधार जीवित केणी परे धरुं ॥ ६ ॥ सोमा तेमावी राय कहे कुल खांपणी, कामलताने कांइ मारी तें पापिणी ॥ कहे सोमा महाराज वचन अवधारीए, जयणा सूक्ष्म जीव थूल केम मारीए ॥ ७ ॥ भांगी पूरव वात सोमाए सवी कही, देखाड्यो पट साप मित्रा अवसर लही ॥ पंच वरण फूलमाल सोमा हाथे धरी, मित्रा काले हाथ अहि थाये फरी ॥ ८ ॥ वार त्रण एम नाग कुसुममाला हुवो, कहे सजा सहु कोय सोमा साची जुओ ॥ देखी चमक्यो भूप नहीं ए मानवी, प्रत्यक्ष देवी तेह एम मन आणवी ॥ ९ ॥ कर जोडी करे राय सोमाशुं विनति, कामलता जीवाडो अहो तुम महा सती ॥ मंत्र नवकार प्रभाव मूर्छा मटी गइ, सती तणे करस्पर्शे उठी बेठी थइ ॥ १० ॥ सुमित्रा निज करतूक प्रकाशी शुभ मते, धर्म तणां फल देख लह्यो धर्म भूप ते ॥

रुद्रदत्तादिक अवर तिहां श्रावक थया, तेणे नामे सुणी स्वामि पाय सेव मुज [illegible]
॥ ११ ॥ शेठ शेठाणी सर्व कहे साचुं कह्युं, कुंदलता कहे जूठ में नवि सह्युं ॥ श्रे-
णिक अभयकुमार वचन ते सांभली, चिंते हवीली नार न दीसे ए नली ॥ १२ ॥
देशुं दंड प्रभात राते नवि बोलीए, वेचीने निज उंघ उजागरो कोण लीए ॥ आ-
नमे खंडे दास बीजी ए सोहती, कहेशे मित्रश्री वात नेम मन मोहती ॥ १३ ॥

दुहा.

अर्हद्दास मित्रश्री प्रते, पूछे बहु धरी प्रेम ॥ केम प्राप्ति थइ धर्मनी, सा पामी
कहे तेम ॥ १ ॥ वच्छ देशे नगरी वली, कोसंबी सुख थान ॥ धनंजय राजा तिहां,
सोमशर्मा परधान ॥ २ ॥ मासोपवासी एकदा, आव्यो साधु उद्यान ॥ तास प्रभावे
पन थयां, नवां फूल फल पान ॥ ३ ॥ मासखमणने पारणे, नगरमां ऋषिराय ॥ आ-
व्या बोहोरण देखीने, प्रणमे मंत्री पाय ॥ ४ ॥ शुद्ध पान असने करी, प्रतिलाभ्यो
धरी भाव ॥ पंच दिव्य प्रगट थयां, पात्र दान प्रस्ताव ॥ ५ ॥ विस्मय पाम्यो वेगशुं,
आव्यो जिहां अणगार ॥ पूछे वे कर जोडीने, भगवन् कहो विचार ॥ ६ ॥ अभि-
होत्री दिक्षित तणी, दीधां में बहु दान ॥ कनक नाग तिल अश्व रथ, दासी मही

परधान ॥ ७ ॥ कन्या कपिला धेनु वली, महादान दश एह ॥ पण अतिशय दीठो नहीं, शुं कारण छे तेह ॥ ८ ॥

ढाल त्रीजी.

नणदलनी देशी.

मुनिवर कहे महेता सुणो, असंजति एह अजाण ॥ शुभ मन ॥ छ कायनी हिंसा करे, तेणे फल नहीं मन आण ॥ शु० मु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ऊंखर खेत्रे वावीयो, जेम निष्फल थाये बीज ॥ शु० ॥ तेम दीधुं कुपात्रने, ते पण गणो तिमहीज ॥ शु० मु० ॥ २ ॥ ज्ञानवंत क्रिया करे, ते जाणीजे सुपात्र ॥ शु० ॥ तेहने दीधुं बहु फले, तप करे निरमल गात्र ॥ शु० मु० ॥ ३ ॥

यतः—एकवापीजलं सिक्त—मात्रे मधुरतां व्रजेत् ।
निंबे च कटुतां याति । पात्रापात्रनियोजनात् ॥ १ ॥

पूछे मंत्री मुनि प्रते, चित्त कोमल नहीं धीठ ॥ शु० ॥ माहारी परे बीजे केणे, दान तणां फल दीठ ॥ शु० मु० ॥ ४ ॥ विश्वभूति ब्राह्मण तणी, कथा कहे मुनिराज ॥ शु० ॥ देश वैराट दक्षिण दिशे, सोमब्रह्म तिहां राज ॥ शु० मु० ॥ ५ ॥ ब्राह्मणने माने घणुं,

भक्ति करे नित्यमेव ॥ शु० ॥ वेगो सत्ता मांहे एम कहे, वामव जगमा देव ॥ शु० मु० ॥ ६ ॥ वित्त सफल करवा भणी, बहु सुवरण नामे जाग ॥ शु० ॥ ब्राह्मण पासे मंगावीयो, पुण्य उपर धरी राग ॥ शु० मु० ॥ ७ ॥ जगन करे तिहां हुकमो, विश्वभूति रहे विप्र ॥ शु० ॥ खसे जइ जब जाचीने, सांचुं करे ते लिप्र ॥ शु० मु० ॥ ८ ॥ चार पींमी करे तेहनी, पहेली हुतवह पोख ॥ शु० ॥ बीजी अतिथि त्रीजी पोते, चोथी नारी संतोष ॥ शु० मु० ॥ ९ ॥ आव्यो मुनिवर गोचरी, विश्वभूतिने बार ॥ शु० ॥ बीजे पिंमे निमंत्रीयो, नवि लीधो अणगार ॥ शु० मु० ॥ १० ॥ मुज पिंमी ल्यो स्वामिजी, सचित्ते मिश्रित दीठ ॥ शु० ॥ ते पण मुनि लीधी नहीं, नारी बोले मीठ ॥ शु० मु० ॥ ११ ॥ आहार माहारो प्रभु दीजीए, ए छे मोटुं पात्र ॥ शु० ॥ आज सफल दिन आपणो, जंगम तीरथ जात्र ॥ शु० मु० ॥ १२ ॥ आहार लीधो मुनिए सूजतो, हेम रतन थइ वृष्टि ॥ शु० ॥ नर नारी बेहु थयां, सुधां समकितदृष्टि ॥ शु० मु० ॥ १३ ॥ नरपतिने जइ द्विज कहे, देखो जगन फल देव ॥ शु० ॥ कनक धारा वूठी घणी, नृप भणे ततखेव ॥ शु० मु० ॥ १४ ॥ में धन दीधुं तुम भणी, जइने ल्यो तुमे तेह ॥ शु० ॥ त्रीजी ढाल खंड आठमे, नेमविजय कहे एह ॥ शु० मु० ॥ १५ ॥

दुहा.

धन लेवा ब्राह्मण गया, तव ते थया अंगाल ॥ क्षण एक रहीने वली ग्रहे, जव थाये ते व्याल ॥ १ ॥ वृद्धे भूपतिने कह्युं, नहीं जगन फल नाथ ॥ विश्वभूति कृत दान फल, इह भव परभव साथ ॥ २ ॥ भूप भणे विश्वभूतिने, हुं आव्यो तुज गेह ॥ जगन्य अध फल लेइने, दान अध फल देह ॥ ३ ॥ विश्वभूति बोले हसी, दान फल न देवाय ॥ देव तणुं वित्त ल्यो तमे, अध फल यो कहे राय ॥ ४ ॥ विश्वभूति वलतुं कहे, सांभल राय सुजाण ॥ स्वर्ग मुक्ति सुख जेहथी, ते कोण वेचे दान ॥ ५ ॥ देखी सत्य नृप द्विज तणुं, बुध्यो आपे रिद्ध ॥ दरिद्र गयुं विश्वभूतिनुं, जिहां साहस तिहां सिद्ध ॥ ६ ॥ भूपति पूछे मुनि प्रते, दान केतां कहो स्वाम ॥ त्रिधा दान मुनिवर कहे, दीधे सीजे काम ॥ ७ ॥

ढाल चोथी.

नयरो नगीनो मारो, हाररो हीरो मारो, केसररो नीनो मारो साहेबो,
राजेंद्र मारा, घडी एक रहो जूकाय हो–ए देशी.

शास्त्रे दान ते जाणीए, राजेंद्र मारा, रा० लिख लिखावी ग्रंथ हो ॥ साध भणी

ते दीजीए, रा० वावे मुक्तिनो पंथ हो ॥१॥ ए आंकणी ॥ दान जावक जन दीजीए, रा० दाने दोखत थाय हो ॥ जश कीरति इह जव लहे, रा० परजव मुगति जाय हो ॥ दा० ॥ २ ॥ अजयदान नर जे दीए, रा० तेहने जय नवि कोय हो ॥ इह जव परजव जाणजो, रा० शिवपुरनां सुख होय हो ॥ दा० ॥ ३॥ आहार उंपध वस्त्रे करी, रा० थिर धरमे थापीजे हो ॥ धरम थयो जाव दानथी, रा० आठ करम कापीजे हो ॥ दा० ॥ ४ ॥ कर नीचा जिनवर करे, रा० अन्नदान परधान हो ॥ तेहनी उपम कुण कहुं, रा० दीजे देइ मान हो ॥ दा० ॥ ५ ॥

यतः—ददस्वान्नं ददस्वान्नं । ददस्वान्नं युधिष्ठिर ॥
अन्नदः प्राणदो लोके । प्राणदः सर्वकामदः ॥ १ ॥
रोगिभ्यो भेषजं देयं । रोगा देहविनाशकाः ॥
देहनाशे कुतो ज्ञानं । ज्ञानाजावे न निवृत्तिः ॥ २ ॥

वस्त्र विविध प्रकारनां, रा० हित करी आपे हाथे हो ॥ तेहनुं फल सद्गुरु कहे, रा० छत्र धरावे माथे हो ॥ दा० ॥ ६ ॥ दान त्रण एम सांजली, रा० पृथ्वीपति प्रतिबुद्ध हो ॥ विश्वभूति पण तिहां थयो, रा० व्रतधर श्रावक शुद्ध हो ॥

दा० ॥ ७ ॥ सोमशर्मा मंत्रीश्वरे, रा० कथा सुणी नीम लीध हो ॥ लोहायुध धरुं नहीं, रा० काठ कृपाणज कीध हो ॥ दा० ॥ ८ ॥ पिशुने काठ कृपाणनी, रा० नृपतिने वात ते जापी हो ॥ सभा मांहे नृप वेसीने, रा० असिनी वात प्रकाशी हो ॥ दा० ॥९॥ खड्ग जोइ क्षत्रिय तणां, रा० मंत्रीनो असि माग्यो हो ॥ खल विखसित जाएयुं खरुं, रा० भरम सही मुज भांग्यो हो ॥ दा० ॥ १० ॥

यतः—परवादे दशवदनः । पररंध्रनिरीक्षणे सहस्राक्षः ॥
सधृती वित्तहरणे । बाहुसहस्रार्जुन पिशुनः ॥ १ ॥

साचो धरम जो माहरो, रा० तो लोहमय असि थाजो हो ॥ एम कही राजाने दीयो, रा० संकट दूरे जाजो हो ॥ दा० ॥ ११ ॥ कोश थकी राये काढीउं, रा० लोह झलहलतो दीठ हो ॥ खल साहमुं जोइ कहे, रा० केम जूठुं कह्युं धीठ हो ॥दा०॥१२॥

यतः—सर्वदेवमयो राजा । वदंति विबुधा जनाः ॥
तस्मात्तत्पुरो नैव । वदेन्मृषा कथंचन ॥ १ ॥

झाझो चुगलने नृप वदे, रा० तव मंत्री एम आखे हो ॥ कोप प्रभुजी मत करो, रा० ए जूठुं नवि भाखे हो ॥ दा० ॥१३॥ में जिनधर्मज आदर्यो, रा० जाण्यो लोहनो

दोष दो ॥ काष्ठ कृपाण करावीयो, रा० पुण्य तणो थयो पोष दो ॥ दा० ॥ १४ ॥ दमणां धर्म प्रजावथी, रा० लोह खड्ग ए दीसे दो ॥ सांजले राजा प्रजा सहु, रा० धरम करो निशदिसे दो ॥ दा० ॥ १५ ॥ हुं धरमे निश्चल थइ, रा० प्रत्यक्ष प्रत्यय जोय दो ॥ शेठ प्रमुख साचुं कहे, रा० लता न माने सोय दो ॥ दा० ॥ १६ ॥ चोर मंत्री राजा कहे, रा० तजे न दुरजन चाल दो ॥ खंड आठमे चोथी ढाली, रा० नेमविजय कहे ढाल दो ॥ दा० ॥ १७ ॥

दुहा.

नागश्री पूछे थकी, जंपे मधुरी वाण ॥ में एम समकित पामीयुं, प्रीतम हृयडे आण ॥ १ ॥ नगरी नाम वणारसी, जीतारि तिहां नूप ॥ कनकचित्रा राणी रतन, रंभा सरखी रूप ॥ २ ॥ सुता सुमित्रा तेहनी, माटी वहोली खाय ॥ पांडु रोग तेथी थयो, आर्या मली एक आय ॥ ३ ॥ तस उपदेशे तिणे तज्यां, अनंतकाय अभक्ष ॥ निरुज थइ ते कन्यका, फल्यो नियम प्रत्यक्ष ॥ ४ ॥ जोवन आवी जाणीने, नृप विवाह निमित्त ॥ पट्ट अनेक देखामीया, कोइ न आव्यो चित्त ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी.

सुमखा संदेशो कहे मारा पूज्यनेरे, मानीश तुज उपगाररे—ए देशी.

एहवे अंगदेशनो धणीरे, जवदत्त नामे नूपालरे ॥ जीतारि नृप प्रते एम कहेरे, मुजशुं करो विवसालरे ॥ ए० ॥ १ ॥ दासीना पुत्र तुज केम देउंरे, जाति हीण मनमां जाणरे ॥ राजकन्या जोग ए केम होयेरे, बोलजे विमासी वाणरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जवदत्त कहे जाति शुं करेरे, जो मांहि गुण नवि होयरे ॥ गुणने आदर सहु करेरे, जाति न माने कोयरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ गुणवंत तो पिण तुज जणीरे, कन्या केम देवायरे ॥ जो साखिणी तोपण वाणहीरे, तेहिज पेहेरवी पायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ राज्य तणी करे कामनारे, तो पुत्री परणावरे ॥ नहिंतर वेवे लेयशुंरे, मुज वचन मन लावरे ॥ ए० ॥ ५ ॥ जीतारि कहे जीतशेरे, संग्रामे मुज जेहरे ॥ मुजथी अधिको जे होशेरे, कुंवरी पति गणे तेहरे ॥ ए० ॥ ६ ॥ पर आवी सेना सजीरे, जव घाले जवदत्तरे ॥ राणी कहे तिणे अवसरेरे, एक सुणो प्रभु वत्तरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ कन्या काजे कलह किशोरे, सरखे कुले विवाहरे ॥ नृप कहे वचन जीतारिनुंरे, कारण करण उच्छाहरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ जवदत्त आव्यो उतावलोरे, अरिनी सीम नजीकरे ॥

जीतारिए ते सांभलीरे, वदे वचन निरनीकरे ॥ ए० ॥ ए ॥ मूषक जेम मंजारी त-णारे, दिल करे पाषण दंतरे ॥ मृगलो सिंहने जेम मारवारे, खरी धरे मन खंतरे ॥ ए० ॥ १० ॥ वींटी नगरी ते चिहुं दिसेरे, मंत्री कहे तेणी वारेरे ॥ कन्या स्वामि आपणी दीजीएरे, नीति वचन संभारेरे ॥ ए० ॥ ११ ॥

यतः—त्यजेदेकं कुलस्यार्थे । ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ॥
ग्रामं जनपदार्थे च । आत्मार्थे पृथ्वीं त्यजेत् ॥ १ ॥

बोले जीतारि रखे बीहोरे, अरि बल नाखुं तोडरे ॥ साचुं कह्युं तुमे स्वामिजीरे, पण परदल बहु जोररे ॥ ए० ॥ १२ ॥ साहस सिद्धि होशे सहीरे, भेली करो बहु भेडरे ॥ सत धरी राम लक्ष्मणेरे, रावण नाख्यो उथेडरे ॥ ए० ॥ १३ ॥ दूत मूकीने कहावीयोरे, जयदत्ते भली भातरे ॥ सुता देइने सुखे रहोरे, कां पडो मृत्युनी पांतरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ वचन सुणीने परजल्योरे, दूतने कीधो दूररे ॥ रणभेरी वजडावीनेरे, चमीउं प्रबल पडुररे ॥ ए० ॥ १५ ॥ भेला सुभट भली भल्यारे, भारी थयो भारथरे ॥ नाठी सेना जीतारिनीरे, बोले मंत्रीसर तथरे ॥ ए० ॥ १६ ॥ राजन इहां र-

देवुं नहीरे, जीतारि कहे तामरे ॥ जीत्यो नर लक्ष्मी लहेरे, वरे मृतने सुरवामरे ॥ ए० ॥ १७ ॥

जीवे च लभ्यते लक्ष्मीः । मृते चापि सुरांगना ॥
कायोऽयं क्षणविध्वंसी । का चिंता मरणे रणे ॥ १ ॥

पामे शिवसुख जीवतोरे, एम समजाव्यो नरंदरे ॥ आठमा खंमनी पांचमीरे, ढाल कही नेमे आणंदरे ॥ ए० ॥ १८ ॥

दुहा.

जीतारि गढमां रह्यो, जवदत्त जांजी पोल ॥ नगर लुंटवा मांडीयो, थयो हाल कल्लोल ॥ १ ॥ मुज कारण अनरथ होये, सुमित्रा देख सरूप ॥ सागारी अणसण करी, जाइ पडी जल कूप ॥ २ ॥ पुण्य प्रभावे थल थयुं, आवी सुरवर कोड ॥ सती थापी सिंहासने, उभा वे कर जोड ॥३॥ राजभुवनमां पेसतां, देवे थंभ्यो जवदत्त॥ एहवे किणही आवीने, कहे सुमित्रा वत्त ॥ ४ ॥ तज्यो क्रोध अहंकार सुण, पाम्यो परम समाध ॥ सुमित्राने आवी कहे, भगिनी खम अपराध ॥ ५ ॥ जीतारि जवदत्त

वे, मछीया मांहो मांह ॥ पाटे थापी निज पुत्रने, लीधी दीक्ष उछांह ॥ ६ ॥ प्र-
त्यक्ष पुण्य फल देखीने, हुं थइ समकित धार ॥ कुंदलता कहे ए असत्य, तें ना-
ख्युं निरधार ॥ ७ ॥

ढाल छठी.

रसीया राजोरे वान तणे रसे—ए देशी.

पुत्रे पद्मसेनाने शेठजी, केम थइ समकित प्राप्ति ॥ सोभागी ॥ सा कहे स्वामि
कंपिलपुरवरे, हरिवाहन राजा शुभ मति ॥ सो० पु० ॥ १ ॥ रिषभदास शेठ तिहां
वसे, पद्मावती प्रिया आधार ॥ सो० ॥ पद्मश्री पुत्री छे तेहने, प्रत्यक्ष लक्ष्मीनो
अवतार ॥ सो० पु० ॥ २ ॥ नवजोवन युवति आवी नही, एक दिन देहरे जातां
वीच ॥ सो० ॥ वृषभदास शेठ तणे सुते वही, वुद्धसिंह घरे आव्यो नीच ॥ सो०
पु० ॥ ३ ॥ काम तणे बाणे करी पीडीयो, पडीयो जाइ जुने खाट ॥ सो० ॥
जमणवेला थइ पुत्रे शेठजी, जमे नहीं नंदन इया माट ॥ सो० पु० ॥ ४ ॥ लाज
तजीने वात कही तेणे, बेटा जूठो न कीजे जक्ष ॥ सो० ॥ मदिरा मांस नखी जे
आपणे, पंगासथी तिण गणे अधिक ॥ सो० पु० ॥ ५ ॥ तेहनी पुत्रीनी आशा

कीसी, वलतुं बोले बुद्धसिंह बोल ॥ सो० ॥ के परणुं के सरणुं आगनुं, ए मुज जाणो वचन अमोल ॥ सो० पु० ॥ ६ ॥ आश्वासीने तेह जमाडीयो, करशुं ताहरुं वेगुं काम ॥ सो० ॥ दिन दिन देहरे जाइ उपासरे, श्रावक थयो कपट परणाम ॥ सो० पु० ॥ ७ ॥ बुद्धसिंहे परणी रिषभ सुता, पदमश्री आणी आवास ॥ सो० ॥ मिथ्या करणी देखी तेहनी, दिल मांही ते रही विमास ॥ सो० पु० ॥ ८ ॥ पदमश्रीने बुध गुरु एम कहे, पुत्री सिध्यां वंछित काम ॥ सो० ॥ सर्व धर्म मांहे बोध धर्म वडो, जिहां दुःख तणुं नहीं नाम ॥ सो० पु० ॥ ९ ॥ उत्तर वलतो पदमश्री दीए, हंस सरिखा जे नर होय ॥ सो० ॥ पाणी दूध पटंतर ते करे, अरिहंत धर्म समो नहीं कोय ॥ सो० पु० ॥ १० ॥ रिषभदास अणसण करी आराधना, काळे पहोतो मुगति मोझार ॥ सो० ॥ सासु ससरो नणंद विशेषथी, संतापे वली तस भरतार ॥ सो० पु० ॥ ११ ॥ तोपण धरम न मूके मानिनी, ससरो कहे वहु सांभल वात ॥ सो० ॥ तारो बाप मरी मृगलो थयो, वनमां मुज गुरु लही अवदात ॥ सो० ॥ १२ ॥ जो तुम गुरु एवा ज्ञानी अछे, तो परभाते तेह जमाड ॥ सो० ॥ हुं पण साचो धरम समाचरुं, नाखुं मिथ्यामति सवि छांड ॥ सो० पु० ॥ १३ ॥ वहुनुं वचन सु-

णीने दरखीयो, तेड्यो जोजन करवा बुध ॥ सो० ॥ पग मावानुं गुरुनुं पगरखु, ज्ञानु लीधुं न जाणे मूढ ॥ सो० पु० ॥ १४ ॥ सुक्रम खंड करी वघारीयुं, दहींनो दीधो काको कोल ॥ सो० ॥ शाक करी पीरसे निज हाथशुं, गुरु शिष्य जमतां करे कलोल ॥ सो०पु०॥ १५ ॥ अद्भुत व्यंजन शाक समारीयो, पदमश्रीने दे श्यावास ॥ सो० ॥ आठमा खंडनी ढाल उठी कही, नेमविजयनी बुद्धि प्रकाश ॥ सो० पु० ॥ १६ ॥

दुहा.

जोजन करीने उठीया, दीधां फोफल पान ॥ आज कृतारथ हुं थयो, गणुं जनम सुप्रमाण ॥ १ ॥ बाहिर आवी वाणही, जोवे गुरुजी जाम ॥ एक अठे बीजी नहीं, पूछे सेवक ताम ॥ २ ॥ शोध करी सघले कह्युं, अमे न जाणुं पूज्य ॥ पदमश्री आवीने कहे, तुमने न पडे सूज ॥ ३ ॥ गति जाणो मुज तातनी, पेट पड्युं पगत्राण ॥ पोताने प्रीत्रो नहीं, अहो चह्युं तुम ज्ञान ॥ ४ ॥ बुध गुरु रीसे धडधड्यो, मुखथी बोले गाल ॥ खाधुं अमे शुं खासडुं, पापिणी बोल संभाल ॥ ५ ॥

धीसी, वसतुं घोसे वुद्धसिंह घोस ॥ सो० ॥ के परणुं के सरणुं आगनुं, ए मुज जाणो वचन अगोस ॥ सो० पु० ॥ ६ ॥ आश्वासीने तेह जमाडीयो, करशुं ताहरुं वेगुं काम ॥ सो० ॥ दिन दिन देहरे जाइ उपासरे, श्रावक थयो कपट परणाम ॥ सो० पु० ॥ ७ ॥ वुद्धसिंहे परणी रिपन सुता, पदमश्री आणी आवास ॥ सो० ॥ मिथ्या करणी देखी तेहनी, दिल मांही ते रही विमास ॥ सो० पु० ॥ ८ ॥ पदमश्रीने वुध गुरु एम कहे, पुत्री सिध्यां वंछित काम ॥ सो० ॥ सर्व धर्म मांहे बोध धर्म वडो, जिहां दुःख तणुं नहीं नाम ॥ सो० पु० ॥ ९ ॥ उत्तर वलतो पदमश्री रीए, हंस सरिखा जे नर होय ॥ सो० ॥ पाणी दूध पटंतर ते करे, अरिहंत धर्म समो नहीं कोय ॥ सो० पु० ॥ १० ॥ रिपनदास अणसण करी आराधना, काळे पहोतो मुगति मोझार ॥ सो० ॥ सासु ससरो नणंद विशेषथी, संतापे वली तस नरनार ॥ सो० पु० ॥ ११ ॥ तोपण धरम न मूके मानिनी, ससरो कहे वहु सांभल वात ॥ सो० ॥ तारो बाप मरी मृगलो थयो, वनमां मुज गुरु सही अवदात ॥ सो० ॥ १२ ॥ जो तुम गुरु एवा ज्ञानी अछे, तो परजाते तेह जमाड ॥ सो० ॥ हुं पण साचो धरम समाचरुं, नाखुं मिथ्यामति सवि छांड ॥ सो० पु० ॥ १३ ॥ वलतं वचन स-

णीने दूरखीयो, तेथ्यो जोजन करवा बुध ॥ सो० ॥ पग मावानुं गुरुनुं पगरखुं, वानुं खीधुं न जाणे मूढ ॥ सो० पु० ॥ १४ ॥ सुक्ष्म खंड करी वघारीयुं, वहींनो दीधो काको कोख ॥ सो० ॥ शाक करी पीरसे निज हाथशुं, गुरु शिष्य जमतां करे कलोल ॥ सो० पु० ॥ १५ ॥ अद्भुत व्यंजन शाक समारीयो, पदमश्रीने दे श्यावास ॥ सो० ॥ आठमा खंडनी वाल उठी कही, नेमविजयनी बुद्धि प्रकाश ॥ सो० पु० ॥ १६ ॥

दुहा.

जोजन करीने उठीया, दीधां फोफल पान ॥ आज कृतारथ हुं थयो, गणुं जनम सुप्रमाण ॥ १ ॥ बाहिर आवी वाणही, जोवे गुरुजी जाम ॥ एक अठे बीजी नहीं, पूछे सेवक ताम ॥ २ ॥ शोध करी सघले कर्युं, अमे न जाणुं पूज्य ॥ पदमश्री आवीने कहे, तुमने न पडे सूज ॥ ३ ॥ गति जाणो मुज तातनी, पेट पड्युं पगत्राण ॥ पोताने प्रीछो नहीं, अहो चतुं तुम ज्ञान ॥ ४ ॥ बुध गुरु रीसे धडधड्यो, मुखथी बोले गाल ॥ खाधुं अमे शुं खासडुं, पापिणी बोल संभाल ॥ ५ ॥

ढाल सातमी.

विंदलीनी देशी.

रिखजी रीस न कीजे, क्रोधे करी संजम छीजे हो ॥ नारी मति निरखोजी ॥ हुं नवि बोलुं मरखा, प्रत्यक्ष देखाडुं परीक्षा हो ॥ ना० ॥ १ ॥ जो कुमी थइ रंग, देवो तुज एहवो दंड हो ॥ ना० ॥ मुंमी मस्तक खर चामी, तुजने मूकीशुं कहामी हो ॥ ना० ॥ २ ॥ जो हुं थाउं साची, तुमे जैन धरमे रहो राची हो ॥ ना० ॥ एम मांहो मांहे भाखी, पामोशी राख्या साखी हो ॥ ना० ॥ ३ ॥ उवकाव्या ते मोगा, मिंढलना करी प्रयोगा हो ॥ ना० ॥ खंड चरमना झीणा, देखामी कीधा दीणा हो ॥ ना० ॥ ४ ॥ मठ पोताने आव्यो, बुधदास शेठ तेडाव्यो हो ॥ ना० ॥ कहे वहुने काढ घरथी, कुटुंबनो जो होये अरथी हो ॥ ना० ॥ ५ ॥ काढी वहु झाली हाथे, बुद्धसिंह निसरीयो साथे हो ॥ ना० ॥ मान जिहां नवि लहीए, ते नगरी मांहे नवि रहीए हो ॥ ना० ॥ ६ ॥ एम चिंतवी नीकलीयां, सारथवाहने जइ मलीयां हो ॥ ना० ॥ पदमश्री देखी ठलीयो, सारथवाहनो मन चलीयो हो ॥ ना० ॥ ७ ॥ आदर वहोलो

१ मूर्ख.

नम कीधो, अरणासन वेगण दीधो हो ॥ ना० ॥ जो ए जम घर जावे, तो नारी मु-
न घर आवे हो ॥ ना० ॥ ८ ॥ विनती एम रसोइ, विष सहित करावे सोइ हो ॥
ना० ॥ भोजनवेला सुविसाखे, जमवा वेला एक चाखे हो ॥ ना० ॥ ए ॥ रसवती
पीरसी तुइ, वृक्षसिंह मन शंका दुइ हो ॥ ना० ॥ जखा वेला जाइ, एक चाख किसी
जुवाइ हो ॥ ना० ॥ १० ॥ एम कही नेहुं अग्र, कीधुं जम्या विण मग्न हो ॥ ना० ॥
पडया मूरखा खाइ, लोक कह्युं शेठने जाइ हो ॥ ना० ॥ ११ ॥ शोकाकुल तिहां आवे,
पद्मश्री एम बोलावे हो ॥ ना० ॥ पुत्र सारथवाह खांणी, में साकणी तुं सही जाणी
हो ॥ ना० ॥ १२ ॥ पहले तुं जीवाडे, नहीतर पाडुं तुज खांडे हो ॥ ना० ॥ संकट
ए कोण आव्युं, पद्मश्री मनमां भाव्युं हो ॥ ना० ॥ १३ ॥ सतीए जपी नवकार,
उतार्यां विषनो भार हो ॥ ना० ॥ पंच दिव्य तिहां पूर्यां, शासननी देवा तुष्या हो ॥
ना० ॥ १४ ॥ पद्मश्री प्रिय साथे, नगरे आवी नरनाथे हो ॥ ना० ॥ बोध जति
पूर्वाल, करे जैन धरम उल्लास हो ॥ ना० ॥ १५ ॥ तुं तिहां समकित पामी, प्रत्यक्ष
फल देखी स्वामि हो ॥ ना० ॥ कुंरसनानी कसोटी, ए वातां सपली खोटी हो ॥ ना०

॥ १६ ॥ आठमा खंडनी ढाल, सातमी कही निपट रसाल हो ॥ ना० ॥ रंगविजयनो शिष्य, नेम प्रणति करे निशदिस हो ॥ ना० ॥ १७ ॥

दुहा.

हवे कनकमाला प्रते, पूछे शेठ विचार ॥ तुज समकितनी वात कहे, रे गुणवंती नार ॥ १ ॥ ते बोली पीउ सांभलो, सूर्यपुरे नरपाल ॥ भूपति शेठ समुद्रदत्त, सागरदत्ता सुकुमाल ॥ २ ॥ तेहनी कुखे उपनो, सागर नामे कुमार ॥ जिनदत्ता बेटी वली, मातपिता सुखकार ॥ ३ ॥ शेठ कोसंबी नगरने, जिनदत्ते परणी तेह ॥ सागर करम वशे करे, व्यसन सातशुं नेह ॥ ४ ॥ वचन न माने बापनुं, घणी वार तलार ॥ काली मूक्यो तेहने, गणी शेठ सुत सार ॥ ५ ॥ आरक्षक वली एकदा, काली सोंप्यो राय ॥ कोडी जतन जो कीजीए, मूख्य स्वभाव न जाय ॥ ६ ॥ तेडी तेहना तातने, राजा भाखे एम ॥ काढ एहने घर थकी, जो तुं वांछे खेम ॥ ७ ॥

दुर्जनजनसंसर्गात् । साधोरपि भवंति विपदो वा ॥
दशमुखकृतेऽपराधे । वारिधिरपि बंधनं प्राप्तः ॥ १ ॥

ढाल आठमी.

कोयलो परवत धुंधलोरे लोल—ए देशी.

मंदिरथी सुत काढीयोरे लोल, सांजली नृपनी वाणरे ॥ सुगुण नर ॥ सागर कोसंबी गयोरे लोल, जिन जगिनीने जाणरे ॥ सु० ॥ १ ॥ व्यसन निवारो वेगलां रे लोल, (ए आं०) व्यसन थठे दुःखदायरे ॥सु०॥ व्यसन संगति वारजोरे लोल, जेम तुमने सुख थायरे ॥ सु० व्य० ॥२॥ व्यसनी सांजली तेहनेरे लोल, वेहेने न दीधो मानरे ॥ सु०॥ जाग्यहिण जाये जिहांरे लोल, तिहां पामे अपमानरे ॥ सु० व्य० ॥ ३ ॥ नगर मांही सागर जमेरे लोल, कोइ न पूछे वातरे ॥ सु०॥ मुनि दीठो एक तेहवेरे लोल, एगये एरख न मातरे ॥ सु० व्य० ॥ ४ ॥ चरणकमल नमी तेहनां रे लोल, सुणे जगनेना गुणाणरे ॥ सु०॥ अनंतकाय अभक्ष्य तज्यांरे लोल, व्यसन तणां पच्चरकाणरे ॥सु० व्य०॥५॥ एरखी जिनदत्त हयमखेरे लोल, धरमी सांजली जायरे ॥सु०॥ माणस गुणी तेडावीयोरे लोल, संगति करे मन लायरे ॥ सु० व्य०॥ ६ ॥ आपीने धन आपणेरे लोल, मंडाव्यो व्यापाररे ॥ सु०॥ हलवे हलवे पामीयोरे लोल, शोजा द्रव्य अपारे ॥ सु० व्य० ॥ ७ ॥ तिहां व्यापारे आवीयारे लोल, सूरजपुरना शाहरे ॥ सु० ॥

तेहने देखी तातनेरे लोल, मलवा करे उमाहरे ॥ सु० व्य० ॥ ८ ॥ गामां उंट ने पोठीयारे लोल, भलां भरी क्रयाणरे ॥ सु०॥ वेहेन तणी अनुमति लेइरे लोल, सागर कीध प्रयाणरे ॥ सु० व्य० ॥ ९ ॥ नगर अ व्युं जब ढूकडुंरे लोल, निसरीया साथ मूकरे ॥ सु०॥ उतावला घर जाइएरे लोल, राते गया वाट चूकरे ॥ सु० व्य० ॥ १० ॥ अटवी मांही जइ पड्योरे लोल, भूखे अति पीडायरे ॥ सु०॥ फल पाकां ने फूटरांरे लोल, सहुने आव्यां दायरे ॥ सु० व्य० ॥ ११ ॥ सागर पूछे तेहनेरे लोल, कहो एहनुं तुमे नामरे ॥सु०॥ नाम अमे जाणुं नहींरे लोल, एशुं नहीं मुज कामरे ॥ सु० व्य० ॥ १२ ॥ जेणे फल खाधां ते ढळ्यारे लोल, धरणी तले भसकायरे ॥ सु० ॥ स्त्रीरूप धरी वनदेवतारे लोल,नियम परीक्षे आयरे ॥सु० व्य० ॥१३॥ सरस सुगंध फल आगलेरे लोल, मूकी भाखे नारीरे ॥ सु० ॥ ए फल सुंदर जे भखेरे लोल, रोग जरा दे निवारीरे ॥ सु० व्य० ॥ १४ ॥ जरा जाजरी हुं हतीरे लोल, तरुणी थइ फल खायरे ॥ सु० ॥ सागर कहे नाम एहनुंरे लोल, मुजने सुणावो मायरे ॥ सु० व्य० ॥ १५ ॥ नाम नथी हुं जाणतीरे लोल, तो मुजने छे निमरे ॥ सु० ॥ व्रतनो भंग करुं नहींरे लोल, ज्यां जीवुं त्यां सीमरे ॥ सु० व्य० ॥ १६ ॥ दृढपणुं देखी

देवतारे लोल, दुठी कहे वर मागरे ॥ सु०॥ मित्र उठाको माहरारे लोल, जेम दुःख जाये जागरे ॥ सु० व्य० ॥ १७ ॥ टाली मूरठा तेहनीरे लोल, आण्या सूरजपुर पासरे ॥ सु० ॥ रतनमंडपे सागर ठवेरे लोल, नाटक करे उल्लासरे ॥ सु० व्य० ॥ ॥ १८ ॥ राजा अचरिज सांभलीरे लोल, आव्यो जोवा काजरे ॥ सु० ॥ मातपिता आवी मल्यांरे लोल, धर्मथी सीध्यां काजरे ॥ सु० व्य० ॥ १९ ॥ धर्म जिनेश्वरनो तिहांरे लोल, में पाम्यो मन जावरे ॥ सु० ॥ कुंदलता माने नहींरे लोल, तुमे कहो वात बनावरे ॥ सु० व्य० ॥ २० ॥ नृप सचिव मन चिंतवेरे लोल, पापणी न माने साचरे ॥सु०॥ आठमा खंडनी आठमीरे लोल, ढाल कही नेमे वाचरे ॥सु० व्य० ॥२१॥

दुहा.

विद्युल्लता प्रते वारता, हवे शेठ पूछंत ॥ तुजने प्राप्ति धर्मनी, केम थइ कहो विरतंत ॥ १ ॥ बोले ते विद्युल्लता, चंपापुरे सुदंड ॥ नृपति राज करे भलो, वरते आण अखंड ॥ २ ॥ शेठ नाम सुरदेव छे, गयो व्यापारे विदेश ॥ अश्वरतन लेइ आवीयो, कुशल आपणे देश ॥ ३ ॥ मूल देइ राजा लीया, घोडा घणा प्रधान ॥ वधी प्रीति नृप शेठने, ते दिनथी बहु मान ॥ ४ ॥ मासखमणने पारणे, शेठ घरे

एक साध ॥ आव्यो देखी चिंतवे, चिंतामणि में लाध ॥ ५ ॥ मोदक तस प्रतिला-
भीने, वांदे वे कर जोम ॥ देवे करी घर आंगणे, वृष्टि कनकनी कोड ॥ ६ ॥ समु-
द्रदत्त नामे वणिक, दान तणां फल देख ॥ निंदे निज निरधनपणुं, शेठ प्रशंस विशेख ॥७॥

ढाल नवमी.

सुण मेरी सजनी रजनी न जावेरे–ए देशी.

हुं हवे परदेशे जइ धन खाटुंरे, दलिद्री तणुं नाम दूरे दाटुंरे ॥ चार मित्रशुं
समुद्रदत्त चाल्योरे, सिंहलद्वीप जइ नयणे निहाल्योरे ॥ १ ॥ पलास गाम अनु-
क्रमे पहोतारे, मांहो मांही कहे गहगहतारे ॥ समुद्रदत्त कहे रहेशुं अहींयारे,
मन माने ते जाउं तिहांरे ॥ २ ॥ सहुको वली इहां एकठा थाशुंरे, पछी आपणी
दिशे जाशुंरे ॥ बीजो साथ नगरमां पेठोरे, सरोवर पाळे समुद्रदत्त बेठोरे ॥ ३ ॥
अशोक नामे सोदागर आव्योरे, समुद्रदत्तने तेणे बोलाव्योरे ॥ जो तुं माहरा घोडा
पाखेरे, ताहरुं मागुं करुं हवालेरे ॥ ४ ॥ दिन मांहे दोय वेला जूतिरे, खट मास
अंतरे कंबल जूतिरे ॥ त्रण वरसनी अवधि कीजेरे, अश्व युगल मन गमता लीजेरे
॥ ५ ॥ एम परठीने रह्यो समुद्रदत्तरे, अशोक पुत्रीशुं लाग्युं चित्तरे ॥ मीठां फल

तस आणी आपेरे, कमलश्री पति तेहने आपेरे ॥ ६ ॥ एक दिन कमलश्री प्रते चाल्युंरे, निज देश जवा में मन राख्युंरे ॥ ते कहे हुं तुज आवीश साथेरे, सखीयो पति तुं माहरे माथेरे ॥ ७ ॥ ईश्वर पुत्री तुं मृदु अंगीरे, सिंहण लंकी नयण कुरंगीरे ॥ हुं निरधनने पंथिक विदेशीरे, केम तुं माहरे साथ आवेशीरे ॥ ८ ॥ तुज गुण राती प्रीतम मोरारे, वचन न बोलो एवां कठोरांरे ॥ रागे महिला संपिरे प्राणरे, वीरवी रामा करे तस हाणरे ॥ ९ ॥

ददाति रागिणी प्राणान् । हन्ति द्वेषिणं पुनः ॥
माहो रागो विरागो वा । कोपि लोकोत्तरः स्त्रियः ॥ १ ॥

जब मुज तात देखाडे घोडारे, तब डुबला वे लेजो सजोडारे ॥ जे बोलो ते आकाशे उडेरे, रातो ते जलमां नवि बुडेरे ॥ १० ॥ एम संकेत करी ते रहीयांरे, चारे मित्र आव्या उमीहारे ॥ चालो आपणे देशे जइएरे, कुटुंबशुं मली सुखीया थइएरे ॥ ११ ॥ समुद्रदत्त आवी अशोकने आगेरे, त्रण वर्षनी मस्तुकी मागेरे ॥ मेडुरा मोटी

१ चाकरी. २ अश्वशाला.

ते देखावेरे, अश्व युगल लो जे दाय आवेरे ॥१२॥ डुबला दीठा ते वे लीधारे, समुद्रदत्तनां वांछित सिधारे ॥ आठमा खंडनी नवमी ढालरे, नेमविजये कही उजमालरे ॥१३॥

दूहा.

अशोक कहेरे मूढ तुं, आज कालमां प्राण ॥ मूके एहवा अश्वने, कां ले ए अंध जाण ॥ १ ॥ कनकाभरण अलंकर्या, माता उंचा वाह ॥ बीजा ले तुं वापडा, ठांमी एहनी चाह ॥ २ ॥ समुद्रदत्त कहे एणे सयुं, नहीं अवरशुं काम ॥ पासे उभा ते कहे, जग डुरामही नाम ॥ ३ ॥ हित उपदेश एहने विषे, दीधो निष्फल थाय ॥ मूरखनुं औषध नहीं, कहे महा कविराय ॥ ४ ॥

यतः– मूर्खस्य पञ्चचिह्नानि । गर्वं दुर्वचनं मुखम् ॥
विवादी विरोधी च । कृत्याकृत्यं न मन्यते ॥ १ ॥

मुज पुत्री आसक्त छे, कह्यो दशे एह भेद ॥ गहन चरित्र छे नारीनो, किसो करुं मन खेद ॥ ५ ॥ जो ए अश्व आपुं नहीं, थाय प्रतिज्ञा भंग ॥ कमलश्री परणावीने, दीजे तेह तुरंग ॥ ६ ॥

ढाल दशमी.

उदया ते पुरो मांडयोरे, गढ अरबुदरी जान महाराजा, अमा मोरी,
केसरीयो वर रुमोजी लागे—ए देशी.

समुद्रदत्त हवे चालीयोरे, साथे कमलश्री हेय ॥ जन जोजो ॥ अशोक नोवाइक शिखव्यारे, उतरतां कहे तेय ॥ जन जोजो सहु कोय ॥ वात अपूरव जे होय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जिनधर्म सखाइ जीवनेरे, इण भव परभव जोय ॥ जन० ॥ धर्म विना धंधे पड्यारे, सुख नवि पामे कोय ॥ ज० वा० ॥ २ ॥ अश्व युगल जो तुं दीएरे, नदी उतारुं तुज ॥ ज० ॥ समुद्रदत्त कहे तुमे चोरटारे, बोलो एहवुं अबुज ॥ ज० वा० ॥ ३ ॥ जो तुं वेसीश नावमांरे, तो रहेशे हय दोय ॥ ज० ॥ कमलश्री कहे पीयुजीरे, सवि चिंता नाखो खोय ॥ ज० वा० ॥ ४ ॥ आकाशगामी उपरेरे, चढी वेसो मुज संग ॥ ज० ॥ जलगामी हाथे धरीरे, जलनिधि तरो निःशंक ॥ ज० वा० ॥ ५ ॥ तेम करीने ते उतर्यारे, आव्यां चंपापुरी मांह ॥ ज० ॥ एक अश्व नृपने दीयोरे, नृप पुत्री दे उछाह ॥ ज० वा० ॥ ६ ॥ अर्ध राज वली उपरेरे, वे नारीशुं सुख ॥ ज० ॥ समुद्रदत्त नित भोगवेरे, दूर गयां सवि दुःख ॥ ज० वा० ॥ ७ ॥

सुरदेवने आपीयोरे, हय नृप रक्षा काज ॥ ज० ॥ सुर तीरथयात्रा करेरे, चढी विजय-
तर वाज ॥ ज० वा० ॥ ८ ॥ गगने जाता देखीयोरे, पक्षिपतिए एक वार ॥ ज० ॥
सुभट सहुने ते कहेरे, वेगो सजा मोझार ॥ ज० वा० ॥ ९ ॥ ए अश्व आणी आपे
जीकेरे, पुत्री सहित अर्ध राज ॥ ज० ॥ तेहने आपुं सांजलीरे, कुंतल कहे लावुं वाज
॥ ज० वा० ॥ १० ॥ चंपा मांहे आवीनेरे, जइ हय हरण उपाय ॥ ज० ॥ कोय न लाभे तव
तिहांरे, कपट श्रावक ते थाय ॥ ज० वा० ११ ॥ सुरदेवने देहरेरे, आंखे पाटा बांध ॥
ज० ॥ पडीयो पूठे तेहनेरे, कहे मुजने आबाध ॥ ज० वा० ॥ १२ ॥ सुरदेव जिन
पूजीनेरे, पूछ्युं ए छे कुण ॥ ज० ॥ महा श्रावक अचाक कहेरे, नेत्रा मइ गांठीन तुण
॥ ज० वा० ॥ १३ ॥ पय प्रणमीने विनवेरे, दयावंत सुरदेव ॥ ज० ॥ वाले आवो आ-
पणेरे, घर करुं तुमारां नेव ॥ ज० ॥ वा० ॥ १४ ॥ मंदिर तेड्यो हाथशुंरे, करे परि-
चर्या तास ॥ ज० ॥ कपटी निशि अवसर लहीरे, हय चढी चाल्यो आकाश ॥ ज०
वा० ॥ १५ ॥ वहेता वाहने चाबखोरे, मार्यो कुंतल वीट ॥ ज० ॥ पाड्यो हेठो
पापीनेरे, शत खंड थयो शरीर ॥ ज० वा० ॥ १६ ॥ अश्व जइ अष्टापदेरे, चैत्य तणे
रह्यो बार ॥ ज० ॥ विद्याधर हरि देखीनेरे, रुपिने पूछे विचार ॥ ज० वा० ॥ १७ ॥

चारण मुनिए अवधे करीरे, कह्युं गंधर्व सरूप ॥ ज० ॥ तुरंग विना सुरदेवनेरे, वेदन ॥ ज० वा० ॥ १८ ॥ आठमा खंड तणी कहीरे, दशमी ढाल रसाल ॥ ज० शिष्य एम कहेरे, नेमविजय उजमाल ॥ ज० वा० ॥ १९ ॥

दुहा.

सूतो उठ्यो शेठजी, दय नवि दीठो तेथ ॥ अश्वपालने पूछीयुं, कोण जाणे गयो ॥ १ ॥ ठगी गयो ते धर्म ठग, रह्यो उत्तर नृप देश ॥ धर्म करंतां एहवो, आवी यो क्लेश ॥ २ ॥ टाले श्री भगवंतजी, मरणांतग उवसग्ग ॥ शरण करी जिन-नो, चैत्य कर्यो काउस्सग्ग ॥३॥ चुगले जइ चाडी करी, कह्यो अश्व उदंत ॥ घर लुंटी भूपति कहे, करो एहनो अंत ॥४॥ चाकर चैत्ये दोमीया, कर साही करवाल ॥ देरा मांही पेसतां, देखे थंभ्या ततकाल ॥ ५ ॥ सेनानी नृप मूकीयो, कहेवा तेह हे-वाल ॥ कोपी सेना सज करी, चमी आव्यो भूपाल ॥ ६ ॥ भूप विना सहु थंभीया, चिंते राजा चित्त ॥ कोइ उपाय इसो होये, रहे रतन ने मित ॥ ७ ॥ विद्याधर जिन-वर नमी, सामी साहाय्य निमित्त ॥ अश्व लेइने आवीया, चंपापुरी तुरत ॥ ८ ॥

ढाल अगीआरमी.

जगजीवन जग वाहदो–ए देशी.

स्वप्नने भूली आंगणे, जिनदर मांही जाय साहरे ॥ पदपंकज परमेष्ठिनां, प्रणमी पाये सुणीताय साहरे ॥ साचो धरम संसारमां ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साचो धरम संसारमां, धरम करो सहु कोय साहरे ॥ धरमे धण कण संपजे, धरमथी शिवसुख होय साहरे ॥ सा० ॥ २ ॥ अमे विद्याधर आवीया, अष्टापदनी जात्र साहरे ॥ अश्व तुमारो आणीयो, तुज दीठे ठयां गात्र साहरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ शरण करी नृप शेठनो, चरण नमे वारंवार साहरे ॥ मूकी सेना मोकली, देवे यंत्री जे द्वार साहरे ॥ सा० ॥४॥ सुरदेव काउस्सग्ग पारीने, हय सोंप्यो नृप हाथ साहरे ॥ वय गये संयम लीयो, शेठ भूपति वे साथ साहरे ॥ ५ ॥ विद्याधर उछव करी, पहोत्या निज आवास साहरे ॥ एम प्रत्यक्ष फल देखीने, धरम कर्यो उल्लास साहरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी सहित कहे शेठजी, तें जाण्युं ए सत्य साहरे ॥ कुंदसना कहे एकली, ए पण वात असत्य साहरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ चित्त मांहे एम चिंतवे, श्रेणिक अभयकुमार साहरे ॥ प्रत्यक्ष दीठुं उंघवे, अहो पापिणी ए नार साहरे ॥ सा० ॥ ८ ॥ हुं एहने कही परे,

देशुं शिक्षा सवार लाखरे ॥ आज पछी जेम एहवुं, न कहे कुमुकवार लाखरे ॥ सा०
॥ ९ ॥ अरुणोदय देखी हवे, कुकडे कीधो सोर लाखरे ॥ आव्यो मंदिर आपणो, रा-
जा मंत्री चोर लाखरे ॥ सा० ॥ १० ॥ परजाते परिवारशुं, परवरीयो भूपाल लाखरे ॥
अर्हदासने घर आवीयो, शेठ रतन जरी थाल लाखरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ आगल मूकी
नेटणुं, कर जोडी पाये लाग लाखरे ॥ उभो एम विनति करे, माहरो मोटो भाग
लाखरे ॥ सा० ॥ १२ ॥ जंगम तीरथ माहरे, घर आव्या महाराज लाखरे ॥ प्रसन्न
थइ प्रभु भाखीए, मुज सरिखुं जे काज लाखरे ॥ सा० ॥ १३ ॥ अवनिपति कहे धर्म-
नी, कथा कही तुमे रात लाखरे ॥ निंदी नारी जेणीए, दाखवो ते मुज भ्रात लाखरे
॥ सा० ॥ १४ ॥ निग्रह करशुं तेहनो, सुणी शेठ झांखो थाय लाखरे ॥ शुं भूप पोते
आवीयो, के दुर्जने कह्युं जाय लाखरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ असत्ये नृप दंड पामीए, सा-
चे नारी नाश लाखरे ॥ एम त्यां जन कहेवे सहु, अर्हदास रह्यो विमास लाखरे ॥
सा० ॥ १६ ॥ कुंदलता निसुणी एशुं, आवी नृपने पास लाखरे ॥ दुष्ट नारी ते हुं
अहुं, पण सुणजो अरदास लाखरे ॥ सा० ॥ १७ ॥ धणी शोकने आवीयो, परियागत
जिनधर्म लाखरे ॥ पितर न जाणे माहरा, श्रीजिनशासन मर्म लाखरे ॥ सा० ॥ १८ ॥

तोपण ए फल सांभली, पामी हुं वैराग लालरे ॥ प्रिय पूछी करी पारणुं, व्रत लेशुं धरी राग लालरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ महीमा दीठो धरमनो, एणे सघले साक्षात् लालरे ॥ तोपण भोग तजे नहीं, तेणे जूठी कहुं वात लालरे ॥ सा० ॥ २० ॥ आठमा खंड तणी कही, अग्यारमी ढाल रसाल लालरे ॥ रंगविजय शिष्य एम भणे, नेमविजय उजमाल लालरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

दूहा.

जो ए संयम आदरे, तो सघलुं कहुं सत्य ॥ भूपादिक सहुको कहे, अहो अहो ताहरी मत्य ॥ १ ॥ व्रत लेवा मुज मन हतुं, पड्यो भोगने पास ॥ दीक्षा लेशुं हवे अमे, एम जंपे अर्हदास ॥ २ ॥ भोजन भक्ति करी भली, नृप संप्रेड्यो धाम ॥ आठ दिवस उछव करी, धन खरच्युं शुभ ठाम ॥ ३ ॥ सद्गुरु पासे संयम लीयो, आठ नारीशुं अर्हदास ॥ तप जप कर्म खपावीने, कीधो शिवपुर वास ॥ ४ ॥ सुहस्ती सूरि देशन सुणी, संप्रति नाम नरेश ॥ जिनवर धर्म विशेषथी, वरतावे निज देश ॥ ५ ॥ धरम करो भवियण सदा, धरमे भावठ जाय ॥धरमे मनवंछित फले, वसे शिवपुर मांय ॥ ६ ॥ जिन प्रासाद करावीयां, दीधां बहु परे दान ॥ जनम सफल करी आपणो,

पाम्यो अमर विमान ॥ ७ ॥ श्री हीरविजय सूरीसरु, शुभविजय तस शिष्य ॥ नाव-
विजय कविजन नमा, सिद्धि नमुं निशदिस ॥ ८ ॥ रूपविजय कविराजमां, कृष्णवि-
जय कर जोड ॥ रंगविजय छे रंगीला, नावे एहनी होड ॥ ९ ॥ आठमो खंड पूरो थयो,
ढाल अग्यारे सार ॥ नेमविजयने नित्य प्रते, होजो जयजयकार ॥ १० ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे अष्टम खंडः

खंड ए मो.

ढाल पहेली.

ते मुज मिछामि डुक्कडं—ए देशी.

सांजलरे तुं प्राणीया, सद्गुरु उपदेश ॥ मानवजव दोहिलो लह्यो, उत्तम कुल एश ॥ सां० ॥ १ ॥ देवतत्त्व नवि उलख्यो, गुरुतत्त्व न जाण्यो ॥ धरमतत्त्व नवि सद्दह्यो, हृयडे ज्ञान न आण्यो ॥ सां० ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी जिन सूर प्रते, सरिखा करी जाण्या ॥ गुण अवगुण नवि उलख्या, वयणे वखाण्या ॥ सां० ॥ ३ ॥ देव थया मोहे मह्या, पासे राखे छे नारी ॥ काम तणे वशे जे पड्या, अवगुण अधिकारी ॥ सां० ॥ ४ ॥ कोइक क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ को कीणथी ते वीहता, हथियार संवाह्या ॥ सां० ॥ ५ ॥ क्रूर नर जेहने घणुं, देखंतां डरीए ॥ मुद्रा जेहनी एहवी, तेहथी शुं तरीए ॥ सां० ॥ ६ ॥ आठ करम सांकल जड्या, जमे जवही मोझारो ॥ जनम मरणां जव देखीने, पाम्यो नहीं पारो ॥ सां० ॥ ७ ॥ देव थइ नाटक करे, नाचे जण जण आगे ॥ वेष करी राजा कृष्णनो, वली जिक्षा मागे ॥ सां० ॥ ८ ॥ मुखकर वाये वांसली, पहेरे तन वागा ॥ जावतां मन जोजन करे, एहवा ब्रम लागा ॥ सां० ॥ ए ॥ दे-

खो देख संहारया, थया उद्यमवंतो ॥ हरि हरणांकस मारीयो, नरसिंह बलवंतो ॥ सां० ॥ १० ॥ मछ कछ अवतार लेइ, सहु असुर विदार्या ॥ दश अवतारे जुजुआ, दश देख संहारया ॥सां०॥ ११॥ माने मूढ मिथ्यामति, एहवा पण देवो ॥ फेर फेर अवतार ले, देखो कर्मनी टेवो ॥ सां० ॥ १२ ॥ स्वामि शोजे जेहवो, तेहवो परिवारो ॥ एम जाणीने परिहरो, नेमविजय विचारो ॥ सां० ॥ १३ ॥

ढाल बीजी.

उंधव माधवने केजो—ए देशी.

जगनायक जिनराजने, दाखवीए देव ॥ मूकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥ ज० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया नहीं, ठांव्यां आठे मदयान ॥ रति अरति वेदे नहीं, नहीं लोज अज्ञान ॥ ज० ॥ २ ॥ निद्रा शोक चोरी नहीं, नहीं वयण अलीक ॥ मन्नर जय बंध प्राणीनो, न करे प्राण तीक ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रेम क्रीडा न करे कदी, नहीं नारी प्रसंग ॥ हास्यादिक अढार ए, नहीं जेहने अंग ॥ ज० ॥ ४ ॥ पद्मासन पूरी करी, वेठा अरिहंत ॥ निश्चल लोयण जेहनां, नाशाग्र रहंत ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिनमुद्रा जिनराजनी, दीठे परम उल्लास ॥ समकित थाये निरमलुं, दीपे ज्ञान उजास

॥ ज० ॥ ६ ॥ गत आगत सहु जीवनी, देखे लोकालोक ॥ जिन देखे सवि वस्तुने, केवलज्ञाने अलोक ॥ ज० ॥ ७ ॥ मूरत श्री जिनराजनी, समतारस भंडार ॥ शीतल नयण सोहामणां, नहीं वांक लगार ॥ ज० ॥ ८ ॥ हसित वदन हरखे हीयो, देखी श्री जिनराय ॥ सुंदर छवी प्रभु देहनी, शोभा वरणी न जाय ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवर तणी एहवी छवी, कीहांए न दीसंत ॥ देवतत्त्व एम जाणीए, सहु सुणजो संत ॥ ज० ॥ १० ॥ नवमा खंड तणी कही, ढाल बीजी ए सार ॥ रंगविजय शिष्य नेमने, होजो जय-जयकार ॥ ज० ॥ ११ ॥

ढाल त्रीजी.

यत्तनी देशी.

श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, मांही कुगुरु तणा गुण दाख्या ॥ पासत्थादिक पंचेइ, पाप श्रमण कह्या पंचेइ ॥ १ ॥ गृहीनां मंदिरथी आणी, आहार करे भात पाणी ॥ सुइ उंघे जे निशदिस, मरमादि विसवा वीस ॥ २ ॥ क्रिया न करे केणे वार, पडिक्कमणुं सांज सवार ॥ न करे सूत्र अरथ सझाय, विकथा करतां दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दूध दहीं अप्रमाण, खाये न करे पच्चक्खाण ॥ ज्ञान दर्शन ने चारित्र, मूकी दीधां ते सुपवित्र ॥ ४ ॥ सु-

विहित मुनि समाचारी, पाले नहीं ते अणगारी ॥ आहारना दोष बायाल, टाले नहीं कीणही काल ॥ ५ ॥ धव धव धसमसतो चाले, काचे जले देह पखाले ॥ चरचा अरचना वंदावे, वस्त्रादिक शोभ बनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वली झाजो राखे, वली वली अधिकाने धांखे ॥ माठी जे करणी कहीए, ते सघली जिणमें लहीए ॥ ७ ॥ एवा जेह कुगुरु आरंभी, मुनि साधु कहेवाये दंभी ॥ क्रिय कम्म प्रशंसा करीए, भव भव ए ग्रहमां अवतरीए ॥ ८ ॥ लोढानी नावाने तोले, भवसायरमां जे बोले ॥ नेम कहे भलो अहि कालो, पण कुगुरुनी संगति टालो ॥ ९ ॥

ढाल चोथी.

कर जोडी आगल रही—ए देशी.

गुण गिरुआ गुरु उलखो, हयडे सुमति विचारीरे ॥ गुरु सुपरीक्षा दोहली, भूलां पडे नर नारीरे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांचे इंद्रि वश करे, पंच महाव्रत पालेरे ॥ चार कषाय तजी जेणे, पांचे किरिया टालेरे ॥ गु० ॥ २ ॥ पांचे सुमते सूमता रहे, तीन गुपति जे धारेरे ॥ दोष बेंतालीश टालीने, पाणी भात आहारेरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ ममता ठांमी देहनी, निरखोनी निरमायीरे ॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चिंत न कांइरे

॥ गु० ॥ ४ ॥ पडिलेहण नित्ये विधे, करे प्रमाद निवारीरे ॥ काळे शुद्ध क्रिया करे, पन्नर हायागे निवारीरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ धर्म तणां उपग्रण धरे, संयम पालवा काजेरे ॥ जोय जोइ पगलां जरे, लोक विरुद्धथी लाजेरे ॥ गु० ॥ ६ ॥ वस्त्रादिक शुद्ध एषणी, ल्ये देखी सुविशेषरे ॥ काळ प्रमाणे खप करे, दूषण टलता देखेरे ॥ गु० ॥७॥ कुपी संयत जे कह्या, सानिध्य केमही न राखेरे ॥ दे उपदेश यथास्थिते, सत्य वचन मुख भाखेरे ॥ गु० ॥ ८ ॥ तन मेला मन उजला, तप करी क्षीण देहरे ॥ बंधन वे छेदी करी, विचरे जन निसनेहीरे ॥ गु० ॥ ९ ॥ एहवा गुरु जोइ करी, आदरीए शुभ भावेरे ॥ बीजो तत्त्व सुगुरु तणो, जगमां एम कहावेरे ॥ गु० ॥ १० ॥ नवमा खंडनी ए कही, ढाल चोथी ए वारुरे ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय श्रोता सारुरे ॥ गु० ॥ ११ ॥

ढाल पांचमी.

करम न छूटेरे प्राणीया–ए देशी.

भवसायर तरवा भणी, धरम करे सारंग ॥ पथ्थर नावेरे बेसणे, तरवो समुद्र

१ कर्मादान.

डुलंज ॥ज०॥१॥ आपे गोकुल गायनां, आपे कन्यारे दान ॥ आपे क्षेत्रे पुण्यारये, ब्रा-
ह्मणने देइ मान ॥ ज० ॥ २ ॥ लुटावे धाणी वली, पृथ्वी दानशुं प्रेम ॥ गोला कल-
सारे मोरीया, आपे दूध तिल हेम ॥ ज० ॥ ३ ॥ वली खणावेरे खांतशुं, कुवा सुंदर
वाव ॥ पुष्करणी करणी जली, सरवर सखर तलाव ॥ ज० ॥ ४ ॥ कंदमूल मूके नहीं, अ-
ग्यारस व्रत दीस ॥ आरंज ते दिन अति घणो, धरम किहां जगदीश ॥ ज० ॥ ५ ॥
याग करे होमे तिहां, घोडा नर ने रे ठाग ॥ होमे जलचर मीनकां, धर्म किहां वीत-
राग ॥ ज० ॥ ६ ॥ करे सदाइरे नोरतां, जीव तणा आ आरंज ॥ हणे जंसारे वोकडा,
जेहथी नरक सुलंज ॥ ज० ॥ ७ ॥ सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वज तणोरे श्राद्ध ॥ ते-
नी पोंखेरे कागडा, देखो एह उपाध ॥ ज० ॥ ८ ॥ तीरथ जाये गोदावरी, गंगा ग-
यारे प्रयाग ॥ नाहे अणगल नीरमां, धरम तणो नहीं लाग ॥ ज० ॥ ९ ॥ इत्यादिक
करणी करे, परजव सुखनेरे काज ॥ एणी करणी मले नहीं, एहथी शिवपुर राज ॥
ज० ॥ १० ॥ नवमा खंड तणी जली, पांचमी ढाल रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम
तणे, नेमने मंगल माल ॥ ज० ॥ ११ ॥

ढाल ७ठी.

जंबूद्वीपना भरतमां–ए देशी.

धरम खरो जिनवर तणोरे, शिवसुखनो दातार ॥ श्री जिनराजे प्रकाशीयोरे, जेहना चार प्रकारोरे ॥ ज्ञान विचारी जोय ॥ दुरगति पडतां जीवनेरे, धारे ते धर्म होयरे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ पांच महाव्रत साधुनांरे, दश विध धर्म विचार ॥ हितकारी जिनवर कह्यांरे, श्रावकनां व्रत बारोरे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ पांचुंवर चारे वगेरे, विष सहु माटी हेम ॥ रात्रिभोजनने कह्यारे, बहुबीजांनो नेमरे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ घोलवडां वली रींगणांरे, अनंतकाय बत्रीश ॥ अणजाण्यां फल फूलडांरे, संधाणां निशदिसोरे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ चलित अन्न वासी कह्योरे, उंच सहु फल दक्ष ॥ धरमी नर खाये नहींरे, ए बावीश अभक्षरे ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ न करे निर्धंसपणेरे, घरना पण आरंभ ॥ जीव तणी जयणा घणीरे, न पीए अणगल अंबरे ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ घृत परे पाणी वावरेरे, वीहे करतो पाप ॥ सामायिक व्रत पोषधेरे, टाले भवना तापोरे ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनीरे, सेवा भगति सदीव ॥ धर्मशास्त्र सुणतां थकारे, समजे कोमल जीवोरे ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ मास मासने आंतरेरे, कुश अग्र भुंजे वाल ॥

कला न पहोंचे सोलमीरे, श्री जिनधर्म विशालोरे ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ जिनधर्म मुक्त-
पुरी दीएरे, चोगति भ्रमण मिथ्यात ॥ एम जिनवर प्रकाशीयोरे, त्रीजो तत्व विख्या-
तोरे ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥

ढाल सातमी.

घर आवोजी आंबो मोरीयो–ए देशी.

श्री जिनधर्म आराधीए, करी निज समकित शुद्ध ॥ जवि तप जप क्रिया कीधली,
लेखे पडे ते विशुद्ध ॥ १ ॥ कंचन कसी कसी लीजीए, नाणुं लीजे परीख ॥ देव गुरु
धर्म जोइने, आदरीए सुणो शीख ॥ कं० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने, परिहरीए
विष जेम ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मने, ग्रहीए अमृत करी तेम ॥ कं० ॥ ३ ॥ मूल धरम
जिनवरे कह्यो, समकित सुरतरु एह ॥ परभव सुख संपत्ति थकी, समकितशुं धरी
नेह ॥ कं० ॥ ४ ॥ सफल वारुव प्रतिबूझीया, केइ ग्रह्यां व्रत बार ॥ केइए चोथा
व्रतने ग्रह्यो, केइ थया अणगार ॥ कं० ॥ ५ ॥ केइ मृषावाद उंचरे, के पाले शुद्ध
आचार ॥ समकतिधारी सहु थया, विनयी विवेकी नर नार ॥ कं० ॥ ६ ॥ सुहस्ती
सूरिना उपदेशथी, पाम्या धर्मनो मर्म ॥ केइ जाशे सुरलोकमें, केइ पामशे मृत्यु-

लोक धर्म ॥ कं० ॥ ७ ॥ संवत् अढार एकवीशमां, मास वैशाक सुद पल ॥ तिथि पांचम गुरुवासरे, गाया गुण में सल ॥ कं० ॥ ८ ॥ विजापुरमां विराजता, वृद्ध तपा पक्षे सनूर ॥ चंद्र गछमां दीपता, श्री जिनसागर सूर ॥ कं० ॥ ९ ॥ तेहनी सानिध में सही, गायो रास उल्लास ॥ उंठो अधिको अक्षर होये, शुद्ध करजो पंडित तास ॥ कं० ॥ १० ॥ रास कर्या कविए घणा, पण धर्मपरीक्षानो रास ॥ एह समोवड को नहीं, जेमां अधिकार छे खास ॥ कं० ॥ ११ ॥ सर्व संख्याए ग्रंथ कह्यो, पांच हजार उपर पांच ॥ ढालो कही नव खंडनी, एकसो ने दश वांच ॥ कं० ॥ १२ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुभविजय तस शिष्य ॥ भावविजय कवि दीपता, सिद्धि नमुं निशदिस ॥ कं० ॥ १३ ॥ रूपविजय रंगे करी, कृष्ण नमुं कर जोड ॥ रंगविजय गुरु माहरा, मुज प्रणम्यानो कोड ॥ कं० ॥ १४ ॥ नवमो खंड पूरो थयो, साते ढाले करी सत्य ॥ नेमविजय कहे नित्य प्रते, राखजो धर्मशुं चित्त ॥ कं० ॥ १५ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे नवम खंडः समाप्तः

धर्मपरीक्षानो रास समाप्त.